श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः

संकलनकर्ता

श्रीस्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

॥ॐ श्री ॐ॥

श्रीयन्त्र पूजापद्धतिप्रकाश:

संकलनकर्ता

श्रीस्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर
181, ग्राम: गौहरी माफी,
पो: रायवाला, ऋषिकेश,
उत्तराखण्ड, 249205.

ग्रन्थनाम:-श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः

प्रकाशक :- श्री सत्यं साधना कुटीर समिति, ऋषीकेश.

प्रथम संस्करण : शनिवार, 18 अप्रैल 2015,
चैत्र कृष्ण अमावस्या, संवत् 2072.
प्रतियां : 1000 (हजार)
प्रधान सम्पादक : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती
सम्पादक मण्डल: स्वामी सर्वेशानन्द सरस्वती, पं. ज्योतिप्रसाद उनियाल,
ब्र. रामकृष्णन् और चौ. विजयपाल सिंहजी.
अक्षर संयोजन : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती.

पुस्तक प्राप्ति स्थान-
श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,
ग्राम-गौहरी माफी, पो. रायवाला, ऋषीकेश
जिला- देहरादून 249205 (उत्तराखण्ड)
दूरभाष संख्या:- 91-9557130251,

सहयोग राशि : 300/-

मुद्रक : सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश.

चित्र-2
शाक्ताः
कौलाः
समयिनः
पूर्वकौलाः
उत्तरकौलाः
1. मूलाधारनिष्ठाः
श्रीचक्रस्थ-
त्रिकोणनिष्ठाः ।
प्रत्यक्षयोनिनिष्ठाः
पंचमकारपराः ।
2. स्वाधिष्ठाननिष्ठाः
3. उभयनिष्ठाः
1. मातंगीतन्त्रनिष्ठाः
2. वाराहीतन्त्रनिष्ठाः
3. कौलमुख्यतन्त्रनिष्ठाः
4. भैरवीतन्त्रनिष्ठाः
1. बाह्यश्रीचक्रपूजकाः–स्थूलोपासकाः
2. अन्तर्बहिरुभयपूजकाः:- सूक्ष्मोपासकाः
3. अन्तरेव पूजकाः:- परोपासकाः
4. अर्चनानधीनाः:- जीवन्मुक्ताः
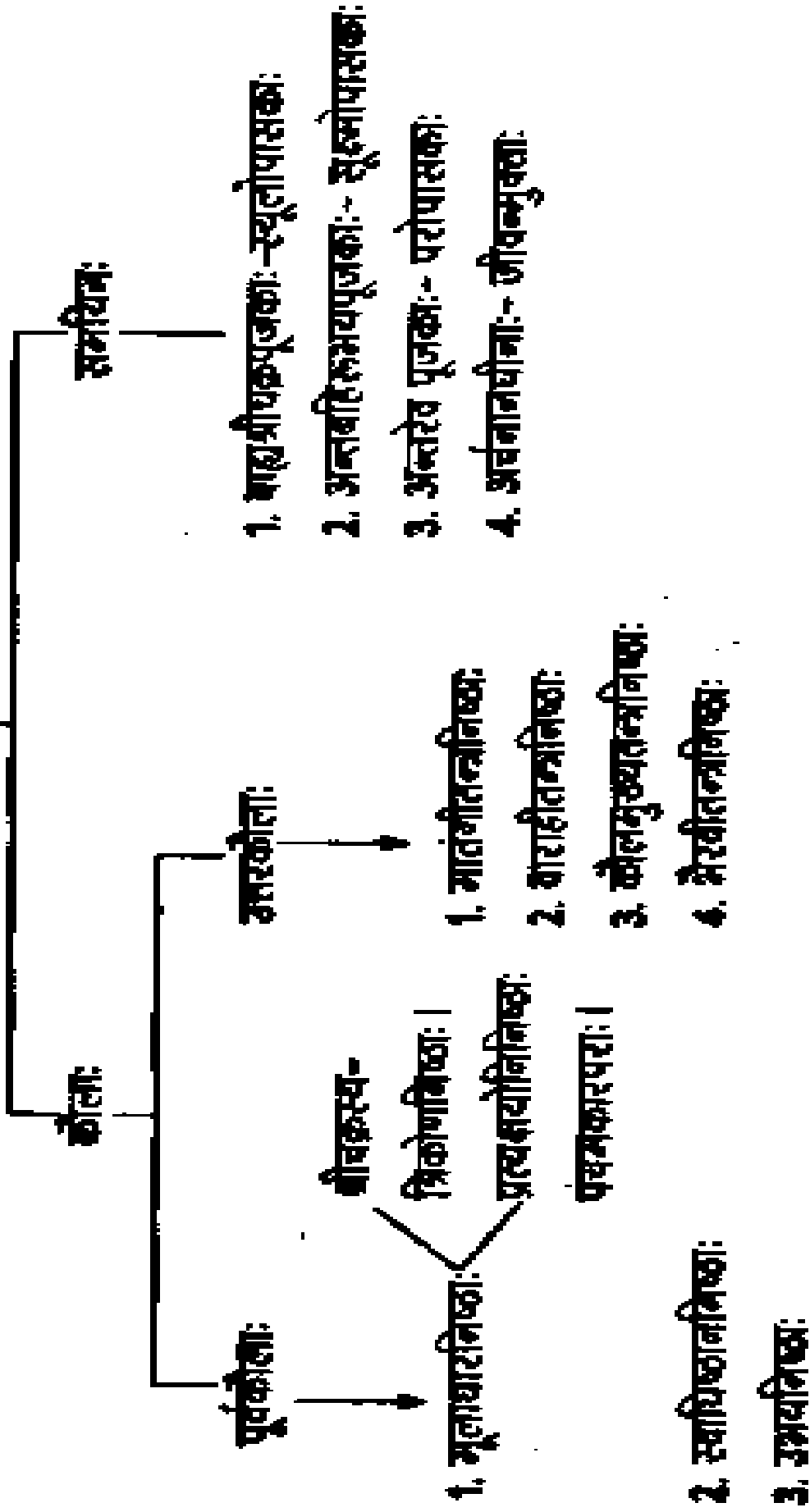
1. प्रस्तावना

संसार में परमपुरुषार्थ (मोक्ष)के साधन आत्मज्ञान को प्राप्त कर लेने में ही अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य जन्म की सार्थकता है। लेकिन यह सामान्य मनुष्य से संभव नहीं है, बल्कि अत्यन्त प्रखर व तीक्ष्ण बुद्धिवाले मनुष्य से ही संभव है। जैसे कि कठोपनिषद् में कहा है-

''दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभि:''(1.3.12)

अर्थात् सूक्ष्मदर्शी मनुष्य अपनी अत्यन्त प्रखर व तीक्ष्ण बुद्धि (शुद्ध अन्त:करण) के द्वारा आत्मा की अनुभूति कर सकते हैं, क्योंकि संपूर्ण वेद के तात्पर्य जीव ब्रह्म ऐक्यत्व की अनुभूति को अष्टांग योगादि साधन व विवेकादि साधन चतुष्टय से सम्पन्न कोई विरला ही कर पाता है, जैसे कि कठोपनिषद् (2.1.1) में कहा है-

'कश्चिद्धीर: प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्'

अर्थात् धैर्य युक्त कोई विरला पुरुष ही अमृतत्त्व (मोक्ष) को चाहते हुये इन्द्रियों को समेट कर प्रत्यगात्मा का अनुभव करता है। क्योंकि सामान्य मनुष्य का स्वभाव है बहिर्मुखी होकर सांसारके सुख केलिये प्रवृत्त होना। जैसे कि कठोपनिषद् (क.उप-2.1.1) में कहा है-

'पराँचि खानि व्यतृणत्स्वयम्भू: तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्'

अर्थात् ईश्वर ने इन इन्द्रियों को बहिर्मुख कर जीव को हिंसित किया हैं, इसलिये यह मनुष्य बाहर ही देखता है, अपनी अन्तरात्मा को नहीं देखता है। अत: सभी साधनों का लक्ष्य मनो निग्रह ही है। इसलिये मैत्रायण्युपनिषद् में कहा है-

''मन एव कारणं बन्धमोक्षयो:''(4.11)

मनो निग्रह का सरलतम उपाय क्या है? इसका उत्तर श्रीमद्भागवत महापुराण में इस प्रकार दिया है-

य आशु हृदयग्रन्थिं निर्जिहीर्षु: परात्मन:।
विधिनोपचरेद्देवं तन्त्रोक्तेन च केशवम्।।(11.3.47)

अर्थात् जो मनुष्य शीघ्र ही हृदय ग्रन्थि को नष्ट करना चाहता है वह

वेदादि शास्त्रोक्त विधि से परमात्मा की उपासना करे और आगमोक्त विधि से केशव आदि इष्ट देवता की पूजा करे। लेकिन वेदरूपी महासागर में बतायी गयी विधियों को समझके स्वयं संग्रह कर उपासना व पूजा करना सर्व साधारण मनुष्य से संभव नहीं है। अत: मन्द व मध्यम बुद्धिवाले मनुष्यों पर कृपा करते हुये परमकारुणिक भगवान श्रीपरशुरामजी ने मनो निग्रह के सरलतम उपाय श्रीचक्रपूजा पद्धति को प्रकट कर महान उपकार किया है।

संसार में प्रसिद्ध समस्त मन्त्रविद्या, यन्त्रविद्या एवं तन्त्रविद्याओं में से श्रीविद्या सर्वश्रेष्ठ है। इसको सौभाग्यविद्या, सुन्दरीविद्या, पंचदशीविद्या आदि नाम से भी जाना जाता है। यद्यपि श्रीचक्र की पूजा पद्धति के संबंध में अनेकों ग्रन्थ प्रकाशित हैं तथापि पूर्व में प्रकाशित ग्रन्थों की न्यूनाधिकता के कारण उपासकों एवं जिज्ञासुओं की परेशानी को देखते हुये उनके निवेदन पर इस ग्रन्थ को दक्षिणामूर्तिमत के अनुसार सृष्टिक्रम पर आधारित होकर प्रकाशित किया जा रहा है, जिसमें विस्तृत और संक्षिप्त दोनों पुजन विधियों सहित मानसपूजन विधि को स्पष्ट व अलग-अलग दर्शाने का प्रयास किया गया है। इसलिये, श्रीचक्र के उपासकों के द्वारा प्रात: काल से रात्रि पर्यन्त जो-जो कर्म क्रम से करने होते हैं तथा उनके साथ समपेक्षित कुछ अन्य नैमित्तिक कर्म भी करने होते हैं, उन सबको संग्रह करके प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। पुरश्चरण करने के इच्छुक साधकों को दृष्टि में रखकर भी विधि-विधान को प्रकाशित करने केलिये प्रयास किया गया है। श्रीविद्या की उपासना तीन प्रकार से की जाती है - 1. स्थूलोपासना, 2. सूक्ष्मोपासना और 3. परोपासना।

1. स्थूलोपासना:- इसमें भोजपत्र पर लिखित, कागज पर लिखित अथवा मुद्रित, ताम्बा -चांदी-सोना आदि धातुओं से निर्मित, पुखराज - माणिक्य-पन्ना आदि पत्थर अथवा चन्दन आदि श्रेष्ठ लकड़ियों से निर्मित बाह्य स्थूल श्रीचक्र की पूजा-अर्चना करना स्थूलोपासना है, जिसमें मन स्वयं विधि का पालन करने में बंध जाता है जिससे अनायास

ही मन की निग्रह पूर्वक एकाग्रता सिद्ध हो जाती है। क्योंकि विधिवत् सामान्यार्घ्यपात्रस्थापन पूर्वक विशेषार्घ्यपात्रस्थापन से आरम्भ कर अन्तर्याग, बहिर्याग आदि को क्रम से अनुष्ठान करने में मन अत्यन्त व्यस्त हो जाने से मन को क्षणभर भी बहिर्मुख होने का अवसर नहीं मिलता है। इस प्रकार नित्य उपासना करते-करते अन्तःकरण शुद्धिपूर्वक मन अवश्य ही एकाग्र होकर आत्मानुभूति करने योग्य हो जाता है। जैसे कि श्रीमद्भागवत महापुराण (11.23.46) में कहा है-

"दानं स्वधर्मो नियमो यमश्च श्रुतं च कर्माणि च सद्व्रतानि।
सर्वे मनोनिग्रहलक्षणान्ताः परो हि योगो मनसः समाधिः॥"

अर्थात् दान, स्वधर्मपालन (अपने वर्ण-ब्राह्मण आदि और आश्रम- ब्रह्मचर्य आदि के अनुसार धर्म का पालन करना), यम-नियम (मनुस्मृति अथवा योगदर्शन में वर्णित) का पालन, वेद-गीता आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय, कर्म और व्रत का लक्ष्य केवल मनो निग्रह ही है, जिसके फलस्वरूप मन का समाधि अवस्था में स्थित होना ही योग है।

2. सूक्ष्मोपासनाः- इसमें पंचदशी मन्त्र का जप आदि अनुष्ठान प्रधान होता है, बाह्य पूजा गौण होती है, अन्तर्पूजा मुख्य है। इसमें वाक्कूट (कएईलह्रीं), कामराजकूट (हसकहलह्रीं) और शक्तिकूट (सकलह्रीं) नाम से तीन कूट हैं। सकाम उपासक वाक्कूट से इस लोक सम्बन्धी सब प्रकार के फल प्राप्त कर सकता है, कामराजकूट से वशीकरण-सम्मोहन-आकर्षण आदि सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है और शक्तिकूट से परलोक के समस्त सुख सहित मोक्ष तक के फल को प्राप्त कर सकता है। फल प्राप्ति तो प्रयोग करने की विधि-विधान और संकल्प के ऊपर निर्भर है। जो निष्काम भाव से करता है वह तो अवश्य ही मोक्ष को प्राप्त कर लेगा।

3. परोपासनाः- इसमें श्रीचक्र, संसारचक्र और स्वदेहस्थ नवचक्र की अभेदपूर्वक भावना यानि चिन्तन कर शिव और शक्ति की ऐक्यता की भावना करना होता है। यह सर्वोत्कृष्ट उपासना है।

उक्त किसी भी साधना को बिना गुरु से प्राप्त किये नहीं करना

चाहिये। क्योंकि गुरु साक्षात् भगवान है, जैसे कि तन्त्रराजतन्त्र में (1
29, 30 व 38) कहा है-

"यतो गुरुः शिवः साक्षात्तं स्तुवन्प्रणमन्भजेत्",

एवं "यथा देवे तथा मन्त्रे यथा मन्त्रे तथा गुरौ।
यथा गुरौ तथा स्वात्मन्येवं भक्तिक्रमः प्रिये।।"

तथा "गुरुं न मर्त्यं बुध्येत यदि बुध्येत तस्य तु।
न कदाचिद्भवेत्सिद्धिर्मन्त्रैर्वा देवतार्चनैः।।"

अर्थात् जिसलिये गुरु साक्षात् शिव ही है इसलिये उनकी स्तुति, प्रणाम, आदि करते हुये सेवा करें। एवं, हे प्रिये! जैसे देवता में वैसे मन्त्र में, जैसे मन्त्र में वैसे गुरु में और अन्त में जैसे गुरु में वैसे अपने में श्रद्धापूर्वक अभेद कर उपासना करना ही भक्ति का क्रम है। गुरु को कभी भी मनुष्य नहीं समझें, क्योंकि यदि मनुष्य समझकर व्यवहार, सेवा आदि करता है तो उसे मन्त्रों अथवा देवताओं की अर्चना आदि किसी भी साधना के द्वारा मनोनिग्रह, अन्तःकरण शुद्धि और ज्ञान प्राप्ति रूपी सिद्धि कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती है। इसलिये तत्त्वसंग्रह नामक प्रकरण ग्रन्थ में जगद्गुरु श्री आद्य शंकराचार्यजी ने कहा है-

"कुर्याद्भावाद्वैतं सदा न क्रियाद्वैतं कदाचित्।" (78)

अर्थात् प्रारब्ध कर्म के अधीन व्यवहार युक्त गुरु के पांचभौतिक शरीर से होते हुये किसी भी प्रकार के व्यवहार की नकल न करें, किन्तु उनके द्वारा दिये गये उपनिषद् आदि मोक्ष परक शास्त्रज्ञान का मनन आदि करें और बताये गये अन्य साधनों का भी अनुष्ठान करें।

पुनः चार अथवा छः आम्नाय भेद से एवं कौल आदि तीन मत अथवा संप्रदाय भेद से भी श्रीविद्या की अनुष्ठान पद्धति में अन्तर माना जाता है। अतः दक्षिणामूर्ति मत के अनुसार श्रीविद्या के प्रयोगपूर्वक श्रीचक्र की पूजा में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि-केशव मातृका न्यास के बाद केशव मातृका स्तोत्र, गणेशमातृका न्यास के बाद गणेश कवच, पीठपूजा के बाद इन्द्राक्षि स्तोत्र, लक्ष्म्यर्चन एवं लक्ष्मीहृदयार्चन के बाद शिव कवच, योगिन्यर्चन के बाद दुर्गास्तुति,

कुलसुन्दरी पूजा के बाद त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्र और सर्वमंगला के बाद मंगलचण्डिका स्तोत्र का पाठ करना अति आवश्यक है।

इस ग्रन्थ की संरचना में त्रिपुरोपनिषद्, भावनोपनिषद्, शारदातिलक, प्रपंचसार, नटराजतन्त्र, रुद्रयामल, ब्रह्मयामल, शिवरहस्य, तन्त्रसार, मन्त्ररत्नाकर, मन्त्रमहोदधि, अनुष्ठानप्रकाश तथा गोखा पुस्तकालय, रामघाट, बनारस द्वारा मुद्रित "पूजाविधि सहित अग्निस्थापना" आदि अनेक ग्रन्थों का उपयोग किया गया है। इसमें सब कुछ शास्त्र प्रमाण युक्त है और गुरु परम्परा के अनुसार है, कुछ भी स्वबुद्धि परिकल्पित नहीं है।

अतः भ्रम या प्रमाद आदि के कारणवश मुद्रण में किसी भी प्रकार का दोष रह गया हो तो मैं, संकलन कर्ता, श्री स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती क्षमा प्रार्थी हूँ और पाठकों व उपासकों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि वे अशुद्धियों को सुधारकर ही पढ़ें व प्रयोग करें। इस ग्रन्थ के लेखन, संपादन, संशोधन, प्रकाशन आदि विविध कार्यों में साक्षात् या परम्परा से या आर्थिक आदि अनेक प्रकार का सहयोग प्रदान करनेवाले समस्त आदरणीय सन्त- महात्माओं, ब्रह्मचारी-साधकों, उपासकों-भक्तों और सद्गृहस्थों के प्रति अत्यन्त आभार अभिव्यक्त करते हुये सब की सर्वांगीण अभिवृद्धि एवं विशेषतः आध्यात्मिक प्रगति व लक्ष्य प्राप्ति केलिये मैं, संकलन कर्ता, श्री स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती, माँ भगवती से प्रार्थना करता हूँ व सहृदय से सबके कल्याण की मंगलकामना करता हूँ।

।। हरिः ॐ तत्सत्।।

2. भूमिका

2.1 श्रीविद्यापरिचय: -

परब्रह्म की सच्चिदानन्दमयी धारिकाशक्ति ही धर्म है। जैसे कि महाभारत (शां 109.11, कर्ण 69.58) में कहा है -

'धारणाद्धर्म इत्याहु धर्मो धारयति प्रजाम्।'

अर्थात् धारण करने से धर्म है और धारण किया हुआ धर्म प्रजा को धारण करता है। इसलिये धर्म का लक्षण इस प्रकार किया गया है

'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः'

अर्थात् जिसे धारण करने पर इहलोक व परलोक के सुख अथवा मोक्ष प्राप्त हों वह धर्म है। तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपने जीवन में अपने, समाज के और लोक हित में जिन नियमों का पालन करता है वह धर्म है। लेकिन मनुष्य अपनी क्षुद्र बुद्धि से धर्म (नियमों) को तय नहीं कर सकता है, इसलिये ईश्वर की प्रेरणा से समाधिस्थ ऋषियों के हृदय में अभिव्यक्त वेदों को मानवमात्र के कल्याण केलिये प्रामाणिक माना गया है। उन वेदों में ब्रह्म को जीव का वास्तविक स्वरूप बताया गया है, जो अविद्या के कारण सांसारिक बन्धन में अपने आपको बंधा हुआ मानता है। उस बन्धन की कारणीभूता अविद्या को विद्या से ही नष्ट किया जा सकता है। अतः वेदों पर आधारित होकर लोक कल्याण केलिये अधिकारी भेद से विभिन्न तन्त्रशास्त्रों में दस महाविद्याओं का वर्णन किया गया है, जिनका संग्रह इस प्रकार है -

काली च भैरवी तारा षोडशी भुवनेश्वरी।।
मातंगी छिन्नमस्ता च बगला कमला तथा।
धूम्रावतीति वेदज्ञैर्महाविद्या दशेरिताः।।

(धूमावती - पाठभेदः)। प्रत्येक व्यक्ति इन दसों विद्याओं की साधना एक साथ नहीं कर सकता है, असम्भव भी है, क्योंकि साधना के नियम, अनुष्ठान प्रक्रिया, मन्त्र व दीक्षा आदि में बहुत अन्तर है। इसलिये दक्षिणामूर्ति परम्परा में इनकी साधना का क्रम इस प्रकार तय किया गया है -

1. छिन्नमस्ता, 2. धूम्रावती, 3. मातंगी, 4. काली, 5. बगलामुखी, 6. भैरवी, 7. तारा, 8. कमला, 9. भुवनेश्वरी, 10. षोडशी (महात्रिपुर-सुन्दरी)। किसी भी विद्या की साधना कर रहे हों तो भी कुछ ऐसे सामान्य नियम (धर्म) हैं जिन्हें सबके द्वारा पालन करना ही है। जैसे-

1. ऐसा कोई कार्य न करे जिससे प्रकृति की हानि हो, क्योंकि मनुष्य आपके अपराध को भले ही क्षमा कर दे किन्तु प्रकृति कभी क्षमा नही करती। भूकम्प, बादल फटना, दैवी आपदायें इत्यादि इसके उदाहरण हैं।

2. **'अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।**
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।'

अर्थात् 18 पुराणों में व्यास के सारभूत दो ही वचन हैं – परोपकार करना पुण्यदायक है व किसी दूसरे को कष्ट देना पापदायक है।

3. **'अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।**
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।'

अर्थात् दूसरे को आदरपूर्वक प्रणाम करनेवाले व अपने से बड़ों की सेवा करने वाले की चार चीजें नित्य वृद्धि को प्राप्त होती हैं – आयु, विद्या, यश और बल।

4. **'सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।**
प्रियञ्च नानृतं ब्रूयादेषो धर्मः सनातनम्।।' (मनुस्मृतिः 4.138)

अर्थात् सत्य बोलो, प्रिय बोलो, अप्रिय सत्य को न बोलो, प्रियकर झूठ भी न बोलो। यही सनातन धर्म है। इत्यादि पालनीय और भी अनेक सामान्य नियम हैं। यदि आप सोचते हैं कि सनातनधर्म के मूलभूत मूल्यों का पालन न करने व कुकर्म करने का दण्ड नहीं मिलेगा क्योंकि आपके कर्मो का कोई साक्षी नहीं है तो आप भ्रम में हैं। क्योंकि शास्त्र कहता है कि काया, वाचा, मनसा हम जो भी जानकर व अन्जाने में करते हैं उनके 14 साक्षी हैं –

पंचभूतानि हृदयं सूर्यचन्द्रमा यमश्च।
अहोरात्रे सायं प्रातः धर्मस्सन्त्येते साक्षिणः।।

अर्थात् पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, हृदय, यमराज, दिन, रात, प्रातः, सायं और धर्म – ये साक्षी हैं।

शास्त्रों का सार यह है कि सदाचार (निष्काम कर्मयोग), उपासना और उपनिषद् ज्ञान – ये तीन ब्रह्मविद्या के साधन हैं। यही तीन हम सब में तीन शक्तियों के रूप में विद्यमान हैं – अपरा, परापरा, परा। पराशक्ति मोक्षदायिनी शक्ति है। इन तीनों शक्तियों का प्रतीक **श्रीचक्र** है। क्योंकि **श्री = शक्ति, चक्र = समूह**, अर्थात् शक्तिसमूह।

2.2 श्रीचक्रम्

दक्षिणामूर्ति मत के अनुसार इस त्रिशक्तिरूप श्रीचक्र का निर्माण 10 चक्रों से हुआ है, अन्य मतों में 9 चक्रों से बना है। जैसे कि कहा है–

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मम्,
मन्वस्रनागदलशोभितषोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणी सदनत्रयं च,
श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः।।

ये दस चक्र हैं – भूपुर, त्रिवृत्त, षोडशदल, अष्टदल, चतुर्दशार, बहिर्दशार, अन्तर्दशार, अष्टार, त्रिकोण और बिन्दु। इन चक्रों के नाम इनकी पूजा से मिलने वाले फल के अनुसार हैं, जो क्रमशः इस प्रकार है – **त्रैलोक्यमोहनचक्र** (तीनों लोकों को मोहित करने की शक्तिप्रदायक), **त्रिवर्गसाधकचक्र** (धर्म, अर्थ और काम यानि तीनपुरुषार्थ के फलप्रदायक), **सर्वाशापरिपूरक** (सकलकामना प्रदायक), **सर्वसंक्षोभणचक्र** (सभी को क्षुब्ध करने की शक्ति प्रदायक), **सर्वसौभाग्यदायकचक्र** (समस्त प्रकार के सौभाग्य प्रदायक), **सर्वार्थसाधकचक्र** (समस्त प्रयोजन साधक शक्ति प्रदायक), **सर्वरक्षाकरचक्र** (सब प्रकार के कष्ट आदि से रक्षा प्रदायक), **सर्वरोगहरचक्र** (समस्त प्रकार के रोगों का नाशक), **सर्वसिद्धिप्रदचक्र** (समस्त सिद्धिप्रदायक) और **सर्वानन्दमयचक्र** (संपूर्ण आनन्दप्रदायक)। प्रत्येक चक्र को आवरण कहा जाता है। क्यों? जैसे कि वर्णन किया गया है कि प्रत्येक चक्र कुछ न कुछ उत्कृष्ट फल देता है जो प्रलोभित कर साधक को बहिर्मुख करते हुये

उसके स्वरूप पर पड़े हुऐ अज्ञानरूपी आवरण पर और आवरण चढ़ाकर उसे मोक्ष से दूर करता है। चादर पर चादर ओढ़ाकर किसी वस्तु को ढ़कने के समान आत्मा को ये चक्र फल देकर प्रलोभित करते हुये ढ़कते हैं अर्थात् आपको बन्धन में डालते हुये मोक्ष से दूर करते हैं, इसलिये इन्हें आवरण कहा गया है। इन आवरणों से प्राप्त होनेवाले फल को त्यागकर निष्काम भाव से उपासना करते हैं तो यही श्रीविद्या ब्रह्मविद्या प्रदान कर मोक्ष देगी।

श्रीचक्र में 9 त्रिकोण होते हैं। उन में से ऊपर की ओर कोणवाले चार त्रिकोण शिवात्मक और नीचे की ओर कोणवाले पांच त्रिकोण शक्त्यात्मक हैं। इसलिये श्रीचक्र शिवशक्ति उभयात्मक है। इसे यन्त्रराज भी कहते हैं क्योंकि समस्त यन्त्र लौकिक अथवा पारलौकिक फल ही दे सकते हैं अर्थात् केवल भोगदायक हैं किन्तु श्रीचक्र आपके संकल्प के अनुसार भोग एवं मोक्ष देने में समर्थ है। महात्रिपुरसुन्दरी ही इसकी संचालिका है। इसका एकाक्षरीमन्त्र (**ह्रीं**) से आरम्भ कर प्रासादीमन्त्र पर्यन्त मन्त्रों को क्रमशः दीक्षा से प्राप्त कर अनुष्ठान किया जाता है। यद्यपि त्रिपुरसुन्दरी का प्रासादीमन्त्र ही सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है तथापि श्रीपंचदशीविद्या (मूलविद्या), षोडशीविद्या (महाविद्या) और महाषोडशीविद्या (परममन्त्रराज) को भी श्रेष्ठ माना जाता है।

प्रासादीमन्त्र (षष्टीमन्त्र) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं हंसः सोऽहं अं हंसः अः सोऽहं हसौः हौं सोऽहं अः हंसः अं सोऽहं हंसः सकलह्रीं हसकहलह्रीं कएईलह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ**, पंचदशीविद्या –**कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं** (कादि), **हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं** (हादि) और **सएईलह्रीं सहकहलह्रीं सकलह्रीं**(सादि), षोडशीविद्या –**ॐ कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं** अथवा **कएईलह्रीं हसकहलह्रीं ऐंसकलह्रीं** (कुछ मत में श्रीं को जोड़ते हैं। ऐं अथवा श्रीं किस कूट के आरम्भ में जोड़ना है इस विषय में भी मत भेद है। अतः **श्रीगुरुपरम्परा** से ही जानना उचित है।) और महाषोडशीविद्या– **श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ कएईलह्रीं हसकहलह्रीं**

सकलह्रीं ॐ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं। तन्त्र भेद से बालात्रिपुरसुन्दरी का त्र्यक्षरीमन्त्र में भेद है – **ऐंक्लींसौः, ऐंसौःक्लीं, क्लींऐंसौः, क्लींसौःऐं** और **ह्रींक्लींह्सौः।** इसी प्रकार षडक्षरी में दो भेद है–**ऐंह्रींश्रीं ऐंक्लींसौः** तथा **ऐक्लींसौःऐंह्रींश्री** और बालाअष्टाक्षरी में भी प्रमुख दो भेद हैं – **ऐं क्लीं सौः नमः शिवाय** और **ऐं क्लीं नमः शिवाय सौः।**

यद्यपि पूर्व में श्लोक को उद्धृत कर दर्शाया है कि श्रीचक्र में दस आवरण ही हैं तथापि ज्ञानार्णवतन्त्र आदि ग्रन्थों पर आधारित होकर कुछ विद्वानों ने श्रीचक्र को पांच कल्पों में विभक्त कर 16 आवरणों का माना है। उनके मत को हम यहाँ संक्षेप में दर्शा रहे हैं – प्रथमकल्प (सृष्टिकल्प) में एक से चार आवरण, दूसरे कल्प (स्थितिकल्प) में पांचवें से आठवें तक, तीसरे कल्प (संहारकल्प) में नौवे और दसवें, चौथे कल्प (निग्रहकल्प) में ग्यारहवें और बारहवें, तथा पांचवें कल्प (अनुग्रहकल्प) में तेरहवें से सोलहवें आवरण तक का संग्रह किया गया है। प्रथम आवरण से दसवें आवरण तक में कोई भेद नहीं है, अतः उनको हम यहाँ नहीं दर्शा रहे हैं।

एकादश आवरण :– चौदहत्रिकोण और अष्टदलकमल के बीच में जो पीले वर्णवाला स्थान है उसे **कर्णिकाचक्र** कहते हैं, जो कि एक कल्पित चक्र है। इस कर्णिकाचक्र के दस भागों में दस महाविद्यायें स्थित हैं। यही एकादश आवरण है।

द्वादश आवरण :– शिवशक्तयात्मक नौ त्रिकोणों को एक चक्र के रूप में मानकर **अतुलचक्र** नाम से कहते हैं, जो कि एक कल्पित चक्र है। इस अतुलचक्र में चौबीसवर्णोंवाली वैदिक गायत्री विराजमान है। यही द्वादश आवरण है।

त्रयोदश आवरण :– सर्वानन्दमयचक्र में **महाबैन्दव** अथवा **अनाख्य** नामक चक्र की कल्पना की गयी है। दस आम्नाय (अधः, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, पूर्व, आग्नेय और ऊर्ध्व) इस चक्र के दस द्वार हैं, जिनकी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं (उक्तक्रम से उनके नाम – तारा, दक्षिणकाली, श्रीचण्ड़िका, वज्रकुब्जेश्वरी, महासरस्वती,

गुह्यकाली, महाकाली, भुवनेश्वरी, महालक्ष्मी और बालात्रिपुरसुन्दरी)। इस चक्र के मध्य में एक षट्कोण की कल्पना करें, जिसके कोणों में पूर्वादि क्रम से षट्चक्रों के अधिष्ठातृ देवता स्थित हैं - ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, सदाशिव और आदिनाथ। उस षट्कोण के भीतर एक त्रिकोण की कल्पना करें, जिसके कोणों में ऊर्ध्वादि क्रम से कामेश्वरी, वज्रेश्वरी और भगमालिनी विराजती हैं। त्रिकोण के बीच में श्रीललिताम्बिका हैं। इस चक्र में अद्वितीय स्वयंप्रकाश, अनुत्तरदेव, निर्वाणपीठ, चर्मेशनाथ, तुरीय अवस्था और श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी शक्ति की उपासना की जाती है।

चतुर्दश आवरण :- उक्त अनाख्या चक्र के ऊपर एक षट्कोण की कल्पना कर उस षट्कोण व ऊर्ध्व में शरीर की सप्तधातुओं (अस्थि, मेदा, मांस, रक्त, चर्म, मज्जा और शुक्र) की अधिष्ठात्रीदेवियाँ जो मूलाधारादि सातचक्रों की शक्तियाँ (साकिनी, काकिनी, लाकिनी, राकिनी, डाकिनी, हाकिनी और याकिनी) हैं, उनकी उपासना करें। इस चक्र को **सोऽहं चक्र** कहते हैं। क्योंकि षट्चक्रों की देवियों का बीज 'स' से 'ह' तक है - सं वं लं रं यं हं। यहाँ 'स' शक्ति है यानि पर है और 'ह' शिव है यानि प्रासाद है, इन दोनों की सामरस्यता अर्थात् पराप्रासादैक्यता/प्रासादीभाव सहस्रार में होता है, जिसके लिये प्रासादीमन्त्र का प्रयोग किया जाता है।

पंचदशावरण :- श्रीचक्रराज के मध्यभाग में तथा वायव्य, ईशान, आग्नेय और नैर्ऋत्य कोण में पांचसिंहासनों की कल्पना करके प्रत्येक सिंहासन में मध्यादि क्रम से पांच अम्बिकाओं की उपासना की जाती है, इसलिये इस चक्र को **पंचसिंहासनचक्र** कहते हैं। त्रिशक्तिलक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बिका, श्रीत्रिपुरसुन्दरीलक्ष्म्यम्बिका, सौभाग्यलक्ष्म्यम्बिका, महालक्ष्मीलक्ष्म्यम्बिका और साम्राज्यलक्ष्मीलक्ष्म्यम्बिका - <u>मध्यभाग</u> में स्थित सिंहासन में विराजमान हैं। श्रीत्रिपुरसुन्दरीकोशाम्बिका, परञ्ज्योतिकोशाम्बिका, परनिष्कलाकोशाम्बिका, मातृकाकोशाम्बिका और

अजपाकोशाम्बिका - वायव्यकोण में स्थित सिंहासन में विराजमान हैं। श्रीत्रिपुरसुन्दरीकल्पलताम्बिका, पंचकामेश्वरीकल्पलताम्बिका, पारिजातेश्वरीकल्पलताम्बिका, पंच- बाणेश्वरीकल्पलताम्बिका और त्रिपुराकुमारीकल्पलताम्बिका - ईशानकोण में स्थित सिंहासन में विराजमान हैं। पराम्बाश्रीत्रिपुरसुन्दरीकामदुघाम्बिका, अमृतपीठेश्वरीकामदुघाम्बिका, सुधाकामदुघाम्बिका, अमृतेशीकामदु- घाम्बिका और अन्नपूर्णाकामदुघाम्बिका - आग्नेयकोण में स्थित सिंहासन में विराजमान हैं। श्रीत्रिपुरसुन्दरीरत्नाम्बिका, सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्बिका, मातंगिनीरत्नाम्बिका, भुवनेश्वरीरत्नाम्बिका और वाराहीरत्नाम्बिका - नैऋत्यकोण में स्थित सिंहासन में विराजमान हैं।

षोडश आवरण :- भूपुर के बाहर दस दिक्पालों की उपासना की जाती है, जिसे **दिक्पालचक्र** कहते हैं। पूर्व में इन्द्र, आग्नेय में अग्नि, दक्षिण में यम, नैर्ऋत्य में निर्ऋति, पश्चिम में वरुण, वायव्य में वायु, उत्तर में कुबेर, ईशान में ईशान, ईशान-पूर्व के बीच में ब्रह्मा और नैर्ऋत्य-पश्चिम के बीच में अनन्त विराजमान रहते हैं।

2.3 श्रीगुरुपरम्परा

किसी भी साधना केलिये गुरु का मार्गदर्शन अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि गुरु के बिना कोई भी ज्ञान को कोई भी व्यक्ति प्राप्त नहीं कर सकता, चाहे व्यावहारिक (लौकिक) हो, पारलौकिक हो या पारमार्थिक हो। अतः गुरु पर अटूट श्रद्धा होना जरूरी है। यद्यपि यह सत्य है कि इस कलियुग में सच्चरित्र, सदाचारी, श्रुत्यनुसारीसंप्रदाय में दीक्षित व श्रुत्यनुसारी संप्रदायवित्, श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु मिलना कठिन है तथापि आप में तीव्र जिज्ञासा व मुमुक्षा हो तो ईश्वरकृपा से सद्गुरु अवश्य मिलेंगे और यदि आप में जिज्ञासा व मुमुक्षा ढ़ीली हो तो जो भी गुरु मिले (चाहे पाखण्डी भी क्यों न हो) श्रद्धापूर्वक उनकी बतायी हुयी साधना करते रहेंगे तो शीघ्र ही सद्गुरु अवश्य मिलेंगे। श्रीगुरुपरम्परा शाक्त आगम शास्त्रों के अनुसार तीन हैं- भैरव, दक्षिणामूर्ति और हयग्रीव (लोपामुद्रा/अगस्त्य)।

2.4 दीक्षा

आगम शास्त्रों के अनुसार उक्त तीनों ही परम्पराओं में तीन **क्रम** में दीक्षा दी जाती है – शिष्यक्रम, आचार्यक्रम और गुरुक्रम। जो संक्षेप में इस प्रकार है –

1. **शिष्यक्रम** में अधिकतर भौतिक साधना प्रधान साधक सकाम अनुरोधात्मक (अनुनयविनयरूपी) उपासना 13 आवरणों में बहिर्याग करता है, जिसमें एकाक्षरी से पंचदशाक्षरी तक की दीक्षा दी जाती है। विद्याक्रम से आरम्भ कर कुल 28 प्रकार की दीक्षायें लेनी पड़ती है। तब साधक पूर्णाभिषेक का अधिकारी बनता है।

2. **आचार्यक्रम** में दैवीसाधना प्रधान साधक निष्काम (सांसारिक कामना रहित किन्तु दैवी शक्ति की कामना युक्त) भाव से निरोधात्मक (उपदेशरूपी) उपासना पांच कल्पों में (जिन से सृष्टि, स्थिति, संहार, निग्रह और अनुग्रह करने की शक्ति प्राप्त की जाती है) से पंचमकल्प के अन्तर्गत स्थित 14 से 16 तक के आवरणों में अन्तर्याग करता है एवं 13 आवरणों में बहिर्याग भी करता है।

3. **गुरुक्रम** में आध्यात्मिक साधना प्रधान साधक पूर्णनिष्काम (मोक्ष से अतिरिक्त सर्व कामना रहित) भाव से अभेदात्मक (आदेशरूपी) उपासना श्रीचक्र–सृष्टि–स्वशरीर के अभेद चिन्तन पूर्वक केवल ध्यानरूपी अन्तर्याग करता है।

विस्तृत जानकारी केलिये साधक हमारे प्रकाशन "**श्रीशक्तिमहिम्नः स्तोत्रम्**" का अवलोकन करे।

2.5 अध्वा

आगमशास्त्रों में **अध्वा** का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि अध्वा का अर्थ मार्ग होता है तथापि यहाँ लक्ष्यप्राप्ति के साधन को अध्वा कहा गया है। निर्गुण निराकार अनुत्तरपद परमशिव ही लक्ष्य है और उसे प्राप्त करने का साधन यह विश्व ही है, अतः विश्व (संसारचक्र) ही अध्वा है। इसलिये संसारचक्र को श्रीचक्र से अभेद करते हुये श्रीचक्र में भूपुर

से बिन्दु तक छः अध्वाओं की व्याप्ति मानी गयी है। भूपुर के बाहर कलाध्वा, भूपुर में तत्त्वाध्वा, वृत्तत्रय में वर्णाध्वा, षोडशदल में भुवनाध्वा, अष्टदल में पदाध्वा, बिन्दु तक में मन्त्राध्वा और बिन्दु में पुनः तत्त्वाध्वा को अभेद कर उपासना की जाती है। जब शिव सृष्टि, स्थिति व संहार क्रिया करने केलिये कालक्रम में वर्ण, मन्त्र और पद वाले विश्व के रूप में अवभासित होता है, तब वह कालाध्वा कहलाता है और वही जब स्थूल मूर्तरूप धारण करने केलिये देशक्रम में कला, तत्त्व और भुवन वाले विश्व के रूप में अवभासित होता है, तब वह देशाध्वा कहलाता है। जिन्हें निम्न तालिका में स्पष्ट दर्शाया गया है।

	परा = अभेद,	परापरा=भेदाभेद,	अपरा=भेद।
कालाध्वा (वाचकाध्वा)=	वर्ण (कारण),	मन्त्र (सूक्ष्म),	पद (स्थूल)।
देशाध्वा (वाच्याध्वा)=	कला (कारण),	तत्त्व (सूक्ष्म),	भुवन(स्थूल)।

2.6 मुहूर्त

आगम शास्त्रों में तिथि, वार और नक्षत्र को अकुल, कुल, कुलाकुल नाम से तीन भागों में बाँटा गया है। अकुल मुहूर्त में कृत कार्य सफल होता है। कुल मुहूर्त में कृत कार्य विफल होता है। कुलाकुल मुहूर्त में कृत कार्य का फल मिलना संदिग्ध होता है।

अकुल मुहूर्त तिथि –1, 3, 5, 7, 9, 11, 13, पूर्णिमा और अमावस्या। वार – रवि, सोम, गुरु और शनि। नक्षत्र – भरणी, रोहिणी, पुनर्वसु, आश्लेषा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, स्वाती, अनुराधा, उत्तराषाढा, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती ।

कुल मुहूर्त तिथि – 4, 8, 12, 14। वार – मंगल और शुक्र। नक्षत्र – अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा, श्रवण और पूर्वाभाद्रपदा।

कुलाकुल मुहूर्त तिथि – 2, 6, 10। वार – बुध। नक्षत्र – आर्द्रा, मूल, अभिजित् और शतभिषा।

अन्त में इतना ही कहना है कि केवल जानने से व समझकर प्रयोग करने से काम नहीं बनता है अर्थात् लक्ष्य प्राप्त नहीं होता है किन्तु उनके साथ-साथ निष्काम कर्मयोग व निष्काम उपासना करने से ही काम बनता है यानि लक्ष्य प्राप्त होता है।

अतः माँ भगवती के चरणों में इस कृति को समर्पित करते हुये क्षमा याचना पूर्वक निवेदन करता हूँ -

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशी त्वं महेश्वरि।
यादृशी त्वं महादेवी तादृश्यै नमो नमः।।

हरिः ॐ तत्सत्
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः

-स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

विषयानुक्रमणिका

......000000......

श्रीचक्रपूजापद्धतिप्रकाशः
(उपक्रमप्रकरण भाग 1)

3. कर्म/उपासना के संबंध में कुछ जानने योग्य विषय :-

3.1 अनुष्ठानलक्षणम् :- शास्त्र में प्रतिपादित विधि विधान से नित्य अथवा नैमित्तिक कर्म और उपासना करने को अनुष्ठान कहते हैं। जैसे कि स्मृतिसन्दर्भ में कहा है-

शास्त्रस्य विहितं कर्म सम्यक्संपादनन्तु यत्।
तद्धि ज्ञेयमनुष्ठानं नित्यनैमित्तिककर्मसु।।

3.2 कालनिर्णयः- रुद्रयामल में अनुष्ठान आरम्भ करने योग्य **मास** के बारे में कहा है-

कार्तिकाश्विनवैशाखमाघेऽथ मार्गशीर्षके।
फाल्गुने श्रावणे मन्त्रपुरश्चर्या प्रशस्यते।।

अर्थात् वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास में मन्त्र का अनुष्ठान आरम्भ करना श्रेष्ठ है। **पक्ष** के बारे में कालोत्तर नामक ग्रन्थ में कहा है-

मुक्तिकामैः कृष्णपक्षे भूतिकामैः सिते सदा।।

अर्थात् मुक्ति की कामनावाले साधकों को कृष्णपक्ष में और सब प्रकार के ऐश्वर्य की कामना करने वाले मनुष्य को शुक्ल पक्ष में अनुष्ठान करना चाहिये। **तिथि** के बारे में स्मृतितत्त्वरहस्य में कहा है-

पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा।
त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ता सर्वकामदा।।

द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी, पूर्णिमा और अमावस्या तिथियों में ही अनुष्ठान आरम्भ करना श्रेयस्कर है। **वार** के विषय में पुरश्चरणदीपिका में कहा है-

मन्त्रारम्भो रवौ शुक्रे बुधे जीवे विशेषतः।
शनौ मृत्युः क्षयो भौमे सोमे मध्यफलं स्मृतम्।।

अर्थात् विशेष तौर पर कहा जा सकता है कि रविवार, बुधवार,

गुरुवार (बृहस्पतिवार) और शुक्रवार मन्त्र का अनुष्ठान आरम्भ करने केलिये श्रेष्ठ है। जब कि सोमवार को आरम्भ किया गया कर्म मध्यम फल ही देगा, मंगलवार को आरम्भ किया गया कर्म क्षीण होगा और शनिवार को आरम्भ किया गया कर्म विनाश को प्राप्त होगा। अतः मंगलवार और शनिवार को अनुष्ठान अथवा कोई भी कर्म आरम्भ नहीं करना चाहिये। किन्तु कालसर्पयोगदोष की शान्ति शनिवार को आरम्भ कर सकते हैं। नक्षत्र के बारे में तन्त्रसार में कहा है

आर्द्रायां कृत्तिकायां च मन्त्रारम्भः प्रशस्यते।

अर्थात् आर्द्रा और कृत्तिका नक्षत्र में मन्त्र का अनुष्ठान आरम्भ करना श्रेष्ठ होता है। किन्तु 'पुरश्चरणदीपिका' में कुछ अन्य नक्षत्रों का नाम भी गिनाते हुये कहा गया है कि-

अश्विनीरोहिणीस्वातीविशाखाहस्तभेषु च।
ज्येष्ठोत्तरात्रयेष्वेव कुर्यान्मन्त्राभिषेचनम्।।

अर्थात् अश्विनी, रोहिणी, स्वाति, विशाखा, हस्त, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रों में ही मन्त्र का अनुष्ठान आरम्भ करना चाहिये। उपरोक्त मास, पक्ष, तिथि, वार और नक्षत्र को पंचांग में देखकर उचित मुहूर्त में ही कर्म व उपासना को आरम्भ करना चहिये।

3.3 गुरु/आचार्य का लक्षण:- मन्त्र का अनुष्ठान आदि कोई भी कर्म करना हो अथवा उपासना करनी हो तो किसी न किसी योग्य व दक्ष गुरु अथवा आचार्य के मार्गदर्शन में ही करना चाहिये। अतः गुरु/आचार्य का लक्षण जानना जरूरी है। शारदातिलक (2.141-144) में गुरु का लक्षण इस प्रकार है-

मातृतः पितृतः शुद्धः शुद्धभावो जितेन्द्रियः।
सर्वागमानां सारज्ञः सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित्।।
परोपकारनिरतो जपपूजादितत्परः।
अमोघवचनो शान्तो वेदवेदार्थपारगः।।

योगमार्गानुसंधायी देवताहृदयंगमः।
इत्यादिगुणसंपन्नो गुरुरागमसंमतः।।

अर्थात् जो मातृकुल और पितृकुल से शुद्ध (यानि संस्कारहीन, बहिष्कृत अथवा वर्णसंकर नहीं हो), सरल स्वभाव, इन्द्रियजयी, सकल आगमों के रहस्य का ज्ञाता, संपूर्ण शास्त्रों के वास्तविक अर्थ का ज्ञाता, परोपकारी, जप-पूजा आदि कर्म का अनुष्ठाता, अमिथ्यावादी, शान्त चित्त, वेद-वेदार्थ का मर्मज्ञ, योगमार्ग का अनुसंधाता, देवताओं का प्रिय (कर्मकाण्डी) इत्यादि सकल सद्गुणों से संपन्न व्यक्ति ही गुरु/आचार्य के रूप में स्वीकार करने योग्य है। मत्स्यपुराण (265.2-4) में आचार्य का लक्षण इस प्रकार कहा गया है-

सर्वावयवसंपूर्णो वेदमन्त्रविशारदः।
पुराणवेत्ता तत्त्वज्ञो दम्भलोभविवर्जितः।।
कृष्णसारमये देशे उत्पन्नश्च शुभाकृतिः।
शौचाचाररतो नित्यं पाखण्डकुलनिःस्पृहः।।
ऊहापोहार्थतत्त्वज्ञो वास्तुशास्त्रविशारदः।
आचार्यश्च भवेन्नित्यं सर्वदोषविवर्जितः।।

अर्थात् विकलांग न हो ऐसा जो वेद के मन्त्रों का ज्ञाता, पुराणों को जानने वाला, तत्त्ववेत्ता, ढोंग और लोभ रहित, भारत देश में जन्म लिया हुआ (यानि म्लेच्छ देश में जन्म नहीं लिया हो), देखने में सुन्दर (सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शुभ लक्षण वाला), नित्य ही शुद्धता-अशुद्धता का विवेक पूर्वक निश्चयकर पवित्रता आदि युक्त सदाचारी, पाखण्डी कुल के लोगों से किसी भी प्रकार के संबंध से रहित, ऊहापोह कर सकल शास्त्रों के रहस्यपूर्ण अर्थ का ज्ञाता, वास्तुशास्त्र का ज्ञाता और सकल दोष रहित व्यक्ति ही आचार्य के रूप में स्वीकार करने योग्य है।

3.4 जापक का लक्षण:-जब साधक स्वयं मन्त्र जपते हुये भी किसी अन्य का वरण कर जप कराना चाहता हो अथवा स्वयं एक मन्त्र को जपने में व्यस्त होने के कारण स्वकर्म/उपासना के उपयोगी अन्यमन्त्र का जप दूसरे से कराना चाहता हो अथवा किसी कारणवश स्वयं जप न कर

सके अथवा स्वयं को किसी मन्त्र को जपने का अधिकारी न मानता हो तब किसी जापक (जपनेवाले) का वरण कर लेना पड़ता है। अतः जापक का लक्षण जानना जरूरी है, जो कि पुरश्चरणदीपिका में बताया है-

जापकाश्च द्विजाश्शुद्धाः कुलीना ऋजवस्तथा।
स्नानसंध्यारता नित्यं शैचाचारपरायणाः।।
श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च वेदशास्त्रार्थकोविदाः।
अक्रोधनाः पुराणज्ञाः सततं ब्रह्मचारिणः।।
देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा।
इत्यादिगुणसंपन्ना जापका मन्त्रसिद्धिदाः।।

अर्थात् द्विज, शुद्ध, कुलीन, सरल, नित्य ही त्रिकाल स्नान पूर्वक सन्ध्या आदि कर्म निष्ठ, शुद्ध-अशुद्ध विषयक आचरण युक्त, श्रोत्रिय [**जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैः द्विज उच्यते।**
विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते।।

अर्थात् मातृ-पितृ कुलों से विशुद्ध ब्राह्मण कुल में जन्म होने से जो ब्राह्मण है, गर्भाधान से आरम्भ कर समय समय पर सब संस्कारों से संस्कारित है जो, वह द्विज कहा जाता है और विधि विधान से वेद आदि विद्या को प्राप्त कर लेने पर वह विप्र कहा जाता है। जिस व्यक्ति में ये तीनों ब्राह्मणत्व, द्विजत्व, विप्रत्व का संगम है उसी को श्रोत्रिय कहा जाता है।], सत्य बोलनेवाला, वेद आदि शास्त्रों सहित पुराणों का ज्ञाता, क्रोध न करनेवाला, अखण्ड ब्रह्मचारी, नित्य इष्टदेवता का ध्यान करनेवाला, सदा प्रसन्नचित्त रहनेवाला, इत्यादि सद्गुणों से संपन्न जापक ब्राह्मण ही मन्त्र को जपकर यजमान के लिये सर्व फल दिलाने वाला जापक होता है।

3.5 अनुष्ठान योग्य देश: शारदातिलक (2.138) में अनुष्ठान योग्य देश के बारे में बताया है कि-

पुण्यक्षेत्रं नदीतीरं गुहा पर्वतमस्तकम्।
तीर्थप्रदेशाः सिंधूनां संगमः पावनं वनं।।

उद्यानानि विविक्तानि बिल्वमूलं तटं गिरेः।
देवतायतनं कूलं समुद्रस्य निजं गृहं।।
साधनेषु प्रशस्यन्ते स्थानान्येतानि मन्त्रिणाम्।

अर्थात् पुण्यक्षेत्र, नदी के तट, गुफा, पर्वत की चोटी पर, तीर्थस्थान, नदियों के संगम स्थान, पवित्र वन, एकान्त (विशेषतः स्त्रियों के आवागमन रहित) बगीचा, बेल के पेड़ के नीचे, पहाड़ की तलहटी - ये मन्त्र के अनुष्ठान यानि कर्म और उपासना के लिये श्रेयस्कर हैं।

3.6 आसन विषयक विचार: व्यास स्मृति में कर्म व उपासना केलिये आसन तीन प्रकार के बताये हैं-

आसनं त्रिविधं तत्र चाद्यमास्तरणं स्मृतं।
देहसाध्यं स्वस्तिकादि देवार्थं तृतीयकम्।।

बिछानेवाले (कुशा, रेशम, सूती या ऊन का), शरीर के अंगों को एक विशेष रूप से स्थिर रखना (स्वस्तिक आदि योग आसन) और देवताओं केलिये विशेष आसन। साधक द्वारा बिछाके बैठने योग्य आसनों के बारे में व्यासस्मृति में ही कहा है-

कौशेयं कम्बलं चैव ह्यजिनं पट्टमेव च।
दारुजं तालपत्रं च आसनं परिकल्पयेत्।।

अर्थात् रेशम का बना हुआ वस्त्र, कम्बल, मृग आदि के चर्म, सूत से बना कपड़ा, वल्कल (पेड़ की छाल से बना) अथवा ताड़ के पेड़ के पत्तों से बना आसन श्रेष्ठ होता है।

3.7 माला विषयक विचार: तन्त्रसार में माला के विषय में कहा है कि-

रुद्राक्षशंखपद्माक्षपुत्रजीवकमौक्तिकैः,
स्फाटिकैर्मणिरत्नैश्च सौवर्णैर्विद्रुमैस्तथा,
राजतैः कुशमूलैश्च गृहस्थस्याक्षमालिका।।

अर्थात् साधक कर्म और उपासना में मन्त्रों को जपने केलिये रुद्राक्ष, शंख, कमल के दाने, पुत्रजीविका पेड़ का फल, मुक्तामणि, स्फटिकमणि, सोने की मणि, मूंगा की मणि, चांदी की मणि और कुशा

की जड़ से बनायी हुयी माला से जप कर सकते हैं। किन्तु गृहस्थ को गायत्री आदि मन्त्रों के नित्य जप करने केलिये रुद्राक्ष माला का ही उपयोग करना चाहिये। कालिका पुराण में कामना भेद से माला भेद की व्यवस्था इस प्रकार दी गयी है –

रुद्राक्षमालिका सूते जपेन स्वमनोरथान्।
पद्माक्षैर्विहिता माला शत्रूणां नाशिनी मता।।
कुशग्रन्थिमयी माला सर्वपापप्रणाशिनी।
पुत्रजीवफलैः क्लृप्ता कुरुते पुत्रसंपदम्।।
निर्मिता रूप्यमणिभिर्जपमालेप्सितप्रदा।
प्रवालैर्विहिता माला प्रयच्छेद्विपुलं धनम्।।
हिरण्मयी विरचिता माला कामान्प्रयच्छति।
सर्वैरेभिर्विरचिता माला स्यान्मुक्तये नृणाम्।।

अर्थात् सूती धागे से गुंथित रुद्राक्ष माला का उपयोग कर जपने से अपने सकल मनोरथ पूरे होते हैं। पद्माक्षों से निर्मित माला से शत्रुओं का नाश होता है। कुशाग्रन्थियों से निर्मित माला से समस्त पापों का नाश होता है। पुत्रजीविका पेड़ के फलों से निर्मित माला से पुत्र/सन्तान की प्राप्ति होगी। चांदी के दानों से निर्मित माला से वांछित फल प्राप्त होगा। प्रवालों से निर्मित माला से बहुत धन प्राप्त होगा। सोने के दानों से निर्मित माला से कामनायें पूरी होंगी। उक्त सब प्रकार की मणियों से निर्मित माला से मुक्ति मिलेगी (यानि मुक्ति का साधन ब्रह्मज्ञान प्राप्त होगा)।

माला को किस प्रकार के धागे से किस प्रकार बनाना चाहिये?

सनत्कुमारसंहिता में इस प्रश्न का जवाब इस प्रकार दिया है–

कार्पाससंभवं सूत्रं धर्मकामार्थमोक्षदम्।
तच्च विप्रेन्द्रकन्याभिर्निर्मितं च सुशोभनम्।।
शुक्लं रक्तं तथा कृष्णं पट्टसूत्रमथापि वा।
शान्तिवश्याभिचारेषु मोक्षैश्वर्यजपेषु च।।
शुक्लं रक्तं तथा पीतं कृष्णं वर्णेषु च क्रमात्।
सर्वेषामेव वर्णानां रक्तं सर्वेप्सितप्रदम्।।

त्रिगुणं त्रिगुणीकृत्य ग्रंथयेच्छिल्पशास्त्रत:।
एकैकं मातृकावर्णं सतारं प्रजपेन्सुधी:।।
मणिमादाय सूत्रेण ग्रन्थयेन्मध्यमध्यत:।
ब्रह्मग्रन्थिं विधायेत्थं मेरुं च ग्रन्थिसंयुतम्।।
ग्रन्थयित्वा पुरो मालां तत: संस्कारमाचरेत्।।

अर्थात् रूई से बनाया हुआ धागा अथवा पट्टसूत्र यानि सन का धागा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (चतुर्विध पुरुषार्थ) प्रदायक है। वह धागा श्रेष्ठ ब्राह्मण की कन्या (अथवा विप्र-ब्राह्मण और इन्द्र-क्षत्रिय की कन्या) द्वारा निर्मित हो तो बहुत अच्छा। वह सफेद, लाल या काले रंग का हो तो श्रेष्ठ होता है। विशेषत: सफेद रंग शान्ति कर्म केलिये, लाल रंग वश्य अभिचार आदि केलिये, पीला रंग मोक्ष केलिये और काला रंग ऐश्वर्य प्राप्ति केलिये श्रेष्ठ है। सामान्यत: सभी प्रकार की कामनाओं केलिये लाल रंग ही ठीक है। शिल्प शास्त्र में वर्णित प्रक्रिया से त्रिगुणित त्रिगुणित करके गूंथना चाहिये। प्रत्येक मणिका को गूंथते वक्त प्रणव युक्त अकार आदि वर्णों का जप करना चाहिये। धागे से मणि को बीचोबीच ग्रहण कर ब्रह्मगांठ लगाकर गांठ युक्त मेरु को बनायें, तत्पश्चात् माला को संस्कारित करें।

माला में मणिकाओं की संख्या कितनी होनी चहिये ?

गौतमीय संहिता में कामना भेद से जपमालामणिसंख्या के बारे में इस प्रकार कहा है-

पंचविंशतिभिर्मोक्षं त्रिंशद्भिर्धनसिद्धये।
सर्वार्था: सप्तविंशत्या पंचदश्यभिचारिके।।
पंचाशद्भि: काम्यसिद्धि: स्यात्तथा चतुरुत्तरै:।
अष्टोत्तरशतै: सर्वा सिद्धिरुक्ता मनीषिभि:।।

अर्थात् विद्वानों ने बताया है कि 25 मणिका मोक्ष केलिये, 30 मणिका धन प्राप्ति केलिये, 27 मणिका सकल फल प्राप्ति केलिये, 15 मणिका अभिचार कर्म केलिये, 54 मणिका काम्य सिद्धि केलिये और 108 मणिका सर्व सिद्धि केलिये उचित है।

माला फेरने में अंगुली का महत्त्व क्या है?

पुरश्चरणदीपिका में अंगुलियों का प्रयोग करने के बारे में कहा है कि–

अंगुष्ठं मोक्षदं विद्यात्तर्जनी शत्रुनाशिनी।
मध्यमा धनदा शान्तिकरी ह्येषा ह्यनामिका।।
कनिष्ठाऽऽकर्षणे शस्ता जपकर्मणि शोभने।
अंगुष्ठेन जपं जप्यमन्यैरंगुलिभिः सह।।

अर्थात् अंगूठे से फेरने का फल मोक्ष है, तर्जनी से फेरने का फल शत्रुनाश, मध्यमा से फेरने का फल धन प्राप्ति, अनामिका से फेरने का फल सर्व शान्ति और कनिष्ठिका से फेरने का फल आकर्षण सिद्धि है। वैशम्पायन संहिता में माला फेरने का विधान इस प्रकार बताया है–

अंगुष्ठमध्यमाभ्यां च चालयेन्मध्यमध्यतः।
तर्जन्या न स्पृशेदेनां मुक्तिदो गणनक्रमः।।

अर्थात् अंगूठा और मध्यमा अंगुलि से ही बीचोंबीच मणिकाओं को चलाना चहिये, यही माला की मणिकाओं की गणना का मुक्ति प्रदायक क्रम है। तर्जनी अंगुलि से माला का स्पर्श भी नहीं करना चाहिये।

कर माला का विचारः– यदि माला किसी कारणवश उपलब्ध न हो तो हाथ की अंगुलियों पर ही माला की भावना करके जप कर सकते हैं। इस विषय में पुरश्चरणदीपिका में कहा है कि–

अलाभे जपमालायाः करशाखासु पर्वभिः।
अनामिकाया यो मध्यस्तस्मादधः क्रमेण तु।।
मध्यांगुल्यग्रपर्वादिप्रादक्षिण्यक्रमेण तु।।
तर्जन्यादौ जपान्तश्च साक्षमाला करे स्थिता।

अर्थात् जपमाला उपलब्ध न होने पर करशाखा में विद्यमान पर्वों से जप करना चाहिये। कैसे? अनामिका अंगुलि के मध्य पर्व से शुरु कर नीचे की ओर से प्रदक्षिणा करने के क्रम से कनिष्ठिका के नीचे के पर्व से ऊपर की ओर गिनते हुये मध्यमा के ऊपर के पर्व पर जपते हुये तर्जनी अंगुलि के निचले पर्व तक जपें, फिर विपरीत क्रम से जपें अथवा सनत्कुमारसंहिता में कहे गये सरल तरीके से भी करमाला

कर सकते हैं। जो इस प्रकार है-

हृदये हस्तमारोप्य तिर्यक्कृत्वा करांगुलीः।
आच्छाद्य वाससा हस्तौ दक्षिणेन सदा जपेत्।।
तर्जनी मध्यमाऽनामा कनिष्ठा चेति ताः क्रमात्।
तिस्रोऽंगुल्यस्त्रिपर्वाणो मध्यमा चैक पर्विका।।

अर्थात् अपने हृदय के पास दाहिने हाथ को स्थापित कर अंगुलियों को थोड़ा अन्दर की ओर मोड़के कपड़े से ढक कर तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा के क्रम से प्रत्येक अंगुलि के तीनों पर्वों पर जप करें, किन्तु मध्यमा अंगुलि के ऊपर से दो पर्व को मेरु समझकर उस पर न जपें व न लांघें। दोनों पक्षों को चित्र -2 द्वारा स्पष्ट किया गया है।

पुरश्चरण दीपिका मत				सनत्कुमार मत			
कनिष्ठा	**अनामिका**	**मध्यमा**	**तर्जनी**	**कनिष्ठा**	**अनामिका**	**मध्यमा**	**तर्जनी**
5	6	7	8	8	9	x	1
4	1	x	9	7	10	x	2
3	2	x	10	6	5	4	3

चित्र -2

3.8 कर्तव्याकर्तव्यविषयकविचार : जप कैसे करना चाहिये और कैसे नहीं ? इस विषय पर अनेकों ग्रन्थों में विस्तृत विचार है। संक्षेप में कह सकते हैं कि जप तीन प्रकार से किया जाता है- वैखरी जप (निकटवर्ती व्यक्ति को सुनाई दे ऐसे उच्चारण करते हुये जपना), उपांशु जप (निकटवर्ती व्यक्ति को भी सुनाई न दे ऐसे उच्चारण करते हुये जपना - होंठ हिलते दिखाई देते हैं किन्तु कुछ भी सुनाई नहीं देता) और मानस जप, जिसका लक्षण योगीयाज्ञवल्क्यसंहिता (2.11) में इस प्रकार किया है-

जपस्याहं विधिं वक्ष्ये यथाकार्यं विधानतः।
न चंक्रमन्न प्रहसन्न पार्श्वमवलोकयन्।।

नापाश्रितो न जल्पंश्च न प्रावृत्तशिरस्तथा।
न पदा पादमाक्रम्य न चैव हि तथा करौ।।
नैवंविधं जपं कुर्यान्न च संश्रावयञ्जपेत्।
तिष्ठंश्चेद्वीक्षमाणोऽर्कमासीनः प्राङ्मुखो जपेत्।।
प्रागग्रेषु कुशेष्वेवमासीनश्चासने जपेत्।
जपस्त्वेवं हि कर्तव्य एकाग्रमनसापि च।।
धारयेन्मनसा मन्त्रान्न जिह्वोष्ठौ विचालयेत्।
न कम्पयेच्छिरो ग्रीवां दन्तान्नैव प्रकाशयेत्।।

अर्थात् मैं जप करने की विधि बताता हूं, यथाशक्ति विधि का पालन करें । घूमते हुये, हँसते हुये, इधर–उधर या अगल–बगल देखते हुये, गलत सहारा लेते हुये, बात करते हुये, सिर को ढके हुये, (पैरों को सामने फैलाके) पैर पर पैर लगाकर और हाथ पर हाथ धरकर जप न करें। दूसरों को सुनाते हुये, सिर व गर्दन आदि को हिलाते हुये और दान्तों को दिखाते हुये भी जप नहीं करना चाहिये। बैठकर जपना है तो पूर्वाभिमुख होकर सूर्य को देखते हुये (यानि सूर्य के सम्मुख आंख बन्द करके) पूर्व की ओर अग्रभाग हो ऐसे कुशा के आसन पर सुखासन, पद्मासन, आदि कोई भी अनायास जपकाल पर्यन्त बैठने स्वयोग्य आसन में बैठकर मन से मन्त्र को धारण कर जिह्वा या होंठ को हिलाये बिना जप करना चाहिये। किसी भी कर्म या उपासना में वाणी का संयम और ब्रह्मचर्य का पालन अत्यन्त आवश्यक है। जैसे कि पुरश्चरणदीपिका में कहा है–

स्त्रीशूद्रपतितव्रात्यनास्तिकोच्छिष्टभाषणम्।
असत्यभाषणं चैव कौटिल्यं च परित्यजेत्।।
सद्भिरपि न भाषेत जपहोमार्चनादिषु।
वाग्यतः कर्म निर्वर्त्य निःस्पृहो वर्त्तितादिषु।।
परस्त्रीं परनिन्दां च मनसापि विवर्जयेत्।
मैथुनं तत्कथालापं तद्गोष्ठीः परिवर्जयेत्।।

अर्थात् स्त्री, शूद्र, पतित, व्रात्य, नास्तिक और समाज से बहिष्कृत

के साथ ही नहीं बल्कि सत्पुरुषों के साथ भी जप, होम और अर्चना आदि काल में बातचीत नहीं करनी चाहिये तथा असत्य (झूठ), कुटिलता, परस्त्री चिन्तन और परनिन्दा को त्यागना चाहिये। इस प्रकार साधक वाणी के संयम आदि से कृत कर्म के इष्ट फल को निःस्पृह होकर अवश्य प्राप्त करेगा। उक्त के अलावा मैथुन, तत्सम्बन्धी वार्तालाप और तद्व्यसनियों का संग भी त्यागना होगा। अतः ब्रह्मचर्य के लक्षण और उसके अंगों को जानना जरूरी है, जिसके विषय में कहा गया है-

कायेन मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ।
सर्वत्र मैथुनत्यागो ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते।।
स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणं।
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च।।
एतन्मैथुनमष्टांगं प्रवदन्ति मनीषिणः।
एतेषां विपरीतन्तु ब्रह्मचर्यं निगद्यते।।

अर्थात् सदा और सर्वत्र किसी भी अवस्था में शरीर, वाणी और मन से मैथुन के त्याग को ब्रह्मचर्य कहते हैं। मैथुन के आठ अंग हैं- स्मरण करना, वर्णन करना, हंसी-मजाक करना, बारम्बार देखते रहना, एकान्त में बैठकर बातचीत करना, कसमें खाना, निश्चय करना और संभोग करना। इनके विपरीत आचरण को ब्रह्मचर्य कहते हैं।

3.9 भक्ष्याभक्ष्य विषयक विचार : किसी भी कर्म या उपासना के अनुष्ठान काल पर्यन्त सात्त्विक व सुपाच्य आहार ग्रहण करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि दूषित राजस या तामस भोजन से फल की हानि ही होगी। जैसे कि तन्त्रसार एवं गौतमीयसंहिता में कहा है-

उपासकश्च मन्त्री च भक्ष्याभक्ष्यं विचारयेत्।
अन्यथा भोजनाद्दोषात्सिद्धिहानिः प्रजायते।।
शतान्नं च समश्नीयान्मन्त्रसिद्धिसमीहया।
तस्मान्नित्यं प्रयत्नेन शतान्नाशी भवेन्नरः।।

अर्थात् उपासक और मन्त्र जापक को भक्ष्याभक्ष्य का विचार अवश्य करना चाहिये क्योंकि दोष युक्त भोजन से फल की हानि ही

होगी। इसलिये मन्त्र की सफलता का संकल्प करते हुये साधक नित्य ही शतान्न (यानि स्यांवां चावल का भात) को ही ग्रहण करें। शारदातिलक (2.140) में इस विषय पर कहते हैं-

भैक्ष्यं हविष्यं शाकानि विहितानि फलं पयः।
मूलं सक्तुर्यवोत्पन्नो भक्ष्याण्येतानि मन्त्रिणाम्।।

अर्थात् भिक्षा से प्राप्त, स्यांवां चावल का भात, व्रत में विहित सब्जियां, फल, दूध, कन्द-मूल, जौ के सत्तू को ही साधक ग्रहण करें।

3.10 भोजनग्रहणविधिः हाथ-पैर धोकर उत्तर अथवा पूर्व की ओर मुख करके आसन के ऊपर भोजन के लिये बैठें और अपने सामने की जमीन, पाटा, चौकी अथवा मेज पर थोड़ा जल हाथ में लेकर निम्न मन्त्र बोलते हुये छिड़कें-

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

1. **ॐ भूर्भुवःस्वः** - इस मंत्र से तीन बार आचमन करें।
2. **ॐ श्री शिवार्पणमस्तु** - भोजन को नमस्कार करते हुये दोनों हाथ जोड़कर इस मंत्र को बोलें।
3. **ॐ अस्माकं सर्वेषां च नित्यमस्त्वेतत्** - दोनों हाथ जोड़कर भगवान् से प्रार्थना करें।
4. **ॐ सत्येन त्वर्तेन त्वा परिषिंचामि** - दिन में इस मन्त्र को बोलते हुये दाहिने हाथ में जल लेकर भोजन पर छिड़कें। रात में इस मंत्र से करें - **ॐ ऋतं त्वा सत्येन त्वा परिषिंचामि।**
5. **ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।**
   ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।। (गी. 4.24)
   दाहिने हाथ में जल लेकर इस मंत्र को बोलते हुए थाली के चारों ओर गोलाकार में बायें से दाहिने तरफ जल छोड़ें।
6. **ॐ भूपतये स्वाहा। ॐ भुवनपतये स्वाहा। ॐ भूतानां पतये स्वाहा। ॐ धर्माय स्वाहा। ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा। ॐ यत्र क्वचन संस्थानां क्षुत्तृषोपहतात्मनाम्। भूतानां तृप्तयेऽक्ष्य्यमिदमस्तु यथासुखं स्वाहा।।** इन छः मंत्रों से छः ग्रास रोटी/भात थाली के

बाहर दाहिने तरफ ऊपर से नीचे की ओर एक सीध में थोड़े-थोड़े दूर में रखें।

7. **ऊँ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा** - जल से आचमन करें।

8. **ऊँ प्राणाय स्वाहा, ऊँ व्यानाय स्वाहा, ऊँ अपानाय स्वाहा, ऊँ समानाय स्वाहा, ऊँ उदानाय स्वाहा, ऊँ परमात्मने स्वाहा** - इन छः मंत्रों से छः बार रोटी/भात का ग्रास मुख में डालकर निगलें, दांतों से न चबायें। यह छान्दोग्योपनिषद् 5.19-23 में उक्त श्रौत क्रम है, किन्तु लोकप्रसिद्ध स्मार्तक्रम (ब्रह्म संहिता आदि के अनुसार) ऐसा है- **प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा** और **समानाय स्वाहा**।

9. अब भोजन करना है लेकिन ध्यान दें-पेट में परमात्मा ही वैश्वानर अग्नि के रूप में रहकर भोजन को पचाता है इसलिये भोजन को यज्ञ रूप देना है, जिसे प्राणाग्निहोत्र कहते हैं। कैसे? आप मुख में जब भोजन डालोगे तब अपने इष्ट देवता के नाम का चतुर्थ्यन्त के साथ स्वाहा जोड़कर मन ही मन उच्चारण करते हुये भोजन करें। जैसे- शैव हो तो '**ॐ नमः शिवाय स्वाहा**', वैष्णव हो तो '**ॐ विष्णवे नमः स्वाहा**', शाक्त हो तो '**ॐ श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः स्वाहा**', पढ़ाई में सफलता केलिये '**ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः स्वाहा**', धन प्रप्ति केलिये '**ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा**' इत्यादि। बातचीत न करें, मौन रहें।

10. **ऊँ अमृतापिधानमसि स्वाहा**-आचमन करें।

11. भोजन समाप्ति के बाद - '**ऊँ श्री रुद्रार्पणमस्तु**' तथा

ऊँ रौरवे पुण्य निलये पद्मार्बुदनिवासिनाम्।
आर्तीनामुदकं दत्तमक्ष्य्यमुपतिष्ठतु ।।

इन दो मंत्रों को बोलकर थाली में जल छोड़ें।

12. **हरिः ऊँ तत्सत्** - कहें। तत्पश्चात् उठकर हाथ-पैर धोवें और गीले हाथों से आँखें पोछें और पेट पर दाहिने हाथ को घड़िनुमा फेरते हुए अथवा दाहिने हाथ से स्पर्श करके इस मंत्र को बोलें -

अगस्त्यं कुम्भकर्णं च शनिं च वडवानलं।
आहारपरिपाकार्थं स्मरेद् भीमं च पंचमं।।
आतापी मारितो येन वातापी च निपातित:।
समुद्र: शोषितो येन स मेऽगस्त्य: प्रसीदतु।।

तत्पश्चात् शवासन में लेटकर स्वाभाविक 8 श्वास गिनें फिर दाहिने करवट में 16 और बायें करवट में 32 श्वास गिनें। उसके बाद उठकर अपने काम में लगें। रात्रि भोजन के बाद 100 कदम घूमकर अपने काम में लगें।।

3.11 शयन कैसे करें?

रात्रि सुयोग्य बिस्तर पर सोने के भी कुछ नियम है, पशु जैसे दिशा आदि का विचार किये विना सोना नहीं चाहिये। किन्तु निम्न बातों पर ध्यान दें-

स्वगृहे प्राक्शिरा: शेते श्वाशुरे दक्षिणाशिर:।
प्रवासे पश्चिमाशिर: न कदाचिदुदकशिरा:।।

अर्थात् अपने घर या कुटिया में सो रहे हों तो पूर्व दिशा में सिर रखके सोवें, ससुराल में हो तो दक्षिण दिशा में सिर रखके सोवें और यात्रा में जब धर्मशाला आदि में सो रहे हों तो पश्चिम दिशा में सिर रखके सोवें। लेकिन कभी भी किसी भी दशा में उत्तर दिशा में सिर रखके न सोवें। सोने से पूर्व बिस्तर पर बैठे अथवा लेटे निम्न चिन्तन करें-

रात्रिसूक्तं जपेत्स्मृत्वा देवांश्च सुखशायिन:।
नमस्कृत्वाऽव्ययं विष्णुं समाधिस्थं स्वपेन्निशि।।

अर्थात् रात्रिसूक्त का मानस पाठ कर सुखशायी देव आदि पांच को नमस्कार करके समाधि में स्थित अव्यय भगवान् विष्णु को स्मरण कर सोवें। वे देव आदि पांच सुखशायी ये हैं-

अगस्त्यो माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबल:।
कपिलो मुनिरास्तीक: पंचैते सुखशायिन:।।

अर्थात् महामुनि अगस्त्य, वासुदेव श्रीकृष्ण, महाबली श्रीमुचुकुन्द, कपिल मुनि और महर्षि आस्तीक - ये पांच सुखशायी हैं। जिन लोगों को अशुभ स्वप्न आते हों अथवा भूत प्रेत आदि का भय हो वे निम्न विधि का पालन करें-

मांगल्यं पूर्णकुम्भं च शिरः स्थाने निधाय च।
वैदिकैर्गारुडैर्मन्त्रै रक्षां कृत्वा स्वपेत्ततः।।

अर्थात् सकल मंगल चिह्नों से युक्त जल अथवा अनाज से भरा हुआ घड़ा अथवा गरुड़ शिला सिर के पास रखके वेद में बताये गये गरुड़ देवता के मन्त्र अथवा अपने इष्ट देवता का कवच पाठ करने के पश्चात् सोवें।

3.12 जप के बाद कर्तव्य विषयक विचारः

उपासना एवं कर्म के अंग भूत मन्त्र के जप की पूर्ण संख्या में से एक निश्चित संख्या का नित्य जप करना होता है। नित्य ही निश्चित संख्या का जप करने के बाद क्या करना चाहिये, इस पर तन्त्रसार में कहा है कि-

जपान्ते प्रत्यहं मन्त्री होमयेत्तद्दशांशतः।
तर्पणं चाभिषेकं च तत्तद्दशांशतो मुने।।
प्रत्यहं भोजयेद्विप्रान्न्यूनाधिकप्रशान्तये।
अथवा सर्वपूर्तौ च होमादिकमथाचरेत्।।

अर्थात् जप के अन्त में प्रति दिन दशांश होम, उसका दशांश तर्पण और तर्पण के बराबर अभिषेक यानि मार्जन करना चाहिये। तत्पश्चात् न्यूनाधिक दोष प्रशान्ति केलिये तर्पण के दशांश संख्या ब्राह्मणों को भोजन खिलायें। अथवा संपूर्ण जप संख्या को जपने के बाद अन्त में होम आदि कर सकते हैं। लेकिन जो साधक प्रतिदिन एवं अन्त में भी हवन आदि कार्य नहीं कर सकता हो तो वह जप संख्या को बढ़ाकर भी उनकी आपूर्ति कर सकता है, जैसे कि सनत्कुमारसंहिता में कहा है-

यद्यदंगं भवेद्भग्नं तत्संख्या द्विगुणो जपः।
होमाभावे जपः कार्यो होमसंख्याचतुर्गुणः।।
विप्राणां क्षत्रियाणां च रससंख्यागुणः स्मृतः।
वैश्यानां वसुसंख्याकमेषां स्त्रीणामयं विधिः।।

अर्थात् किसी भी कारणवश जो-जो अंग भंग यानि नष्ट हो जाते हैं उनके दो गुणा जप करें और होम न कर सके तो उनकी होम संख्या का चार गुणा ब्राह्मण को, क्षत्रिय को छः गुणा, वैश्य को आठ गुणा जप करना चहिये। ब्राह्मण आदि की स्त्रियां जप कर रही हों तो उन्हें भी उक्त नियम का ही पालन करना होगा।

(उपक्रमप्रकरण भाग-2)

4. कर्म/उपासना में प्रयुक्त देवता आदि विषयक विचार:-

4.1 देवताविषयक विचार:

प्रत्येक युग में जन्म लेनेवाले जीवों के कर्म और संस्कार भिन्न-भिन्न होते हैं, इसलिये प्रत्येक युग में जीवों के आराध्य प्रमुख देवता अलग-अलग होते हैं। अत: **युगभेद** से देवता भेद के बारे में मत्स्य पुराण में कहा है-

ब्रह्मा कृतयुगे देवस्त्रेतायां भगवान् रवि:।
द्वापरे भगवान् विष्णु: कलौ देवो महेश्वर:।।

अर्थात् सत्ययुग में ब्रह्माजी, त्रेतायुग में सूर्यभगवान्, द्वापरयुग में भगवान् विष्णु और कलियुग में शंकर भगवान् ही प्रमुख आराध्य देवता हैं। **कामनाभेद** के अनुसार देवभेद के बारे में स्कन्दपुराण में कहा है-

आरोग्यं भास्करादिच्छेद्धनमिच्छेद्धुताशनात्।
ज्ञानं च शंकरादिच्छेन्मुक्तिमिच्छेज्जनार्दनात्।। (5.3.153.23)

अर्थात् आरोग्यकी कामना भगवान् सूर्य से, धन की कामना अग्नि भगवान् से (महाभारत के अनुसार धन की कामना कुबेर से), ज्ञान की कामना शंकर भगवान् से और मुक्ति की कामना भगवान् विष्णु से करनी चाहिये। देवताओं के **पूजा अर्चना काल** के बारे में स्कन्दपुराण (1.2.41.81) में कहा है-

प्रातर्मध्यन्दिने सायं देवपूजां समाचरेत्।
अशक्तौ विस्तरेणैव प्रात: संपूज्य दैवतम्।
मध्याह्ने चैव सायं च पुष्पांजलिमपि क्षिपेत्।।

नित्य ही तीनों काल-प्रात:, मध्याह्न और सायंकाल में विस्तृत देवपूजा करनी चाहिये। लेकिन यदि असमर्थ हैं तो प्रात:काल में विस्तृत पूजा करके मध्याह्न और सायंकाल में केवल पुष्पांजलि अर्पित कर सकते हैं। **देवता की मूर्ति/प्रतिमा** के विषय में मत्स्यपुराण में कहा गया है-

सौवर्णी राजता वापि ताम्री रत्नमयी तथा।
शैली दारुमयी वापि लोहसंघमयी तथा।। (2.58.20)

अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिं यावदेव तु।
गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः।।

अर्थात् सोना, चांदी, तांबा, माणिक्य आदि रत्न, स्फटिक आदि पत्थर, लकड़ी अथवा पंचलौह से निर्मित यजमान के अपने अंगूठे के बराबर (लगभग 1 इन्च) से लेकर एक वितस्ति (लगभग 9 इन्च) परिमाण वाली प्रतिमा/मूर्ति ही घर में होनी चाहिये, इससे अधिक बड़ी मूर्ति रखने का उपदेश विद्वान् लोग नहीं देते हैं। **देवतापूजोपचार** के विषय में परम्परा के अनुसार 64 उपचार होते हैं जिनके मन्त्र सहित प्रयोग को आगे विस्तृत पूजापद्धति प्रकरण में दर्शाया गया है। लेकिन अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार साधक को 16 अथवा 10 अथवा 5 उपचारों से पूजा अवश्य करनी चाहिये। वे कौन कौन हैं? प्रपंचसार में उनकी गणना इस प्रकार की है –

आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च।।
सुगन्धिसुमनोधूप-दीप-नैवेद्यवन्दनम् ।
प्रयोजयेदर्चनायामुपचारांश्च षोडश।।
अर्घ्य-पाद्याचमन-मधुपर्काचमनान्यपि ।
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारा दश क्रमात्।।
गन्धादयो नैवेद्यान्ताः पूजाः पंचोपचारिकाः।
उपचारैर्यथाशक्ति देवतामन्वहं यजेत्।।

अर्थात् 16 उपचार क्रम से इस प्रकार हैं– 1. स्वागत (आवाहन), 2. आसन, 3. पाद्य, 4. अर्घ्य, 5. आचमन, 6. मधुपर्क, 7. पुनराचमन, 8. स्नान, 9. वस्त्र, 10. यज्ञोपवीत सहित आभरण, 11. सुगन्धीद्रव्य, 12. सुमनः (पुष्प), 13. धूप, 14. दीप, 15. नैवेद्य और 16. वन्दना (नमस्कार)।

कुछ अन्य ग्रन्थों में मधुपर्क और पुनराचमन को ग्रहण न करके अन्त में (यानि नमस्कार के बाद) प्रदक्षिणा और उद्वासन को ग्रहण किया है।

दस उपचार इस प्रकार है– 1. पाद्य, 2. अर्घ्य, 3. आचमन, 4. मधुपर्क, 5. पुनराचमन, 6. सुगन्धीद्रव्य, 7. सुमनः (पुष्प), 8. धूप, 9. दीप और 10. नैवेद्य। इसी प्रकार **पांच** उपचारों का क्रम इस प्रकार है– 1. गन्ध, 2. सुमनः (पुष्प), 3. धूप, 4. दीप और 5. नैवेद्य। साधक का कर्तव्य है कि यथाशक्ति उपचारों से देवता की पूजा करे। इन उपचारों के अन्त में कर्म गत अंग च्युति रूपी दोष निवृत्ति पूर्वक कर्म की साफल्यता केलिये फल सहित दक्षिणा को अवश्य अर्पण करे। किन्तु वैदिक परम्परा के अनुसार कर्मप्रदीप नामक ग्रन्थ में षोडशोपचार में थोड़ा फर्क करके कहा है–

आवाहनमासनं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्धमाल्यान्यनुक्रमात्।।
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा।
पुष्पांजलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश।।

अर्थात् आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, पुष्पांजलि – ये 16 उपचार कहे गये हैं। प्रत्येक देवता के 16 उपचारों के वैदिक/पौराणिक /आगमिक मन्त्र अलग–अलग होते हैं (जैसे कि हमारे प्रकाशन **शिवपूजापद्धतिप्रकाश** में शिवजी के वैदिक/पौराणिक/आगमिक मन्त्रों को दर्शाया है) किन्तु सबको अलग–अलग याद करना सर्व सामान्य केलिये कठिन है, इसलिये शास्त्रकारों ने विकल्प दिया है कि पुरुषसूक्त (देव हो तो)अथवा श्रीसूक्त (देवी हो तो) से भी षोडश उपचार पूजन कर सकते हैं। इनके अलावा राजोपचार होते हैं जिनके बारे में कर्मप्रदीप में कहा गया है कि–

ततः पंचामृताभ्यंगमंगस्योद्वर्त्तनं तथा।
मधुपर्कं परिमलद्रव्याणि विविधानि च।।
पादुकान्दोलनादर्शं व्यजनं छत्रचामरे।
वाद्यार्तिक्यं नृत्यगीतशय्या राजोपचारकाः।।

अर्थात् उक्त 5/10/16 उपचारों से पूजा करने के बाद इन

राजोपचारों से भी पूजा करनी चाहिये- पंचामृत, अभ्यंग, उद्वर्त्तन, मधुपर्क, नाना प्रकार के सुगन्धिद्रव्य, पादुका, दोलन (झुलाना), दर्पण दिखाना, पंखा, चंवर, चामर, वाद्य, नृत्य, संगीत, आरती और शय्या अर्पण (सुलाना)।

4.2 सामग्री आदि साधन विषयक विचार:

स्वस्नान, पंचगव्य, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, पंचामृत, देवतास्नान, उद्वर्तन, सौभाग्यद्रव्य, कौतुकद्रव्य, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल में डालने की सामग्री/पदार्थ के विषय में साधक को जानना जरूरी है। अत: अब सामग्री विषयक विचार को विभिन्न शास्त्रों के आधार पर वर्णन किया जा रहा है। साधक द्वारा अपने स्नान केलिये स्नानपात्र में डालने की **स्वस्नानपात्रसामग्री**-(मन्त्रतन्त्रप्रकाश के अनुसार)

अक्षता गन्धपुष्पाणि स्नानपात्रे तथा त्रयम्।
द्रव्याभावे प्रदातव्याः क्षालितास्तण्डुलाः शुभाः।।

अर्थात् अक्षत, सुगन्धद्रव्य और फूल - इन तीन पदार्थों को साधक अपने स्नान पात्र में डाले। यदि सामग्री न हो तो धोये हुये अच्छे चावल (थोड़ा) डालकर नदी आदि का आवाहन आदि करके इष्ट देवता के नाम व लीला आदि को स्मरण करते हुये स्नान करना चाहिये। **पंचगव्यसामग्री**- विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार-

गोमूत्रं भागतश्चार्धं शकृत्क्षीरस्य च त्रयम्।
द्वयं दध्नो घृतस्यैकमेकश्च कुशवारि च।।

अर्थात् जितनी मात्रा कुशा से पवित्र किया गया जल लेंगे उतना ही घी, उसका दो गुना दही, उसका तीन गुना दूध, उसकी आधी मात्रा गोबर और आधी मात्रा ही गोमूत्र को अलग-अलग ग्रहण करके आगे बताये गये मन्त्रों का उच्चारण करते हुये मिलायें। (भविष्यपुराण के अनुसार)-

पंचगव्यं पवित्रन्तु आहरेत्ताम्रभाजने।
गायत्र्या चैव गोमूत्रं गन्धद्वारेण गोमयं।।
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राव्णेति वै दधि।
तेजोऽसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य त्वा कुशोदकम्।। (135.31)

अर्थात् तांबे के बर्तन में ही पंचगव्य का मिश्रण करना चाहिये। गायत्री मन्त्र से गोमूत्र को, गन्धद्वारा इत्यादि मन्त्र से गोबर को, आप्यायस्व इत्यादि मन्त्र से दूध को, दधिक्राव्णा इत्यादि मन्त्र से दही को, तेजोऽसि शुक्रं इत्यादि मन्त्र से घी को और देवस्य त्वा इत्यादि मन्त्र से जल को पात्र में डालकर मिलावें (पृ. 75 देखें)।

पाद्यपात्रसामग्री– (शारदातिलक के अनुसार)

दूर्वां च विष्णुक्रान्तां च श्यामाकं पद्ममेव च।
पाद्यांगानि च चत्वारि कथितानि समासतः।।(17.73)

अर्थात् संक्षेप से कहा गया है कि दूर्वा, विष्णुक्रान्ता, स्यांवा चावल और कमल (की पंखुड़ि अथवा गुलाब की पंखुड़ि)– इन चार पदार्थों को पाद्य पात्र में डालना चाहिये।

अर्घ्यपात्रसामग्री– (शारदातिलक के अनुसार)

गन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपैः।
सदूर्वैः सर्वदेवानामेतदर्घ्यमुदीरितम्।।(14.141)

अर्थात् सुगन्धीद्रव्य, पुष्प, अक्षत, जौ, कुशा का अग्रभाग, तिल, सरसों और दूर्वा – इन आठ पदार्थों को सभी देवताओं के अर्घ्य की सामग्री कहा गया है। मतान्तर में भी 8 पदार्थ ही माने गये हैं, लेकिन् कुछ भेद है। जैसे कि भविष्य पुराण में कहा गया है–

आपः क्षीरं कुशाग्राणि दध्यक्षततिलास्तथा।
यवाः सर्षपाश्चैव अर्घ्योऽष्टांग प्रकीर्तितः।।(163.37)

अर्थात् जल, दूध, कुशा के अग्रभाग, दही, अक्षत, तिल, जौ और सरसों – इन आठ पदार्थों को अर्घ्य की सामग्री कहा गया है।

आचमनीयपात्रसामग्री– (भविष्यपुराण के अनुसार)

कर्पूरमगरुं पुष्पं दद्याज्जातीफलं मुने।
लवंगमपि कंकोलं शस्तमाचमनीयके।।(17.35)

अर्थात् कपूर (खाने योग्य भीमसैनी कपूर), अगरु, पुष्प, जातीफल, लवंग और कंकोल वृक्ष के फलों से निर्मित गन्धद्रव्य ही आचमनीय जल में संमिश्रण करने केलिये विहित है।

मधुपर्कसामग्री- (विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार)

सुधाणुना ततः कुर्यान्मधुपर्कं मुखाम्बुजे।
आज्यं दधिमधून्मिश्रमेतदुक्तं मनीषिभिः।।

अर्थात् कपूर (खाने योग्य भीमसैनी कपूर) के साथ घी, दही और शहद को मिश्रित कर मुख कमल में अर्पण करने योग्य मधुपर्क को तैयार करने का विधान विद्वानों द्वारा कहा गया है।

पंचामृतसामग्री- (भविष्यपुराण के अनुसार)

गव्यमाज्यं दधि क्षीरं माक्षिकं शर्करान्वितम्।
एकत्र मिलितं ज्ञेयं दिव्यं पंचामृतं परं।। (154.2)

अर्थात् गौ का ही घी, दही, दूध, शहद और गुड़ (चीनी)- इन पांच पदार्थों को एक पात्र में मिश्रित करने पर उसे श्रेष्ठ व दिव्य पंचामृत जानना चाहिये।

देवतास्नानसामग्री- (विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार)

शुद्धोदकैः स्नायादतः गन्धाद्भिः कारयेत्स्नानम्।

अर्थात् पहले शुद्ध जल से स्नान कराके फिर सुगन्धिद्रव्यों से युक्त जल से स्नान करायें।

उद्वर्तनसामग्री- (विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार)

रजनी सहदेवी च शिरीषं लक्ष्मणापि च।
सहभद्रा कुशाग्राणी उद्वर्तनमिहोच्यते।।

अर्थात् हल्दी, कुंकुम, शीशम का फूल, लक्ष्मणा का फूल, चन्दन और कुशा के अग्रभाग से निर्मित द्रव्य को उद्वर्तन कहते हैं।

सौभाग्यद्रव्य की सामग्री- (विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार)

हरिद्रा कुंकुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम्।
कज्जलं कण्ठसूत्रादि सौभाग्यद्रव्यमुच्यते।।

अर्थात् हल्दी, कुंकुम, सिन्दूर आदि सहित काजल, यज्ञोपवीत/मंगलसूत्र आदि को सौभाग्यद्रव्य कहते हैं।

कौतुकद्रव्य की सामग्री- (भविष्यपुराण के अनुसार)

दूर्वा यवांकुराश्चैव ह्रीवेरं चूतपल्लवाः,

हरिद्राद्वयसिद्धार्थशिखिपत्रोरगत्वचः,

कंकणौषधयश्चैव कौतुकाख्या दश स्मृताः।

अर्थात् दूर्वा, जौ के अंकुर, ह्रीवेर नामक पेड़ के फूलों से निर्मित सुगन्धि द्रव्य, आम के पत्ते, दोनों प्रकार की हल्दी, मोर पंख, सांप की केचुली, सरसों और कलगी- इन दस पदार्थों को कौतुक नामक द्रव्य कहते हैं।

गन्धानुलेपनविचार व सामग्री- (कालिकापुराण के अनुसार)

चूर्णीकृतो वा घृष्टो वा दाहकर्षित एव वा।

रसः संमर्दजो वापि प्राण्यंगोद्भव एव वा।।

गन्धः पंचविधः प्रोक्तो देवानां प्रीतिदायकः।।

अर्थात् चूर्ण किया गया, घर्षण से निर्मित, दाहकर्षित, संमर्दन से जन्य रस और प्राणी के अंग से उत्पन्न - देवताओं को प्रसन्न करने वाले ये पांच प्रकार के गन्ध होते हैं। प्रत्येक प्रकार के गन्ध का विवरण कालिकापुराण के अनुसार इस प्रकार है-

गन्धचूर्णं गन्धपत्रचूर्णं सुमनसां तथा।

प्रशस्तगन्ध उक्तानि पत्रचूर्णानि यानि च।।

तानि गन्धाह्वयानि स्युः स गन्धः प्रथमः स्मृतः।

घृष्टो मलयजो गन्धः सरलश्च नमेरुणा।

अगरुप्रभृतिश्चापि यस्य पंकः प्रदीयते।।

घृष्ट्वा स घृष्टो गन्धोऽयं द्वितीयः प्रकीर्तितः।

देवदार्वगरु ब्रह्मसारसालान्तचन्दनाः।।

प्रियादीनां च यो दग्ध्वा गृह्यते दाहजो रसः।

स दाहकर्षितो गन्धस्तृतीयः प्रकीर्तितः।।

स गन्धः कारवी बिल्वं गन्धिनी तिलकं तथा।

प्रभृतीनां रसो योऽसौ निष्पीड्य परिगृह्यते।।

स संमर्दोद्भवा गन्धः संमर्दज इतीर्यते।

मृगनाभिसमुद्भूतस्तत्कोशोद्भव एव च।।

गन्धः प्राण्यंगजः प्रोक्तो मोददः स्वर्गवासिनाम्।
सर्वेषु गन्धजातेषु प्रशस्तो मलयोद्भवः।।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दद्यान्मलयजं सदा।

अर्थात् काली अगरु की लकड़ी का चूर्ण, काली अगरु के पत्तों का चूर्ण, सुगन्धित पुष्पों का चूर्ण तथा अन्य जो जो प्रशस्त गन्धवाले पत्तों के चूर्ण हैं वे प्रथम **चूर्णीकृत** गन्ध नाम से स्मृत हैं। चन्दन अथवा देवपुन्नाग के साथ चीड़ वृक्ष अथवा अगरु आदि की लकड़ी से जो पानी के साथ घिस-घिस कर तैयार किया गया लेप है, जिसे दूसरों को अपने शरीर में लगाने केलिये भी दिया जाता है उसे **घृष्ट** नामक दूसरा गन्ध कहा गया है। देवदारु, अगरु, पारस, पीपल, चन्दन के धड़ आदि प्रमुख अंगों को जलाकर जो रस (यानि तेल) ग्रहण किया जाता है उसे तीसरा **दाहकर्षित** गन्ध नाम से कहा जाता है। वह गन्ध जो सोंफ, बेल, तालीसपत्र, कचूरा, तिलक नाम के वृक्ष, इत्यादि सुगन्धि पेड़-पौधों के अंगों को कूटकर निचोड़ के रस निकाला जावे उस निचोड़ने पर उत्पन्न रस को चौथा **संमर्दज** नामक गन्ध कहा जाता है। स्वर्ग वासियों को भी आनन्दित करनेवाला मृग की नाभि से उत्पन्न या उसके कोश से उत्पन्न कस्तूरी आदि गन्ध पांचवां **प्राण्यंगज** गन्ध नाम से कहा गया है। इनमें से चन्दन का चूर्ण अथवा लेप ही सर्व श्रेष्ठ है इसलिये पूरा प्रयास कर के सदा पूजा/अर्चना/ उपासना में चन्दन का ही प्रयोग करें। लेकिन शारदातिलक (4.79-82) में पंचगन्ध की अपेक्षा अष्टगन्ध का विधान करते हुये कहा है कि-

गन्धाष्टकं तत्त्रिविधं शक्तिविष्णुशिवात्मकम्।
चन्दनागरुकर्पूरचौरकुंकुमरोचनाः ।।
जटामांसीकपियुताः शक्तेर्गन्धाष्टकं विदुः।
चन्दनागरुह्रीवेरकुष्ठकुंकुमसंव्यकाः ।।
जटामांसी मुरमिति विष्णोर्गन्धाष्टकं विदुः।
चन्दनागरुकर्पूरतमालजलकुंकुमम् ।।
कुशीतं कुष्ठसंयुक्तं शैवं गन्धाष्टकं विदुः।।

अर्थात् शक्ति, विष्णु और शिव नाम से अष्टगन्ध तीन प्रकार के होते हैं, जिनकी सामग्री इस प्रकार है–

1. **शक्ति नामक अष्टगन्ध** :– चन्दन, अगरु, कपूर, कचूर, कुंकुम, गोरोचन, जटामांसी और रक्तचन्दन।
2. **विष्णु नामक अष्टगन्ध** :– चन्दन, अगरु, ह्रीवेर, गन्धक, कुंकुम, उशीर, जटामांसी और कटहल का बीज।
3. **शिव नामक अष्टगन्ध** :– चन्दन, अगरु, कपूर, तमाल, खस, कुंकुम, कुशीत और गन्धक।

गन्ध के अर्पण में अंगुली विचार: भविष्यपुराण में दूसरे को गन्ध अर्पण करने व स्वयं पर गन्ध लगा लेने केलिये अलग–अलग अंगुलियों का विधान इस प्रकार किया है–

अनामिक्या च देवस्य ऋषीणां च तथैव च।
गन्धानुलेपनं कार्यं प्रयत्नेन विशेषतः।।
पितृणामर्पयेद्गन्धं तर्जन्या च सदैव हि।
तथैव मध्यमांगुल्या धार्यो गन्धो स्वयं बुधैः।।

अर्थात् समस्त देवी–देवताओं को और ऋषियों (सन्त–महात्माओं) को बिना गलती किये अनामिका अंगुलि से ही गन्धानुलेपन करना चाहिये, पितरों को सदा तर्जनी अंगुलि से अर्पण करें और स्वयं पर मध्यमा अंगुलि से धारण करें।

पुष्पभेद पर विचार :– (शारदातिलक 4.100–105 के अनुसार)

कमले करवीरे द्वे कुमुदे तुलसीद्वयं।
जातीद्वयं केतकी द्वे कह्लारं चम्पकोत्पले।।
कुन्दमन्दारपुन्नागपाटलानागचम्पकम्।
आरग्वधं कर्णिकारं पारन्ती नवमालिका।।
सौगन्धिकं सकोरण्टं पलाशाशोकमल्लिकाः।
धत्तूरं सर्जकं बिल्वमर्जुनं मुनिपत्रकम्।।
अन्यानपि सुगन्धीनि पत्रपुष्पाणि देशिकैः।
उपदिष्टानि पूजायामाददीत विचक्षणः।।

मलिनं भूमिसंस्पृष्टं कृमिकेशादिदूषितम्।
अंगस्पृष्टं समाघ्रातं त्यजेत्पर्युषितं गुरुः।।

आचार्यों के द्वारा किये गये विधान के अनुसार दो कमल, दो कनेर, दो सफेद कमल (जो रात में चन्द्रमा की किरण से खिलते हैं), दो तुलसी की मंजीर, जायफल के पेड़ के दो फूल, दो केतकी, कह्लार, चम्पा/चमेली, नीलकमल/ब्रह्मकमल, मोतिया पुष्प (कुन्द), मदार, शिवलिंगी, लाल लोध्रा/पादर का फूल, नागकेसर, आरग्वध, कनियार/अमलतास, पारन्ती, नौ परतोंवाला मोगरा, कोरण्ट, ढाक, अशोक, साधारण मोगरा, धतूर, साल, बेल के पत्ते, अर्जुन, मुनिपत्रक नाम के फूल और अन्य सब प्रकार के सुगन्धी पुष्पों और श्रेष्ठ पत्तों को पूजा में प्रयोग करना चाहिये। लेकिन मलिन, जमीन पर पड़ा हुआ, कीड़े से युक्त या छिद्र किया हुआ, केश आदि अपवित्र वस्तु से युक्त पत्र व पुष्प का त्याग करना चाहिये।

देवता विशेष केलिये वर्जित पुष्प आदि के विषय में मन्त्रमहोदधि (32.86-89) में इस प्रकार विधान किया है-

अक्षतानर्कधत्तूरौ विष्णौ नैवार्पयेत्सुधीः।
बन्धूकं केतकीं कुन्दं केशरं कुटजं जपां।।
शंकरे नार्पयेविद्वान्मालतीं यूथिकामपि।
शक्तौ दूर्वार्कमन्दारान्मालूरं तगरं रवौ।।
विनायके तु तुलसीं नार्पयेज्जातुचिद्बुधः।।
पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम्।
यथोत्पन्नं तथा देयं बिल्वपत्रमधोमुखम्।।

अर्थात् अक्षत और आक व धतूरे का फूल व पत्ते विष्णु भगवान को अर्पण न करें। बन्धूक, केतकी, कुन्द (मोतिया), बकुल के पेड़ का फूल, अगस्त्य पेड़ का फूल, जपा कुसुम, सफेद चमेली और जूही/बेला/लाल चमेली के फूल – इन्हें शंकर भगवान को अर्पण न करें। दूर्वा और आक व मदार के फूल या पत्ते देवी को अर्पण न करें। कैथ का फल/बेल का फल या पत्ते सूर्य भगवान को अर्पण न करें। भगवान

गणेश को तुलसी का अर्पण कभी नहीं करना चाहिये। फूल या पत्ते सदा सीधा चढायें यानि जैसा पैदा होते हैं वैसे ही, किन्तु बेल के पत्तों को तो उल्टा रख कर ही चढ़ाना चाहिये।

धूप की सामग्री :- तन्त्रसार में कहा है कि-

गुग्गुलुः सरलं दारु पत्रं मलयसंभवम्।
ह्रीवेरमगरुं कुष्ठगुडं सर्जरसं घनम्।।
हरीतकीं नखीं लाक्षां जटामांसीं च शैलजम्।
षोडशांगं विदुर्धूपं दैवे पित्र्ये च कर्मणि।।

अर्थात् कर्मकाण्डी जानते हैं कि- गुग्गल, देवदारु, हल्दी, तेजपत्ता, चन्दन, ह्रीवेर, अगरु, गन्धक, गुड़, साल, अभ्रक, हरड़, बबूल, लाक्षा, जटामांसी और शिलाजित - इन सोलह पदार्थों से बनायी गयी धूप को देव व पितृ कर्म में प्रयोग करना चाहिये।

दीप विषयक विचार :-शारदातिलक (4.107-108) में कहा है कि-

वर्त्या कर्पूरगर्भिण्या सर्पिषा तिलजेन वा।
आरोप्य दर्शयेद्दीपानुच्चैः सौरभशालिनः।।

अर्थात् रुई से बनी व कपूर से युक्त बत्ती को मिट्टी से बने दीपक में सरसों अथवा तिल के तेल में रखकर चारों तरफ प्रकाश फैल सके ऐसे उच्च स्थान पर स्थापित कर देवता आदि को दर्शायें। तथा कालिकापुराण में कहा है कि-

न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपं स्नेहे घृतादिकम्।
घृतेन दीपकं नित्यं तिलतैलेन वा पुनः।।
ज्वालयेन्मुनिशार्दूल सन्निधौ जगदीशितुः।
कार्पासवर्तिका ग्राह्या न दीर्घा न च सूक्ष्मिका।।

अर्थात् हे मुनिश्रेष्ठ! कभी भी घी व तेल को मिलाकर दीपक न जलायें। केवल घी अथवा केवल तिल के तेल से ही दीपक को प्रज्ज्वलित कर भगवान के सामने नित्य कर्म में प्रयोग करना चाहिये। बाती रुई की ही होनी चाहिये और वह बहुत छोटी या बहुत लम्बी नहीं होनी चाहिये।

नैवेद्य विषयक विचार:- शारदातिलक (4-108-110) में नैवेद्य का

लक्षण इस प्रकार है–

निवेदनीयं यद् द्रव्यं प्रशस्तं प्रयतं तथा।
तद्भक्ष्यार्हं पंचविधं नैवेद्यमिति कथ्यते।।
भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यं च पेयं चोष्यं च पंचमम्।
सर्वत्र चैतन्नैवेद्यमाराध्यास्यै निवेदयेत्।।
स्वादूपदंशं विमलं पायसं सह शर्करम्।
कदलीफलसंयुक्तं साज्यं मन्त्री निवेदयेत्।।

अर्थात् अर्पण करने योग्य द्रव्य जो आराध्य देवता द्वारा ग्राह्य, श्रेष्ठ और प्रशस्त हो वह पांच प्रकार का कहा गया है– भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, पेय और चोष्य। सब प्रकार की पूजा में देवता के समक्ष नैवेद्य को अर्पण अवश्य करना चाहिये। समस्त प्रकार के नैवेद्यों में से चीनी, घी और केले युक्त अत्यन्त स्वादिष्ट शुद्ध खीर अर्पण करना श्रेष्ठ है। नैवेद्यपात्र के विषय में इस प्रकार विधान किया गया है–

तैजसेषु च पात्रेषु सौवर्णे राजते तथा।
ताम्रे वा प्रस्तरे वापि पद्मपत्रेऽथवा पुनः।।
यज्ञदारुमये वापि नैवेद्यं स्थापयेद्बुधः।
सर्वाभावे च माहेये स्वहस्तघटिते यदि।।

अर्थात् तैजस द्रव्य से बना हुआ जैसे कि सोना, चांदी, तांबा आदि अथवा पत्थर के बने हुये अथवा कमल के पत्तों से निर्मित पत्तल अथवा यज्ञ में प्रयुक्त पवित्र लकड़ियों से बनाये हुये पात्र में नैवेद्य को अर्पण करना चाहिये। लेकिन उक्त प्रकार के कोई भी पात्र न हो तो मिट्टी के बर्तन में भी नैवेद्य अर्पण कर सकते हैं यदि स्वयं के द्वारा निर्मित हो तो।

गन्ध आदि अर्पण में मुद्रा आदि पर विचार :–रुद्रयामल में गन्ध आदि को अर्पण करने में प्रयुक्त मुद्रा का विधान इस प्रकार किया है–

मध्यमानामिकागुंष्ठैरंगुल्यग्रेण पार्वति।
दद्याच्च विमलं गन्धं मूलमन्त्रेण साधकः।।
अंगुष्ठतर्जनीभ्यां च पुष्पं देवे निवेदयेत्।
मध्यमानामिकांगुल्योर्मध्यपर्वणि देशिकः।।

अंगुष्ठाग्रेण देवेशि धृत्वा धूपं निवेदयेत्।
उत्तोलनं द्विधा कृत्वा गायत्र्या मूलयोगतः।।
ततः समर्पयेद्धूपं घण्टावाद्यजयस्वनैः।
न भूमौ वितरेद्धूपं नासने न घटे तथा।।
यथातथाधारगतं कृत्वा तं विनिवेदयेत्।
तत्त्वाख्यमुद्रया देवि नैवेद्यं विनिवेदयेत्।।
मूलेनाचमनं दद्यात्तांबूलं तत्त्वमुद्रया।
अंगुष्ठतर्जनीभ्यां तु निर्माल्यमपनोदयेत्।।

अर्थात् हे पार्वती! साधक अपने सीधे हाथ के अंगूठे, मध्यमा और अनामिका अंगुलि के अग्र भाग से तत्तद्देवता के मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुये पूर्वोक्त सामग्रियों से निर्मित विशुद्ध गन्ध का अर्पण करें। उपदेश प्राप्त बुद्धिमान् साधक अंगूठे और तर्जनी के अग्र पर्व से देवताओं को तत्तद्देवता की नामावलि के चतुर्थ्यन्त मन्त्रों से पुष्प अर्पण करें। हे देवेशी! मध्यमा और अनामिका के मध्य पर्व व अंगूठे के अग्रभाग में धूप को धारण कर तत्तद्देवता के मूलमन्त्र सहित गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जय-जय कार करते हुये घण्टा नाद के साथ अर्धचन्द्राकार में देवता के दोनों तरफ घुमाकर धूप को समर्पित करें। धूप को जमीन, आसन और घड़े पर स्थापित न करें किन्तु उस केलिये अलग से जिस किसी प्रकार का एक आधार (धूप स्टैण्ड) बनाकर उस पर स्थापित करें। तत्त्व मुद्रा (पृ. 48) से (अन्यत्र धेनु मुद्रा का विधान भी है) नैवेद्य को अर्पण करें। तत्तद्देवता के मूल मन्त्र से आचमन को दें। ताम्बूल को तत्त्व मुद्रा (पृ. 48) से अर्पण करना चाहिये। अंगूठे और तर्जनी से ही निर्माल्य को हटाना चाहिये।

रुद्रयामल में ही गन्ध, पुष्प, आभूषण, धूप, दीप और नैवेद्य के **स्थान व दिशा** आदि के बारे में इस प्रकार विधान किया है-

निवेदयेत्पुरोभागे गन्धं पुष्पं च भूषणम्।
दीपं दक्षिणतो दद्यात्पुरतो वा न वामतः।।
वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दक्षिणे।
नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः।।

धूपदीपौ सुभोज्यं च देवाताग्रे निवेदयेत्।
दक्षिणे च सितां वर्तिं वामतो रक्तवर्तिकाम्।।

अर्थात् गन्ध, पुष्प और आभूषण सदा देवता के सामने से अर्पण करें। दीपक को सामने अथवा दाहिने भाग में स्थापित कर दर्शायें लेकिन भूल से भी बायें भाग में नहीं। धूप को सामने अथवा बायें भाग में स्थापित कर दर्शायें लेकिन भूल से भी दाहिने भाग में नहीं। नैवेद्य को सामने अथवा दाहिने भाग में स्थापित कर दर्शायें लेकिन भूल से भी पीछे या अन्य भाग में नहीं। भ्रमित होकर कोई गलती न हो, इसलिये सुगम यही है कि सदा धूप, दीप और नैवेद्य को सामने से ही अर्पित करें। दीपक में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि सफेद बाती हो तो उसे दाहिनी ओर रखें और लाल रंग की बाती हो तो बायीं ओर रखें।

नीराजन (आरती) विषयक विचार :- कालोत्तरतन्त्र में आरती का विधान इस प्रकार किया है-

पंचनीराजनं कुर्यात्प्रथमं दीपमालया।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा।।
चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम्।
पंचमं प्रणिपातेन साष्टांगेन यथाविधि।।

अर्थात् पांच प्रकार से आरती करनी चाहिये।

1. एक/तीन/पांच/यथाशक्ति बत्ती प्रज्वलित आरती,
2. जल व पुष्प युक्त आरती,
3. शुद्ध वस्त्र से आरती,
4. आम पीपल आदि पवित्र पत्तों से आरती और
5. साष्टांग दण्डवत् प्रणाम के द्वारा आरती।

साष्टांग नमस्कार करने की विधि निम्न प्रकार है-

उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा।
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टांग उच्यते।।

अर्थात् मन, वाणी और आंखों के द्वारा भगवान का चिन्तन, कथन और दर्शन करते हुये सिर, छाती, दोनों हाथ, दोनों घुटने और दोनों पैरों से जमीन को स्पर्श करते हुये लेटकर प्रणाम करना अष्टांग नमस्कार है।

अधिकारी विषयक विचार :- वराह पुराण में सर्वकर्मोपयोगी विषयों पर विचार करते हुये कर्माधिकारी (कर्म का तात्पर्य केवल वैदिक कर्म नहीं अपितु स्मार्त कर्म, देव पूजा अर्पण, भक्ति, उपासना और स्वाध्याय भी है) का लक्षण इस प्रकार किया है –

सुस्नातः सम्यगाचान्तः कृतसन्ध्यादिकक्रियः ।
जितेन्द्रियः सत्यवादी सर्वकर्मसु शस्यते ।।

अर्थात् शास्त्र विहित तरीके से स्नान कर स्नानांगभूत आचमनादि करके सन्ध्यावन्दन आदि नित्य कर्म से निवृत्त हुआ सत्यवादी व जितेन्द्रिय व्यक्ति ही सकल कर्म करने का अधिकारी होता है।

4.3 कर्माधिकारित्व प्राप्ति केलिये दैनिक पूर्वकृत्य

दक्षस्मृति में कर्म आरम्भ करने से पहले स्वयं को कर्म या उपासना का अधिकारी बनाने केलिये आवश्यक कुछ नित्य कर्तव्य के बारे में इस प्रकार कहा है –

प्रातरुत्थाय कर्तव्यं यद् द्विजेन दिने दिने ।
तत्सर्वं प्रवक्ष्यामि द्विजानामुपकारकम् ।।

अर्थात् प्रतिदिन प्रातः उठकर द्विजों के द्वारा करने योग्य उन सकल कर्मों का कथन करूंगा जो द्विजों के उपकारक हैं। कितने बजे उठना और क्या क्या करना चाहिये इत्यादि प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार दिये हैं- ब्रह्म मुहूर्त में उठकर बिस्तर पर बैठे हुये ही अपने कर कमलों को देखते हुये निम्न मन्त्र का पाठ करें–

कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्द प्रभाते करदर्शनम् ।।

अर्थात् भावना करें कि हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी विराजमान है, मध्य भाग में सरस्वती और मूलभाग में गोविन्द भगवान हैं – यह प्रातःकालीन करदर्शन है। तत्पश्चात् बिस्तर पर बैठे हुये ही जमीन को स्पर्श कर निम्न मन्त्र का पाठ करें–

समुद्रवसने देवी पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

अर्थात् हे माते! पर्वत हैं स्तन मण्डल जिनका, समुद्र में वास कर रही हैं जो और विष्णु की पत्नी हैं जो ऐसे आपको मैं नमस्कार करता हूं। आप मेरे पैरों के स्पर्श (चलने-फिरने से जो आघात होता है उस केलिये) क्षमा करें।

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय परं ब्रह्म विचिन्तयेत्।
ततो व्रजेन्नैर्ऋताशां बृहत्सोदकभाजनः।।
दिवासंध्यासु कर्णस्थब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः।
अन्तर्धाय तृणं भूमिं शिरः प्रावृत्य वाससा।।
वक्त्रान्नियम्य यत्नेन नोष्ठीवेन्नोच्छ्वसेदपि।
कुर्यान्मूत्रं पुरीषं च रात्रौ चेद्दक्षिणामुखः।।
छायायामन्धकारे वा रात्रावहनि वा द्विजः।
यथासुखं प्रकुर्वीत प्राणबाधाभयेषु च।।
गृहीतशिश्नश्चोत्थाय गृहीतशुचिमृत्तिकः।
गन्धलेपक्षयकरं शौचं कुर्यादतन्द्रितः।।

अर्थात् ब्रह्ममुहूर्त (यानि सूर्योदय से पूर्व उषाकाल 3 बजे से 6 बजे) में उठकर परब्रह्म परमात्मा का चिन्तन करें। तत्पश्चात् एक बड़े लोटे में जल लेकर कान पर यज्ञोपवीत (जनेउ) को लपेटकर सिर को कपड़े से ढक के नैऋत्यदिशा (दक्षिण पश्चिम के बीच की दिशा) की ओर जा के दिन के संन्ध्या काल में हो तो उत्तर दिशा की ओर मुख कर घास अथवा अन्य पेड़-पौधे की आड़ में उकडू बैठकर मल मूत्र को त्यागना चाहिये। मल मूत्र त्यागते वक्त वाणी आदि इन्द्रियों को संयमित रखते हुये न थूकें और न ही श्वसन क्रिया करें। रात्री में यदि मल मूत्र त्यागना पड़े तो दक्षिण की ओर मुख कर उकडू बैठके त्यागें। प्राण बाधा (आपात समय), भय, छाया और घोर अन्धकार में, चाहे दिन हो या रात, अपनी सुविधा के अनुसार मल मूत्र त्याग कर सकते हैं (अर्थात् कोई नियम नही और कोई दोष नही)। मल मूत्र त्यागने के बाद गुप्तेन्द्रिय को पकड़े हुये उठे तत्पश्चात् शुद्ध मिट्टी (मुल्तानी मिट्टी) को हाथ में लेकर विना आलस्य के विधि के अनुसार हाथ आदि को शुद्ध कर लें।

हाथ आदि को शुद्ध करने की विधि मनु स्मृति आदि ग्रन्थों में इस प्रकार बतायी गयी है-

एका लिंगे गुदे पंच त्रिर्वामे दश चोभयोः।
द्विसप्त पादयोश्चैव गार्हस्थ्यं शौचमुच्यते।।
ततः षोडश गण्डूषान्प्रकुर्याद्द्वादशैव वा।
मूत्रोत्सर्गे तु गण्डूषानष्टौ वा चतुरो गृही।।

अर्थात् गुप्तेन्द्रिय पर एक बार, गुदा पर पांच बार, बायें हाथ पर तीन बार, दोनों हाथ पर दस बार और चौदह बार दोनों पैर पर मिट्टी लगाकर धोवें, उसके बाद बारह अथवा सोलह बार कुल्ला करें और केवल मूत्र मात्र का त्याग किया है तो चार या आठ बार कुल्ला करें- यह गृहस्थों केलिये नियम है। इसका दो गुणा ब्रह्मचारी, तीन गुणा वानप्रस्थी और चार गुणा हंस पर्यन्त संन्यासी को करना चाहिये। परमहंस आदि को कोई नियम नहीं है। उसके बाद नित्य स्नान करना है जिसका विधान इस प्रकार है-

आचम्य प्रयतः सम्यक् प्रातः स्नानं समाचरेत्।
स्नानादनन्तरं तावत्तर्पयेत्तीर्थदेवताः ।।
समुद्रगनदीस्नानमुत्तमं परिकीर्तितम् ।
वापीकूपतडागेषु मध्यमं कथितं बुधैः।।
गृहे स्नानं तु सामान्यं गृहस्थस्य प्रकीर्तितम्।

अर्थात् आचमन करके प्रयत्नपूर्वक बहुत अच्छी तरह स्नान करना चाहिये (जल्दबाजी में नहीं)। विद्वानों ने गृहस्थों केलिये समुद्र में विलीन होनेवाली नदी (गंगा, नर्मदा, कृष्णा, कावेरी आदि) में स्नान करना श्रेष्ठ; यमुना, गोदावरी, सरस्वती, गण्डकी आदि नदियां जो गंगा आदि में विलीन होती हैं उनमें स्नान करना मध्यम है तथा बड़ा कुआं, छोटा कुआं और तालाब में स्नान करना मध्यम; घर में निर्मित स्नानघर में स्नान करना सामान्य कहा है। यह नियम अन्य सभी केलिये भी समान ही है। घर में स्नान करने केलिये यह विशेष विधि है- सर्वप्रथम बाल्टी अथवा किसी बर्तन में पानी ग्रहण कर उसमें निम्न मन्त्र बोलते हुये

आवाहनी मुद्रा से श्रेष्ठ व पवित्र नदियों का आवाहन करें-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।

तत्पश्चात् थोड़ा जल लोटे में लेकर जिस पाटे पर बैठके स्नान करना है उसपर और स्वयं पर छिड़कते हुये निम्न मन्त्र को बोलें-

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोपि वा।
यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
पुंडरीकाक्षः पुनातु, पुंडरीकाक्षः पुनातु, पुंडरीकाक्षः पुनातु।।

पाटे पर बैठके भगवन्नाम स्मरण करते हुये स्नान करें। स्नान करने के बाद स्नानांग तर्पण नदी/तालाब/कुआं/स्नानघर में ही करें। तत्पश्चात् अपने वर्ण व आश्रम के अनुसार वस्त्र पहनें। जैसे कि कहा है-

ततश्च वाससी शुद्धे शुक्ले च परिधाय च।
उत्तरीयं सदा धार्यं द्विजन्मना विजानता।।
उपविश्य शुचौ देशे प्राङ्मुखो वा उदङ्मुखः।
भूत्वा बद्धशिखः कुर्यादन्तर्जानुभुजद्वयम्।।
सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम् ।
नोच्छिष्टं तत्पवित्रन्तु भुक्त्वोच्छिष्टं तु वर्जयेत्।।

अर्थात् स्नान क्रिया के पश्चात् शुद्ध व शुक्ल यानि पवित्र कपड़े पहनें, ब्राह्मण आदि सभी वैदिक परम्परा को ध्यान में रखते हुये उत्तरीय वस्त्र अवश्य धारण करें (छाती व कन्धा खुला न रहे, ढकें)। उसके बाद शिखा को बांधकर शुद्ध स्थान में पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर सुखासन, सिद्धासन आदि किसी भी आसन में बैठें। कुशापाणि होकर(कुशा से बनी हुई पवित्री को धारण कर) आचमन करें। एक ही पवित्री को बार बार प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि वह कभी अपवित्र (उच्छिष्ट) नहीं होती किन्तु पवित्री पहने हुये यदि भोजन किया है तो उस पवित्री का पुनः प्रयोग नही किया जा सकता। विना कुशा से निर्मित पवित्री पहने कर्म नहीं करना चाहिये क्योंकि मार्कण्डेय पुराण में कहा है कि-

कुशपाणिः सदा तिष्ठेद् ब्राह्मणो दम्भवर्जितः।
स नित्यं हन्ति पापानि तूलराशिरिवानलः।।

अर्थात् ढोंग को त्यागकर ब्राह्मण आदि को सदा कुशा निर्मित पवित्री पहने रहना चाहिये क्योंकि आग जैसे अनायास ही रूई को जलाती है वैसे वह (पवित्री) नित्य ही समस्त पापों को नष्ट कर देती है। तत्पश्चात् संन्ध्या करके पूजा करें।

4.4 कूर्मचक्र विधान :-

मन्दिर, घर, आदि किसी भी स्थान में कर्म या उपासना करने केलिये कूर्म चक्र पर दीप को स्थापित करने का विधान है। अतः कूर्मचक्र/कूर्मयन्त्र को जानना जरूरी है। शारदातिलक में कहा है-

दीपस्थानं समाश्रित्य कृतं कर्म फलप्रदं।
चतुरस्रां भुवं भित्त्वा कोष्ठानां नवके लिखेत्।।
पूर्वकोष्ठादि विलिखेत्सप्त वर्गाननुक्रमात्।
लक्षावीशे मध्यकोष्ठे स्वरान्युग्मक्रमाल्लिखेत्।।
दिक्षु पूर्वादितो यत्र ग्रामस्याद्यक्षरं भवेत्।
मुखं तत्तस्य जानीयाद्धस्तावुभयतः स्थितौ।।
कोष्ठे कुक्षी उभे पादौ द्वि शिष्टं पुच्छमीरितम्।
क्रमेणानेन विभजेन्मध्यस्थमपि भागतः।।

अर्थात् दीप को विशेष स्थान में स्थापित कर किया गया कर्म ही फल देता है। इसलिये कूर्मचक्र/कूर्मयन्त्र का निर्माण कर उस पर दीपक को स्थापित करना श्रेष्ठ कहा गया है। कूर्मचक्र निम्न प्रकार से बनाना है-

चित्र 3

<table>
<tr><td>8. ईशान
ल क्ष</td><td colspan="3">1. पूर्व
क ख ग घ ङ</td><td>2. आग्नेय
च छ ज झ ञ</td></tr>
<tr><td rowspan="3">7. उत्तर
श ष स ह</td><td>16. अं अः</td><td>9. अ आ</td><td>10. इ ई</td><td rowspan="3">3. दक्षिण
ट ठ ड ढ ण</td></tr>
<tr><td>15. ओ औ</td><td></td><td>11. उ ऊ</td></tr>
<tr><td>14. ए ऐ</td><td>13. ऌ ॡ</td><td>12. ऋ ॠ</td></tr>
<tr><td>6. वायव्य
य व र</td><td colspan="3">5. पश्चिम
प फ ब भ म</td><td>4. नैऋत्य
त थ द ध न</td></tr>
</table>

जिस गांव/शहर में आप रहकर अनुष्ठान करना चाहते हैं उसके नाम का पहला अक्षर जिस कोष्ठक में है उस कोष्ठक में कूर्म के मुख की भावना करें, जैसे कोई दिल्ली में अनुष्ठान करता है तो 4 संख्या कोष्ठक में मुख की भावना करें। उस 4 संख्या कोष्ठक के दाहिने बाये कोष्ठकों में यानि 3 व 5 में कूर्म के दोनों हाथों की यानि क्रमशः दाहिने व बायें हाथ की भावना करें। 6 व 2 में दोनों बगल की भावना करें। 7 व 1 में दोनों पैर की भावना करें। 8 में पूँछ की भावना करें और मध्य भाग में पेट की भावना करें। इसी प्रकार मध्य भाग (10 से 16) में स्थित अक्षरों से आरब्ध कर गांव के नाम के बारे में भी समझ लेना चाहिये। इस प्रकार की भावना से निर्मित कूर्म की पीठ पर दीपक को स्थापित करना चाहिये। अथवा अनुष्ठान कर्ता या जापक के नाम के पहले अक्षर से भी कूर्म को देख सकते हैं, जैसे कि तन्त्रराज में कहा है-

क्षेत्राधिपस्य नाम्ना हि दीपस्थानं विचारयेत्।
दीपस्थाने जपं कुर्याद्धोमादस्य फलं लभेत्।।
कूर्मस्थितिं विज्ञाय यो जपेदवधिस्थितः।
स प्राप्नोति फलान्युक्तान्यन्यथा नाशमेति च।।

क्षेत्राधिप यानि यजमान जो अनुष्ठान करना चाहता है अथवा जो जप करता है, उसके नाम के पहले अक्षर से भी कूर्म का विचार करें। उक्त प्रकार से निश्चित दीपस्थान यानि कूर्म चिन्तन कर स्थापित दीप के समक्ष बैठकर जप करके हवन करने से ही फल प्राप्त होता है। अन्यथा कर्म का नाश हो जायेगा।

4.5 स्थण्डिल का निर्माण :-

बौधायन मत और कात्यायनीय श्रौत सूत्र के अनुसार सभी कर्म हवनकुण्ड/ यज्ञकुण्ड में नहीं किये जा सकते हैं किन्तु विधि के अनुसार कुछ कर्म स्थण्डिल में ही करना होता है, जैसे कि माला संस्कार का अंगभूत हवन। हवनकुण्ड के अभाव में भी स्थण्डिल में हवन कर सकते हैं, जैसे कि कर्मप्रदीप में कहा है-

कुण्डवन्मेखलां कृत्वा योनिं कृत्वा ततः परं।
कुण्डाभावे तु होमाथ स्थण्डिलं चतुरस्रकम्।।

अर्थात् कुण्ड के अभाव में यजमान के अरत्नी बराबर चतुष्कोण आकार का पवित्र नदी की मिट्टी/रेत से स्थण्डिल का निर्माण करना है जिस पर कुण्ड के समान ही मेखला बनाकर उससे परे योनि को बनाना है। कर्मप्रदीप में ही कहा है कि-

अष्टांगुलसमुत्सेधं चतुर्विंशांगुलायतम्।
पन्नगास्तत्र सीदन्ति तदर्थं स्थण्डिलं भवेत्।।

अर्थात् जमीन के स्तर पर सर्प आदि जीव-जन्तु के विहार क्षेत्र है इसलिये 24 अंगुल लम्बा व चौडा और 8 अंगुल ऊंचे स्थण्डिल का निर्माण करना चाहिये। स्कन्द पुराण में स्थण्डिल निर्माण की दिशा आदि के बारे में कहा है कि-

तस्माच्चोत्तरपूर्वेण स्थण्डिलं हस्तमात्रकम्।
त्रिवप्रं चतुरस्रं च वितस्त्युच्छ्रायसंमितम्।।

अर्थात् ईशान कोण में एक हाथ लम्बा व चौड़ा, 3 मेखला युक्त चौकोर आकार का अधिक से अधिक एक बित्था ऊंचाई का स्थण्डिल निर्माण करें।

4.6 गौरीतिलकमण्डल का निर्माण :-

व्रतराज में कहा है कि -

गणपतिव्रते प्रोक्तं भद्रं वैनायकाभिधं।
देव्या व्रते गौरीभद्रं सूर्ये सूर्यस्य मण्डलम्।।
शैवे च लिंगतोभद्रं सर्वतोभद्रकं हरेः।
स्वस्वभद्रालाभके तु कार्यं वै हरिमण्डलम्।।

अर्थात् गणेशजी के व्रत आदि अनुष्ठान में विनायकभद्रमण्डल का निर्माण कर पूजा करनी चाहिये। देवी के व्रत आदि में गौरीभद्रमण्डल, सूर्य के व्रत आदि में सूर्यभद्रमण्डल, शिवजी के व्रत आदि में चार/आठ /बारह लिंगतोभद्रमण्डल और विष्णु के व्रत आदि में सर्वतोभद्रमण्डल के निर्माण का विधान है। तत्तद्देवता के भद्रमण्डल प्राप्त न हो (बना न सके) तब सर्वतोभद्रमण्डल का निर्माण करना चाहिये। प्रस्तुत ग्रन्थ देवी से संबंधित होने से यहां हम रुद्रयामल में वर्णित गौरीभद्रमण्डल जिसे

गौरीतिलकमण्डल और एकलिंगतोभद्रमण्डल नाम से भी जाना जाता है को दर्शा रहे हैं (रुद्रयामल 132-135)-

तिर्यगूर्ध्वगता रेखाः कार्याः स्निग्धास्त्रयोदश।
कोणेन्दुस्त्रिपदः कार्यः शृंखलास्त्रिपदाः स्मृताः।।
वल्ली तु त्रिपदा नीला भद्रं रक्तं प्रकल्पयेत्।
पदैर्द्वादशभिः स्पष्टमुत्तरे पूर्वदक्षिणे।।
पश्चिमायां महारुद्रमष्टाविंशतिकोष्ठकैः।
लिंगपार्श्वे तथा मूर्ध्नि अष्टौ कोष्ठाः सुपीतकाः।।
लिंगमेकं तथा गौर्यास्तिस्रः स्युरत्र मण्डले।
पूजयेन्मण्डलं चैतत्तस्य गौरी प्रसीदति।।

इस मण्डल को चित्र से स्पष्ट कर दिया गया है, कृपया चित्र सं. 25 को पृष्ठ संख्या 342 में देखें।

चित्र सं. 26, पृ. सं. 343 में- 1, 2, 3...आदि संख्या में अंकित क्रम से पूजन करें। पूर्वे- **ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वानां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिनऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः असिताङ्गभैरवाय नमः, असिताङ्गभैरवमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, नमस्करोमि।।1।।** आग्नेये- **ॐ श्वित्रऽआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्या-ऽअरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः क्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः। ॐ भूर्भुवःस्वः रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवमा., स्था., पू., न.।।2।।** दक्षिणे- **ॐ उग्रँल्लोहितेन मित्रꣳसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳरुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्। ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डभैरवाय नमः, चण्डभैरवमावा., स्था., पू., न.।।3।।** नैर्ऋत्ये- **ॐ इन्द्रस्य क्रीडोऽअदित्यै पाजस्यन्दिशा ञ्जत्रवोऽअदित्यै भसज्जीमूता हृदयौपशेनान्तरिक्ष पुरीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यान्दिवं वृकाभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहान् वल्मीकान् क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान् कुक्षिभ्याꣳसमुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना। ॐ भूर्भुवःस्वः क्रोधभैरवाय नमः, क्रोधभैरवमावा.,**

स्था., पू., न.।।4।। पश्चिमे- ॐ उन्नतऽऋषभो वामनस्तऽऐन्द्रा-वैष्णवाऽउन्नत: शितिबाहु: शितिपृष्ठास्तऽऐन्द्राबार्हस्पत्या: शुकरूपा वाजिना: कल्माषाऽआग्निमारुता: श्यामा: पौष्णा:। ॐ भूर्भुव:स्व: उन्मत्तभैरवाय नम:, उन्मत्तभैरवमावा., स्था., पू., न.।।5।। वायव्ये- ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽ-अद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधी:। ॐ भूर्भुव:स्व: कपालभैरवाय नम:, कपालभैरवमावा., स्था., पू., न.।।6।। उत्तरे- ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिप: स्वाहा। ॐ भूर्भुव:स्व: भीषणभैरवाय नम:, भीषणभैरवमावा., स्था., पू., न.।।7।। ईशाने- ॐ नम: शम्भवाय च मयोभवाय च नम: शंकराय च मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च। ॐ भूर्भुव:स्व: संहारभैरवाय नम:, संहारभैरवमावा., स्था., पू., न.।।8।। पुन: पूर्वादि क्रम से अष्ट नागदेवताओं का पूजन करें। पूर्वे- ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छान: शर्मसप्रथा:।। ॐ भूर्भुव:स्व: अनन्ताय नम:, अनन्तमावा., स्था., पू., न.।।9।। आग्नेये- ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे। निहारञ्च हराणि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा। ॐ भूर्भुव:स्व: वासुकये नम:, वासुकिमावा., स्था., पू., न.।।10।। दक्षिणे- ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नम: कुलालेभ्य: कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्य: पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नम: श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नम:। ॐ भूर्भुव:स्व: तक्षकाय नम:, तक्षकमावा., स्था., पू., न.।।11।। नैर्ऋत्ये- ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसोद गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां कृकवाकु: सावित्रो हꣳसो वातस्य नाक्रो मकर: कुलीपयस्तेऽकूपारस्य ह्रियै शल्यक:। ॐ भूर्भुव: स्व: कुलिशाय नम:, कुलिशमावा., स्था., पू., न.।।12।। पश्चिमे- ॐ सोमाय कुलङ्गऽआरण्योऽजो नकुल: शका ते पौष्णा: क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृग: पिद्वो न्यङ्कु: कुक्कुटस्तेऽनुमस्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाक:। ॐ भूर्भुव:स्व: कर्कोटकाय नम:, कर्कोटकमावा., स्था., पू., न.।।13।। वायव्ये- ॐ अग्निर्ऋषि: पवमान: पांचजन्य: पुरोहित:। तमीमहे महागयम्। उपयाम गृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चसऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे। ॐ भूर्भुव: स्व: शंखपालाय नम:, शंखपालमावा., स्था., पू., न.।।14।।

उत्तरे- ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणऽऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञ॰सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन्। ॐ भूर्भुवःस्वः कम्बलाय नमः, कम्बलमावा., स्था., पू., न.।।15।। ईशाने- ॐ अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीवऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद् धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्या॰सौर्यामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छऽइन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णावो वामनः। ॐ भूर्भुवःस्वः अश्वतराय नमः, अश्वतरमावा., स्था., पू., न.।।16।। ईशानादिदिगन्तरालों में देवताओं का पूजन करें। ईशान पूर्व मध्ये- ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलिने नमः, शूलिनमावा., स्था., पू., न.।।17।। पूर्व अग्नि मध्ये- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत। ॐ भूर्भुवःस्वः चन्द्रमौलिने नमः, चन्द्रमौलिनमावा., स्था., पू., न.।।18।। अग्नि यम मध्ये- ॐ आशुः शिशानो वृषभोन भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शत॰सेनाऽजयत्साकमिन्द्रः।। ॐ भूर्भुवःस्वः वृषभध्वजाय नमः, वृषभध्वजमावा., स्था., पू., न०।।19।। यम निर्ऋति मध्ये- ॐ सुगावो देवाः सदनाऽअकर्मय-ऽआजग्मेद॰सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवी॰ष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय नमः, त्रिलोचन-मावा., स्था., पू., न.।।20।। निर्ऋति वरुण मध्ये- ॐ रुद्राः स॰सृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्रऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते।। ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तिधराय नमः, शक्तिधरमावा., स्था., पू., न.।।21।। वरुण वायु मध्ये- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ॐ भूर्भुवःस्वः महेश्वराय नमः, महेश्वरमावा., स्था., पू., न.।।22।। वायु सोम मध्ये- ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलपाणये नमः, शूलपाणिमावा., स्था., पू., न.।।23।। सोम ईशान मध्ये- ॐ चन्द्रमाऽप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृह॰हरिरेति कनिक्रदत्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः महादेवाय नमः, महादेवमावा., स्था., पू., न.।।24।। अब परिधि और शृंखलाओं में पूजन करें। परिधौ- **ॐ भूर्भुवःस्वः परिधये नमः, परिधिमावा., स्था., पू., न.।।25।।** परिधिसमन्तात्- **ॐ भूर्भुवःस्वः चतुः पुरिभ्यो नमः, चतुःपुरीरावा., स्था., पू., न0।।26।।** आग्नेयकोणस्थशृंखलायां- **ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्। ॐ भूर्भुवःस्वः ऋग्वेदाय नमः, ऋग्वेदमावा., स्था., पू., न.।।27।।** नैर्ऋत्यकोणस्थशृंखलायां- **ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्थयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽयक्ष्मामा-वस्तेन ईशत माद्यश्ठसोद्ध्रुवाऽअस्मिन्गौपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि। ॐ भूर्भुवःस्वः यजुर्वेदाय नमः, यजुर्वेदमावा., स्था., पू., न.।।28।।** वायव्यकोणस्थशृंखलायां- **अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये। निहोता सत्सि बर्हिषि। ॐ भूर्भुवःस्वः सामवेदाय नमः, सामवेदमावा., स्था., पू., न.।।29।।** ईशानकोण-स्थशृंखलायां- **ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोर-भिस्रवन्तु नः। ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्ववेदाय नमः, अथर्ववेदमावा., स्था., पू., न.।।30।।** तत्पश्चात् पूर्वादि क्रम से वापियों में पूजन करें। पूर्वे- **ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च। ॐ भूर्भुवःस्वः भवसहितभवान्यै नमः, भवसहित-भवानीमावा., स्था., पू., न.।।31।।** आग्नेये- **ॐ अग्निश्ठ-हृदयेनाशनिश्ठहृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्टुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्। ॐ भूर्भुवःस्वः शर्वसहित-शर्वाण्यै नमः, शर्वसहितशर्वाणीमा., स्था., पू., न.।।32।।** दक्षिणे- **ॐ उग्रँल्लोहितेन मित्रश्ठसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यश्ठरुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्। ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतिसहितपाशुपत्यै नमः, पशुपतिसहितपाशुपतीमा., स्था., पू., न.।।33।।** नैर्ऋत्ये- **तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः**

स्वस्तये। ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानसहितेशान्यै नमः, ईशानसहिते- शानीमावा., स्था., पू., न.।।34।। पश्चिमे- **ॐ उग्रश्च भीमश्च दृध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा। ॐ भूर्भुवःस्वः उग्रसहितोग्रायै नमः, उग्रसहितोग्रामावा., स्था., पू., न. ।।35।।** वायव्ये- **ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्रसहितरुद्राण्यै नमः, रुद्रसहितरुद्राणीमावा., स्था., पू., न.।।36।।** उत्तरे- **ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। ॐ भूर्भुवःस्वः भीमसहितभीमायै नमः, भीमसहितभीमामावा., स्था., पू., न.।।37।।** ईशाने- **ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा नऽउक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः। ॐ भूर्भुवःस्वः महत्सहितमहत्यै नमः, महत्सहितमहतीमावा.,** स्था., पू., न.।।38।।

5. मुद्रा प्रकरणम्

आवाहनादि कर्म की मुद्राओं पर विचार :-

तन्त्रसार में मुद्रा की विशेषता को इस प्रकार बताया है-

मोदनात्सर्वदेवानां द्रावणात्पापसंहतेः।
तस्मान्मुद्रेति सा ख्याता सर्वकामार्थसाधिनी।।

अर्थात् समस्त देवताओं को आनन्दित करने से और पापों को दूर भगाने से उसे मुद्रा कहा गया, जो सकल कामनाओं को प्रदान करती है। शारदातिलक और तन्त्रसार में पूजा, अर्चना व होम आदि में उपयोगी 27 मुद्राओं तथा केवल श्रीयन्त्रपूजा में प्रयुक्त 10 विशेष मुद्राओं का वर्णन किया है। क्रम से उनके लक्षण आदि के बारे में इस प्रकार बताया है-

आवाहनादिका मुद्राः प्रवक्ष्यामि यथाक्रमम्।
याभिर्विरचिताभिस्तु मोदन्ते सर्वदेवताः।। (शा.ति. 23.106)

अर्थात् जिस क्रम से प्रयोग करना पड़ता है उसी क्रम से मैं आवाहनी आदि मुद्राओं का वर्णन करूंगा जिनके प्रदर्शन मात्र से सभी देवता प्रसन्न होते हैं।

(5.1) आवाहनी मुद्रा-

सम्यक्संपूरितः पुष्पैः कराभ्यां कल्पितोऽजलिः।

आवाहनी समाख्याता मुद्रा देशिकसत्तमैः।।(23.107)

अर्थात् श्रेष्ठ विद्वानों ने पुष्पों से परिपूर्ण करकमलों के अंगूठे को मध्यमा अंगुलि के मूल में स्थापित कर अपने वक्षस्थल के सामने ऊर्ध्वमुख धारण करने को आवाहनी मुद्रा नाम दिया है।

(5.2) स्थापनी मुद्रा-

अधोमुखी कृता सैव प्रोक्ता स्थापनकर्मणि। (23.108)

अर्थात् आवाहन करने के पश्चात् पुष्पों को उस स्थान पर डालें जहां आपने देवता को स्थापित करना है और अंगुलियों को वैसे ही रखते हुये केवल करकमलों को उल्टा कर अधोमुख धारण करने को स्थापनी मुद्रा कहा गया है।

(5.3) सन्निधापिनी मुद्रा-

आश्लिष्टमुष्टियुगला प्रोन्नतांगुष्ठयुग्मका।

सन्निधाने समुद्दिष्टा मुद्रेयं तन्त्रवेदिभिः।। (23.109)

अर्थात् अंगूठों को बाहर की ओर फैलाकर बाकी अंगुलियों से मुट्ठी बांधके दोनों मुट्ठियों को जोड़कर दर्शाने को सन्निधापिनी मुद्रा कहा गया है।

(5.4) सन्निरोधिनी मुद्रा-

अंगुष्ठगर्भिणी सैव सन्निरोधे समीरिता।। (23.109)

अर्थात् अंगूठों को भीतर की ओर बन्द करके बाकी अंगुलियों से उस पर मुट्ठी बांधके दोनों मुट्ठियों को जोड़कर सामने दर्शाने को सन्निरोधिनी मुद्रा कहा गया है।

(5.5) सम्मुखीकरणी मुद्रा-

उत्तानौ द्वौ कृतौ मुष्टी सम्मुखीकरणी स्मृता। (23.110)

अर्थात् पूर्ववत् अंगुठों को भीतर की ओर बन्द करके बाकी

अंगुलियों से उस पर मुट्ठी बांधके दोनों मुट्ठियों को जोड़कर ऊपर उठाकर अपने सम्मुख कर धारण करने को सम्मुखीकरणी मुद्रा कहते है।

(5.6) अवगुण्ठन मुद्रा–

सव्यहस्तकृता मुष्टिर्दीर्घाधोमुखतर्जनी।।
अवगुण्ठनमुद्रेयमभितो भ्रामिता सती। (23.111)

अर्थात् बायें हाथ में दाहिनी मुट्ठी को रखकर तर्जनी अंगुलि को सामने व नीचे की ओर झुकाकर तर्जनी अंगुलि को दोनों ओर घुमाने को अवगुण्ठन मुद्रा कहते है।

(5.7) धेनु मुद्रा–

अन्योन्याभिमुखाश्लिष्टे कनिष्ठानामिके पुनः।।
तथा च तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा समीरिता।
अमृतीकरणं कुर्यात्तया देशिकसत्तमः।। (23.112)

अर्थात् दोनों हाथों की कनिष्ठा और अनामिका अंगुलियों को आमने–सामने जोड़कर मध्यमा से अंगुठों को ढ़कके तर्जनी अंगुलियों को आपस में जोड़कर धारण करना धेनु मुद्रा है। श्रेष्ठ साधक को उससे यानि धेनु मुद्रा से देवता के समक्ष रखे प्रसाद, भोग के अमृत होने की भावना करनी चाहिये।

(5.8) महा मुद्रा–

महामुद्रेयमुदिता परमीकरणे बुधैः। (23.114)

अर्थात् विद्वानों ने धेनु मुद्रा को पवित्रीकरण केलिये प्रयोग करने पर महामुद्रा कहा है। केवल भावना में अन्तर करना है।

(5.9) कुम्भ मुद्रा–

दक्षांगुष्ठे परांगुष्ठे क्षिप्त्वा हस्तद्वयेन च।
सावकाशमेकमुष्टिं कुर्यात्सा कुम्भमुद्रिका।। (तं सा)

अर्थात् दाहिने व बायें अंगूठे को दोनों हाथों की अन्य अंगुलियों सहित ऊपर की ओर थोड़ा फैलाकर आपसमें घड़े के आकार में मिलाके धारण करें इसे कुम्भ मुद्रा कहते हैं।

(5.10) कूर्म मुद्रा-

वामहस्ते च तर्जन्यां दक्षिणस्य कनिष्ठिका।
तथा दक्षिणतर्जन्यां वामांगुष्ठं नियोजयेत्।।
उन्नतं दक्षिणांगुष्ठं वामस्य मध्यमादिका:।
अंगुलीर्योजयेत्पृष्ठे दक्षिणस्य करस्य च।।
दक्षस्य पितृतीर्थेन मध्यमानामिके तथा।
अधोमुखे च ते कुर्याद्दक्षिणस्य करस्य च।।
कूर्मपृष्ठसमं कुर्याद्दक्षपाणिं च सर्वत:।
कूर्ममुद्रेयमाख्याता देवताध्यानकर्मणि।। (तं सा)

अर्थात् बायें हाथ की तर्जनी पर दाहिने हाथ की कनिष्ठिका को रखें तथा दाहिने हाथ की तर्जनी पर बायें हाथ का अंगूठा रखें और दाहिने हाथ के अंगूठे को उठाये हुये बायें हाथ की मध्यमा आदि शेष अंगुलियों को दाहिने हाथ के पृष्ठ भाग पर स्थापित करके दाहिने हाथ की मध्यमा व अनामिका को दाहिने हाथ के ही नीचे की ओर इस प्रकार मोड़ें ताकि कछुवे की पीठ जैसे दिखे, इसे कूर्म मुद्रा कहते हैं जो देवताओं के ध्यान कर्म में उपयोगी है।

(5.11) अस्त्र मुद्रा-

दक्षस्य तर्जनी मध्ये सव्ये करतले क्षिपेत्।
अभिघातेन शब्द: स्यादस्त्रमुद्रा समीरिता।। (तं सा)

अर्थात् दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा से बायें हाथ के तल भाग पर आघात द्वारा शब्द उत्पन्न करने को अस्त्र मुद्रा कहते हैं।

(5.12) मत्स्य मुद्रा-

दक्षपाणे: पृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत्।
अंगुष्ठौ चालयेत्सम्यङ् मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी।। (तं सा)

अर्थात् दाहिने हाथ के पृष्ठ भाग पर बायें हाथ के तल भाग को स्थापित करके दोनों अंगुठों को फैलाकर ऊपर नीचे अच्छी तरह से हिलायें, इसे मत्स्य मुद्रा कहते हैं।

(5.13) शंख मुद्रा-

वामांगुष्ठन्तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना।
कृत्वोत्तानं ततो मुष्टिमंगुष्ठं तु प्रसारयेत्।।
वामांगुल्यस्तथा श्लिष्टाः संयुताः सुप्रसारिताः।
दक्षिणांगुष्ठसंस्पृष्टा ज्ञेयैषा शंखमुद्रिका।।(तं सा)

अर्थात् दाहिनी मुट्ठी में बायें अंगूठे को पकड़ कर दाहिने अंगूठे को ऊपर की ओर खड़ा रखके बायें हाथ की आपस में जुड़ी हुयी शेष अंगुलियों से दाहिने अंगूठे को स्पर्श करके धारण करने को शंख मुद्रा कहते हैं।

(5.14) योनि मुद्रा- (सामान्य)

मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते।
अनामिके मध्यगते तथैव हि कनिष्ठिके।।
सर्वा एकत्र संयोज्या अंगुष्ठपरिपीडिताः।
एषा तु प्रथमा मुद्रा योनिमुद्रेति संज्ञिता।। (तं सा)

अर्थात् दोनों हाथों की मध्यमा अंगुलियों को थोड़ा टेढ़ा करके तर्जनी अंगुलियों पर रखें और अनामिका एवं कनिष्ठिका अंगुलियों को भी उसी प्रकार परस्पर एक दूसरे के ऊपर रखते हुये भीतर की ओर करके सब को अंगूठों से दबाकर एकत्र धारण करने को सर्वश्रेष्ठ योनि मुद्रा कहा गया है।

(5.15) प्रार्थना मुद्रा-

प्रसृतांगुलिकौ हस्तौ मिथः श्लिष्टौ च संमुखौ।
कुर्यात्स्वे हृदये सेयं मुद्रा प्रार्थनसंज्ञिका।।(तं सा)

अर्थात् दोनों हाथों की अंगुलियों को आमने-सामने जोड़कर अपने हृदय के समक्ष ऊर्ध्वमुखी धारण करने को प्रार्थना मुद्रा नाम से कहा गया है।

(5.16) पंकज मुद्रा-

संमुखी कृत्य हस्तौ द्वौ किंचित्संकुचितांगुली।
मुकुली तु समाख्याता पंकजा प्रसृतैव सा।। (तं सा)

अर्थात् दोनों हाथों को सामने करके अंगुलियों को मुकुल के समान फैलाते हुये थोड़ा संकुचित कर धारण करने को पंकजमुद्रा नाम से कहा गया है।

(5.17) मृगी मुद्रा–

मृगी कनिष्ठतर्जन्यौ यदि मुक्ते तदा भवेत्। (तं सा)

अर्थात् कनिष्ठा और तर्जनी जब बाहर की ओर खुली हों तथा अंगूठा, मध्यमा और अनामिका के अग्र भाग जुड़े हों तो उसे मृगी मुद्रा कहते हैं। जिसे न्यासों और हवन आदि में प्रयोग किया जाता है।

(5.18) ज्ञान मुद्रा–

तर्जन्यंगुष्ठौ सक्तावग्रतो विन्यसेदूर्ध्वं।।
वामहस्ते भुजं वामजानुमूर्ध्नि विन्यसेत्।
ज्ञानमुद्रा भवेदेषा, (तं सा)

अर्थात् दोनों हाथों के अंगूठे व तर्जनी के अग्र भाग को स्पर्श कर दोनों घुटनों के ऊपर आकाश की ओर करके स्थापित करें, यह ज्ञान मुद्रा है।

(5.19) चिन्मुद्रा–

चिन्मुद्रा भवेदेवैषा।
तर्जन्यंगुष्ठौ सक्तावग्रतो विन्यसेदधः।।
वामहस्ते भुजं वामजानुमूर्ध्नि विन्यसेत्। (तं सा)

अर्थात् दोनों हाथों के अंगूठे व तर्जनी एक दूसरे के अग्रभाग को स्पर्श कर दोनों घुटनों पर नीचे पृथिवी की ओर करके स्थापित करें, यह चिन्मुद्रा है।

(5.20) स्वरोदय मुद्रा –

अंगुष्ठौ सरलौ कृत्वा हस्तौ संश्लिष्य च शेषैः।
पाणितलं स्पृशेन्मुद्रा स्वरोदयेति ज्ञेया सा।। (तं सा)

अर्थात् दोनों हाथों को परस्पर जोड़कर अंगुठों को सीधे रखते हुये शेष अंगुलियों से करतल को मुट्ठीनुमा स्पर्श करें, यह स्वरोदय मुद्रा है।

(5.21) चतुरस्र मुद्रा–

उभे पाणितले स्पृष्टे दक्षांगुलीर्बहिर्वामे।

वामांगुलीर्बहिर्दक्षे एषा चतुरस्र मुद्रा।। (तं सा)

अर्थात् दोनों करतालों को एक दूसरे के ऊपर रख कर दाहिने हाथ की अंगुलियों को बायीं ओर बाहर करें और बायीं हाथ की अंगुलियों को दाहिनी ओर बाहर करें, यह चतुरस्र मुद्रा है।

(5.22) मुष्टिक मुद्रा–

बहिर्मुष्टिः कृत्वा दक्षं वामोपरि स्थापयेच्च।

मुष्टिकमुद्रैषा तथा दर्शयेदधिकारन्तु।। (तं सा)

अर्थात् अंगूठे को बाहर कर मुट्ठी बांधके बायीं मुट्ठी पर दाहिनी मुट्ठी को स्थापित करें। यह अधिकार को दर्शानेवाली मुष्टिक मुद्रा है।

(5.23) सौभाग्यदण्डिनी मुद्रा–

वामकरबहिर्मुष्टिं वामतर्जनीं सरलां।

कृत्वा समीयेद्वामके सौभाग्यदण्डिनी मुद्रा।। (तं सा)

अर्थात् बायें हाथ की मध्यमा, अनामिका और तर्जनी अंगुलियों से बाये करतल को स्पर्श कर मुट्ठी बनायें और उस पर अंगूठे को रखकर तर्जनी को बाहर की ओर सीधा करें, यह सौभाग्यदण्डिनी मुद्रा है।

(5.24) ऋजुग्रीवा मुद्रा–

वामान्तर्मुष्टिं च कृत्वा तर्जनीं सरलां कुर्यात्।

भवेदेषा ऋजुग्रीवा मुद्रा सर्वकर्मफला।। (तं सा)

अर्थात् बायें हाथ के अंगूठे से कनिष्ठा के मूल को स्पर्श करें व तर्जनी को बाहर की ओर सीधा रखते हुये शेष अंगुलियों से अंगूठे को ढक दें, यह सर्वकर्मफलदायिनी ऋजुग्रीवा मुद्रा है।

(5.25) गालिनी मुद्रा–

कनिष्ठांगुष्ठकौ सक्तौ करयोरितरेतरम्।

तर्जनीमध्यमानामा संहता भुग्नवर्जिता।।

मुद्रैषा गालिनी प्रोक्ता शंखतोयविशोधने। (तंसा)

अर्थात् दोनों हाथों के अंगूठे और कनिष्ठा को परस्पर स्पर्श कराते हुये शेष अंगुलियों को विना टेढ़ा किये विपरीत क्रम से एक दूसरे के ऊपर रखें, यह गालिनी मुद्रा है जिसे शंख के जल के शोधन में प्रयोग किया जाता है।

(5.26) तत्त्व मुद्रा-

अंगुष्ठानामिका योगात्तत्त्वमुद्रा प्रकीर्तिता। (तंसा)

अर्थात् दोनों हाथों के अंगूठे से अनामिका के अग्रभाग को स्पर्श करें, यह तत्त्वमुद्रा नाम से कही गयी है।

(5.27-1) नैवेद्य को (भोग लगाने) अर्पण करने में प्रयुक्त 7 मुद्राओं का अब क्रम से वर्णन कर रहे हैं।

प्राण मुद्रा-

अंगुष्ठेन समायुक्ता कनिष्ठानामिका तथा।
प्राणमुद्रा समाख्याता प्राणहवनकर्मणि।।(तंसा)

अर्थात् अंगूठे से अनामिका और कनिष्ठा का स्पर्श करें व तर्जनी और मध्यमा को बाहर की और सीधा रखें, यह प्राण मुद्रा नाम से प्रसिद्ध है जिसका प्रयोग प्राण को आहुति देने के कर्म में होता है।

(5.27-2) व्यान मुद्रा-

तथाऽनामिकामध्यमा।
अंगुष्ठेन समायुक्ता नियुक्ता व्यान होमके।। (तंसा)

अर्थात् अंगूठे से अनामिका और मध्यमा का स्पर्श करें तथा कनिष्ठिका और तर्जनी को बाहर की ओर सीधा रखें, यह व्यान मुद्रा है जिसका प्रयोग व्यान को आहुति देने के कर्म में होता है।

(5.27-3) अपान मुद्रा-

तर्जनीमध्यमांगुष्ठै स्त्रिभिरेकीकृतं यदा।
स्यादपानाहुतौ मुद्रा (तंसा)

अर्थात् अंगूठे से तर्जनी और मध्यमा का स्पर्श करें व अनामिका और तर्जनी को बाहर की ओर सीधा रखें, यह अपान मुद्रा है जिसका प्रयोग अपान को आहुति देने के कर्म में होता है।

(5.27-4) समान मुद्रा-

सर्वाभिः संस्पृष्टा मुद्रा समानाहुतिकर्मणि।। (तंसा)

सभी अंगुलियों के अग्रभाग को परस्पर स्पर्श करें, यह समान मुद्रा है जिसका प्रयोग समान को आहुति देने के कर्म में होता है।

(5.27-5) उदान मुद्रा-

निष्कनिष्ठेन या मुद्रा सोदानहवने स्मृता।

अर्थात् कनिष्ठा को छोड़कर शेष अंगुलियों के अग्रभाग का आपस में स्पर्श करें, यह उदान मुद्रा है जिसका प्रयोग उदान को आहुति देने के कर्म में होता है।

(5.27-6) ब्रह्मार्पण मुद्रा-

नेत्रयोर्मीलनं कृत्वा देवता ध्यानपुरःसरं।
निम्ने सम्मुखे सर्वाभिः पृथक्स्पृष्टा धारिता तथा।
नैवेद्यसमर्पणे या मुद्रा सा च ब्रह्मार्पणा।। (तंसा)

अर्थात् आँखें बन्द करके देवता का ध्यान करते हुये अपने घुटनों के सामने दोनों हाथों की सभी अंगुलियों को ऊपर की ओर खुला रखें, यह ब्रह्मार्पण मुद्रा है जिसका प्रयोग नैवेद्य को समर्पण करने में होता है।

(5.27-7) ग्रास मुद्रा-

अंगुलयः कुटिली भूता विरलाग्रा परस्परम्।
ग्रासमुद्रा समाख्याता ह्यन्नं पाणौ नियोजिता।। (तंसा)

अर्थात् दाहिने हाथ की सभी अंगुलियों को थोड़ा टेढ़ा करें व परस्पर दूर रखें और उसमें अन्न को ग्रहण करने की भावना करें, यह ग्रास मुद्रा है जिसका प्रयोग देवता को भोजन खिलाने केलिये होता है।

अब केवल **श्रीयन्त्र** की पूजा में प्रयुक्त 10 विशेष मुद्राओं का लक्षण बता रहे हैं।

(5.28-1) सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा-

कनिष्ठाऽनामिकामध्या नखैरन्योन्यसंगताः।

कृत्वाऽङ्गुष्ठौ कनिष्ठाग्रौ प्राक्कुर्याच्च तर्जनी।।

सर्वसंक्षोभिणीमुद्रा त्रैलोक्यक्षोभकारिणी। (तंसा)

अर्थात् दोनों हाथों की कनिष्ठा, अनामिका और मध्यमा अंगुलियों के नाखूनों से एक दूसरे का स्पर्श करें व दोनों अंगुठों को कनिष्ठा पर स्थित करके तर्जनी को बाहर की ओर सीधा रखें, यह संक्षोभिणी मुद्रा है जो तीनों लोकों को संक्षुब्ध करती है।

(5.28-2) सर्वविद्राविणी मुद्रा

एतस्या मध्यमे देवि तर्जनीवत्कृते सती।।

सर्वविद्राविणी मुद्रा सर्वासामपि योषिताम्। (तंसा)

अर्थात् सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा में ही मध्यमा अंगुलियों को भी तर्जनी के समान बाहर की ओर सीधा रखें, यह सर्वविद्राविणी मुद्रा है जो समस्त स्त्रियों को द्रवीभूत करती है।

(5.28-3) सर्वाकर्षिणी मुद्रा

ताभ्यामंकुशरूपाभ्यां संश्लिष्टाकर्षिणी मता।। (तंसा)

अर्थात् उन्हीं दोनों यानि मध्यमा और तर्जनी को अंकुश के आकार में संश्लिष्ट रखें, यह सर्वाकर्षिणी मुद्रा है जो सभी को आकर्षित करती है।

(5.28-4) सर्ववश्यंकरी मुद्रा-

परिवृत्तांगुलीकृत्वा नखाश्लिष्टतरौ करौ।

अंगुष्ठतर्जनीश्लिष्टौ सर्ववश्यंकरी मता।। (तंसा)

अर्थात् अंगुलियों (मध्यमा अनामिका कनिष्ठिका) को अन्दर की ओर इस प्रकार आपस में बांधते हुये मोड़ें कि उनके नाखूनों का आपस में स्पर्श न हो और अंगूठा व तर्जनी आपस में श्लिष्ट हो, यह सर्ववश्यंकरी मुद्रा है जो संपूर्ण जगत को अपने वश में कर देती है।

(5.28-5) सर्वोन्मादिनी मुद्रा

करौ तु प्रसृतौ कृत्वा व्यत्यस्तौ तत्कनिष्ठिके।

तदग्राश्लेषतो भुग्ने मध्यमानामिके ऋजू।।

सम्मुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमामध्यमेऽन्त्यजे।
अनामिके तु सरले तद् बहिस्तर्जनीद्वयम्।।
दण्डाकारौ ततोऽगुष्ठौ मध्यमानखदेशगौ।
एषोन्मादिनी मुद्रा सर्वोन्मादनकारिणी।। (तंसा)

अर्थात् दोनों हाथ सामने फैला कर कनिष्ठिकाओं को इस प्रकार व्यत्यस्त करें कि उनके अग्रभाग परस्पर स्पर्श न करते हुये मुड़े रहे और मध्यमा व अनामिका को सीधा धारण करें। अंगुठों को दण्डाकार कर दोनों मध्यमा के निचले पर्व के निकट स्थित करें और अंगुठों पर तर्जनियों को मोड़कर ढकें, यह सर्वोन्मादिनी मुद्रा है जो सभी को आपके प्रति मोहित कर देगी।

(5.28-6) सर्वमहांकुशा मुद्रा-

अन्या त्वनामिके भुग्ने तर्जन्यौ वांकुशाकृती।
एषो महांकुशा मुद्रा स्तम्भनाकर्षकारिणी।। (तंसा)

अर्थात् दोनों अनामिकाओं और दोनों तर्जनियों को नीचे की ओर झुकाकर अंकुश के रूप में धारण करें, मध्यमा को सीधे में थोड़ा अंकुशाकार में मोड़ें और कनिष्ठिका को सीधा रखें, यह सर्वमहांकुशा मुद्रा है जो सभी को क्षुब्ध और आकर्षित करती है।

(5.28-7) सर्वखेचरी मुद्रा-

वामदक्षकरौ सम्यग्विन्यसेत्कूर्परौ ततः।
मणिबन्धौ च बध्नीयादंजलिं मध्यपृष्ठयोः।।
विधाय भुग्ने तर्जन्यावंगुष्ठौ कारयेदृजू।
कनिष्ठानामिके कुर्याद्व्यत्यस्ते करपृष्ठके।।
इयं सा खेचरी मुद्रा ललिता प्रीतिकारिणी।। (तंसा)

अर्थात् दोनों हाथों की कोहुनियों को अच्छी तरह आपस में व्यस्त कर मणिबन्धों को बान्धते हुये मध्यमा के पृष्ठों से अंजलि आकार बनाकर उस पर तर्जनियों को थोड़ा टेढ़ा कर अंगुठों को सीधा रखें, यह सर्वखेचरी मुद्रा है जो ललिता देवी को अत्यन्त प्रसन्न करनेवाली है।।

(5.28-8) सर्वबीज मुद्रा-

अस्या विरचनेनैव सर्वा: सिद्ध्यन्ति देवता: ।
कनिष्ठे तर्जपृष्ठे च वृद्धाभ्यां योजयेच्छनै: ।।
कनिष्ठपृष्ठे मध्ये द्वे तयो: पृष्ठे त्वनामिके ।
अष्टमी बीजमुद्रेयं ।। (तंसा)

अर्थात् दोनों कनिष्ठिकाओं को तर्जनियों के पृष्ठभाग पर धीरे-धीरे लम्बा करके स्थापित करें और कनिष्ठिका के पृष्ठभाग पर दोनों मध्यमाओं को रखकर उन पर पुन: अनामिकाओं को स्थापित करे तथा अंगुठें को सामने से तर्जनी पर रखें, यह सर्वबीज मुद्रा है जिसकी विरचना से समस्त देवताओं को सिद्ध किया जाता है।

(5.28-9) महायोनि मुद्रा- (विशेष)

''नवमी याभिरीरिता ।।
मिथ: कनिष्ठिके बद्धा तर्जनीभ्यामनामिके ।
अनामिकोर्ध्वगश्लिष्टदीर्घमध्यमयोरध: ।।
अंगुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता ।। (तंसा)

अर्थात् कनिष्ठिकाओं को आपस में बांधकर तर्जनियों से अनामिकाओं को बांध लें और मध्यमाओं को अनामिकाओं के ऊपर बांधें तथा अंगुठें को सामने से अनामिकाओं पर रखें, यह महायोनि मुद्रा है।

(5.28-10) त्रिखण्डा मुद्रा-

परिवृत्य करौ स्पृष्टावंगुष्ठौ कारयेत्समौ ।
अनामान्तर्गते कृत्वा तर्जन्यौ कुटिलाकृती ।।
कनिष्ठके नियुंजीत निजस्थाने महेश्वरि ।
त्रिखण्डेयं समाख्याता ललिता प्रीतिकारिणी ।।(तंसा)

अर्थात् करकमलों को उल्टा कर अंगुठों को सीधा रखते हुये अनामिकाओं के भीतर तर्जनियों को थोड़ा टेढ़ा कर प्रवेश कराके कनिष्ठिकाओं को अपने पृष्ठ भाग से पूरा स्पर्श कराके उन पर अंगुठों को स्थापित करें, यह त्रिखण्डा मुद्रा है जो ललिता को प्रसन्न करनेवाली है।

(5.29) गरुड़ मुद्रा- वैष्णव मन्त्र व विष्णु पूजन में प्रयुक्त यह एक **विशेष मुद्रा है।**

मिथस्तर्जनिके श्लिष्टे श्लिष्टावंगुष्ठकौ तथा।।
मध्यमानामिके तु द्वौ पक्षाविव विचालयेत्।
एषा गरुडमुद्रा स्याद्विष्णोः संतोषवर्द्धिनी।। (तंसा)

अर्थात् तर्जनियों, अंगुठों और कनिष्ठिकाओं को परस्पर जोड़कर स्पर्श करके मध्यमा और अनामिका अंगुलियों को पक्षीके पंखके समान चलायें, यह गरुड़ मुद्रा है जो विष्णु की प्रसन्नता को बढ़ानेवाली है।

(5.30) सूकरी और हंसी मुद्रा-

सूकरी सर्वांगुलाभिर्हंसी मुक्तकनिष्ठिका।। (तंसा)

अर्थात् सभी अंगुलियों के अग्रभाग का परस्पर स्पर्श करना सूकरी मुद्रा है और कनिष्ठिकाओं को सीधा रखके शेष अंगुलियों के अग्रभागों का स्पर्श करना हंसी मुद्रा है। मृगी मुद्रा सहित ये दोनों मुद्रायें हवन कर्म में प्रयुक्त होती हैं।

6. अग्नि/होमप्रकरणम्

हवनकर्ता स्नानादि नित्य नैमित्तिक कर्मों को करके उत्तरीय सहित शुभ्रवस्त्र धारणकर यज्ञमण्डप में आकर यज्ञीय आसन पर **बैठके** कुशाओं के अग्रभाग को पूर्व या उत्तर की ओर करके बिछायें और आचमन प्राणायाम आदि सामान्य कृत्य करके संकल्प करें-

'**ॐ विष्णु**..... अमुक**कर्माङ्गतया पंचभूसंस्कारान् करिष्ये**'।

क्योंकि संकल्प के बिना कर्म व्यर्थ होता है जैसे कि कात्यायन ऋषि ने कहा है-

संकल्प एव मुख्यः स्यात्स्नानदानादिकर्मसु।
कर्म संकल्परहितं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्।।

अर्थात् स्नान, दान आदि सकल कर्मों में संकल्प ही मुख्य है और संकल्प के बिना संपूर्ण कर्म निष्फल होता है।

'**भूरसीति भूमिशोधनम्**' अर्थात् भूरसि इत्यादि मन्त्र से हवनकुण्ड अथवा स्थण्डिल का पंचगव्य से प्रोक्षण कर भूमि शुद्धि की भावना करे- **ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीम्मा हिꣳसीः।।**

हस्तप्रक्षालन करके **अश्मा चेति मृत्तिका स्थापनम्** अर्थात् अश्मा च इत्यादि मन्त्र से हवनकुण्ड अथवा स्थण्डिल में पवित्र नदी की थोड़ी मृत्तिका ड़ाले- **ॐ अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यञ्च मे यश्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।**

एष स्तोमेति दर्भं गृह्णाति अर्थात् एष स्तोम इत्यादि मन्त्र से दर्भ को ग्रहण करे -

ॐ एष स्तोमो मरुतऽइयङ्गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषामासीदृतन्वेवयां विद्याभेषं वृजनशीर दानुम्।।

पांच भूसंस्कार इस प्रकार है-

1. **यद्देवेति दर्भैः परिसमूहनम्** अर्थात् यद्देव इत्यादि मन्त्र से परिसमूहन संस्कार करें-

ॐ यद्देवादेव हेडनन्देवा सश्च कृमवयम्।
अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।

'परिसमुह्य' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें-

धृत्वाङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां मूलैः साग्रैः कुशत्रयम्।
तदग्रैस्तस्य रजसां पूर्वस्यामपसर्पणम् ।।

अर्थात् अंगूठा और कनिष्ठिका से अग्र सहित तीन कुशा को लेकर, उनके अग्रभाग से थोड़ा धूल (मिट्टी) निकालकर पूर्व दिशा में फेंकें।

2. **मानस्तोकेत्युपलेपनम्** अर्थात् मानस्तोक इत्यादि मन्त्र से गोबर से भूमि भाग को लीपे -

ॐ मानस्तोके तनये मानऽऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः।
मानो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।।

'उपलिप्य' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें- गोमय से हवनकुण्ड को लीपें। क्योंकि-

गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमंगला।
यज्ञार्थे संस्कृता भूमिस्तदर्थमुपलेपनं।।

गोमय में लक्ष्मी का वास है, इसलिये वह पवित्र और सर्वकल्याणकारी है। यज्ञ केलिये भूमि का संस्कार करना होता है और वह संस्कार गोमय से ही होता है। गोमय का लक्षण-

रुग्णा वृद्धा प्रसूता च वन्ध्या संधिन्यमेध्यभुक्।
मृतवत्सा च नैतासां ग्राह्यं मूत्रं शकृत्पयः।।
स्वच्छं तु गोमयं ग्राह्यं स्थाने च पतिते शुचौ ।
उपर्य्यधः परित्यज्य आर्द्रजन्तु विवर्जितम्।

अर्थात् रोगिणी, बूढ़ी, प्रसूता, बांझ, संधिकाल में अपवित्र चीजों को खानेवाली और जिसका बछड़ा मर गया हो ऐसी गाय के दूध, मूत्र और गोबर को पूजा, हवन आदि शुभ कर्मों केलिये ग्रहण नहीं करना चाहिये। शुद्ध स्थान में गिरा हुआ स्वच्छ गोबर ग्रहण करें, उसमें भी ध्यान रहे कि गीला न हो और कीड़ों से युक्त न हो एवं ऊपर व नीचे के भाग को छोड़कर लें।

3. **त्वामिद्धीत्युल्लिख्य** अर्थात् त्वामिद्धि इत्यादि मन्त्र से उल्लेखन संस्कार करें - **ॐ त्वामिद्धि ह व हसातो वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिन्नरस्त्वाङ्काष्ठा सर्वतः।। ॐ प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीया-स्तृतीयैस्तृतीया सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजूभिर्यजूᳬषि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोनुवाक्याभिः पुरोनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा आहुतिभिराहुतयो मे कामान्समर्द्धयन्तु भूः स्वाहा।। ॐ दक्षिणमारोह त्रिष्टुप्त्वाऽअवतु। बृहत्साम पञ्चदश-स्तोमो ग्रीष्म ऋतुः क्षत्रन्द्रविणम्प्रतीचिमारोह।।ॐ प्रतीचिमारोह जगती त्वाऽअवतु। वैरूपᳬसाम सप्तदशस्तोमो वर्षा ऋतु विड्द्रविणमुदीचीमारोह।। ॐ उदीचीमारोहानुष्टुप्त्वाऽअवतु। वैराजᳬसामैकविᳬशस्स्तोमः शरदृतु फलन्द्रविणमूर्ध्वमारोह।।"**

'**त्रिरुल्लिख्य**' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें-

खादिरेण हस्तमात्रेण खड्गाकृतिना स्फ्येन उल्लिख्य प्रागग्रा उदक्संस्थाः स्थण्डिलपरिमाणास्तिस्रो रेखा कुर्यात्।

अर्थात् खदिर (खैर) के पेड़ का एक हाथ लम्बा खड्ग के आकारवाले स्फ्य नामक अस्त्र को पूर्व की ओर आगे बढ़ाते हुये स्थण्डिल के नाप के अनुसार तीन रेखा बनायें।

4. **सदसस्पतिनोद्धरणं** अर्थात् सदसस्पति इत्यादि मन्त्र से उद्धरण संस्कार करे - **"ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधा मयासिषᳬस्वाहा।। ॐ व्रतङ्कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञीयः दैवीं धियम्मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञ वाहसᳬसुतीर्थानोऽअसद्वशे। ये देवा मनो जाता मनो युजो दक्षक्रतवस्ते नोऽअवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा।।"**

'**उद्धृत्य**' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें-

'**अनामिकांगुष्ठाभ्यां यथोल्लिखिताभ्यो लेखाभ्यः पांसूनुद्धरेत्**'

अर्थात् अनामिका और अंगूठे से अभी बनायी गयी रेखाओं के बीच में से थोड़ी धूल (मिट्टी) को निकालें।

5. शन्नो देवेत्यभ्युक्षणम् अर्थात् शन्नो इत्यादि मंत्र से अभ्युक्षण संस्कार करें-"**ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।।"**
'**अभ्युक्ष्य**' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें- "**मणिकाद्भिर-भ्युक्ष्याभिषिच्य**" यानि मणिकायुक्त जल से अभ्युक्षण और अभिषेक करें। क्योंकि कहा है-

आपो देव गणाः सर्वे आपः पितृगणाः स्मृताः।
तेनैवाभ्युक्षणं प्रोक्तमृषिभिर्वेदवादिभिः।।
उत्तानेन तु हस्तेन कर्त्तव्यं प्रोक्षणं बुधैः।
अवाचीनेन हस्तेन कर्त्तव्यं तदवेक्षणम्।
मुष्टिकृतेन हस्तेन चाभ्युक्षणमुदाहृतम्।।

अर्थात् सभी देवगण जल ही हैं, पितृगण जल ही हैं, इसलिये जल से ही अभ्युक्षण और अभिषेक करना चाहिये ऐसा वेदवादी ऋषियों ने कहा है। किस कर्म में जल का प्रयोग कैसे करें? बुद्धिमान प्रोक्षण कर्म को सदा ऊंचे हाथ से करें, नीचे की ओर हाथ करके जल का अवेक्षण करें और अभ्युक्षण कर्म केलिये हाथ में जल लेकर मुट्ठी बांधके जल को हवन कुण्ड में डालें। इस प्रकार पांच भूसंस्कारों को करके स्वस्ति वाचन करे। तत्पश्चात् अग्नि को उत्पन्न करें अथवा लावे।

अग्नि को उत्पन्न करने अथवा लाने की विधिः -

कर्मप्रयोगरत्न में कहा है कि-

उत्तमोऽरणिजन्योऽग्निर्मध्यमः सूर्यकान्तजः।
उत्तमः श्रोत्रियगृहान्मध्यमः स्वगृहादिजः।।

अर्थात् विभिन्न साधनों से उत्पन्न की जानेवाली अग्नियों में से अरणिमन्थन से उत्पन्न अग्नि श्रेष्ठ है और सूर्यकान्तमणि (अथवा लेन्स) से उत्पन्न अग्नि मध्यम है, शेष निकृष्ट है। यदि अग्नि को रसोई आदि अन्यस्थान से यज्ञकुण्ड में लाना है तो श्रोत्रिय के घर की हो तो श्रेष्ठ और अपने घर की हो तो मध्यम, शेष निकृष्ट है।

अग्नि लाने में पात्र आदि नियम-

शुभं पात्रं तु कांस्यं स्यात्तेनाग्निं प्रणयेद्‌बुधः।
तस्याभावे शरावेण नवेनापि दृढेन च।।

अर्थात् कांस्य का बर्तन श्रेष्ठ है और वह उपलब्ध न हो तो मिट्टी के नये व दृढ़ बर्तन में ला सकते हैं।

पात्रेण पिहिते पात्रे वह्निमेवानयेत्ततः।
अस्त्रेणादाय तत्पात्रं वर्मणोद्‌घाटयेत्तु तं।।
अस्त्रमन्त्रेण नैऋत्ये क्रव्यादांशं ततस्त्यजेत्।
मूलेन पुरतो धृत्वा संस्कारांश्च ततश्चरेत्।।

अर्थात् कभी भी अग्नि को खुला न लायें अपितु दूसरे पात्र से ढक कर अस्त्रमन्त्र से लायें और यज्ञमण्डप में लाने के बाद वर्ममन्त्र से उसे खोलें। अस्त्रमन्त्र से ही क्रव्यादांश के रूप में थोड़ा अंगारा नैऋत्य दिशा में फेंकें तत्पश्चात् अपने सामने रखी हुयी अग्नि की पूजा करके संस्कारों को करें। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में अग्नि की पूजा के विषय में कहा है कि-

मध्येऽपि गन्धपुष्पादीन्दद्यादग्नेर्न संशयः।
बहिर्नैवेद्यमात्रन्तु दातव्यमिति निश्चयः।।

पंचोपचार पूजा में जो गन्ध पुष्प आदि अर्पण करते हैं उन्हें अग्नि के मध्य में ही डालें किन्तु नैवेद्य को बाहर रखके अर्पण करें।

अब **कुशकण्डिका** कर्म करें-

'अग्निमुपसमाधाय' ऐसा बोलकर कर्म के साधनभूत लौकिक अथवा स्मार्त अथवा श्रौत अग्नि को अपने सामने रखकर अग्नि की सात जिह्वाओं के नाम बोलें, **अग्नि के नाम -**

याभिर्हव्यं समश्नाति हुतं सम्यग् द्विजोत्तमैः।
काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता चैव सुधूम्रवर्णा।।
स्फुलिंगिनी विश्वरुचिस्तथा च चलायमाना इति सप्त जिह्वा।
एताश्चोक्ता विशेषेण ज्ञातव्या ब्राह्मणेन तु।।
आहूय चैव होतव्यो यो यत्र विहितो विधिः।

अविदित्वा तु यो ह्यग्निं होमयेदविचक्षणः।।
न हुतं न च संस्कारो न तु यज्ञफलं भवेत्।

ग्रहहोम में भी हवन करते वक्त ध्यान देने योग्य बात यह है कि ग्रह के अनुसार अग्नि के नाम अलग-अलग होने से जिस ग्रह को उद्देश्य कर आहुति देना है उस की अग्नि का नाम स्मरण कर आहुति देनी चाहिये। उनके नाम स्कन्दपुराण में इस प्रकार बताया है-

आदित्ये कपिलो नाम पिंगलः सोम उच्यते।
धूमकेतुस्तथा भौमे जाठरोऽग्निर्बुधे स्मृतः।।
गुरौ चैव शिखी नाम शुक्रे भवति हाटकः।
शनैश्चरे महातेजा राहुकेत्वोर्हुताशनः।।

अर्थात् सूर्य की आहुति को कपिल नाम की अग्नि में डालना है यानि सामने में विद्यमान अग्नि में भावना करें कि 'यह कपिल नाम की अग्नि है'। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के विषय में भी भावना करें। चन्द्र- पिंगल, मंगल- धूमकेतु, बुध- जाठर, गुरु - शिखी, शुक्र- हाटक, शनि- महातेजा, राहु और केतु (दोनों केलिये)- हुताशन।

पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में पूजन करे।

"ॐ पृथिव्याः सधस्थादग्निम्पुरीष्यमङ्गिरस्वदच्छेमोऽअग्निम्पुरीष्यमङ्गिरस्वद्भरिष्यामः।" -पूर्वे,

"ॐ अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सन्नमताम दो वायुश्चांतरिक्षश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदऽआदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदऽआपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदः सप्तसꣳसदोऽष्टमीभूत साधनी सकामाँ।" - दक्षिणे,

"ॐ वायो ये ते सहस्रिणोरथासस्तेभिरागाहि। नियुत्वान्सोम पीतये।।" -पश्चिमे,

"ॐ सोमो धेनुꣳसोमोराजाऽअर्वन्तमासुꣳसोमो वीरङ्कर्मण्यन्ददाति। सादन्यं वितथꣳसभेयम्पितृश्रवणं ये आददा समस्मै।।" - उत्तरे,

"ॐ अग्निन्दूतन्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ३आसादयादिह।।" - आग्नेये,

"ॐ कयानश्चित्रऽआभुव दूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्टया

वृता।।'' – नैर्ऋत्ये,

''ॐ वायुरनिलममृतमथेदम्भस्मान्तꣳशरीरम्। ॐ क्रतो३स्मर क्लिवे३स्मर कृतꣳस्मर।।'' – वायव्ये,

''ॐ ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्याञ्जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।'' – ईशान्ये।

अब मध्य में तीन मन्त्रों से पूजन करे – **''ॐ सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाऽअजस्रम्। तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः।। ॐ प्रजापते नत्त्वदेता–न्यन्न्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्।। ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधा मयासिषꣳस्वाहा।।''** अब लकड़ियों (ईंधन) व समिधाओं का शोधन करे – **''ॐ कस्त्वा सत्योमदानामꣳहिष्टो–मत्सदन्धसः दृढ़ा चिदारुजे वसु।।''** तत्पश्चात् लकड़ियों व समिधाओं को अग्नि पर स्थापित करे –

"ॐ त्वामिद्धि हवामहे सा तौ वाजस्य कारवः।
त्वां वृत्रेष्विन्द्रसत्पतिन्नरस्त्वां काष्ठा सर्वतः।।"

अब अग्नि को शुद्ध करें– **''ॐ अग्नावग्निश्चरति प्रविष्टाऽऋषीणाम्पुत्रोऽभिशास्ति पावा। स नः स्योनः सुयजा यजे ह देवेभ्यो हव्यꣳसदमप्रयच्छन्त्स्वाहा।।''**

अग्नि को ग्रहण (स्वीकार) करे– **''ॐ मयि गृह्णाम्यग्ने अग्निꣳरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय। मामु देवताः सचन्ताम्।।''**

अब अग्नि के गर्भाधान से विवाह पर्यन्त संस्कार करे –

1. गर्भाधानम्:–**"ॐ गर्भोऽअस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्ने गर्भोऽअपामसि।।"**
2. पुंसवनम्:– **"ॐ विवस्वान्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वा हारपऽएधते गृहे।।"**
3. सीमन्तोन्नयनम्:– **''ॐ अजीजनो हि पवमानसूर्यं विधारेशक्मना**

पयः। गोजीरयारꣳहमानः पुरन्ध्या।।"

4. जातकर्मः- "ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवायन्दशमास्यो अस्रज्जरायुणा सह।।"

5. नामकरणम्:- "ॐ यदापि पेषमातरम्पुत्रः प्रमुदितौधयन्। एतत्त-दग्नेऽअनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया।। सम्पृचस्थसम्या भद्रेण पृङ्क्तो विपृचस्थविमा पाप्मना पृङ्क्त।।"

6. निष्क्रमणम्:-"ॐ पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्चदिशऽउदजयत्ता-ऽउज्जेषꣳसविता षडक्षरेण षडृतूनुदजयत्तानुज्जेषम्बृहस्पति-रष्टाक्षरेण गायत्रीमुज्जेषाम्मित्रो नवाक्षरेण।।"

7. अन्नप्राशनम्:- "ॐ अन्नपतेऽअन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नो धेहि। द्विपदे चतुष्पदे।।"

8. चूड़ाकरणम्:- "ॐ अग्नऽऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि।।"

9. कर्णवेध::-"ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष-भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायुः।।"

10. उपनयनम्:- "ॐ अग्निरेकाक्षरेणप्राणमुदजयन्तामुज्जेषमश्विनो द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयन्तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रीँल्लोकानुदजयन्तानुज्जेषꣳसोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदः पशूनुज्जेषं पञ्चाक्षरेण।।"

11. गायत्रीश्रवणम्:-"ॐ भूर्भुवः स्वः वैश्वानराय विद्महे सप्तजिह्वाय धीमहि। तन्नोऽअग्निः प्रचोदयात्।।"

12. समावर्तनम्:-"ॐ व्रतङ्कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञीयः दैवीं धियम्मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञ वाहसꣳसु-तीर्थानोऽअसद्वशे। ये देवा मनो जाता मनो युजो दक्षक्रतवस्ते नोऽअवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा।।"

13. गोदानकर्मः- "ॐ गावऽउपावतावतम्मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया।।"

14. विवाहकर्म:- "**ॐ भग एव भगवाँ2। अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तस्त्वा भग सर्व ईज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।।**"

तत्पश्चात् अग्नि को हवनकुण्ड में/स्थण्डिल पर ले जाये-

"**ॐ ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रङ्घर्ममीमहे। उपयाम गृहीतोऽअसि वैश्वानराय त्वैषते योनिर्वैश्वानराय त्वा ।। ॐ वैश्वानरो न ऊतय आ प्रयातु परवतः। अग्निरुक्थेन वाहसा। उपयाम गृहीतोऽअसि वैश्वानराय त्वैषते योनिर्वैश्वानराय त्वा।।**"

तत्पश्चात् अग्नि को हवनकुण्ड में/स्थण्डिल पर स्थापित करे -

"**ॐ अग्निर्म्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाᳬरेताᳬसि जिन्वति।।**"

शोधित समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त यानि तेज करे -

"**ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन्। पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहनः।।**" अब अग्नि से प्रार्थना करे -

ॐ आवाहये पुरुषम्महान्तं सुरासुरैर्वन्दितपादपद्मम्।
ब्रह्मादयो यस्य मुखे विशन्ति प्रविश्वकुण्डे सुरलोकनाथ।।

अग्नि के (अंगभूतकर्म सहित) संस्कार :-

पारस्कर सूत्रों के आधार पर यहां अंगभूत कर्म और संस्कारों का विधान बताया जा रहा है। "**दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य**" इस सूत्र के अनुसार अग्नि के दक्षिण दिशा में यज्ञीय लकड़ी से बनी हुयी पीठ के ऊपर कुशा का आसन बिछाये - "**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**" उस पर कर्मज्ञाता चतुर्वेदी श्रोत्रिय ब्राह्मण को ब्रह्मा नामक ऋत्विक् के कर्म केलिये वरण करके बिठायें और यदि सुयोग्य ब्राह्मण उपलब्ध न हो तो 6 कुशाओं से (आगमानुसार अथवा 50 कुशा श्रौतपद्धति) निर्मित प्रतीकभूत चतुर्मुख ब्रह्मा को चावल से भरे पात्र में रखकर स्थापित करे "**ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः। शूरऽइषव्योतिव्याधीमहारथो जायता-**

न्दोग्ध्रीर्धेनु र्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरान्धिर्योषा निष्णुरथेष्ठाः सभे यो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे नः कल्पताम्।।" (ऋग्वेद के अनुसार, यजुर्वेद के अनुसार इतना अधिक है-**निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।**) उसमें ब्रह्माजी की आवाहन आदि पूर्वक पंचोपचारपूजा करें। ब्रह्मासन के समीप में यजमान का आसन बिछाये- "**ॐ अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयताञ्चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम्। इत क्षमाण भृगुभिः सजोषा स्वर्ष्यन्तु यजमाना स्वस्ति।।**" अग्नि के उत्तरदिशा में प्रणीतापात्र केलिये प्रागग्रकुशाओं का आसन बिछाये और प्रणीता आसन व अग्नि के बीच में प्रोक्षणीपात्र केलिये प्रागग्रकुशाओं का आसन बिछाये- "**ॐ परीत्यभूतानि परीत्यलोकान् परीत्यसर्वाः प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्वमनात्कमानमभि संविवेश।।**" "**प्रणीय**" (अप इति शेषः) अर्थात् अग्नि के उत्तर दिशा में पूर्वाग्र कुशाओं से दो आसन बिछायें। बायें हाथ में यज्ञीय लकडी से बना हुआ 12 अंगुल लम्बा 4 अंगुल चौड़ा और 4 अंगुल गहरा चमस पात्र रखकर उसमें दाहिने हाथ से उद्धृतपात्रस्थ जल को भरें। जल भरने का मन्त्र- "**ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमद्ध्यमꣳश्रथाय। अथावय-मादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम।। तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्द-मानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरूश-ꣳसमान आयुः प्रमोषीः।।**" बायें हाथ से दाहिने हाथ में ग्रहण करें - "**ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाम् जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रयम्।।**" उस चमस पात्र को पहले पश्चिम आसन पर रखके आलभन करने के बाद पूर्व आसन पर स्थापित करें।

परिस्तरण कर्म इस मन्त्र से करें- "**ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञीयाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोतविष्णु-र्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।।**" "**परिस्तीर्य**" अर्थात् एक मुष्टि यानि पूर्वाग्र सोलह बर्हि लेकर ईशानादि से उत्तर तक अग्नि के

चारों तरफ (प्रत्येक दिशा में 4 बर्हि) यज्ञकुण्ड की मेखला के नीचे बिछायें। तत्पश्चात् प्रणीता आदि पात्रों को इस मन्त्र से ढके-"ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहे-डमानो वरुणेहवोद्ध्युरूशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।।"

"**अर्थवदासाद्य**" अर्थात् जितनी सामग्री है उसी के अनुसार अग्नि के उत्तर अथवा पश्चिम दिशा में (प्रयोग करने में अपनी अनुकूलता को देखकर) दो दो अंगुल की दूरी में बिछायें (लम्बाई और चौड़ाई प्रोक्षणी, आज्यस्थाली, इत्यादि पात्रों के अनुसार)।

"**पवित्रे कृत्वा**" इस सूत्र के अनुसार पवित्री का निर्माण करना है जिसका लक्षण है-

अनन्तर्गर्भिणं साग्रं कौशं द्विदलमेव च।
प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित्।।

अर्थात् अन्तर्गर्भित न हो ऐसे अग्र सहित दोदलवाले प्रादेशमात्र लम्बे कुशा से पवित्री को बनाना चाहिये। कुशाओं को प्रादेशमात्र काटने केलिये इस मन्त्र का प्रयोग किया जाता है-

"**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽअमृतात्।। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।**"

कुशाओं से पवित्री को बनाते वक्त इस मन्त्र का पाठ करे-

"**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।। देवीरापो अग्रेगुवो अग्रेपुवो अग्र इममद्य। यज्ञन्नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुम्यज्ञपतिन्देव युवम्।।**"

प्रोक्षणीपात्र-

वारणं पाणिपात्रं च द्वादशांगुलविस्तृतम्।
पद्मपत्राकृतिर्वापि प्रोक्षणीपात्रमीरितम्।।

अर्थात् यज्ञीय लकड़ी से निर्मित 12 अंगुलवाली अंजलि बराबर गहरा, कमल के मुकुल की आकृति अथवा कमल के पत्ते के आकार में बनाये हुये पात्र को प्रोक्षणीपात्र कहा गया है। जल भरने का मन्त्र "**ॐ इदम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।**" अब दो

पवित्र को प्रोक्षणीपात्र में डाले – "**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽ-अश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नये जुष्टं गृह्णामि।।**"

आज्यस्थाली–

आज्यस्थाली कांस्यमयी यद्वा ताम्रमयी तथा।
प्रादेशमात्रदीर्घा सा ग्रहीतव्याऽव्रणा शुभा।।

अर्थात् प्रादेशमात्र नाप की कांसे की अथवा तांबे की आज्यस्थाली ग्रहण करनी चाहिये और वह चोट, छेद, दाग आदि से रहित होनी चाहिये। आज्यस्थाली ग्रहण करने का मन्त्र–"**ॐ घृतवती भुवनानामभि-श्रियोर्वी पृथ्वीमदुघे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्वग्भिस्तेऽजरे भूरि रेतसा।।**"

चरुस्थाली–

दृढा प्रादेशमात्रोर्ध्वं तिर्यङ्नातिबृहन्मुखी।
मृन्मयौदुम्बरी वापि चरुस्थाली प्रशस्यते।।

अर्थात् मजबूत व प्रादेशमात्र ऊंचा, मिट्टी से बना अथवा गूलर की लकड़ी से बने हुये पात्र को चरुस्थाली के रूप में ग्रहण करना चाहिये और वह टेढ़ा–मेढ़ा व बड़े मुँहवाला भी न हो। चरुस्थाली ग्रहण करने का मन्त्र–"**ॐ अन्नपतेऽअन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्प्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।**"

स्रुवा का लक्षण–

खादिरादेः स्रुवः कार्यो हस्तमात्रप्रमाणतः।
अंगुष्ठपर्वखातं तत् त्रिभागं दीर्घपुष्करम्।।

अर्थात् खैर आदि यज्ञीयवृक्षों की लकड़ी से बना हुआ एक हाथ लम्बा, त्रिकोणात्मक (गोल नहीं) अंगूठे के बराबर गहरा किन्तु उसके पुष्कर लम्बे हों ऐसा स्रुवा ही कर्म में प्रयोग करना चाहिये। इस मन्त्र से स्रुवा को ग्रहण करें– "**ॐ स्रुचश्च मे चमसा च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मे धिषवणे च मे पूतभृच्च मऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मे वभृतश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्**"

स्रुवसंमार्जनकुशा-

स्रुवसंमार्जनार्थाय पंच वाथ त्रयोऽपि वा।
प्रादेशमात्रान्गृह्णीयात्संमार्जकुशसंज्ञकान्।।
उपयमनकुशाः सप्त पंच वाथ त्रयोऽपि वा।

अर्थात् स्रुवा को साफ करने केलिये संमार्जनकुशा नाम से प्रादेश मात्र लम्बे पांच अथवा तीन कुशा ग्रहण करें और उपयमनकर्म (स्रुवा पर बांधने केलिये) सात अथवा पांच अथवा तीन कुशा ग्रहण करें। सम्मार्जन कुशा ग्रहण करे

"ॐ शादन्दद्भिरवकान्दन्तमूलैर्मृदं वस्वैस्ते गान्दꣳष्ट्राभ्याꣳसरस्वत्याऽ अग्रजिहवञ्जिह्वायाऽउत्सादमवक्रन्दनतालुवाजꣳहनुभ्यामपऽआश्येन वृषणमण्डाभ्यामादित्याँ। श्मश्रुभिः पन्थानम्भ्रूभ्यान्द्यावापृथिवी वर्तोभ्यां विद्युतङ्कनीनकाभ्याꣳशुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा-पार्याणि पक्ष्माण्य वार्या इक्षवो वार्याणि पक्ष्माणि पार्याऽ इक्षवः।।"

उपयमनकुशा ग्रहण करे – "**ॐ उपयाम गृहीतोऽस्यन्तर्यच्छमघवन्पाहि सोमम्। उरुष्यरायऽएषो यजस्व।।**" सम्मार्जनीकुशाओं द्वारा प्रणीता पात्रस्थ जल से स्रुवा का प्रोक्षण करे (कुशा के अग्र से स्रुवा के अग्र का, मध्य से मध्य का और मूल से मूल का शोधन करे)-

"ॐ प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ता-ऽअरातयः। उर्वन्तरिक्षमन्वैमि।।"

ब्रह्मपुराण में कहा है- **समिधा के वृक्षों के** बारे में-

शमीपलाशन्यग्रोधप्लक्षवैकंकतोद्भवाः ।।
अर्काश्वत्थोदुम्बरौ बिल्वश्चन्दनस्सरलस्तथा।
सालश्च देवदारुश्च खदिरश्चैव यज्ञीयाः।।

अर्थात् याग में ये ही लकड़ी प्रयोग करने योग्य हैं- **शमी,** पलाश, वट, जामुन, वैकंकती, पीपल, गूलर, बेल, चन्दन, चीड़, साल, देवदारु और खैर।

समिधा का लक्षण-

नांगुष्ठादधिका ग्राह्या समित्स्थूलतया क्वचित्।
न वियुक्ता त्वचा चैव न सकीटा न पाटिता।।
प्रादेशान्नाधिका नोना न तथा स्याद् द्विशाखिका।
न सपर्णा न निर्वीर्या होमेषु च विजानता।।

अर्थात् अंगूठे से ज्यादा मोटी न हो, त्वचा रहित न हो, कीड़े युक्त न हो, फटी न हो, दो शाखा युक्त न हो, पत्तों से युक्त न हो, वीर्य रहित न हो और प्रादेशमात्र से ज्यादा लम्बी न हो व न छोटी ही हो ऐसी समिधा के योग्य पूर्वोक्त पवित्र वृक्षों की टहनियों से बनी समिधा ही हवन/याग में प्रयोग करें। "**ॐ समिधाग्निन्दुवस्यत घृतैर्वोधयता-तिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन।।**"

आज्य विचारः -

उत्तमं गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीभवं।
अधमं छागलीजातं तस्माद् गव्यं प्रशस्यते।।

अर्थात् गौ का घी उत्तम है, भैंस का मध्यम और बकरी का अधम, इसलिये गौ का घी ही हवन, पूजा आदि कार्य केलिये सर्वश्रेष्ठ है।

चरुविचारः -

हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु व्रीहयः स्मृताः।
यथोक्तवस्त्वसंपत्तौ ग्राह्यं तदनुकारि यत्।।
यवानामिव गोधूमा व्रीहीणामिव शालयः।
अभावे व्रीहियवयोर्दध्ना वा पयसापि वा।।

अर्थात् हवन के योग्य धान्यों में जौ मुख्य है तत्पश्चात् चावल। यदि ये दोनों उपलब्ध न हो तो इनके सदृश क्षेत्रीय धान्य का प्रयोग करें, जैसे कि जौ के सदृश गेहूं को और चावल के सदृश स्याँवाँ चावल को माना गया है आज्यस्थाली में आज्य भरे और चरुपात्र में चरु भरे - "**ॐ घृताच्यसि जुहूर्नाम्नासेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद घृताच्यसि प्रभृन्नाम्नासेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद**

घृताच्यसि ध्रुवाऽसदन्नृतस्ययोनौ ता विष्णो पाहि यज्ञम्पाहि यज्ञपतिम्पाहि मां यजन्तम्।।"

पूर्णपात्र विचार-

अकृते पूर्णपात्रे च छिद्रयज्ञः प्रजायते।
पूर्णपात्रे च संपूर्णे सर्वसंपूर्णता भवेत्।।

अर्थात् पूर्णपात्र न हो तो वह यज्ञ छिद्र युक्त होगा यानि यजमान केलिये हानिकारक होगा। इसके विपरीत यदि पूर्णपात्र संपूर्ण हो तो सब कुछ संपूर्ण होगा यानि यजमान की सकल कामनायें पूरी होंगी। **''प्रोक्षणीः संस्कृत्य''** अर्थात् प्रोक्षणीपात्र को प्रणीतापात्र की सन्निधि में स्थापित कर उसमें दूसरे पात्र से अथवा अपने हाथ से प्रणीतापात्र के जल से सींच के पवित्रों से उत्पवन करके उन पवित्रों को प्रोक्षणी में डालें। दाहिने हाथ से प्रोक्षणीपात्र को उठाकर बायें हाथ में रखकर उसके जल को उछालकर प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षण करें।

"ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नीषोमोभ्यान्त्वा जुष्टन्नियुनज्मि।। अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यो न त्वा मातामन्यतामनुपितानुभ्राता सगर्भ्यो नु सखा सयूथ्यः अग्नीषोमा-भ्यान्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि।।"

"अर्थवत्प्रोक्ष्य" अर्थात् आज्यस्थाली से पूर्णपात्र पर्यन्त सकल पात्रों पर जिस क्रम से रखा गया था उसी क्रम से प्रोक्षणीपात्र के जल से प्रोक्षण करके प्रणीतापात्र और अग्नि के बीच में प्रोक्षणीपात्र को रखें।

"ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।। अनिशितोऽअसि पत्नक्षिद्वा जिनिन्त्वा वाजेद्ध्यायै सम्माज्र्मि।।"

''निरूप्याज्यम्'' अर्थात् अग्नि के निकट स्थापित आज्यस्थाली में रखे हुये घी में थोड़ा चरु का प्रक्षेप करें और चरुस्थाली में रखे हुये चरु पर प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षण करें।

"अधिश्रित्य" अर्थात् ब्रह्मा ऋत्विक् (उसके अभाव में अध्वर्यु/होता/ यजमान स्वयं) घी का अधिश्रयण कर चरु के साथ थोड़ा घी अग्नि में डालें।

"पर्यग्नि कुर्यात्" अर्थात् जलते हुये अंगारे से घी और चरु पर प्रदक्षिणा करो यानि घुमावे अर्धश्रित चरु पर भी घुमायें।

"स्रुवं प्रतप्य संमृज्य" अर्थात् दाहिने हाथ से स्रुवा को लेकर अधोमुख (उल्टा करके) अग्नि के पश्चिम भाग में पकड़के तपाकर बायें हाथ में पकड़ लें और उस पर संमार्जनी कुशाओं से स्रुवा का शोधन करें। कैसे? कुशा के अग्रभाग से स्रुवा के मूल से शुरुकर अग्र तक स्पर्श करते हुये जायें तथा कुशा के मूल से स्रुवा के अग्र से शुरुकर मूल तक स्पर्श करते जायें। इस मन्त्र से सम्मार्जन कर प्रतपन करे – **"ॐ पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसा धियः पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद: पुनीहि मा।।"** **"पुनः प्रतप्य निदध्यात्"** अर्थात् पूर्ववत् दोबारा तपाके अपनी दाहिने दिशा में रखें। पुनः स्रुवा को इस मन्त्र से तपाये–

"ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि:। अहेडमानो वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमान आयु: प्रमोषी:।।"

स्वस्थान में निम्नमन्त्रोच्चारण पूर्वक स्थापित करे –

" ॐ तमुत्त्वा दध्यङ् ऋषि: पुत्रऽअथर्वण:। वृत्रहणम्पुरन्दरम्।।"

" आज्यमुद्वास्य" अर्थात् आज्यस्थाली को उठाकर चरु के पूर्व दिशा से लाकर अग्नि के उत्तर दिशा में स्थापित करें और चरुस्थाली को उठाकर आज्यस्थाली के पश्चिम दिशा से लाकर आज्यस्थाली के उत्तरदिशा में रखें। आज्यपात्र को अग्नि की प्रदक्षिणा कराके स्वस्थान में रखें – **"ॐ तेजोऽअसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि। प्रियन्देवा-नामनाधृष्टन्देवयजनमसि।।"** चरुस्थाली को भी अग्नि की प्रदक्षिणा कराके स्वस्थान में रखें– **"ॐ पशुभि: पशुनाप्नोति पुरोडाशैर्ह-विꣳष्या। छन्दोभि: सामिधेनीर्याज्याभिर्वषट्कारान्।।"**

"उत्पूय" अर्थात् घी के ऊपर पवित्रीकुशाओं के माध्यम से (अथवा अपनी हथेली से) फूंक मारें। आज्य का उत्पवन करे– **"ॐ प्रत्युष्टꣳरक्ष: प्रत्युष्टा-ऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातय:। उर्वन्तरिक्षमन्वेमि।।"**

"अवेक्ष्य" अर्थात् घी को अच्छी तरह देखें (गृहस्थ हो तो पत्नी को घी देखने को कहे) और उसमें कुछ अन्य द्रव्य दीखे तो निकालें। आज्यावेक्षण करे–**"ॐ आपवस्व हिरण्यवदस्ववत्सोम वीरवत्। वाजङ्गोमन्तमाभर स्वाहा।"**

"प्रोक्षणीश्च पूर्ववत्" अर्थात् प्रोक्षणी पात्र पर भी पूर्ववत् पवित्री कुशाओं से उत्पवन करें। आज्य में कुशा को रखें- **"ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।"**
"उपयमनकुशानादाय" अर्थात् उपयमनकुशाओं को दाहिने हाथ से लेकर बायीं ओर रखें।
"समिधोऽभ्याधाय" अर्थात् बैठे हुये, समिधा को घी से युक्त कर अग्नि में डालकर अग्नि को आहुतियां डालने के योग्य तेज करें। जलती हुयी कुशा को आज्यपात्र, चरुस्थाली और अग्नि के ऊपर प्रदक्षिणा के क्रम से घुमाकर अग्नि में डाले- **"ॐ धृष्टिरस्यपाग्नेऽअग्निमामादञ्जहि निष्क्रव्यादꣳसेधा देवयजं वह। ध्रुवमसि पृथिवीन्दृꣳह ब्रह्मवनित्वा क्षत्रवनि सजात वन्यु पदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय।।"**
"पर्युक्ष्य जुहुयात्" अर्थात् प्रोक्षण पात्र के पूरे जल को पवित्री धारण किये हुये दाहिने हाथ के चुल्लु में भरकर ईशान दिशा से आरम्भकर उत्तरदिशा तक घुमाते हुये अग्नि के चारों तरफ सींचें। तत्पश्चात् संस्रव को धारण करने केलिये प्रणीतापात्र और अग्नि के बीच में थोड़े जल से भरे संस्रवपात्र को स्थापित कर सर्वप्रथम गणाधिपति गणेश भगवान को आहुति देकर आघार आदि पांच वारुणक आहुतियां दें। पांच वारुणक आहुतियों के बारे में त्रिकारिका में कहा है कि-

आघारौ नासिके ज्ञेया आज्यभागौ च चक्षुषी।
वक्त्रश्चोदरकुक्षी च कटी व्याहृतिभिः स्मृता।।
शिरो हस्तौ च पादौ च पंचवारुणकाः स्मृताः।
प्रजापतिः स्विष्टकृतं श्रोत्रे द्वे परिकीर्तिते।।

अर्थात् ऐसी भावना करें कि आप पांच वारुणक आहुतियों से अग्निदेव के शरीर का निर्माण कर रहे हैं। कैसे ? दो आघार आहुतियों से दो नासिका, दो आज्यभाग आहुतियों से दो आंख, सप्त व्याहृतियों से (सात आहुतियों को एक आहुति मानकर पांच वारुण होता है) मुख, पेट, कुक्षी, कटि, सिर, हाथ और पैर तथा अन्त में प्रजापति देवता की आहुति और स्विष्टकृत् होम से दो कानों के निर्मित होने की भावना करें।

****

7. प्रारम्भदिनात्पूर्वदिनत्रयकृत्यं :-

किसी भी अनुष्ठान को आरम्भ करने से पहले तीन दिन प्रायश्चित्त आदि कुछ कर्म करने होते हैं। जैसे कि यदि आप आश्विन् मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपत्तिथि से अनुष्ठन आरम्भ करना चाहते हैं तो आश्विन्मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि से ही **पूर्वकृत्य** आरम्भ करना पड़ता है।

7.1 प्राक्तृतीयदिन (त्रयोदशी के दिन) का कृत्य :-

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर प्रातः प्रभु का स्मरण करके उषाकाल में ही शौच, क्षौर आदि करके स्नान आदि से शुद्ध होकर (जब तक अनुष्ठान पूरा न हो तब तक क्षौर कर्म यानि दाढी-मूछ आदि एवं नाखून की छंटाई (ट्रिमिंग) भी नहीं कर सकते) संन्ध्यावन्दन, देवपूजा आदि नित्य नैमित्तिक कर्मों को समाप्त करके जप/पूजा स्थान पर कूर्म शोधन करें (पृ. 34 में देखें)। तत्पश्चात् चारों दिशाओं में पीपल/ गूलर/पलाश के एक बित्ता (12अंगुल) लम्बे 10 कीलों को **"ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्"** इस मन्त्र के 108 बार जप के द्वारा अभिमन्त्रित कर निम्न मन्त्रों का आवृत्ति पूर्वक पाठ करते हुये गाड़ दें अथवा बांध दें।

"ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु।।
मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे।।"

पुनः **"ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्"** इस मन्त्र से प्रत्येक कील का पंचोपचार पूजन करके इन्द्र आदि लोकपालों का आवाहन कर पंचोपचार पूजन करें। उसके बाद जप/पूजा स्थान के बीच में गणेश, कूर्म, अनन्तनाग, भूमि (वसुधा), दिक्पाल, क्षेत्रपाल, वास्तुपुरुष और ब्राह्मणों का आवाहनादि पूर्वक पंचोपचार पूजन करके दिक्पाल, क्षेत्रपाल, वास्तुपुरुष और गणेशजी को (अन्य को नहीं) दही व उड़द

मिश्रित बलि प्रदान कर जप/पूजा स्थान से बाहर जाकर निम्न मन्त्रों से दसों दिशाओं में भूतों को बलि दें-

'ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिन:।
मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये।।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिता:।
ते सर्वे प्रीतमनस: प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिं।।'

हाथ-पैर धोकर आचमन करें। त्रयोदशी की रात्री में स्नान आदि करके भगवान का स्मरण करते हुये अपनी शय्या पर लेटकर शिवजी से प्रार्थना करें -

'ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन।
इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत।।
ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नम:।।
स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषत:।
क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर:।।'

इस प्रकार प्रार्थना करके सो जावे और स्वप्न में जो भी शुभ या अशुभ दर्शन हो उस पर गुरु से अथवा विद्वानों से अथवा स्वयं विचार-विमर्श कर लेना चाहिये। क्योंकि शुभाशुभ स्वप्न से संकेत मिलता है कि कर्म आरम्भ करना उचित है या नहीं।

7.2 प्राग्द्वितीयदिन (चतुर्दशी के दिन) का कृत्य :-

दन्त मंजन आदि कार्य से निवृत्त होकर प्रात:कालीन दैनिक नित्य संन्ध्यावन्दनादि कर्म करके प्रायश्चित्त कर्म करें।

7.3 प्रायश्चित्त स्नान- सर्वप्रथम **नदी या तालाब** में स्नान करना है तो उसके तट को शुद्ध जल से धोकर स्नानांगभूत संकल्प, तर्पण आदि की सामग्री और स्नान के उपकरण को स्थापित करें। हाथ-पैर धोकर शिखा बांध लें और हाथ में कुशपवित्री धारण कर नदी या तालाब में नाभिमात्र तक जल में खड़े होकर आचमन करें। देशकाल आदि का कथनपूर्वक संकल्प करें- **"मम ज्ञाताज्ञातसमस्तपापक्षयार्थं करिष्य-**

माणामुक (मन्त्रजप /श्रीयन्त्रपूजा/अन्यत्कर्म वा) **अधिकारार्थं शरीर शुद्ध्यर्थमादौ प्रायश्चित्तांगभूतानि भस्मादिभिरष्टौ स्नानानि करिष्ये।"**

7.3-1 **भस्म स्नान**-यज्ञीय भस्म को बायें हाथ में धारणकर उसमें थोड़ा जल ड़ालकर दाहिने हाथ से मिलाते हुये निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करें-

"ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वं ह वा इदं भस्म। ॐ मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि।"

तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों से शरीर के विभिन्न अंगों में भस्म लगायें-

'ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां। ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।। ॐ ईशानाय नमः।।' (शिरसि), **'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। ॐ तत्पुरुषाय नमः।।'** (मुखे), **'ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर-तरेभ्यः। सर्वेभ्यः शर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। ॐ अघोराय नमः।।'** (हृदये), **'ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः। कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः।। ॐ वामदेवाय नमः।।'** (नाभौ), **'ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।। ॐ सद्योजाताय नमः।।'** (पादयोः), **'ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। संसृज्य मातृभिष्ट्वञ्ज्योति माम्पुनरासद।।'** (सर्वांगे) फिर **प्रणव** यानि **ॐ** का उच्चारण करते हुये संपूर्ण शरीर पर भस्म को लगायें, यह भस्म स्नान हुआ।

7.3-2 **जल स्नानं**-अपने इष्टदेवता का नाम स्मरण करते हुये शुद्ध जल से स्नान करके आचमन करें।

7.3-3 **गोमय स्नानं**- निम्न विधि से गोबर लगाकर स्नान करें। शुद्ध गोबर को एक छोटे पात्र में लेकर तीर्थस्थान हो तो उत्तरदिशा में अन्यथा दक्षिणदिशा में प्रणव उच्चारणपूर्वक थोड़ा गोबर फेंक दें और अग्रिम दो मन्त्रों से अभिमन्त्रित करें-

'ॐ अग्रमग्रञ्चरन्तीनामौषधीनां वने वने। तासां वृषभ-पत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।। ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।।'

अभिमन्त्रित गोबर को सूर्य को दिखाकर दोनों हाथों में लेकर निम्न मन्त्र का दो बार उच्चारण करते हुये पहले दाहिने हाथ के गोबर से सिर से नाभि तक मलना है ओर उसके बाद बायें हाथ के गोबर से नाभि से पैर तक मलना है-

'ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।'

इसे गोमय स्नान कहते हैं।

7.3-4 **जल स्नानं**- पुनः अपने इष्टदेवता का नाम स्मरण करते हुये शुद्ध जल से स्नान करके दो बार आचमन करें।

7.3-5 **मृत्तिका स्नानं**-पवित्र नदी अथवा तीर्थस्थान की शुद्ध मृत्तिका (मिट्टी) को एक पात्र में ग्रहण करके निम्न मन्त्रों से अभिमन्त्रित करें- **'ॐ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। मृत्तिके हर मे पापं यन्मया कायसंचितम्।। उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।। त्वया हतेन पापेन सर्वपापैः प्रमुच्यते।।'**

अब निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुये मिट्टी को पूरे शरीर में लगायें-

'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पांसुरे स्वाहा।।'

इसके बाद जल से स्नान न करें, केवल दो बार आचमन करें।

7.3-6 **शुद्धोदक स्नानं**- निम्न मन्त्र का उच्चारण करके इष्टदेवता

का नाम उच्चारण करते हुये शुद्ध जल से स्नान कर लें–
'ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिव मातरः।। तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथाचनः।।' स्नान करने के बाद केवल एक बार आचमन करें। उसके बाद–

7.3–7 **पंचगव्य स्नानं–**

(क) गायत्रीमन्त्र का उच्चारण करते हुये एक पात्र में गोमूत्र को ग्रहण करके गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हुये गोमूत्र से स्नान करें।

(ख) गन्ध द्वारा इत्यादि मन्त्र से गोबर से स्नान करें–
'ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।'

(ग) आप्यायस्व इत्यादि मन्त्र से दूध से स्नान करें–
'ॐ आप्यायस्व समे तु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भवा वाजस्य संगथे।।'

(घ) दधिक्राव्ण इत्यादि मन्त्र से दही से स्नान करें–
'ॐ दधि क्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूंषि तारिषत्।।'

(ङ) तेजोऽसि इत्यादि मन्त्र से घी से स्नान करें–
'ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि।
प्रियन्देवानामनां धृष्टन्देवयजनमसि।।'

(च) देवस्य इत्यादि मन्त्र से कुशोदक स्नान करें–**'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां।।'**

7.3–8 अन्त में पुनः **शुद्धोदक स्नानम्**– अपने इष्ट देवता का नाम उच्चारण (10, 12, 32, 108, 300, 400 या सहस्र नाम) करते हुये शुद्ध जल से अच्छी तरह स्नान करें क्योंकि यह प्रायश्चित्त का अंगभूत अन्तिम स्नान है।

7.4 **अघमर्षण** (मस्तक पर जल छिड़कना) केलिये पहले हाथ में थोड़ा जल लेकर विनियोग करें '**ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता शिरस्सेके विनियोगः।**' अब अघमर्षण मन्त्र की आवृत्ति तीन बार करके सिर पर जल छिड़कें- '**ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।**
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।।'

इसके बाद अघमर्षणसूक्त का विनियोग पूर्वक पाठ करें-

'**ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता अघमर्षणे विनियोगः। ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रोऽअर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।**'

7.5 स्नानांगतर्पणं -

(क) पूर्वाभिमुख और सव्ययज्ञोपवीत होकर देवतीर्थ द्वारा एक एक अंजलि जल में ही तर्पण दें-

ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम्।

ॐ गौतमादय ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

(ख) उत्तराभिमुख मालायज्ञोपवीत होकर प्रजापतितीर्थ द्वारा दो अंजलि जल तर्पण दें-

ॐ सनकादयो मनुष्यास्तृप्यन्ताम्।

(ग) दक्षिणाभिमुख अपसव्ययज्ञोपवीत से कालातिलयुक्त जल का तर्पण दें-

ॐ कव्यवाडनलादयो दिव्यपितरस्तृप्यन्ताम्।

ॐ अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहस्तृप्यन्ताम्।

ॐ अस्मत्पितृपितामहीप्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम्।
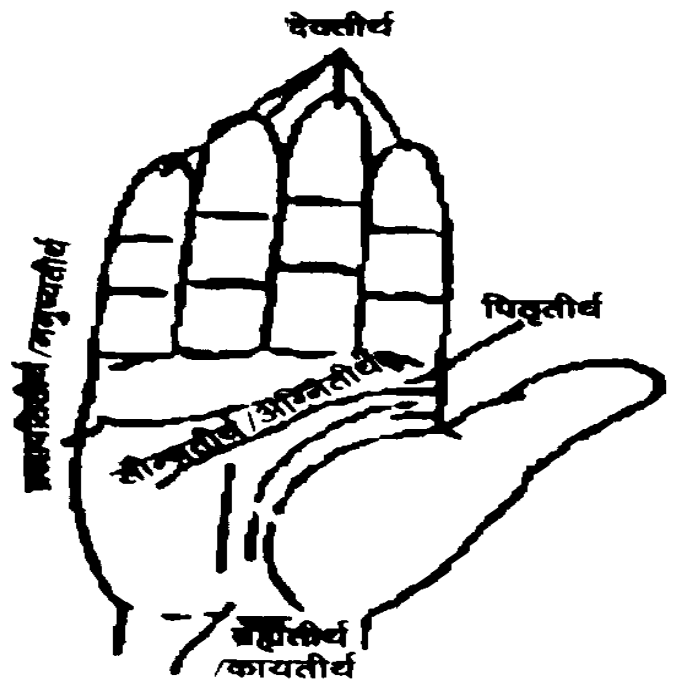
ॐ अस्मन्मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहास्तृप्यन्ताम्।
ॐ अस्मन्मातामहीप्रमातामही वृद्धप्रमातामह्यस्तृप्यन्ताम्।
ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम्।

तदनन्तर यक्ष्म केलिये जल दें-

ॐ यन्मया दूषितं तोयं मलैः शरीरसम्भवैः।
तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम्।।

तट पर आ जावे और थोड़ा जल हाथ में लेकर इस मन्त्र से-

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्।।

जमीन पर जल छोड़ने के बाद सव्ययज्ञोपवीत होकर आचमन करें।

7.6 स्नानांगभूतसूर्यार्घ्य-

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।

सूर्य को अर्घ्य प्रदानकर शुद्ध वस्त्र धारण करें।

7.7 गृह स्नाने विशेषः-

यदि कुआं अथवा स्नानघर में स्नान करना है तो निम्न विधि का पालन करें-

गृहे उद्धृतोदकेन वा उष्णोदकेन स्नानं।
न तु पर्युषितशीतोदकेन वै कदाचन।।

अर्थात् घर में कुआं पर अथवा स्नानघर में स्नान करना है तो कुआं से निकाला गया ताजा पानी अथवा गरम जल से ही स्नान करें, भूल से भी पहले से ही भर के रखा हुआ बासी अथवा ठण्डे जल से स्नान न करें। कुआं के तट अथवा स्नानघर को शुद्ध जल से धोकर स्नान के उपकरण को स्थापित करें। हाथ पैर धोके शिखा बांध लें और हाथमें कुशापवित्री धारण कर आचमन करें। ताम्रादि के बड़े पात्र (बाल्टी) में जल को ग्रहण करें और उसमें तीर्थो का आवाहन करें-

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।

नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।
ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम।।

इन पांच ऋचाओं से जल को अभिमन्त्रित करें-

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।1।
ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवीपूता पुनन्तु माम। पुनन्तु ब्रह्मणस्पति ब्रह्मपूता पुनन्तु माम।। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामपोऽशतां प्रतिग्रहं स्वाहा।2।
ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणे-वाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।3।
ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽअध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रोऽअर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।4।
ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिव मातरः।। तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथाचनः।5।''

अब अभिमन्त्रित जल से-'**ॐ इमं मे वरुण स्रुधीहवमद्याच मृडय। त्वामवस्युराचके।।**' इत्यादि वारुण मन्त्रों का उच्चारण करते हुये स्नान करें। तत्पश्चात् निम्न चार मन्त्रों का उच्चारण करते हुये तीन कुशा से सिर पर जल को छिड़कें-

'ॐ सिसृक्षोर्निखिलं विश्वं मुहुः शुक्रं प्रजापतेः।
मातरः सर्वभूतानामापो देव्यः पुनन्तु माम्।1।

अलक्ष्मीर्मलरूपा या सर्वभूतेषु संस्थिता।
क्षालयन्ति निजस्पर्शादापो देव्यः पुनन्तु माम्।2।

यन्मे केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्धनि।
ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद् घ्नन्तु वो नमः।3।

आयुरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम्।
संतोषः क्षान्तिरास्तिक्यं विद्या भवतु वो नमः।4।

इसके बाद दोनों हाथ में जल लेकर नाक से स्पर्श करके इस अघमर्षण मन्त्र का पाठ करें-

'ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽअध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रोऽअर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।'

शुभ्र वस्त्र से शरीर को पोंछ कर शुद्ध वस्त्र पहनें और अपने संप्रदाय के अनुसार तिलक कर लें। शैवों केलिये भस्म के त्रिपुण्ड्र तिलक लगा लेने की विधि इस प्रकार है- बायें हाथ में दाहिने हाथ से पवित्र भस्म को लेकर थोड़ा जल डालके इन मन्त्रों का पाठ करते हुये भस्म को अभिमन्त्रित करें-

'ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वं ह वा इदं भस्म। ॐ मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि।'

अलग-अलग मन्त्र के उच्चारण पूर्वक शरीर के विभिन्न अंगों पर तर्जनी, मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से भस्म लगा लें-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ॐ तत्पुरुषाय नमः - ललाटे।1।

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ॐ अघोराय नमः- दाहिने कंधे पर।2।

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ॐ सद्योजाताय नमः- बाये कंधे पर।3।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।ॐ वामदेवाय नमः-पेट पर।4।

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ॐ ईशानाय नमः - छाती पर।5।

अब रुद्राक्ष माला आदि धारण करें।

7.8 प्रायश्चित्तांगभूत विष्णुपूजा

अपने सामने अपने हाथ के बराबर लम्बा चौड़ा एक चतुष्कोणीय स्थण्डिल का निर्माण करके उस पर सफेद वस्त्र बिछाकर अक्षत से अष्टदल कमल बनायें। एक ताम्र कलश और शालिग्राम/विष्णुजी की मूर्ति/ विष्णुयन्त्र स्थापना करने केलिये तैयारी करने के बाद आचमन और प्राणायाम करके संकल्प करें –

'ॐ विष्णुर्विष्णु............अमुकशर्मा मम सर्वपापक्षयार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं करिष्यमाण (श्रीयन्त्रपूजाया/अमुकमन्त्रजपस्य/ अन्यद्वा कर्मण:/उपासनाया) **अधिकारार्थं पुरुषसूक्तेन श्रीमहा विष्णुपूजनमहं करिष्ये।'**

अथ कलशस्थापनं

कलश के आधारभूत अष्टदल कमल का स्पर्श कर पाठ करें-

'ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधा या विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳहपृथिवीं मा हिꣳसी:।।'

अगले मन्त्र का पाठ करते हुये थोड़े धान्य को भूमि पर डालें-

'ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वा त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान् देवो व: सविता हिरण्यपाणि: प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनाम्पयोसि।।'

उस पर तांबे के कलश को स्थापित करें-

'ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दव: पुनरूर्ज्जानि वर्तस्वसान:। सहस्रं धुक्ष्वोरुधारापयस्वती पुनर्मा विशताद्रयि:।।'

अब कलश को जल से भरें-

'ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽ-ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋत सदनमासीद।'

तत्पश्चात् उसमें गन्ध को समर्पित करें-

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पति:।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्माद मुच्यत।।

उसमें सर्वौषधी को डालें-

ॐ याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।
मनैनुवभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।

तदनन्तर दूर्वा डालें–

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

अब आम के पांच पत्तों को उसमें रखें–

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

इसके बाद सप्त मृत्तिका को उसमें डालें–

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशनी।
यच्छानः शर्म स प्रथाः।।

तत्पश्चात् पूगीफल (सुपारी) को डालें–

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः।।

उसके बाद पंच रत्नों को डालें–

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।

तदनन्तर कलश में दक्षिणा डालें–

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

पंच पल्लवों से कलश के अन्दर डाली गयी सामग्री को अच्छी तरह से घुमायें और कलश के गले में मौली को बाँधें अथवा लाल वस्त्र से कलश को लपेटें–

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो।।

अब पत्तों को चारों दिशाओं में फैलाकर उस पर पूर्णपात्र को रखें–

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेवविक्रीणावहाऽइषमूर्ज शतक्रतो।।

इस प्रकार स्थापित कलश को प्रतिष्ठित करें-

'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु। विश्वेदेवास इहमादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

तत्पश्चात् वरुणदेवता का आवाहन करें-

'ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहबोद्धयुरुशं समानऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुण इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

अब निम्न मन्त्र से षोडशोपचार पूजन करें-

'ॐ अपांपतिवरुणाय नमः।'

तत्पश्चात् कलश को हाथ से ढ़ककर निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करें-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रिताः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपवसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।
सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदानदाः।
सर्वेऽत्र प्रतितिष्ठन्तु मम कल्याणकारकाः।।

एक सफेद वस्त्र पर अष्टगन्ध से अष्टदल को लिखकर उसको कलश पर रखें और उस पर तुलसी के पत्ते पर आश्रित शालिग्राम को स्थापित करें। यदि सोने आदि की विष्णुमूर्ति/ विष्णुयन्त्र हो तो उसे एक पात्र में रखकर घी से लीपके निम्न अग्न्युत्तारण सूक्त द्वारा दूध से अभिषेक करें (शालिग्राम हो तो न करें)-

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि।
पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ।1।

हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि।
पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ।2।

अपामिदं न्ययनꣳसमुद्रस्य निवेशनम्।
अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव।3।
नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे।
अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव।4।
प्राणदाऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः।
अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव।5।

तत्पश्चात् पंचामृतस्नान कराके शुद्धजल से स्नान करावें और शुद्ध वस्त्र से सुखाकर अष्टदल से अंकित वस्त्र पर कलश के ऊपर स्थापित करें। तदनन्तर स्वशरीर एवं विष्णु में पुरुषसूक्त द्वारा न्यास करने के बाद कलश आदि का षोडशोपचार पूजन करके विष्णुसहस्रनाम से पुष्पार्चन करें। समाप्ति में पुरुषसूक्त की प्रत्येक ऋचा के अन्त में – **'भगवान् पापापहा महाविष्णुस्तृप्यताम्'** जोड़कर तर्पण करें। ततः विष्णुश्राद्ध करने के पश्चात् प्रायश्चित्त के अंगभूत एक गौ दान करें।

7.9 प्राक्प्रथमदिन (अमावस्या के दिन) का कृत्यः

दैनिक नित्य व नैमित्तिक कर्म करने के पश्चात् सब से पहले एक स्थण्डिल का निर्माण कर हवन (घी और पंचगव्य मुख्य है) सामग्री तैयार करके संकल्प करें–

'ॐ विष्णु.......अद्य प्रायश्चित्तांगभूतया विहितमाज्येन सह पंचगव्यहवनं करिष्ये। तदर्थं पंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं च करिष्ये।'

पंचभूसंस्कार पूर्वक स्थण्डिल पर विधि के अनुसार **विड्** नामक अग्नि को स्थापित कर पात्रों का आसादन कर लें। जैसे कि अग्नि के उत्तरदिशा में पलाशपत्र, यज्ञीयकाष्ठ (लकड़ी), सात हरे कुशा, गोमूत्र आदि पंचगव्य अलग-अलग पात्रों में, घी आदि को स्थापित कर दक्षिणदिशा में एक अलग पात्र में पूर्व में वर्णित विधि (पृ. 75 देखें) से उत्तरदिशा में अलग-अलग रखे गये गोमूत्र आदि से पंचगव्य तैयार कर रखें और प्रणव के द्वारा उसको मिलाते हुये उसको अभिमन्त्रित करें।

तत्पश्चात् अग्नि पर्युक्षण पर्यन्त कर्म (पृ0 54-70) करके घी से आघार व आज्यभाग आहुतियां देकर संकल्प करें- **इदं समित्तिलाज्य-हवनीयद्रव्यैः या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यः मया परित्यक्तं न मम।** पश्चात् अन्वाधान कर्म करें-

'ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम, ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम, ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम, ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा इदं प्रजापतये न मम' (4x7=28 आहुति)

तदनन्तर मिश्रित पंचगव्य से प्रधान होम (कुल 9 आहुति) करें (**मम** बोलने के बाद **स्वाहा** बोलते हुये आहुति दें) -

'ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छा नः शर्मप्रथाः स्वाहा। इदं पृथिव्यै न मम स्वाहा।, ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपांसुरे स्वाहा। इदं विष्णवे न मम स्वाहा।, ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तस्सदमित्वा हवामहे स्वाहा। इदं रुद्राय न मम स्वाहा।, (जल स्पर्श करें) **'ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विशीमतः सुरुचोवेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम स्वाहा।, ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम स्वाहा।, ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम स्वाहा।, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्स्वाहा इदं सवित्रे न मम स्वाहा।, ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम स्वाहा।, ॐ परमात्मने स्वाहा इदं परमात्मने न मम स्वाहा।'**

तदनन्तर संस्रव से प्रणीता विमोक पर्यन्त कर्म करके ब्रह्मा को पूर्णपात्र दान दें और ब्राह्मणों के समक्ष पुनः संकल्प करें-

ॐ विष्णु...श्रीयन्त्रस्थापनापूर्वकं अमुक**व्रतोपवासं च करिष्ये।** (अपने सामर्थ्य के अनुसार कृच्छ्रचान्द्रायण आदि किसी भी व्रत के सहित उपवास रहने का संकल्प करें)। ब्राह्मण अनुमति दें- **'कुरुष्व'**, अनुमति प्राप्त करने के बाद हुतशेष पंचगव्य को निम्न मन्त्र से पीना है-

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।।

पीते वक्त मन से प्रणव का उच्चारण करते रहे। अन्त में प्रायश्चित्त का अंगभूत गोदान करें और यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करायें। उपवास/व्रत काल में न्यूनतम 10,000 गायत्री मन्त्र का जप करें, क्योंकि देवीभागवत में कहा है–

यस्य कस्यापि मन्त्रस्य जपादिकमारभेत्।
व्याहृतित्रयसंयुक्तां गायत्रीं चायुतं जपेत्।।
विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्।

जपांगभूत तिल से हवन, तर्पण आदि भी करें। वेदपारायण, 12/21/51 अथवा यथाशक्ति साष्टांग नमस्कार, 200 समनु प्राणायाम आदि प्रायश्चित्त के अन्तर्गत अपने सामर्थ्य के अनुसार करना चाहिये।

7.10 मन्त्र का उत्कीलन :– मन्त्रमहोदधि में कहा है कि मन्त्र को संस्कारित करने मात्र से वांछित फल प्राप्त नहीं हो सकता जब तक मन्त्र को उत्कीलित नहीं करेंगे, क्योंकि शिवजी ने समस्त विद्याओं को कीलित कर निष्प्रभावी कर दिया है। अतः सब से पहले उत्कीलन करना अत्यन्त आवश्यक है उसके बाद संस्कार करें। वह कैसे ?

शिवेन कीलिता विद्या तदुत्कीलनमुच्यते।
मायां तारपुटां मन्त्री जपेदष्टोत्तरं शतम्।।
मन्त्रस्यादौ तथा वान्ते भवेत्सिद्धिप्रदा तु सा।
एष नूनं विधिर्गोप्यः सिद्धिकामेन मन्त्रिणा।।

अर्थात् शिवजी ने समस्त विद्याओं को कीलित कर निष्प्रभावी कर दिया है, उस कीलन को हटाना ही उत्कीलन है। तार मन्त्र से संपुटित माया यानि "**ॐह्रींॐ**" को अपने मन्त्र के आदि और अन्त में जोड़कर जापक 108 बार जप करें, यह अवश्य मन्त्र को उत्कीलित कर देगा फल स्वरूप मन्त्र निश्चित ही फल दायक होगा। अपने मन्त्र से फल प्राप्त करने के इच्छुक जापक इस विधि को सदा गुप्त रखें।

7.11 मन्त्र का संस्कार :- किसी भी मन्त्र को जपने से पूर्व उसको संस्कारित करना होगा। विना संस्कार किये जपने से मन्त्र निष्फल होता है। शारदातिलक में मन्त्र के दस संस्कार बताये हैं-

मन्त्राणां दश कथ्यन्ते संस्काराः सिद्धिदायिनः।
जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधनं तथा।।
अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः।
तर्पणं दीपनं गुप्तिर्दशैता मन्त्रसंस्क्रियाः।।

अर्थात् मन्त्र के दस संस्कार होते हैं, जो सिद्धिदायक हैं। वे क्रम से इस प्रकार हैं- जनन, जीवन, ताडन, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन और गुप्ति। इन्हें कैसे किया जाता है? शारदातिलक में ही प्रत्येक संस्कार की वर्णन पूर्वक विधि इस प्रकार बतायी गयी है-

"मन्त्राणां मातृकायन्त्रादुद्धारो जननं स्मृतम्।1।" अर्थात् मातृका यन्त्र से मन्त्र का उद्धार करना ही मन्त्र का जनन यानि जन्म है।

प्रणवान्तरितान्कृत्वा मन्त्रवर्णाञ्जपेत्सुधीः।
एतज्जीवनमित्याहुर्मन्त्रतन्त्रविशारदाः।2।

अर्थात् मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के बाद ॐ जोड़कर जप करें इसी को मन्त्र-तन्त्र के ज्ञाता मन्त्र का जीवन कहते हैं।

मन्त्रवर्णान्समालिख्य ताडयेच्चन्दनाम्भसा।
प्रत्येकं वायुना मन्त्री ताडनं तदुदाहृतम्।3।

अर्थात् मन्त्र के अक्षरों को भोज पत्र आदि पर लिख के प्रत्येक अक्षर पर चन्दन का घोल छिड़कें व फूंक मारे, इसे ताडन कहते हैं।

विलिख्य मन्त्रं तं मन्त्री प्रसूनैः करवीरजैः।
तन्मन्त्राक्षरसंख्यातैर्हन्याद्वातेन बोधनम्।4।

अर्थात् मन्त्र में जितने अक्षर हैं उतने ही कनेर के फूलों से मन्त्र को लिख कर प्रत्येक पर फूंक मारना ही बोधन है।

स्वतन्त्रोक्तविधानेन मन्त्री मन्त्रार्णसंख्यया।
अश्वत्थपल्लवैर्मन्त्रमभिषिंचेद्विशुद्धये।।5।।

अर्थात् अपने-अपने गुरु परम्परा के अनुसार मन्त्र गत अक्षर की संख्या के बराबर संख्या पीपल के पत्तों से शुद्ध जल छिड़कने को अभिषेक कहते हैं।

संचिन्त्य मनसा मन्त्रं ज्योतिर्मन्त्रेण निर्दहेत्।
मन्त्रे मलत्रयं मन्त्री विमलीकरणं त्विदम्।
तारं व्योमाग्निमनुयुग्दण्डो ज्योतिर्मनुर्मतः।।6।

अर्थात् मन से मन्त्र का चिन्तन करते हुये मन्त्रगत तीनों मलों (सात्त्विक, राजस, तामस) को ज्योतिर्मन्त्र से जला देने की भावना करने को विमलीकरण कहते हैं। ज्योतिर्मन्त्र किसे कहते हैं? स्वयं बता रहे हैं कि- तार(ॐ), व्योम(खं), अग्नि(रं), दण्ड यानि अनुस्वार से युक्त बीज मन्त्र (**ॐ खं रं**) को ज्योतिर्मन्त्र कहते हैं।

कुशोदकेन जप्तेन प्रत्यर्णं प्रोक्षणं मनोः।
तेन मन्त्रेण विधिवदेतदाप्यायनं मतम्।।7।

अर्थात् मन्त्र के जप के साथ कुशा से जल को एक कटोरी में डालके रख लें और उस अभिमन्त्रित कुशा संस्पृष्ट जल से मन्त्र के प्रत्येक अक्षर पर मन्त्र का उच्चारण करते हुये प्रोक्षण करने को आप्यायन कहते हैं।

मन्त्रेण वारिणा मन्त्रतर्पणं तर्पणं स्मृतम्।8।

अर्थात् मन्त्र द्वारा जल से तर्पण देना ही तर्पण संस्कार है।

तारमायारमायोगे मनोर्दीपनमुच्यते।।9।

अर्थात् तार (ॐ), माया (ह्रीं), रमा (श्रीं) इन तीन बीजों के योग (**ॐ ह्रीं श्रीं**) से मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के जप करने को दीपन कहते हैं।

जाप्यमानस्य मन्त्रस्य गोपनं त्वप्रकाशनम्।
संस्कारा दश संप्रोक्ताः सर्वतन्त्रेषु गोपिताः।10।

अर्थात् जिस मन्त्र का जप करना है उसे किसी को भी नहीं बताना ही गोपन नाम का संस्कार है। इस प्रकार मन्त्र के सभी शास्त्रों में कहे गये व रक्षित दस संस्कार हैं।

7.12 माला संस्कार :- जैसे संस्कारित खेती में संस्कारित बीज बोने से अच्छी फसल होती है किन्तु असंस्कारित खेती में संस्कारित बीज बोने से और संस्कारित खेती में असंस्कारित बीज बोने से तथा असंस्कारित खेती में असंस्कारित बीज बोने से अच्छी फसल नही होती है। उसी प्रकार संस्कारित माला में संस्कारित मन्त्र को जपने से पूरा फल मिलेगा किन्तु असंस्कारित माला में संस्कारित मन्त्र को जपने से और संस्कारित माला में असंस्कारित मन्त्र को जपने से तथा असंस्कारित माला में असंस्कारित मन्त्र को जपने से पूरा फल नहीं मिल सकता है। इसलिये माला और मन्त्र दोनों को संस्कारित कर शुद्ध कर लेना चाहिये। माला का संस्कार निम्न प्रकार से करना है-

तैयारी:- कुशोदक, पंचगव्य, पीपल के नौ पत्तों से बना हुआ दोना, नदी की मिट्टी से एक स्थण्डिल का निर्माण, षोडशोपचार सामग्री, हवन सामग्री।

विधि:- कुशोदक और पंचगव्य से माला पर प्रोक्षणकर पीपल के नौ पत्तों से बने हुये दोने में रखें। दोने में ही स्थित माला में निम्न कार्य करें-

"ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॐ"

आदि और अन्त में प्रणव युक्त इन मातृका अक्षर बीजमन्त्रों (कुल 54 हैं) और मूलमन्त्र को माला में स्थापित करें (अर्थात् प्रत्येक मणिका में एक बीज को मूलमन्त्र के साथ जपें, दो बार जपने पर पूरी माला में मन्त्र स्थापित हो जायेगा) और पुनः कुशोदक और पंचगव्य से प्रोक्षण करें। तत्पश्चात्

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः।
भवे भवेनाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।

इस मन्त्र से सादा जल का प्रोक्षण करें। तत्पश्चात्

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो।
रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो।।

बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः।

सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये चन्दन, अगरु, कपूर आदि सुगन्धित द्रव्यों के चूर्ण से घर्षण करें। तदनन्तर

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये धूप दर्शायें। उसके बाद

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।

इस मन्त्र से माला पर चन्दन लगाायें। और

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदाशिवोम्।

इस मन्त्र से मेरु सहित प्रत्येक मणिका को एक एक बार अभिमन्त्रित करें (अर्थात् इस मन्त्र को माला पर 109 बार जपें)। इसके बाद प्राण प्रतिष्ठा निम्न तरीके से करना है– हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प युक्त जल ग्रहण कर बोलें–

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, अस्यां मालायां प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

जल को छोड़ें। तत्पश्चात् अपने हृदय पर हाथ रखके निम्न मन्त्र बोलें – "**ॐ आं ह्रीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः क्रौं ह्रीं आं हंसः सोऽहं अस्यां मालायां प्राणा इह प्राणास्तिष्ठन्तु**" हाथ से माला का स्पर्श करें। पुनः अपने हृदय पर हाथ रखके बोलें– "**ॐ आं ह्रीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः क्रौं ह्रीं आं हंसः सोऽहं अस्यां मालायां जीव इह स्थितः**" हाथ से माला का स्पर्श करें। पुनः अपने हृदय पर हाथ रखके बोलें "**ॐ आं ह्रीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं**

सं हं ळं क्षं अः क्रौं ह्रीं आं हंसः सोऽहं अस्यां मालायां सर्वेन्द्रियाणीहागत्य स्वस्ति सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा'' हाथ से माला का स्पर्श करें। इस प्रकार प्राण प्रतिष्ठा करके पुष्पाक्षतगन्ध को अर्पण करें। 15 बार प्रणव का जप करते हुये गर्भाधान, पुंसवनं, सीमन्तः, विष्णुबलिः, जातकर्म, नामकरणं, उपनिष्क्रमणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः, चौलं, अक्षराभ्यासः, उपनयनं, समावर्तनं, विवाह और उपाकर्म- इन 15 संस्कारों के होने की भावना करें। ऐसे करने से प्राण आदि युक्त मालादेवी माला में प्रतिष्ठित हो जायेगी। तत्पश्चात् प्राणशक्ति का ध्यान करें-

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पंच बाणान्।
बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः।।

इसके बाद अपने इष्ट देवता का आवाहन कर माला देवी के साथ माला में स्थापित करके मूलमन्त्र से षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करें-

ॐ ह्रीं माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा।

"ॐ नमो सर्वार्थ साधिनी स्वाहा"-मन्त्र को 10 माला जपें, तत्पश्चात् निर्मित स्थण्डिल पर पूर्वोक्त प्रकार (पृ. 54-70) से अग्नि स्थापना कर स्थण्डिल पर एक माला हवन करें और उसके धुयें में माला को थोड़ी देर पकड़ कर रखें। तत्पश्चात् गोमुखी में रख लें और उससे अपने इष्टदेवता के मन्त्र को जपें। इस प्रकार संस्कारित माला से जपने के बाद और प्रति दिन भी जप करने के बाद तीन बार प्रणव उच्चारण कर निम्न मन्त्र से प्रार्थना करें-

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा।।
तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते।
ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः।।

---000---

8. श्रीयन्त्रपूजा पद्धतिः (विस्तृत विधिः)

8.1 पूजा सामग्री सूचना-

किसी भी पूजा में प्रयुक्त सामान्य सामग्रियों के अलावा श्रीचक्र की पूजा में निम्न वर्णित सामग्री अत्यन्त आवश्यक है -

1. **पुष्प** - लालकमल, अडोल, कदम्ब, चमेली, मल्लिका, करवीर, कल्हार, केसर, पाटल, केतकी, कुमुद और कनेर।
2. **पत्ते** - दुर्वा और तुलसी व बेल के पत्तें।
3. **परिमलद्रव्य** - कस्तूरी, चन्दन, सिंदूर, कपूर, कुंकुम, भस्म, हल्दी।
4. **सुगन्धीद्रव्य** - चन्दन, अगरु, खाने का कपूर, तमालपत्र, केले की जड़, केसरी, लालचन्दन, कचोर, गोरोचन, जटामांसी, शिलाजित्, कंकोष्ठ।
5. **अर्घ्यद्रव्य** - चन्दन, पुष्प, धान, कुशा, सफेद तिल, सरसों, दुर्वा और गोरोचन।
6. **पाद्यद्रव्य** - तुलसी, धान, दुर्वा, कपिंजलबीज, लवंग।
7. **आचमनीयद्रव्य** - जायफल, लवंग, कंकोल, कस्तूरी।
8. **नैवेद्यद्रव्य** - मिठाई, खीर, गुड़ान्न, दध्यन्न, मुद्गान्न, दाड़िम, उड़द से बनाया गया खाद्य, खजूर रस, द्राक्षारस, शिकंजी/अन्य कोई मीठा पेयपदार्थ।

ध्यान दें -इस ग्रन्थ में मन्त्रों के शुरु में 4,6,7,15,16 और 51 संख्या मुद्रित किया गया है जिनका अर्थ इस प्रकार है-

4 = ॐ ऐं क्लीं सौः (अथवा **स्थलविशेष** में - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं**),

6 = ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः सहौः, 7 = ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः,

15 = कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं,

16 = अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः।

51 = अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं।

8.2 दैनिक प्रातःकर्मः- प्रातः ही उठकर स्नानादि समस्त दैनिक कृत्य को समाप्त करके पूर्वाभिमुख होकर बैठें (सपत्नीक हो तो पत्नी को अपने दाहिने भाग में बिठावे)। दोनों हाथों में कुशपवित्र अथवा स्वर्णपवित्र को धारण करके तिलककर दो बार आचमन करके शान्तिपाठ करें-

ॐ आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः।
देवानो यथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।1।।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳरातिरभिनो निवर्तताम्।
देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।2।।

तान्पूर्वयानिविदाहूमहे वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणम्वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्।।3।।

तन्नो वातोमयोभुवातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम्।।4।।

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमसे हूमहे वयम्।
पूषानो यथा वेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।5।।

स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।6।।

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवाऽवसागमन्निह।।7।।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायुः।।8।।

शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः।।9।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वेदेवाऽअदितिः पंचजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।10।।

तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।11।।

आयुष्यं वर्चस्यꣳराय स्पोषमौद्भिदम्।
इदꣳहिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाविशतादुमाम् ।।12।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः

शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।13।। यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।14।। सुशान्ति र्भवतु।। ॐ श्रीमहागणाधिपतये नमः।। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः।। ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः।। ॐ सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः।। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः।। ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।। ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।1।। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।2।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।3।। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजं । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।4।। अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।5।। सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते।।6।। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलं। येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः।।7।। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।।8।। विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णु-महेश्वरम्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये।।9।। सर्वेष्वारम्भ-कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान-जनार्दनाः।।10।। वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।11।।

8.3 पंचांगवेदीनिर्माणम्
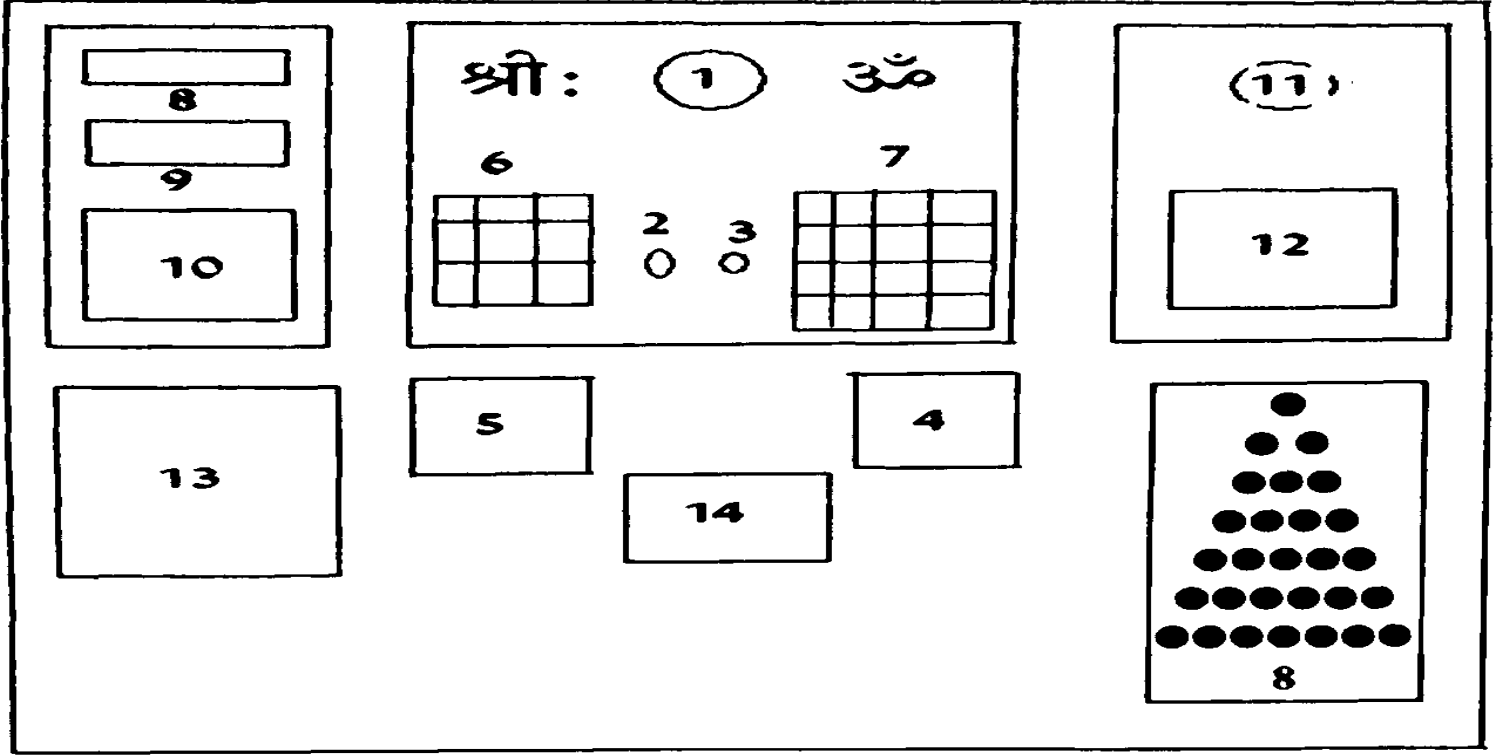
पश्चिम

1. कलश, 2. गणेशजी, 3. अम्बिका, 4. दीपादिसामग्री, 5. शंख-घंटा-धूपादि, 6. नवग्रह, 7. षोडशमातृका, 8. सप्तघृतमातृका, 9. षड् विनायका:, 10. सप्तस्थलमातृका, 11. कलश:, 12. श्रीयन्त्र:, 13. स्थण्डिल: 14. यजमान आसन।

ऊपर दर्शाये हुये चित्र के अनुसार पंचांगवेदी का निर्माण एक चौकी पर एक स्थण्डिल के साथ तैयार कर लेने के बाद संकल्प करें:-"**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु:.....श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासोक्तफलेषु ममाभिष्टफलावाप्तये श्रीविद्योपासनांगत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनपूर्वक ॐ कारश्रीसमन्वितषोडशमातृकासप्तघृतमातृका-षड्विनायकासप्तस्थलमातृकाणां सूर्यादिनवग्रहसहितानां सपर्याया निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं आदौ गणेशाम्बिकयो: सपर्या यथोपलब्धोपचारद्रव्यैरहं करिष्ये।**

इसके बाद दीप, शंख, घण्टा, धूपादि स्थापना करते हुये पंचांगवेदी और मातृकावेदी पर पूजन करें। इसमें गणेश और अम्बिका पूजन पूर्वक पुण्याहवाचन कर कलशस्थापना करके नवग्रह पूजन करे। तत्पश्चात् ॐकार और श्री: का पूजन कर षड्विनायकमातृका (6 गेहूं

के पुंज पर), षोडशमातृका (अक्षतपुंज अथवा पूंगीफल पर), सप्तघृतमातृका (हल्दी अथवा कुंकुम से अंकित पट्ट पर) और सप्तस्थलमातृका का (पूंगीफल पर) पूजन करे।

षड्विनायक मातृका पूजनम्:-

गोधूमादिधान्यपुंजेषु हरिद्रारंजितेषु षड्विनायका: स्थाप्या:। तद्यथा- **मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा।। अविघ्नो विघ्नकर्ता च षडेते विघ्ननायका: ।। 1।। ॐ मोदाय नमः, मोदमावाहयामि स्था० पू०। ॐ प्रमोदाय नमः, प्रमोदमा०। ॐ सुमुखाय०सुमुखं०। ॐ दुर्मुखाय० दुर्मुखं०। ॐ अविघ्नाय० अविघ्नं०। ॐ विघ्नकर्त्रे० विघ्नकर्तारं०।** इत्यावाह्य - '**मनोजूति र्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञठं समिमं दधातु।। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों प्रतिष्ठ।।**' इति प्रतिष्ठाप्य '**ॐ मोदादि-षड् विनायकेभ्यो नमः**' इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः संपूजयेत्। **अनया पूजया मोदादिषड्विनायका: प्रीयन्ताम्, न मम।** ततो **गौर्यादि षोडश मातृका पूजनम्** अक्षतपुंजेषु पूगीफलेषु वा निवेश्या:। तत्रायं क्रम:- **गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातर:।।1।। हृष्टि: पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मन: कुलदेवता:।। गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।। 2।।**

ॐ गणेशाय नमः गणेशमावाहयामि।।1।। ॐ गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि।।2।। ॐ पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि।।3।। ॐ शच्यै नमः शचीमावाहयामि।।4।। ॐ मेधायै नमः मेधाम्०। 5।। ॐ सावित्र्यै० सावित्रीमा०।।6।। ॐ विजयायै० विजयाम्० ।। 7।। ॐ जयायै० जयाम्०।।8।। ॐ देवसेनायै० देवसेनाम्०।।9।। ॐ स्वधायै० स्वधाम्०।।10।। ॐ स्वाहायै० स्वाहाम्० ।।11।। ॐ मातृभ्यो नमः मातृरावा०।। 12।। ॐ लोकमातृभ्यो० लोकमातृरावा०।। 13।। ॐ हृष्ट्यै० हृष्टिम्०।। 14।। ॐ पुष्ट्यै० पुष्टिम्०।। 15।। ॐ तुष्ट्यै० तुष्टिमा०।।16।। ॐ आत्मन: कुलदेवतायै नमः कुलदेवतामावाहयामि।। 16।। इत्यावाह्य

'ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठं समिमं दधातु।। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों३प्रतिष्ठ।।' इति प्रतिष्ठाप्य **'ॐ गौर्य्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः'** नाममन्त्रेण षोडषोपचारैः संपूजयेत्। ततः कुड्ये पीठे वा आवाहित मातृणामुपरिघृतेन कुंकमाक्तेन दक्षिणोत्तराः सप्त पंच त्रिस्रो वा धारा दद्यात्। **'ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्य त्वा सविता पुनातु।। वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः।।1।।'**

अथ <u>सप्तघृतमातृका</u> पूजनम्- ॐ श्रीश्चलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा सरस्वती। मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।1।। ॐ श्रियै नमः श्रियमावाहयामि।।1।। ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमा0।। 2।। ॐ धृत्यै0 धृतिमा0।।3।। ॐ मेधायै0 मेधामा0।। 4।। ॐ पुष्ट्यै0 पुष्टिमा0 ।। 4।। ॐ श्रद्धायै0 श्रद्धामा0।। 6।। ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमा0।।7।।

इत्यावाह्य **'ॐ घृतमातृकाभ्यो नमः'** इति षोडशोपचारैः पूजयेत्।

<u>अथ सप्त स्थलमातरः</u>- तत्रैव तण्डुलपुंजेशु- **ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः।। ॐ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि।।1।। ॐ माहेश्वर्यै0 माहेश्वरीमा0।।2।। ॐ कौमार्यै0 कौमारीमा0 ।। 3।। ॐ वैष्णव्यै0 वैष्णवीमा0 ।। 4।। ॐ वाराह्यै0 वाराहीमा0 ।।5।। ॐ इन्द्राण्यै0 इन्द्राणीमा0 ।। 6।। ॐ चामुण्डायै नमः चामुण्डामा-वाहयामि ।।7।।** इत्यावाह्य **'ॐ ब्राह्म्यादि सप्तस्थलमातृकाभ्यो नमः'** इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा पूजयेत्।। ततः वसोर्धारापूजनं कुर्यात्।

इसके बाद संकल्प के अंगभूत नान्दीश्राद्ध करके आवश्यकता के अनुसार आचार्य, जापक व प्रतिनिधि का वरण करे। अब श्रीयन्त्रपूजा आरम्भ करने केलिये सर्वप्रथम पूजा मन्दिर के बाहर बैठकर इस जन्म अथवा पूर्वजन्मों में किसी कारणवश ब्राह्मण-गुरु-आचार्य आदि द्वारा प्रदत्त

शापों के शमन पूर्वक शाप विमोचन केलिये सरस्वतीक्षमायाचनास्तोत्र का पाठ करे–

8.4 अथ सरस्वतीक्षमायाचनास्तोत्रम्

कृपां कुरु जगन्मातर्मामेव हतचेतसम्।
गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितम्।।1।।

ज्ञानं देहि स्मृतिं देहि विद्यां विद्याधिदेवते।
प्रतिष्ठां कवितां देहि शक्तिं शिष्यप्रबोधिकाम्।।2।।

ग्रन्थकर्तृकशक्तिं च सत्शिष्यं सुप्रतिष्ठितम्।
प्रतिभां सत्सभायां च विचारक्षमतां शुभाम्।।3।।

लुप्तं सर्वं दैववशात् तान्विभूतं पुनः कुरु।
तथाघभस्मं च यथा करोति देवता पुनः।।4।।

ब्रह्मस्वरूपा परमा ज्योतिरूपा सनातनी।
सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः।।5।।

यया विना जगत्सर्वं शश्वद् जीवन्मृतं सदा।
ज्ञानाभिदेवी या तस्यै सरस्वत्यै नमो नमः।।6।।

यया विना जगत्सर्वं मूकमृन्मद्वच्च सदा।
वागाधिष्ठातृदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः।।7।।

हिमचन्दनकुन्देन्दु कुमुदाम्भोजसन्निभाम्।
वर्णाधिदेवी या तस्यै चाक्षरायै नमो नमः।।8।।

विसर्गबिन्दुमात्रासु यदधिष्ठानमेव च।
तदधिष्ठात्री या देवी भारत्यै ते नमो नमः।।9।।

यया विनात्र संख्याकृत् संख्यां कर्तुं न शक्यते।
कालसंख्यास्वरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः।।10।।

व्याख्यास्वरूपा या देवी व्याख्याधिष्ठातृदेवता।
भ्रमसिद्धान्तरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः।।11।।

प्रज्ञाज्ञानस्मृतिमेधा प्रतिभाकल्पनाधृतिः।
विवेकस्फूर्तिशक्तिर्या तस्यै देव्यै नमोनमः।।12।।

सनत्कुमारो ब्रह्माणं ज्ञानं पप्रच्छ यत्र वै।
बभूव जडवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः।।13।।

तदा जगाम भगवान् आत्मा श्रीकृष्ण ईश्वरः।
उवाच सततं स्तोत्रं पाणिरिति प्रजापतिम्।।14।।

स च तुष्टाव त्वां ब्रह्मा चाज्ञया परमात्मनः।
चकार त्वत्प्रसादेन तदा सिद्धान्तमुत्तमम्।।15।।

यदाप्यनन्तं पप्रच्छ ज्ञानमेकं वसुन्धरा।
बभूव मूकवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः।।16।।

तदा त्वां च स तुष्टाव संत्रस्तः कश्यपाज्ञया।
ततश्चकार सिद्धान्तं निर्मलं भ्रमभंजनम्।।17।।

व्यासः पुराणसूत्रं च पप्रच्छ वाल्मिकं यदा।
मौनीभूतः स सस्मार त्वामेव जगदम्बिकाम्।।18।।

तदा चकार सिद्धान्तं लद्वरेण मुनीश्वरः।
संप्राप निर्मलं ज्ञानं प्रमादध्वंसकारणम्।।19।।

पुराणसूत्रं श्रुत्वा स व्यासः कृष्णाकुलोद्भवः।
त्वां सिषेव दध्यौ च शतवर्षं च पुष्करे।।20।।

तदा त्वत्तो परं प्राप्य स कवीन्द्रो बभूव ह।
तदा वेदविभागं च पुराणानि चकार सः।।21।।

यदा महेन्द्रो पप्रच्छ तत्त्वज्ञानं शिवाशिवम्।
क्षणं त्वामेव संचिन्त्य तस्मै ज्ञानं ददौ विभुः।।22।।

पप्रच्छ शब्दशास्त्रं च महेन्द्रश्च बृहस्पतिम्।
दिव्यं वर्षसहस्रं च सः त्वां दध्यौ च पुष्करे।।23।।

तदा त्वत्तो परं प्राप्य दिव्यं वर्षसहस्रकम्।
उवाच शब्दशास्त्रं च तदर्थं च सुरेश्वरम्।।24।।
अद्यापि ये शिष्यानध्यापयन्ति च मुनीश्वराः।
ते च त्वां परिसंचिन्त्य प्रवर्तन्ते सुरेश्वरी।।25।।
त्वं संस्तुता पूजिता च मुनीन्द्रमनुमानवैः।
दैत्येन्द्रैश्च सुरैश्चापि ब्रह्माविष्णुशिवादिभिः।।26।।
जडीभूतः सहस्राक्षः पंचवक्त्रश्चतुर्मुखः।
यां स्तोतुं किमहं स्तौमि तामेकास्यै नमो नमः।।27।।
ॐ ऐं महासरस्वतीप्रीत्यर्थं समर्पयामि।।

8.5 गुरु प्रार्थना

अब गुरु आदि का स्तुति पूर्वक मानस पूजन करे-

गुरु का ध्यानः-

ॐ आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपं।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि।।

गुरुपादुकापंचक का पाठ करे-

ब्रह्मरन्ध्रसरसीरुहोदरे नित्यलग्नमवदातमद्भुतं।
कुण्डलीविवरकाण्डमण्डिते द्वादशार्णसरसीरुहं भजे।1।

तस्य कन्दलितकर्णिकापुटे क्लृप्तरेखमकथादिरेखया।
कोणलक्षितलक्षणमण्डलीं भावलक्ष्यमबलालयं भजे।2।

तत्पुटे पटुतड़ित्कडारिमस्पर्द्धमानमणिपाटलप्रभं।
चिन्तयामि हृदि चिन्मयं वपुर्नादबिन्दुमणिपीठमुज्ज्वलं।3।

ऊर्ध्वमस्य हुतभुक्छिखात्रयं तद्विलासपरिबृंहणास्पदं।
विश्वघस्मरमहोच्चिदोत्कटं व्यामृशामि युगमादिहंसयोः।4।

तत्र नाथचरणारविन्दयोः कुंकुमासवपरीमरन्दयोः।
द्वन्द्वबिन्दुमकरन्दशीतलं मानसं स्मरति मंगलास्पदं।।5।।

निसक्तमणिपादुका - नियमितौघकौलाहलं,
स्फुरत्किसलयारुणं नखसमुल्लसच्चन्द्रकं।
परामृतसरोवरोदितसरोजसद्रोचिषं,
भजामि शिरसि स्थितं गुरुपदारविन्दद्वयं।।6।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वरूपनिरूपणहेतुअमुक**श्रीगुरुपादुकां पूजयामि।**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतुअमुकश्रीपरमगुरुपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वात्मारामपंजरविलीनचेतस्कअमुक**श्रीपरमेष्ठिगुरुपादुकां पूजयामि।**

(गुरु, परमगुरु और परमेष्ठिगुरु यदि गृहस्थ हो तो उनकी पत्नी का नाम भी लेना चाहिये-अमुकम्बासहितामुकश्री...)।

निम्न मन्त्रों से प्रणाम करे- (गुरुगीता 32-34)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।1।।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।2।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।3।।

तत्पश्चात् प्राणायाम करते हुये भावना करे कि गुरुदेव के चरणों से हो रही कृपारूपी अमृतवर्षा से मेरे अपने शरीर के प्रत्येक अंग प्रत्यंग पूर्ण चेतना से आह्लादित हो रहे हैं। संपूर्ण शरीर में जाग्रत आदि तीनों अवस्थाओं को प्रकाशित करनेवाली, प्रत्यक्चैतन्य से अभिन्न ब्रह्मरूपा, सर्वचैतन्यरूपा, सर्वाधिष्ठानरूपा, संपूर्ण चैत्य (जगत) से रहित, केवल चितिरूपा पराशक्ति की भावना करे और उसी परा शक्ति को अपने शरीर में मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त विलास करती हुयी, बिजली के समान चमकती हुयी, बाल सूर्य के समान अरुण रंगवाली, ज्वलायमान

कुण्डलिनीरूपा, सर्वाधिष्ठानभूता, परमज्ञानस्वरूपा की भावना करके, पुनः उसी का विशिष्ट रूप से मूलाधार में चार कमल दल से युक्त, त्रिकोणात्मक पीठ में स्थित ज्योतिर्लिंग को साढ़े तीन कुण्डलि से आवेष्टित कर विराजमान "ॐ हुँ" बीज मन्त्र से उत्थित होकर "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं" मन्त्र को जपते हुये कुण्डलिनी शक्ति के रूप में ध्यान करे। उसके बाद तीन बार कुण्डलिनी मन्त्र का विनियोग पूर्वक जप करे- अथ विनियोगः- "अस्य श्रीकुण्डलिनीमन्त्रस्य शक्ति ऋषिर्गायत्री छन्दश्चेतना-कुण्डलिनी देवता ऐं बीजं श्रीं शक्तिः ह्रीं कीलकं श्रीकुण्डलिन्या-श्चिन्तने विनियोगः।" ऐं ह्रीं श्रीं -मन्त्रों से करन्यास और अंगन्यास करके ध्यान करे-

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्,
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहां।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकां।।

8.6 अथ कुण्डलिनी स्तुतिः (संक्षिप्त)

आधारबन्धप्रमुखक्रियाभिः,
समुत्थिता कुण्डलिनी सुधाभिः।
त्रिधामबीजं शिवमर्चयन्ती,
शिवांगना वः शिवमातनोतु।1।

निजभवननिवासादुच्चलन्ती विलासैः,
पथि पथि कमलानां चारु हासं विधाय।
तरुणतपनकान्तिः कुण्डली देवता सा,
शिवसदनसुधाभिर्दीपयेदात्मतेजः।।2।।

योऽभ्यस्यत्यनुदिनमेवमात्मनोऽन्त-,
र्बीजांशं दुरितजरापमृत्युरोगान्।
जित्वाऽसौ स्वयमिव मूर्तिमाननंगः,
संजीवेच्चिरमतिनीलकेशजालः।।3।।

अब भावना करे कि संपूर्ण कल्मश जाल कुण्डलिनी शक्ति के तेज से भस्मीभूत हो गया है और मन से 10 बार मूल मन्त्र का जप करने के बाद अजपाजप करे। अजपाजप क्या है–

हंकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत्पुनः।
हंसोऽतिपरमं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा।।

अर्थात् हं ध्वनि करते हुये श्वास बाहर जाता है और स ध्वनि करते हुये श्वास भीतर प्रवेश करता है, इस प्रकार जीव निरन्तर हंसः सोहं इस परम श्रेष्ठ मन्त्र को जपता रहता है, यही अजपाजप है। 24 घण्टे में शरीर में स्वतः चल रहे 21600 श्वासप्रश्वास रूपी अजपाजप को षट्चक्र के देवताओं को निवेदन (अर्पण) करे। कैसे? 600 अजपाजप को मूलाधार चक्र में स्थित सिद्धिऋद्धि सहित महागणपति को निवेदन करें। 6000 अजपाजप को स्वाधिष्ठान चक्र में स्थित सरस्वती सहित सिन्दूरवर्णवाले ब्रह्मा को अर्पण करे। 6000 अजपाजप को मणिपुर चक्र में स्थित लक्ष्मी सहित नीलवर्णवाले विष्णु को अर्पण करे। 6000 अजपाजप को अनाहत चक्र में स्थित पार्वती सहित हेमवर्णवाले परमशिव को अर्पण करे। 1000 अजपाजप को विशुद्धि चक्र में स्थित प्राणशक्ति सहित शुद्धस्फटिक के सदृश जीव को अर्पण करे। 1000 अजपाजप को आज्ञा चक्र में स्थित ज्ञानशक्ति सहित विद्युतवर्णवाले गुरु को अर्पण करे। 1000 अजपाजप को सहस्रार चक्र में स्थित चिच्छक्ति सहित वर्णातीतवाले परमात्मा को अर्पण करे। तत्पश्चात् भावना से भावित होकर सात चक्रों में स्थित उन सभी देवताओं का मानस पंचोपचार पूजन करे।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। (कनिष्ठिकांगुष्ठाभ्यां),
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि (अंगुष्ठतर्जनीभ्यां),
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपमाघ्रापयामि (तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां),
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि (अंगुष्ठमध्यमाभ्यां),
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि (अंगुष्ठानामिकाभ्यां),
ॐ सं ताम्बूलादिसर्वोपचारान्समर्पयामि (सांगुष्ठाभिः सर्वाभिः)।

अब अपने शरीर में स्थित चक्रों में संचरण करती हुयी कुण्डलिनीशक्ति का श्रीचक्र में स्थित देवताओं के साथ अभेद भावना करते हुए मानस पूजन करे

1. मूलाधार के नीचे विद्यमान **अकुलसहस्रारचक्र** में श्रीचक्र के भूपुर में स्थित अणिमा आदि देवियों का कुण्डलिनी शक्ति से अभेद भावना करते हुये पंचोपचार पूजन करे।
2. मूलाधार के नीचे और अकुलसहस्रारचक्र के ऊपर में विद्यमान लालरंग के षड्दलकमलाकार **विषुवत्** नामक चक्र में श्रीचक्र के षोडशदल में स्थित कामाकर्षिणी आदि देवियों का कुण्डलिनीशक्ति से अभेद भावनाकर पंचोपचार पूजन करें।
3. चारदलवाले **मूलाधार** चक्र में श्रीचक्र के अष्टदल में स्थित अनंगकुसुम आदि देवियों का कुण्डलिनीशक्ति से अभेद भावना कर पंचोपचार पूजन करे।
4. षड्दलवाले **स्वाधिष्ठानचक्र** में श्रीचक्र के चतुर्दशार में स्थित सर्वसंक्षोभिणी आदि देवियों का कुण्डलिनीशक्ति से अभेद भावना कर पंचोपचार पूजन करे।
5. दसदलवाले **मणिपुर** चक्र में श्रीचक्र के बहिर्दशार में स्थित सर्वसिद्धिप्रदा आदि देवियों का कुण्डलिनीशक्ति से अभेद भावना कर पंचोपचार पूजन करे।
6. बारहदलवाले **अनाहत** चक्र में श्रीचक्र के अन्तर्दशार में स्थित सर्वज्ञा आदि देवियों का कुण्डलिनीशक्ति से अभेद भावना कर पंचोपचार पूजन करे।
7. सोलहदलवाले **विशुद्धि** चक्र में श्रीचक्र के अष्टार में स्थित वशिनी आदि देवियों का कुण्डलिनीशक्ति से अभेद भावना कर पंचोपचार पूजन करे।
8. रेखात्रयात्मक **ललना** (लम्बिका) चक्र में श्रीचक्र के त्रिकोण में स्थित महाकामेश्वरी आदि तथा आयुध देवियों का कुण्डलिनी शक्ति से अभेद भावना कर पंचोपचार पूजन करे।
9. दोदलवाले **आज्ञा** चक्र में श्रीचक्र के बिन्दु में स्थित श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवी का कुण्डलिनीशक्ति से अभेद भावना कर

पंचोपचार पूजन करे।

अथवा मतान्तर में शरीरस्थ चक्रों का क्रम इस प्रकार लिया गया है- 1. मूलाधार, 2. स्वाधिष्ठान, 3. मणिपुर, 4. अनाहत, 5. विशुद्धि, 6. ललना, 7. आज्ञा, 8. विसर्गबिन्दु और 9. सहस्रार।

कुछ परम्परा में रश्मिमालामन्त्र का पाठ करने का विधान है, जिसका वर्णन '**श्रीविद्यारत्नाकर**' में है। प्रातःस्मरण करें-

"**प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः।**
यत्करोमि जगद्योने तदस्तु तव पूजनं।।
मंजुसिंचितमंजीरं वाममर्धं महेशितुः।
आश्रयामि जगन्मूलं यन्मूलं सचराचरम्।।"

(इसके बाद ललितापंचक का पाठ कर सकते हैं।)

8.7 इसके बाद **वैदिक सन्ध्यावन्दन** करके **तान्त्रिकी संन्ध्या** करे। तान्त्रिकी संन्ध्या के अन्तर्गत तान्त्रिकी आचमन करे-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः सकलह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

दाहिने हाथ में जल, अक्षत और पुष्प ग्रहण कर संकल्प करे-

"**ॐ श्रीदेवीमानरीत्या देशकालौ संकीर्त्य...............ममोपात्त समस्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरीप्रीत्यर्थं** (अमुकगोत्रादिविशिष्ट) **अमुकानन्दनाथोऽहं श्रीविद्यांगभूत प्रातः** (सायं) **संन्ध्यामुपासिष्ये।**"

तदनन्तर धेनुमुद्रा से अमृतीकृत व मूलमन्त्र (8 बार) से अभिमन्त्रित जल को बायें हाथ में रखकर दाहिने हाथ से "**ॐ अं नमः, ॐ आं नमः,....**" इत्यादि 16 स्वरवर्णों से ही दो बार सिर पर मार्जन कर पुनः एक बार "**ॐ कं नमः, ॐ खं नमः,.....**" इत्यादि कादि मान्त 25 व्यंजनवर्णों से उपस्पर्शन करने के पश्चात् "**ॐ यं नम, ॐ वं नमः ...**" इत्यादि 8 वर्णों से अपने शरीर के 8 अंगों का अभिमर्शन करे (दो आंख, दो नासिका, दो कान, दोनों कन्धे, नेत्रत्रय, सिर, नाभि और

हृदय)। पुनः मूलमन्त्र से आचमन कर प्राणायाम करके अपने ऊपर अकारादि से क्षकारपर्यन्त यानि "**ॐ अं नमः......ॐ क्षं नमः**" समस्त 51 वर्णो से प्रोक्षण करे।

अब सूर्य को निम्न मन्त्र से तीन बार अर्घ्य दे- "**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय स्वाहा**" और इसी मन्त्र से सूर्य को तीन बार तर्पण दे (**स्वाहा** के जगह **तर्पयामि** कहे)। फिर सूर्यमण्डल में श्रीचक्र का चिन्तन कर उसमें देवी का ध्यान करे-

ध्यायेत्कामेश्वरांकस्थां कुरुविन्दमणिप्रभां।
शोणाम्बरस्रगालेपां सर्वांगीणविभूषणां।।
सौन्दर्यशेवधिं सेषुचापपाशांकुशोज्ज्वलां।
स्वभाभिरणिमाद्याभिः सेव्यां सर्वनियामिकां।।
सच्चिदानन्दवपुषां सदयापांगविभ्रमां।
सर्वलोकैकजननीं स्मेरास्यां ललिताम्बिकां।।

ध्यान करने के बाद दाहिने हाथ में जल लेकर बायें हाथ से ढक के '**लं वं रं यं हं**' मन्त्र और मूल मन्त्र से (तीन बार उच्चारण कर) अभिमन्त्रित करे। अब दाहिने हाथ से बायें हाथ में लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुये दाहिने अंगूठे और अनामिका से सिर पर प्रोक्षण करें। अवशिष्ट जल को दाहिने हाथ में ग्रहण कर उसमें तेजोमयत्व की भावना करके उस जल को इडा नाड़ी से अन्दर लेकर पिंगला नाडी से बाहर कर दाहिने हाथ पर लें, इस दौरान भावना करें कि अपने शरीर में स्थित समस्त कल्मष नष्ट हो गया है। उस जल को अपने बायीं ओर (एक बड़े वज्र शिला की कल्पना कर, उस पर) '**ॐ श्लीं पशु हुं फट्**' मन्त्रोच्चारण पूर्वक फेंके। हाथ धोकर पुनः दाहिने हाथ में जल लेकर बायें हाथ से ढक के भावना करे कि 'यह जल सहस्रदल कमल की कर्णिकाओं से निःसृत अमृत है' और बायें हाथ में ग्रहण कर "**अमृतमालिनी स्वाहा**" मन्त्रोच्चारण पूर्वक सिर पर छिड़के। अब सूर्यमण्डल में परिकल्पित श्रीयन्त्रस्थ देवी को तीन बार अर्घ्य दे-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं वाग्भवेश्वरि त्रिपुरसुन्दरि विद्महे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकहलह्रीं पीठकामिनि कामेश्वरि च धीमहि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं तन्नः क्लिन्ने शक्तिः प्रचोदयात्

तत्पश्चात् मूलमन्त्र से तीन बार तर्पण देकर सन्ध्या के अंग के रूप से पंचदशाक्षरीमन्त्र को संक्षिप्तन्यासादिपूर्वक जप करके देवी को समर्पण कर आचमन करे और विसर्जन मुद्रा से देवी को सूर्य में ही विसर्जित करे।

8.8 श्रीयन्त्रप्रतिष्ठापनविधिः

दीक्षा केलिये विहित शुभ नक्षत्र, तिथि आदि से युक्त शुभ दिन नित्यसन्ध्या आदि कर्म करके गणेशाम्बिका का पूजन कर ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराके (अथवा स्वयं करके) आचमन कर प्राणायाम करने के पश्चात् संकल्प करे। संकल्प के अन्त में कहे –

'**अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्मादिरहं महात्रिपुरसुन्दरीमाराधयिष्यन् श्रीचक्रराजप्रतिष्ठापनं करिष्ये।**'

पूर्वोक्त विधि पृ. 75 से पंचगव्य को सम्मिश्रित करके '**हौं**' मन्त्र से 108 बार अभिमन्त्रित करे। '**ॐ**' के द्वारा यन्त्र को उस अभिमन्त्रित पंचगव्य में डाले और '**ह्रीं**' मन्त्र से उसमें पांच बार ऊपर नीचे करे व घुमाये। तत्पश्चात् उससे निकालकर दूसरे पात्र में रखकर पूर्वोक्तविधि से तैयार किये गये पंचामृत से स्नान कराये और दूध, दही, घृत, मधु व शक्कर प्रत्येक द्रव्य से क्रमशः स्नान कराते हुये प्रत्येक के बाद धूप के धुयें से भी स्नान कराये। मूलमन्त्र से ही सब स्नान कराये। आठ दिशाओं में चावल की राशि पर स्थापित, नये वस्त्र से वेष्टित, गन्धपुष्पाक्षत से अर्चित, कुंकुम–चन्दन–गोरोचन–कस्तूरी आदि सुगन्धित द्रव्यों से युक्त जल से परिपूर्ण 8 कलशों के जल से अभिषेक करे। शुद्ध वस्त्र से यन्त्र को सुखाकर पीठ पर रखे और कुशाग्र से स्पर्श किये हुये यन्त्रगायत्री का 108 बार जप करे –"**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।**" तत्पश्चात् भूतशुद्धि से मातृकान्यास पर्यन्तकर्म करे।

8.8-1 पंचभूतशुद्धिः

पांचभौतिक शरीररूपी कार्य के कारणरूप पंचभूतों की शुद्धि अति आवश्यक है। मूलाधार में स्थित जीव को सुषुम्णा नाडी से ब्रह्मरन्ध्र में लेजाकर परमशिव के साथ एकीभूत होने की भावना करते हुये बायीं नासिका (इडानाडी) से धीरे धीरे श्वास छोडे (रेचक करे)- **" ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलशृंगाटकात्सुषुम्णापथेन जीवशिवं परमशिवे योजयामि स्वाहा"**। तदनन्तर इडा नाडी से श्वास ले (पूरक करे) **"4 रं 15"** और पिंगला नाडी से रेचक करते हुये अपने शरीर के सूखने की भावना करे- **"संकोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा"**। पिंगला नाडी से पूरक करे- **"4 रं 15"** और इडा नाडी से रेचक करते हुये अपने शरीर के जलकर राख होने की भावना कर इडा नाडी से रेचन करे- **"संकोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा"**। इडा नाडी से पूरक करे- **"4 रं 15"** और सहस्रार में विद्यमान चन्द्रमण्डल से निःसृत अमृत वर्षा से अपने भस्मीभूत शरीर को सींचने की भावना कर पिंगला नाडी से रेचन करे- **"परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा"**।

पिंगला नाडी से पूरक करे-**"4 रं 15"** और अमृत से सींची गयी उस भस्म से शाम्भव शरीर के उत्पन्न होने की भावना कर इडा नाडी से रेचन करे- **"शाम्भवशरीरमुत्पादय स्वाहा"**। इडा नाडी से पूरक करे-**"4 रं 15"** और अपने शरीर को शिवशक्तिमय होने की भावना कर पिंगला नाडी से रेचन करे- **"शिवशक्तिमयं शरीरं कुरु कुरु स्वाहा"**। पिंगला नाडी से पूरक करे- **"4 हंसः सोऽहं "** और परमशिव के साथ एकीभूत जीव को सुषुम्णा नाडी से नीचे लाकर पुनः मूलाधार में स्थापित होने की भावना कर इडा नाडी से रेचक करे-**"अवतर अवतर परमशिव पदाज्जीव सुषुम्णापथेन प्रविश मूलशृंगाटकमुल्लासयोल्लासय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहं स्वाहा"** तत्पश्चात् मूलाधार आदि चक्रों के बीजों से युक्त निम्न मन्त्रों से शाम्भव शरीर के पंचभूतों की शुद्धि भी करे- **"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं वं रं यं हं फट् स्वाहा"** (ब्रह्मरन्ध्रगत चन्द्रमण्डल से निःसृत अमृतवर्षा

से मनबुद्धिचित्ताहंकारादिकार्य सहित पांचों भूतों की शुद्धि होने की भावना करे।)

अगले मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करे- "ॐ आं ह्रीं क्रों क्रों ह्रीं आं हंसःसोऽहं सोऽहं हंसः" तत्पश्चात् अपने को स्वाराध्यदेवता और सूर्यमण्डलस्थ पुरुष से अभिन्न होने की भावना निम्न मन्त्रों से करे

" **स्वशरीरं तेजोमयं पुण्यात्मकं देवताराधनयोग्यं समुत्पन्नं तस्मिन्स्वशरीरे सर्वात्मकं सर्वज्ञं सर्वशक्तिसमन्वितं समस्त मन्त्रदेवतामयं ब्रह्म आत्मरूपेण प्रविश्य तिष्ठति स्वाहा। असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि। भोगं ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नस्स्वस्ति।।**"

8.8-2 तत्त्वशुद्धिः

शरीर में स्थित समस्त तत्त्वों की शुद्धि की भावना निम्न मन्त्रों से करे- "**प्राणापानव्यानोदानसमाना मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। वाङ्मनश्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणरेतो-बुद्ध्याकूतिसंकल्पा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोदरशिश्नोपस्थपायवो मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। त्वक्चर्म-माꣳसरुधिरमेदोऽस्थिमज्जा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। अन्नमय-प्राणमयमनोमयविज्ञानमयानन्दमयात्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा।**"

8.8-3 तत्त्वाचमनं

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि कएईलह्रीं स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं विद्यातत्त्वं शोधयामि हसकहलह्रीं स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः शिवतत्त्वं शोधयामि सकलह्रीं स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। (जल छोड़े)

8.8 4 प्राणायाम:

दाहिने हाथ में गन्धाक्षतपुष्प ग्रहण कर–

“ **प्रणवस्य परब्रह्म ऋषि:, परमात्मा देवता, दैवीगायत्री छन्द:, प्राणायामे विनियोग:।**” जल छोड़े और समनु (यानि मानस मन्त्रोच्चारण पूर्वक) नाडीशोधन प्राणायाम करे–

“**ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न: प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुव:स्वरोम्।**”

(8.8–5) आत्मप्राणप्रतिष्ठा

हृदय पर हाथ रखके इस मन्त्र का पाठ करे–

“ **आं ह्रीं क्रों मम सर्वेन्द्रियाणि आं ह्रीं क्रों मम वाङ्मनश्चक्षु: श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाश्च इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।**”

और संकल्प करे–“**मम गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं प्रणवं वा मूलमन्त्रं वा मूलेन सह पंचदशाक्षरीं वा पंचदशावृत्तिं करिष्ये।**”

तत् पश्चात् 15 बार मूल का अथवा **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ:** अथवा मूल सहित पंचदशाक्षरी मन्त्र का जप करके ध्यान करे–

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जै:,
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पंचबाणान्।
बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्ति: परा न:।।

(8.8–6) अथ करन्यास:

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: अं –अंगुष्ठाभ्यां नम:, **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: आं** –तर्जनीभ्यां नम:, **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: सौ:** –मध्यमाभ्यां नम:, **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: अं** –अनामिकाभ्यां नम:, **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: आं** –कनिष्ठिकाभ्यां नम:, **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: सौ:** –करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

8.8-7 अथ हृदयादिन्यास:

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: अं हृदयाय नम: - हृदये, **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: आं शिरसे स्वाहा** -शिरसे, **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: सौ: शिखायै वषट्** -शिखायां, **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: अं कवचाय हुम्** -बाहौ. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: आं नेत्रत्रयाय वौषट्** -त्रिनेत्रे, **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: सौ: अस्त्राय फट्** -सर्वांगे।

8.8-8 अथ मातृका न्यास:

हाथ में जल लेकर विनियोग पढे -

" **अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्म ऋषि:, गायत्री छन्द:, श्रीमातृकासरस्वती देवता, हल् बीजं, अच् शक्ति:, बिन्दु कीलकं, ममोपास्य श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोग:।** " जल छोड़े।

अथ ऋष्यादिन्यास:-

श्रीब्रह्मणे ऋषये नम: -शिरसि, **श्रीगायत्री छन्दसे नम:** -मुखे, **श्रीमातृकासरस्वतीदेवतायै नम:** -हृदि, **ॐ हल्भ्यो बीजेभ्योनम:** गुह्ये, **ॐ अच्भ्यो शक्तये नम:** -पादयो:, **बिन्दुभ्य: कीलकाय नम:** -नाभौ, **ममोपास्य श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोगाय नम:** -सर्वांगे। सभी मातृकाओं (**अं इं उं ऋं लृं एं ओं ऐं औं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं वं रं लं शं षं सं हं अं अ:**) से अंजलि में गृहित जल को अभिमन्त्रित करके तीन बार सर्वाङ्ग में **व्याप्त करे (अर्थात् प्रोक्षण करते हुये भावना करे कि संपूर्ण शरीर मातृकाओं से व्याप्त हो रहा है)। 7= ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ:।**

अथ करन्यास:

7 अं कं खं गं घं ङं आं -अंगुष्ठाभ्यां नम:, **7 इं चं छं जं झं ञं ईं** -तर्जनीभ्यां नम:, **7 उं टं ठं डं ढं णं ऊं** -मध्यमाभ्यां नम:, **7 एं तं थं दं धं नं ऐं** -अनामिकाभ्यां नम:, **7 ओं पं फं बं भं मं औं** -कनिष्ठिकाभ्यां नम:, **7 अं यं वं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं अ:** -करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

अथ हृदयादिन्यास: -

7 अं कं खं गं घं ङं आं -हृदयाय नम:, **7 इं चं छं जं झं ञं ई** -शिरसे स्वाहा, **7 उं टं ठं डं ढं णं ऊं** -शिखायै वषट्, **7 एं तं थं दं धं नं ऐं** -कवचाय हुम्, **7 ओं पं फं बं भं मं औं** -नेत्रत्रयाय वौषट्, **7 अं यं वं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं अः** -अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम् -

पंचाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदो:पादहृत्कुक्षिवक्षो,
देहां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम्।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरान् त्रीक्षणामब्जसंस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं त्वां नमामि।।

दाहिने हाथ से यन्त्र का स्पर्श कर प्राण प्रतिष्ठा करे-

'अस्य श्रीयन्त्रराजस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि छन्दांसि, चैतन्यं देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रों कीलकम्, मम श्रीचक्रप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।'

अथ ऋष्यादिन्यास:-

ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरर्षिभ्यो नम: -शिरसि, **ॐ ऋग्यजुस्सामाथर्वाछन्दोभ्यो नम:** -मुखे, **ॐ चैतन्यदेवतायै नम:** -हृदये, **ॐ आं बीजाय नम:** -गुह्ये, **ॐ ह्रीं शक्तये नम:** -पादयो:, **ॐ क्रों कीलकाय नम:** -नाभौ, **ॐ मम श्रीचक्रप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगाय नम:** -सर्वांगे।

अथ करन्यास:

7 अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं -अंगुष्ठाभ्यां नम:,
7 इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ई -तर्जनीभ्यां नम:,
7 उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं - मध्यमाभ्यां नम:,
7 एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं - अनामिकाभ्यां नम:,
7 ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणविसर्गानन्दात्मने औं - कनिष्ठिकाभ्यां नम:,
7 अं यं वं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तान्तःकरणात्मने अः- करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

अथ हृदयादिन्यासः -

7 अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं -हृदयाय नमः,

7 इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं -शिरसे स्वाहा,

7 उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं -शिखायै वषट्,

7 एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं -कवचाय हुम्,

7 ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणविसर्गानन्दात्मने औं

-नेत्रत्रयाय वौषट्,

7 अं यं वं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तान्तःकरणात्मने अः

-अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

रक्ताम्बोधिस्थितपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमलिगुणमप्यंकुशं पंचबाणान्।
बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसितापीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः हंसः सोऽहं हंसः **शिवः श्रीचक्रस्य प्रणा इह प्राणाः।**

4 आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः।

4 आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सर्वेन्द्रियाणि इहैवागत्य चक्रेऽस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

4 आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः वाङ्मनश्चक्षुः-श्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्याऽस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

4 असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम् । ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळ्या नस्स्वस्ति।।

कुशाग्र से श्रीयन्त्र को स्पर्श करते हुये पुनः मूलमन्त्र का 108 बार जप करे। होम प्रकरण में बतायी गयी विधि से स्थण्डिल पर अग्नि स्थापना कर मूलमन्त्र से 108 आहुति दें, प्रत्येक आहुति के बाद यन्त्र पर ही अवनयन का सम्पात करे , प्रणीतापात्र में नहीं। होमान्त में सव्यंजन अन्न से सर्वभूतबलि देकर होमशेषकर्म समाप्त कर श्रीयन्त्र पूजा आरम्भ करे। श्रीयन्त्र की प्रतिष्ठापना अपने गुरु अथवा षोडशी उपासक अथवा पूर्णाभिषिक्त से ही कराना चाहिये - ऐसा वामकेश्वरतन्त्र आदि शास्त्रों में विधान किया गया है।

श्रीयन्त्रसपर्या (पूजा) आरम्भः-

9. अंगपूजाप्रकरणम्-

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः।
ॐ श्रीमहागणाधिपतये नमः।
ॐ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासंप्रदायकर्तृभ्यो
वंशर्षिभ्यो महद्भ्यो नमो गुरुभ्यः।
सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो
ब्रह्मैवाहमस्मि ब्रह्मैवाहमस्मि।।
श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं।
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतिक्रमं मण्डलं।।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्ठिनवकं वीरावली पंचकं।
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलं।।
वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम्।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः।।

सुमुखादि पांचमुद्राओं को दर्शाकर अपने गुरुदेव और गणेशाम्बिका को प्रणाम करे।

9.1 पूजास्थल प्रवेशार्थ द्वार पूजा

पूजा मन्दिर के द्वार की पूजा करने के लिये तांबे का अर्घ्यपात्र ग्रहण कर "**ॐ ह्रः द्वारार्घ्यं साधयामि**" इस मन्त्र का उच्चारण करके "**ॐ फट्**" मन्त्र द्वारा धोवे और "**ॐ नमः**" मन्त्र का उच्चारण करते हुये जल से पात्र को भरके उसमें तीर्थों का आवाहन करें-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।

तत्पश्चात् "**ॐ**" का उच्चारण करते हुये गन्ध, पुष्प आदि से पंचोपचार पूजन कर धेनुमुद्रा दर्शावे और **मूलमन्त्र** (न्यूनतम 11 बार)

से अभिमन्त्रित करें। पूजा में सब से ज्यादा पुष्प का ही प्रयोग होता है, अतः अभिमन्त्रित जल को निम्न मन्त्र से पुष्प पर प्रोक्षण करें-

ॐ पुष्पकेतुराजार्हते शताय सम्यक्सम्बन्धाय पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पभूषिते पुष्पचयावकीर्णे हूं फट् स्वाहा।

तत्पश्चात् अभिमन्त्रित जल को "**ॐ अस्त्राय फट्**" मन्त्र से पूरे द्वार पर प्रोक्षण कर द्वारदेवताओं की पूजा करे-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः वं वटुकभैरवाय नमः (द्वार का अधो भाग)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः भं भद्रकाल्यै नमः (द्वार का दाहिना भाग)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः लं लम्बोदराय नमः (द्वार का ऊर्ध्व भाग)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः भं भैरवाय नमः (द्वार का बायां भाग)

9.2 मन्दिर पूजा

4 अमृताम्भोनिधये नमः
4 रत्नद्वीपाय नमः
4 नानावृक्षमहोद्यानाय नमः
4 कल्पवाटिकायै नमः
4 सन्तानवाटिकायै नमः
4 हरिचन्दनवाटिकायै नमः
4 मन्दारवाटिकायै नमः
4 पारिजातवाटिकायै नमः
4 कदम्बवाटिकायै नमः
4 पुष्परागरत्नप्राकाराय नमः
4 पद्मरागरत्नप्राकाराय नमः
4 गोमेदकरत्नप्राकाराय नमः
4 वज्ररत्नप्राकाराय नमः
4 वैडूर्यरत्नप्राकाराय नमः
4 इन्द्रनीलरत्नप्राकाराय नमः
4 मुक्तारत्नप्राकाराय नमः
4 मरकतरत्नप्राकाराय नमः
4 विद्रुमरत्नप्राकाराय नमः
4 माणिक्यरत्नप्राकाराय नमः
4 सहस्रसुवर्णस्तम्भोपेतचिन्ता मणिनवरत्नमंडपाय नमः
4 माणिक्यमण्डपाय नमः
4 सहस्रस्तम्भमण्डपाय नमः
4 अमृतवापिकायै नमः
4 आनन्दवापिकायै नमः
4 विमर्शवापिकायै नमः
4 बालातपोद्गारायै नमः
4 चन्द्रिकोद्गारायै नमः
4 महाशृंगारपरिधायै नमः
4 महापद्माटव्यै नमः
4 चिन्तामणिमयगृहराजाय नमः
4 पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः

4 दक्षिणाम्नायमयदक्षिण द्वाराय नमः
4 पश्चिमाम्नायमयपश्चिम द्वाराय नमः
4 उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय नमः
4 रत्नप्रदीपलयाय नमः
4 मणिमयमहासिंहासनाय नमः
4 विष्णुमयैकमंचपादाय नमः
4 रुद्रमयैकमंचपादाय नमः
4 ईश्वरमयैमंचपादाय नमः
4 सदाशिवमयैमंचपादाय नमः
4 हंसतूलिकामहोपधानाय नमः
4 हंसतूलिकातल्पाय नमः
4 कौसुम्भास्तरणाय नमः
4 महावितानायै नमः
4 महामायावनिकायै नमः।

पुष्पों से अर्चना करे। 4 = ॐ ऐं ह्रीं श्रीं।

9.3 आसनपूजार्थ भूशुद्धिः

मन्दिर में प्रवेश कर जमीन पर गन्धाक्षतपुष्प को रख कर आचमनी में जल लेकर विनियोग करे – **ॐ भूशुद्धि इत्यस्य मन्त्रस्य वराह ऋषिः, भूमिर्देवता, गायत्री छन्दः, भूप्रार्थने विनियोगः।** दाहिने हाथ में जल लेकर बाये हाथ से ढककर **"ॐ धनुर्धराय विद्महे सर्वसिद्ध्यै च धीमहि । तन्नो धराः प्रचोदयात्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हुं फट् स्वाहा"** 12 बार इस मन्त्र के जपपूर्वक जल को अभिमन्त्रित कर जमीन पर प्रोक्षण करे। जमीन पर कूर्मयन्त्र को लिखकर निम्नमन्त्र का पाठ करते हुये गन्धाक्षतपुष्पादि से पूजा करे–**ॐ लं पृथिव्यै नमः।**
स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरान्निवेशिनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

विष्णुपत्नीं महीं देवीं माधवीं माधवप्रियां।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्।।
विष्णुशक्तिसमोपेते स्वर्णवर्णे महीतले।
अनेकरत्नसंभूते भूमिदेवि नमोऽस्तु ते।।
पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

तदनन्तर 3 बार इस मन्त्र को जपे– **"ॐ ह्रीं श्रीं कूर्माय नमः"**

9.4 आसनपूजा

आसन की पूजा निम्न विधि से करे- मूलमन्त्र को 7 बार जप कर अभिमन्त्रित जल से आसन पर प्रोक्षण कर विनियोग करे- "**ॐ अस्य श्री आसन महामन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः**"

निम्न मन्त्रों से प्रणाम करे -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनन्तासनाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमलासनाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विमलासनाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मासनाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कूर्मासनाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं योगासनाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वीरासनाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शरासनाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं मध्ये आधार शक्तिपरमसुखासनाय नमः।

गन्धपुष्पाक्षतादि से आसन की पूजा करके आसन पर बैठे।

9.5 भूतोच्चाटनं

बायें हाथ में पीली सरसों लेकर दायें हाथ से ढक के निम्न मन्त्र का पाठ करे-

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंश्रिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूताद्याः सर्वे ये भूमिभारकाः।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्मसमारभेत्।।

ॐ अन्तरिक्षथ्ठअरन्तक्षों त्वरिता अरातयः ॐ हुं फट् स्वाहा

अब दाहिने हाथ से थोड़े-थोड़े सरसों लेकर 6 दिशाओं में निम्न मन्त्रों से प्रक्षेपण करे-

"**ॐ प्राच्यै नमः, ॐ अवाच्यै नमः, ॐ प्रतीच्यै नमः, ॐ उदीच्यै नमः, ॐ ऊर्ध्वायै नमः, ॐ कर्माधारभूम्यै नमः**" (शेष सरसों जमीन पर डालें), "**ॐ खं ठं यं फं क्षुद्रोपद्रवं नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा**" दाहिने हाथ की मध्यमा और तर्जनी से बायें हाथ की हथेली पर तीन बार बजाये और बाये पैर की एडी से "**ॐ द्वं**" मन्त्रोच्चारण पूर्वक घात करे।

9.6 देहरक्षा (आत्मरक्षा)

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरोगनिवारणाय शाङ्र्गाय सशरायास्त्रराजाय सुदर्शनाय नमः,

अब मृगीमुद्रा से अंगों का स्पर्श करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुं गुरुभ्यो नमः – दोनों पैर,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परमगुरुभ्यो नमः – पिंडलि,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परात्परगुरुभ्यो नमः – जंघा,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः कमर,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः पेट,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सरस्वत्यै नमः – हृदय,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं क्षेत्रपालाय नमः – कण्ठ,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं वटुकाय नमः – कन्धा,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यां योगिनीभ्यो नमः – मुख,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आत्मने नमः – दोनो आंखें,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परमात्मने नमः – दोनो कान,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ज्ञानात्मने नमः – सिर,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अस्त्राय फट् – सर्वांगे,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति तिरस्कारिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हसन्ति हसितालापे मातंगि परिचारिके मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूत-संहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं रं रं रं रं रं रं रं हुं फट् स्वाहा।

(अपने चारों ओर अग्नि का कवच होने की भावना करे, जिससे आप सदैव रक्षित है।)

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ऐं हः अस्त्राय फट्"

मन्त्र की 9 बार आवृत्ति कर अपने शरीर के प्रमुख 8 अंगों सहित संपूर्ण शरीर को रक्षित कर ले। तत्पश्चात् श्रीचक्र की पूजा करने केलिये अनुज्ञा ले-

परमामृतवर्षेण प्लावयन्तं चराचरं।
संचिन्त्य परमाद्वैतभावनाऽमृतसेवया।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानामुपकारक।
अनुज्ञां देहि भगवन् श्रीचक्रयजनाय मे।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

अगले मन्त्र से श्रीयन्त्र पर थोड़े पुष्प डाले-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकट-गुप्त-गुप्ततर-सम्प्रदाय- कुलोत्तीर्ण -निगर्भ-रहस्यातिरहस्य-परापरातिरहस्य योगिनीदेवताभ्यो नमः।

9.7 पंचभूतशुद्धि

पांचभौतिक शरीररूपी कार्य के कारणरूप पंचभूतों की शुद्धि अति आवश्यक है। मूलाधार में स्थित जीवात्मा को सुषुम्ना नाडी से ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर परमशिव के साथ एकीभूत होने की भावना करते हुये बायीं नासिका (इडानाडी) से धीरे-धीरे श्वास छोड़े (रेचक करे)-

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलशृंगाटकात्सुषुम्णापथेन जीवशिवं परमशिवे योजयामि स्वाहा"।

तदनन्तर इडा नाड़ी से श्वास ले (पूरक करे) **"4 रं ॐ 15"** और पिंगला नाडी से रेचक करते हुये अपने शरीर के सूखने की भावना करे- **"संकोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा"**। पिंगला नाडी से पूरक करे- **"4 रं ॐ 15"** और इडा नाडी से रेचन करते हुये अपने शरीर के जलकर राख होने की भावना करे- **"संकोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा"**। इडा नाड़ी से पूरक करे- **"4 रं ॐ 15"** और सहस्रार में विद्यमान चन्द्रमण्डल से निःसृत अमृत वर्षा से अपने भस्मीभूत शरीर को सींचने की भावना कर पिंगला नाड़ी से रेचन करे- **"परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा"**। पिंगला नाडी से पूरक करे-**"4 रं ॐ 15"**

और अमृत से सींची गयी उस भस्म से शाम्भव शरीर के उत्पन्न होने की भावना कर इडा नाडी से रेचन करे- "**शाम्भवशरीरमुत्पादय स्वाहा**"। इडा नाडी से पूरक करे-"**4 रं ॐ 15**" और अपने शरीर के शिवशक्तिमय होने की भावना कर पिंगला नाडी से रेचन करे- "**शिवशक्तिमयं शरीरं कुरु कुरु स्वाहा**"। पिंगला नाडी से पूरक करे- "**4 हंसः सोऽहं** " और परमशिव के साथ एकीभूत जीव को सुषुम्ना नाड़ी से नीचे लाकर पुनः मूलाधार में स्थापित होने की भावना कर इडा नाड़ी से रेचक करे-"**अवतर अवतर परमशिव पदाज्जीव सुषुम्णापथेन प्रविश मूलशृंगाटकमुल्लासयोल्लासय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहं स्वाहा**" तत्पश्चात् मूलाधार आदि चक्रों के बीजों से युक्त निम्न मन्त्रों से शाम्भव शरीर के पंचभूतों की भी शुद्धि करे-

"**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं वं रं यं हं फट् स्वाहा**"

(ब्रह्मरन्ध्रगत चन्द्रमण्डल से निःसृत अमृतवर्षा से मनबुद्धिचित्ताहंकारादि कार्य सहित पांचों भूतों के शुद्धि होने की भावना करे।) अगले मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करे-

"**ॐ आं ह्रीं क्रों क्रों ह्रीं आं हंसःसोऽहं सोऽहं हंसः**"

तत्पश्चात् अपने को स्वाराध्यदेवता और सूर्यमण्डलस्थ पुरुष से अभिन्न होने की भावना निम्न मन्त्रों से करे-

"**ॐ स्वशरीरं तेजोमयं पुण्यात्मकं देवताराधनयोग्यं समुत्पन्नं तस्मिन्स्वशरीरे सर्वात्मकं सर्वज्ञं सर्वशक्तिसमन्वितं समस्त मन्त्रदेवतामयं ब्रह्म आत्मरूपेण प्रविश्य तिष्ठति स्वाहा।**

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगं। ज्योक्पश्येम सूर्यमुचरन्तमनुमते मृळ्या नस्स्वस्ति।।"

9.8 तत्त्वशुद्धिः

शरीर में स्थित समस्त तत्त्वों की शुद्धि की भावना निम्न मन्त्रों से करे-

"**ॐ प्राणापानव्यानोदानसमाना मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। वाङ्मनश्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणरेतोबुद्ध-**

ग्याकूतिसंकल्पा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयास-ऽऽस्वाहा। शिर:पाणिपादपार्श्वपृष्ठोदरशिश्नोपस्थपायवो मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासऽऽस्वाहा। त्वक्चर्म-माऽऽसरुधिरमेदोऽस्थिमज्जा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासऽऽस्वाहा। शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासऽऽस्वाहा। पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासऽऽस्वाहा। अन्नमय प्राणमयमनोमयविज्ञानमयानन्दमयात्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासऽऽस्वाहा।''

९.९ तत्त्वाचमनं

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि कएईलह्रीं स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं विद्यातत्त्वं शोधयामि हसकहलह्रीं स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः शिवतत्त्वं शोधयामि सकलह्रीं स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। (जल छोड़े)

९.९ गुरुपादुकास्मरणमन्त्रः

मृगीमुद्रा से निम्न गुरुमन्त्रों का उच्चारण करे-
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः हंसः शिवः सोऽहं स्वरूपनिरूपणहेतवे अमुक श्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोऽहं हंसः शिवः हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः सोऽहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाश-विमर्शहेतवे अमुक श्रीपरमगुरुपादुकां पूजयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वात्मारामपंजरविलीनतेजसे अमुक श्रीपरमेष्ठि गुरुपादुकां पूजयामि नमः।
सुमुखी, सुवृत्त, चतुरस्र, योनि आदि मुद्राओं से श्रीगुरुदेव को स्मरण

करते हुये अपनी बायीं भुजा की ओर प्रणाम करे और बीज युक्त गणेशमन्त्र **ॐ गं महागणाधिपतये श्रीगणेशाय नमः** से गणेशजी को स्मरण करते हुये अपनी दायीं भुजा की ओर योनिमुद्रा दर्शाकर प्रणाम करे। (गुरु, परमगुरु और परमेष्ठिगुरु यदि गृहस्थ हो तो उनकी पत्नी का नाम भी लेना चाहिये-अमुक**म्बासहितामुकश्री**)। और निम्न मन्त्रों से भी प्रणाम करे-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।1।। (गु.गी. 32)

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।2।। (गु.गी. 33)

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।3।।(गु.गी. 34)

9.11 वर्धनीपात्रस्थापनम्

अपने बायें भाग में निम्न विधि से वर्धनीपात्र की स्थापना करे -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवर्धनीपात्रमण्डलाय नमः।

-इस मन्त्र से जमीन की गन्धपुष्पाक्षत आदि से पूजा करे,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वर्धनीपात्राधाराय नमः।

- जिस पर वर्धनी पात्र रखना है उस संपूजित जमीन पर रखकर इस मन्त्र से उस वर्धनीपात्राधार की पूजा कर पात्र को रखे,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वर्धनीपात्राय नमः।

- इससे वर्धनीपात्र की गन्धाक्षतपुष्प से पूजा कर जलसे भरे,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वर्धनीपात्रामृताय नमः।

- जल में गन्धाक्षतपुष्प आदि डालकर जल की पूजा करे, जल को आचमनी से घुमाते हुये 7 बार मूल मन्त्र को जपे और भावना करे कि अब जल अमृत हो गया।

9.12 दीपस्थापनं पूजनं च

घृतदीपो दक्षिणे स्यात्तैलदीपस्तु वामतः।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः।।

अर्थात् घी का दीपक हो तो अपने दाहिने भाग में ओर तेल का दीपक हो तो अपने बायें भाग में तथा सफेद बत्ती हो तो अपनी दाहिनी ओर हो और लाल बत्ती हो तो अपनी बायीं ओर होनी चाहिये। गन्धपुष्पाक्षत आदि से दीपक केलिये आसन तैयार कर उस पर दीपक को स्थापित कर दीपक को प्रज्वलित करे -

''ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवी सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट् स्वाहा।''

गन्धपुष्पाक्षत आदि से पूजा करे-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ ज्वालामालिनी कर्मसाक्षिणी प्रत्यक्षदीपराजाय नमः।

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः भो दीपदेवि रूपस्त्वं कर्मसाक्षिण्य-विघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।
"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावत्प्रज्वल सुस्थिरा।।''

9.13 शंखपूजा नादश्च

गन्धपुष्पाक्षतादि से और शंखगायत्री मन्त्र से शंख का पूजन करे-

''पांचजन्याय विद्महे पवमानाय धीमहि। तन्नः शंखः प्रचोदयात्''

तीन बार शंख को बजावे और धोकर शंख में जल भरके उसकी पीठ पर रखे।

9.14 घण्टापूजा नादश्च

गन्धपुष्पाक्षतधूपादि से घण्टा की पूजा करे -

ॐ हे घण्टे सुस्वरे पीठे घण्टाध्वनिविभूषिते।
वादयन्ति परानन्दे घण्टादेवं प्रपूजयेत्।।

और मन्त्रोच्चारण पूर्वक घण्टा बजाये-

"आगमार्थं च देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्।
कुर्यात् घण्टारवं तत्र देवताऽऽह्वानलांछनम्।।"

9.15 प्राणायाम:

दाहिने हाथ में गन्धाक्षतपुष्प ग्रहण करें-

"ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, परमात्मा देवता, दैवी गायत्री छन्दः, प्राणायामे विनियोगः।"

जल छोड़े और समनु (यानि मानस मन्त्रोच्चारणपूर्वक) नाडीशोधन प्राणायाम करे-

"ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवःस्वारोम्"।

9.16 संकल्प:

दाहिने हाथ में पुष्पाक्षतद्रव्यसहित जल को धारण कर देवी के ध्यान पूर्वक संकल्प करे-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे केदारखण्डे.......क्षेत्रे, वर्तमाने......संवत्सरे......अयने...महामांगल्यप्रदे मासानामुत्तमे ....मासे....पक्षे....तिथौ....वासरे....नक्षत्रे....राशिस्थिते सूर्ये यथाराशिस्थानस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभयोगे शुभकरणे एवं ग्रहगुणगणविशेषेणविशिष्टायां शुभ-पुण्यतिथौ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यानुग्रहतो ग्रहकृतराजकृतसर्वबाधा-निवृत्तिपूर्वकं ग्रहादीनां स्थितिवशादुत्पन्नदोषेण व्यवहारे चोत्पन्नाना-मुत्पद्यमानानां च विघ्नानां प्रशमनपूर्वकं, भौम्यान्तरिक्षदिव्य-

महोत्पातागामीसंचितसूचितदुष्टानिष्टदोषपरिहारपूर्वकं विशेषेण स्वकीयैः परकीयैः स्वग्रामस्थैरन्यैर्वा कृतक्रियमाणकारयिष्य-माणदुष्ट-यंत्र-मंत्र-तंत्र-विषशल्यौषधप्रतिमास्थापनादिसर्वाभि-चारकर्मघातकर्मफणिहवनश्येनयजनदुर्निरीक्षणदुर्दैवतोपासनादि क्षुद्रकर्मजन्य-दोषपरिहारपूर्वकं विशेषतो न्यायालये राजसभायां तद्द्वारे वा सर्वत्र मम आध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकस्वरूप-रक्षणार्थमलक्ष्मीपरिहारार्थं महालक्ष्मीकृपाकटाक्षप्राप्त्यर्थं भो मातः ह्रीं दुं दुर्गे किं स्वपिषी उत्तिष्ठ पुरुषी सर्वतः समुपस्थितानर्थनिवृत्तये स्वयं कुरु वा मां निमित्तीकृत्य वा यत्कर्तव्यं तत्कारय तदर्थं न्यासविधिसहितध्यानपूर्वकं सग्रहमखां स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नवग्रहपूजनं नान्दीश्राद्धादिकार्ये श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दरी-देवताप्रीत्यर्थं यथासंभवद्रव्यैः यथाशक्तिसपर्याक्रमं श्रीचक्रस्थापना-दिपूर्वकं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपूजनमहं (यजमानस्य गोत्रादिकथनपूर्वकं प्रथमान्तेन नाम उक्त्वा) श्री.........नामकार्चकेन (अर्चकस्य च गोत्रादिकथनपूर्वकं) कारयिष्ये (अथवा करिष्ये) तेन परमेश्वरं च प्रीणयामि।

9.17 लघुप्राणप्रतिष्ठा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ हंसः सोऽहं हंसः शिवः श्रीचक्रस्य प्रणा इह प्राणाः।।

4 आं ह्रीं क्रों श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्याऽस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।

4 ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नस्स्वस्ति।।

9.18 आत्मप्राणप्रतिष्ठा

हृदय पर हाथ रखके इस मन्त्र का पाठ करे-

"ॐ आं ह्रीं क्रों मम सर्वेन्द्रियाणि ॐ आं ह्रीं क्रों मम वाङ्मन-

श्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाश्च इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।"
और संकल्प करे-
"मम गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं प्रणवं वा मूलमन्त्रं वा मूलेन सह पंचदशाक्षरीं वा पंचदशावृत्तिं करिष्ये।"

15 बार **ॐ** का अथवा **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः** अथवा मूल सहित पंचदशाक्षरी का जप करके ध्यान करे-

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पंचबाणान्।
बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः।।

9.19 कलशार्चनं

श्रीचक्र की पीठ में कलश स्थापना हेतु कलश की गन्धाक्षत-पत्रपुष्प आदि से पृष्ठ 80-83 में दर्शायी गयी विधि से पूजन करे। फरक इतना है कि श्रीविष्णुजी की मूर्ति/यन्त्र आदि की जगह श्रीलक्ष्मीजी अथवा श्रीत्रिपुरसुन्दरीजी की मूर्ति/यन्त्र आदि को स्थापित करे।

10. न्यासप्रकरणम्

न्यासों को करने केलिये अपने में श्रीदेवीरूप की भावना करे क्योंकि न्यास अपने उपास्य से अभिन्न होने केलिये ही हैं और अपने देह को न्यासों के द्वारा वज्रकवच प्रदान करने केलिये है। यहां हम ९ गणों में संगृहीत 54 न्यासों की सूची दे रहे हैं।

प्रथमगण **मातृकान्यास**:-

1. अन्तर्मातृका, 2. बहिर्मातृका, 3. करशुद्धि, 4. आत्मरक्षा, 5. बालाषडंग, 6. चतुरासन, 7. वाग्देवतादि, 8. बहिश्चक्र, 9. अन्तश्चक्र, 10 कामेश्वर्यादि, 11. मूलविद्या।

द्वितीयगण **महाषोडशाक्षरीन्यास**:-

12. सृष्टि, 13. स्थिति, 14. संहार।

तृतीयगण **लघुषोढान्यास**:-

15. गणेश, 16. ग्रह, 17. नक्षत्र, 18. योगिनी, 19. राशि, 20. पीठ।

चतुर्थगण **श्रीचक्रन्यास**:-

21. त्रैलोक्यमोहनचक्र, 22. सर्वाशापरिपूरकचक्र, 23. सर्वसंक्षोभणचक्र, 24. सर्वसौभाग्यदायकचक्र, 25. सर्वरक्षाकरचक्र, 26. सर्वार्थसाधकचक्र, 27. सर्वरोगहरचक्र, 28. आयुध, 29. सर्वसिद्धिप्रदचक्र, 30. सर्वानन्दमय चक्र।

पंचमगण **महाषोढान्यास** :-

31. प्रपंच, 32. भुवन, 33. मूर्ति, 34. मन्त्र, 35. देवता, 36. मातृकाभैरव।

षष्ठगण **हृल्लेखादिन्यास**:-

37. हृल्लेखा, 38. श्रीबीजादिमातृका, 39. कामबीजादिमातृका, 40. त्रिबीजादिमातृका, 41. बालाविद्या, 42. परासंपुटितमातृका, 43. श्रीविद्यायुक्तमातृका, 44. हंसमातृका, 45. परमहंसमातृका।

सप्तमगण **कलान्यास:-**

45. प्रणवोत्थकला 46. तारोत्थकला।

अष्टमगण **श्रीकण्ठादि: -**

47. श्रीकण्ठादि, 48. केशवादि, 49. पूर्वषोढा।

नवमगण **तत्त्वादिन्यास:-**

50. षट्त्रिंशत्तत्त्व, 51. चतुष्तत्त्व, 52. महाशक्ति,
53. षडंगयुवति, 54. सम्मोहनन्यास:।

पूजा काल में सभी को करना चाहिये, जैसे कि कहा है -

पूजाकाले समस्तं वा कुर्यात् साधकपुंगव:

न्यूनतम 3 न्यास और अधिकतम 64 न्यासों का वर्णन विभिन्न आगम ग्रन्थों में किया गया है। लेकिन हम यहां दक्षिणामूर्तिमत एवं नित्याषोडशिकार्णव के अनुसार कुल 48 न्यासों को ही दर्शा रहे हैं। शेष न्यासों को अपने गुरु से ही जानकर करें। दाहिने हाथ में जल लेकर न्यास संकल्प करे-

"श्रीचक्रपूजया देव्या अनुग्रहपूर्वक पूर्वोक्तफलसिद्ध्यर्थं आदौ न्यासान् करिष्ये" जल छोड़े।

पुन: हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़े -

"ॐ अस्य श्री पंचदशाक्षरी महामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि:, पंक्ति: छन्द:, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौ: शक्ति:, क्लीं कीलकं, ममोपास्य श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोग:" जल छोड़े।

अथ ऋष्यादि न्यास: -

ॐ श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषये नम: - शिरसि,
ॐ श्रीपंक्तिछन्दसे नम: - मुखे,
ॐ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नम: - हृदये,
ॐ ऐं बीजाय नम: - गुह्ये,
ॐ सौ: शक्तये नम: - पादयो:
ॐ क्लीं कीलकाय नम: - नाभौ,
ममोपास्य श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोगाय नम: - सर्वांगे।

(10.1) अथ करन्यास:

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: अं - अंगुष्ठाभ्यां नम:,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: आं -तर्जनीभ्यां नम:,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: सौ: -मध्यमाभ्यां नम:,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: अं -अनामिकाभ्यां नम:,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: आं -कनिष्ठिकाभ्यां नम:,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: सौ: -करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

(10.2) अथ हृदयादिन्यास:

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: अं हृदयाय नम: - हृदये,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: आं शिरसे स्वाहा -शिरसि,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: सौ: शिखायै वषट् -शिखायां,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: अं कवचाय हुम् -बाहौ,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: आं नेत्रत्रयाय वौषट् -त्रिनेत्रे,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: सौ: अस्त्राय फट् -सर्वांगे।

(10.3) अथ मातृका न्यास:

हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़े -

"ॐ अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्म ऋषि:, गायत्री छन्द:, श्रीमातृकासरस्वती देवता, हल् बीजं, अच् शक्ति:, बिन्दु कीलकं, ममोपास्य श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोग:।" जल छोड़े।

अथ ऋष्यादिन्यास:-

ॐ श्रीब्रह्मणे ऋषये नम: - शिरसि,

ॐ श्रीगायत्रीछन्दसे नम: - मुखे,

ॐ श्रीमातृकासरस्वती देवतायै नम: - हृदि,

ॐ हल्भ्यो बीजेभ्यो नम: - गुह्ये,

ॐ अच्भ्यो शक्तये नम: - पादयो:,

ॐ बिन्दुभ्य: कीलकाय नम: - नाभौ,

ममोपास्य श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोगाय नम: - सर्वांगे।

सभी मातृकाओं (**ॐ अं इं उं ऋं लृं एं ओं ऐं औं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं वं रं लं शं षं सं हं अं अः**) से अंजलि में गृहित जल को अभिमन्त्रित करके तीन बार सर्वाङ्ग में व्याप्त करे (अर्थात् प्रोक्षण करते हुये भावना करे कि संपूर्ण शरीर मातृकाओं से व्याप्त हो रहा है) ।

7= ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ।

अथ करन्यासः

7 अं कं खं गं घं ङं आं – अंगुष्ठाभ्यां नमः,
7 इं चं छं जं झं ञं ईं – तर्जनीभ्यां नमः,
7 उं टं ठं डं ढं णं ऊं – मध्यमाभ्यां नमः,
7 एं तं थं दं धं नं ऐं – अनामिकाभ्यां नमः,
7 ओं पं फं बं भं मं औं – कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
7 अं यं वं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं अः –करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यासः –

7 अं कं खं गं घं ङं आं – हृदयाय नमः,
7 इं चं छं जं झं ञं ईं – शिरसे स्वाहा,
7 उं टं ठं डं ढं णं ऊं – शिखायै वषट्,
7 एं तं थं दं धं नं ऐं – कवचाय हुम्,
7 ओं पं फं बं भं मं औं – नेत्रत्रयाय वौषट्,
7 अं यं वं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं अः – अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम् –

पंचाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादहृत्कुक्षिवक्षो,
देहां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम्।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरान् त्रीक्षणामब्जसंस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं त्वां नमामि।।

(10.4) अन्तर्मातृकान्यासः

7 अं नमः आं नमः......अः नमः – कण्ठे विशुद्धिचक्रे,

7 कं नमः खं नमः......टं नमः ठं नमः – हृदये अनाहतचक्रे,
7 डं नमः ढं नमः.......पं नमः फं नमः नाभौ मणिपुरचक्रे,
7 बं नमः भं नमः.......लं नमः – लिंगमूले स्वाधिष्ठानचक्रे,
7 वं नमः शं नमः षं नमः सं नमः – गुदोपरि मूलाधारचक्रे,
7 हं नमः क्षं नमः – भ्रुवोर्मध्ये आज्ञाचक्रे,
7 अं नमः.........क्षं (50 वर्ण) नमः – शिरसि सहस्रारचक्रे।

(10.5) बहिर्मातृकान्यासः

7 अं नमः – शिरसि, 7 आं नमः –मुखे,
7 इं नमः – दक्षनेत्रे, 7 ईं नमः – वामनेत्रे,
7 उं नमः – दक्षकर्णे, 7 ऊं नमः – वामकर्णे,
7 ऋं नमः – दक्षनासापुटे, 7 ॠं नमः – वामनासापुटे,
7 लृं नमः – दक्षकपोले, 7 लॄं नमः – वामकपोले,
7 एं नमः – ऊर्ध्वोष्ठे, 7 ऐं नमः – अधरोष्ठे,
7 ओं नमः– ऊर्ध्वदंतपंक्तौ, 7 औं नमः – अधोदंतपंक्तौ,
7 अं नमः – जिह्वाग्रे, 7 अः नमः – कण्ठे,
7 कं नमः – दक्षबाहुमूले, 7 खं नमः – दक्षकूर्परे,
7 गं नमः – दक्षमणिबन्धे, 7 घं नमः –दक्षकरांगुलिमूले,
7 ङं नमः– दक्षकरांगुल्यग्रे, 7 चं नमः – वामबाहुमूले,
7 छं नमः – वामकूर्परे, 7 जं नमः – वाममणिबन्धे,
7 झं नमः–वामकरांगुलिमूले, 7 ञं नमः – वामकरांगुल्यग्रे,
7 टं नमः – दक्षोरुमूले, 7 ठं नमः - दक्षजानुनि,
7 डं नमः – दक्षगुल्फे, 7 ढं नमः – दक्षपादांगुलिमूले,
7 णं नमः– दक्षपादांगुल्यग्रे, 7 तं नमः – वामोरुमूले,
7 थं नमः – वामजानुनि, 7 दं नमः –वामगुल्फे,
7 धं नमः– वामपादांगुलिमूले, 7 नं नमः –वामपादांगुल्यग्रे,
7 पं नमः – दक्षपार्श्वे, 7 फं नमः –वामपार्श्वे
7 बं नमः – पृष्ठे, 7 भं नमः –नाभौ,

7 मं नमः - जठरे, 7 यं नमः -हृदये,
7 रं नमः - दक्षकुक्षौ, 7 लं नमः -गलपृष्ठे,
7 वं नमः -वामकुक्षौ, 7 शं नमः -हृदयादिदक्षकरांगुल्यन्तं,
7 षं नमः- हृदयादिवामकरांगुल्यन्तं,7 सं नमः -हृदयादिदक्षपादांगुल्यन्तं,
7 हं नमः-हृदयादिवामपादांगुल्यन्तं, 7 क्षं नमः - कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं,
7 ळं नमः - कट्यादिपादांगुल्यन्तं,

(10.6) **करशुद्धिन्यासः (4 =ॐ ऐं ह्रीं श्रीं।)**

4 अं नमः - दक्षकरतले, 4 आं नमः - दक्षकरपृष्ठे,
4 सौः नमः-दक्षकरपार्श्वयोः, 4 अं नमः - वामकरतले,
4 आं नमः - वामकरपृष्ठे, 4 सौः नमः - वामकरपार्श्वयोः,
4 अं नमः - मध्यमयोः, 4 आं नमः - अनामिकयोः,
4 सौः नमः - कनिष्ठिकयोः, 4 अं नमः - अंगुष्ठयोः,
4 आं नमः - तर्जन्योः, 4 सौः नमः - करतलकरपृष्ठयोः।

(10.7) **आत्मरक्षान्यासः**

7 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष। - (मृगीमुद्रा से हृदय को स्पर्श करे)

(10.8) **बालाषडंगन्यासः**

ॐ ऐं - हृदयाय नमः, ॐ क्लीं - शिरसे स्वाहा,
ॐ सौः - शिखायै वषट्, ॐ ऐं - कवचाय हुम्,
ॐ क्लीं - नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ सौः - अस्त्राय फट्।

(10.9) **चतुरासनन्यासः**

4 ह्रीं क्लीं सौः देव्यात्मासनाय नमः - पादयोः,
4 हैं क्लीं ह्सौः श्रीचक्रासनाय नमः - जान्वोः,
4 ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः - ऊरुमूले,
4 ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नमः - मूलाधारे।

(10.10) **वाग्देवतान्यासः**

4 अं... अः ब्ल्रूं वशिनीवाग्देवतायै नमः -शिरसि,

4 कं... ङं क्लह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः - ललाटे,
4 चं... ञं न्वलीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः - भ्रूमध्ये,
4 टं... णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः - कण्ठे,
4 तं... नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः - हृदये,
4 पं... मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः - नाभौ,
4 यं... वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः - गुह्ये,
4 शं... क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः - मूलाधारे।

(10.11) बहिश्चक्रन्यासः

4 अं आं सौः चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः - पादयोः,

4 ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरी देव्यै नमः - जान्वोः,

4 ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनंगकुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः - ऊरुमूलयोः,

4 हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसंप्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरा- वासिनीदेव्यै नमः - नाभौ,

4 ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुरा- श्रीदेव्यै नमः - हृदये,

4 ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादि दशशक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरामालिनीदेव्यै नमः कण्ठे,

4 ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्ट शक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः - मुखे,

4 ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः - नेत्रयोः,

4 "पंचदशी" बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडंगायुधदश-शक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः - मूर्ध्नि।

(10.12) अन्तश्चक्रन्यासः

4 अं आं सौः चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः-अधःसहस्रारे,

4 ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः -अधःसहस्रारोपरि विषौ षड्दले,

4 ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनंग कुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः - मूलाधारे,

4 हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसंप्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरा वासिनीदेव्यै नमः - स्वाधिष्ठाने,

4 ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्री देव्यै नमः - मणिपुरे,

4 ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादि दशशक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरामालिनीदेव्यै नमः - अनाहते,

4 ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्ट शक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः - विशुद्धे,

4 ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै

कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बा-देव्यै नमः – लम्बिकाग्रे,

4 'पंचदशी' बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडंगायुधदशशक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः –आज्ञायां,

4 अं आं सौः नमः – बिन्दौ,

4 ऐं क्लीं सौः नमः –अर्धचन्द्रे,

4 ह्रीं क्लीं सौः – रोधिन्यां,

4 हैं ह्क्लीं ह्सौः नमः – नादे,

4 ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः – नादान्ते,

4 ह्रीं क्लीं ब्लें नमः – शक्तौ,

4 ह्रीं श्रीं सौः नमः – व्यापिकायां,

4 ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः नमः – समानायां,

4 "पंचदशी" नमः – उन्मनायां,

4 "षोडशी" नमः – ब्रह्मरन्ध्रे महाबिन्दौ।

(10.13) कामेश्वर्यादिन्यासः

4 ऐं कएईलह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथनवयोनिचक्रात्मकात्मतत्त्वसृष्टिकृत्यजाग्रद्दशाधिष्ठायकेच्छाशक्तिवाग्भवात्मकवागीश्वरीस्वरूपमहाकामेश्वरीब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः – मूलाधारे,

4 क्लीं हसकहलह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथदशारद्वयचतुर्दशारचक्रात्मकविद्यातत्त्वस्थितिकृत्यस्वप्नदशाधिष्ठायक-ज्ञानशक्तिकामराजात्मककामकलास्वरूपमहावज्रेश्वरीविष्ण्वात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः – अनाहते,

4 सौः सकलह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथाष्टदलषोडशदलचतुरस्रात्मकशिवतत्त्वसंहारकृत्यसुषुप्तिदशाधिष्ठायक-क्रियाशक्तिबीजात्मकपरापरशक्तिस्वरूपमहाभगमालिनीरुद्रात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः – आज्ञायां,

4 ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथसमस्तचक्रात्मकसपरिवारपरमतत्त्व सृष्टिस्थितिसंहारकृत्यतुरीयदशाधिष्ठायकेच्छाज्ञानक्रियाशक्ति वाग्भवकामराजशक्तिबीजात्मकपरमशक्तिस्वरूप श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीपरब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः — ब्रह्मरन्ध्रे।

(10.14) मूलविद्यान्यासः

अथ विनियोगः :-

ॐ अस्य मूलविद्यामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, अनुष्टुच्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, कएईलह्रीं बीजं, हसकहलह्रीं शक्तिः, सकलह्रीं कीलकम्, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवताप्रसाद सिद्ध्यर्थे मूलविद्यान्यासे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः :-

ॐ अस्य मूलविद्यामन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्तये ऋषये नमः — शिरसि।
ॐ श्री अनुष्टुप्छन्दसे नमः — मुखे।
ॐ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः — हृदये।
ॐ कएईलह्रीं बीजाय नमः — गुह्ये।
ॐ हसकहलह्रीं शक्तये नमः — पादयोः।
ॐ सकलह्रीं कीलकाय नमः — नाभौ।
ॐ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवताप्रसादसिद्ध्यर्थे मूलविद्यान्यासे विनि-योगाय नमः — सर्वांगे।

मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ हृदयादिन्यासः
ॐ कएईलह्रीं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ हसकहलह्रीं नमः	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ सकलह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ कएईलह्रीं नमः	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ हसकहलह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयायवौषट्
ॐ सकलह्रीं नमः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

अथ मूलविद्यान्यासः

4 कं नमः	– शिरसि,	**4 हं नमः**	– मुखे,
4 एं नमः	– मूलाधारे,	**4 लं नमः**	– दक्षभुजे,
4 ईं नमः	– हृदि,	**4 ह्रीं नमः**	– वामभुजे,
4 लं नमः	– दक्षनेत्रे,	**4 सं नमः**	– पृष्ठे,
4 ह्रीं नमः	– वामनेत्रे,	**4 कं नमः**	– दक्षजानौ,
4 हं नमः	– भ्रूमध्ये,	**4 लं नमः**	– वामजानौ,
4 सं नमः	– दक्षश्रोत्रे,	**4 ह्रीं नमः**	– नाभौ।
4 कं नमः	– वामश्रोत्रे,		

इसके अनन्तर सौभाग्यविद्याकवच का पाठ करे–

अथ विनियोगः :–

ॐ अस्य श्रीसौभाग्यविद्याकवचमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, कएईलह्रीं बीजं, हसकहलह्रीं शक्तिः, सकलह्रीं कीलकम्, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवताप्रसाद–सिद्ध्यर्थे श्रीसौभाग्यविद्याकवचपाठे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः –

ॐ अस्य श्रीसौभाग्यविद्याकवचमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषये नमः –शिरसि। **ॐ श्र्यनुष्टुप्छन्दसे नमः** –मुखे। **ॐ श्रीमहात्रि–पुरसुन्दरीदेवतायै नमः** –हृदये। **ॐ कएईलह्रीं बीजाय नमः** –गुह्ये। **ॐ हसकहलह्रीं शक्तये नमः** –पादयोः। **ॐ सकलह्रीं कीलकाय नमः** – नाभौ। **ॐ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवताप्रसादसिद्ध्यर्थे श्रीसौभाग्यविद्याकवचपाठे विनियोगाय नमः – सर्वांगे।**

मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ हृदयादिन्यासः
ॐ कएईलह्रीं नमः	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
ॐ हसकहलह्रीं नमः	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ सकलह्रीं नमः	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**
ॐ कएईलह्रीं नमः	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुम्**
ॐ हसकहलह्रीं नमः	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्रत्रयायवौषट्**
ॐ सकलह्रीं नमः	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**	**अस्त्राय फट्**

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम् :-

सिन्धूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्,
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहां।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकां।।

अथ पंचोपचारपूजा :-

ॐ लं पृथिवितत्त्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै गन्धं परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि।

ॐ हं आकाशतत्त्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै पुष्पमालां परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि।

ॐ यं वायुतत्त्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै धूपं परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि।

ॐ रं तेजस्तत्त्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै दीपं परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि।

ॐ वं अमृतात्मकजलतत्त्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नैवेद्यं परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि।

ॐ सं सर्वतत्त्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै सर्वोपचार-पूजार्थं पुष्पाक्षतानि परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि।

अथ सौभाग्यविद्या कवचं:-

ईश्वर उवाच -

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं मंत्रविग्रहं।
सर्वार्थसाधकं देवि सर्वसंपत्प्रदायकं ।। 1।।

ऋषिस्स्याद्दक्षिणामूर्तिश्छन्दोऽनुष्टुप्प्रकीर्तिता:।
देवता सुंदरी प्रोक्ता विनियोग: प्रकीर्तित:।। 2।।

ककार: पातु शीर्षं मे एकार: पातु फालकं।
ईकार: पातु वक्त्रं मे लकार: पातु कर्णयो:।। 3।।

ह्लींकारः पातु हृदयं वाग्भवं च सदाऽवतु।
हकारः पातु जठरं सकारो नाभिदेशकं।। 4।।
ककारोऽव्यादस्थिभागं हकारः पातु लिंगकं।
लकारो जानुनी पातु ह्लींकारो जंघयुग्मकं।। 5।
कामराजं सदा पातु जठरादिप्रदेशकं।
सकारः पातु कंठं मे ककारः पातु पृष्ठके।। 6।।
लकारोऽव्यान्नितम्बं मे ह्लींकारः पातु मूलके।
शक्तिबीजं सदा पातु मूलविद्या सदाऽवतु ।। 7।।
त्रिपुरा मां सदा पातु त्रिपुरेशी च सर्वदा।
त्रिपुराम्बा सदा पातु पातु त्रिपुरभैरवी।। 8।।
अणिमाद्यास्तथा पातु ब्राह्माद्या पातु मां सदा।
नवमुद्रास्तथा पातु कामाकर्षिणिपूर्विका:।। 9।।
पातु मां षोडशारे तु ह्यनङ्गकुसुमादिका:।
पातुमामष्टपत्रेषु सर्वसंक्षोभणादिका:।। 10।।
पातु मां तत्त्रिकोणेषु मध्यदिक्कोणके तथा।
सर्वज्ञाद्यास्तथा पातु सर्वाभीष्टप्रदायिका:।। 11।।
वशिन्याद्यास्तथा पातु वसुपत्रैश्च देवता:।
त्रिकोणस्यान्तरालेषु पातु मामायुधानि च ।। 12।।
कामेश्वर्यादिका: पातु त्रिकोणे कोणसंस्थिता:।
बिंदुचक्रे सदा पातु श्रीमत्त्रिपुरसुंदरी।। 13।।
इतीदं कवचं देवि कवचं मन्त्रसूचकं।
यस्मै तस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन।। 14।।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेद्देवि लक्ष्मीस्तस्य प्रजायते।
अष्टम्यां चतुर्दश्यां यः पठेत्त्रितयः सदा।
प्रसन्ना सुन्दरी तस्य सर्वसौभाग्यदायिनी।। 15।।

इति श्रीचक्रत्रिपुरसुंदरीदेवताप्रीत्यर्थं
सौभाग्यविद्याकवचं समर्पयामि।

(षोडशी उपासकों केलिये 15-19 तक विशेषन्यास)

(10.15) षोडशाक्षरी न्यासः

4=ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, मूलं=ऐं क्लीं सौः

4 मूलं श्रीं नमः (दाहिनी मध्यमा और अनामिका से सिर को स्पर्श कर सिर में अमृत की वर्षा करती हुयी प्रकाशमयी महासौभाग्यदायिनी देवी का ध्यान करे),

4 मूलं कं नमः महासौभाग्यं मे देहि परसौभाग्यं दण्डयामि (सौभाग्यदण्डिनी मुद्रा से बायें कान पर घुमाकर मस्तक से चरण पर्यन्त न्यास करे, देवी की मूर्ति के बायीं ओर करे),

4 मूलं एं नमः मम शत्रून्निगृह्णामि (शत्रुजिह्वाग्रमुद्रा दर्शाते हुये बायें पैर के नीचे न्यास करे),

4 मूलं ईं नमः त्रैलोक्यस्याहं कर्ता (त्रिखण्डा मुद्रा से भाल पर न्यास करे),

4 मूलं लं नमः (त्रिखण्डा मुद्रा से मुख पर न्यास करे),

4 मूलं ह्रीं नमः (त्रिखण्डा मुद्रा से दाहिने कान से बायें कान पर्यन्त मुख पर न्यास करे),

4 ॐ मूलं हं नमः (त्रिखण्डामुद्रा से गले से मस्तक तक न्यास करे),

4 ॐ मूलं सं ॐ नमः (त्रिखण्डामुद्रा से सिर से पैर और पैर से सिर तक न्यास करे),

4 मूलं कं नमः (योनि मुद्रा से मुख पर न्यास करे),

4 मूलं हं नमः(योनि मुद्रा से ललाट पर न्यास करे)।

(10.16) संमोहनन्यासः

4 मूलं लं नमः (मूलविद्या को स्मरण कर उसके प्रकाश से संपूर्ण जगत को लालिमा युक्त होने की भावना करते हुये दाहिनी अनामिका को सिर पर तीन बार घुमाये),

4 मूलं ह्रीं नमः (ब्रह्मरन्ध्र पर अंगूठे और अनामिका से न्यास करे),

4 मूलं सं नमः (मणिबन्धद्वय पर अंगूठे और अनामिका से न्यास करे)

4 मूलं **कं नमः** (फाल पर अंगूठे और अनामिका से न्यास करे),
4 मूलं **लं नमः** (शाक्त तिलक को धारण करे)।
4 मूलं **ह्रीं नमः** (महात्रिपुरसुन्दरी का ध्यान करें)।

दक्षिणामूर्ति मत में सृष्टिक्रम से तीनों न्यासों का क्रम और मन्त्र इस प्रकार है-

(10.17) **सृष्टिन्यासः**

7 अं नमः - ब्रह्मरन्ध्रे, **7 आं नमः** - ललाटे,
7 इं नमः - नेत्रयोः, **7 ईं नमः** - कर्णयोः, **7 उं नमः** - नासिकायां,
7 ऊं नमः -गण्डयोः, **7 ऋं नमः** - दन्तेषु, **7 ॠं नमः** - ओष्ठयोः,
7 लृं नमः - जिह्वायां, **7 ॡं नमः** - मुखमध्ये, **7 एं नमः** - पृष्ठे,
7 ऐं नमः - सर्वांगे, **7 ओं नमः** - हृदि, **7 औं नमः** - स्तनयोः,
अं नमः - कुक्षौ, **7 अः नमः** - लिंगे।

(10.18) **स्थितिन्यासः**-**7 अं नमः**-अंगुष्ठयोः, **7 आं नमः** -तर्जन्योः, **7 इं नमः** - मध्यमयोः, **7 ईं नमः** - अनामिकयोः, **7 उं नमः** - कनिष्ठिकयोः, **7 ऊं नमः** - ब्रह्मरन्ध्रे, **7 ऋं नमः** - मुखे, **7 ॠं नमः** - हृदये, **7 लृं नमः** - नाभ्यादिपादान्तं, **7 ॡं नमः** - कण्ठादिनाभ्यन्तं, **7 एं नमः** - ब्रह्मरन्ध्रात्कण्ठान्तं, **7 ऐं नमः** पादांगुष्ठयोः, **7 ओं नमः**-पादतर्जन्योः, **7 औं नमः**-पादमध्यमयोः **अं नमः**-पादानामिकयोः, **7 अः नमः**-पादकनिष्ठिकयोः।

(10.19) **संहारन्यासः** - **7 अं नमः** - पादयोः, **7 आं नमः** -जंघयोः, **7 इं नमः** - जान्वोः, **7 ईं नमः** - कट्यां, **7 उं नमः** - नाभौ, **7 ऊं नमः** - पार्श्वयोः, **7 ऋं नमः** - स्तनयोः, **7 ॠं नमः** - अंसयोः, **7 लृं नमः** - मूर्ध्नि, **7 ॡं नमः** - करसंधिषु, **7 एं नमः** - पादसंधिषु, **7 ऐं नमः** - शिखायां, **7 ओं नमः** - दन्तेषु, **7 औं नमः** - ओष्ठयोः, **अं नमः** - जिह्वायां, **7 अः नमः** - शिरसि।

आनन्द भैरव मत में संहार क्रम से तीनों न्यासों का क्रम और मन्त्र इस प्रकार है-

(10.17) संहारन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः	- पादयोः,	कएईलह्रीं नमः	- स्तनयोः,
ह्रीं नमः	- जंघयो	हसकहलह्रीं नमः	अंसयोः,
क्लीं नमः	- जान्वो	सकलह्रीं नमः	- कर्णयोः,
ऐं नमः	- कटिभागद्वये,	सौः नमः	- मूर्ध्नि,
सौः नमः	पृष्ठे,	ऐं नमः	- मुखे,
ॐ नमः	लिंगे,	क्लीं नमः	- नेत्रयोः,
ह्रीं नमः	नाभौ,	ह्रीं नमः	- कर्णयुगसन्निधौ,
श्रीं नमः	- पार्श्वयोः,	श्रीं नमः	- कर्णवेष्टनयोः।

(10.18) सृष्टिन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः	-ब्रह्मरन्ध्रे,	कएईलह्रीं नमः	-जिह्वायां,
ह्रीं नमः	- फाले,	हसकहलह्रीं नमः	- कण्ठे,
क्लीं नमः	- नेत्रयोः,	सकलह्रीं नमः	- पृष्ठे,
ऐं नमः	- कर्णयोः,	सौः नमः	- सर्वांगे,
सौः नमः	- नासापुटयोः,	ऐं नमः	- हृदि,
ॐ नमः	- गण्डयोः,	क्लीं नमः	- स्तनयोः,
ह्रीं नमः	- दन्तपंक्तौ,	ह्रीं नमः	- उदरे,
श्रीं नमः	ओष्ठयोः,	श्रीं नमः	- लिंगे।

(10.19) स्थितिन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः	-अंगुष्ठयोः,	कएईलह्रीं नमः	-नाभौ,
ह्रीं नमः	- तर्जन्योः,	हसकहलह्रीं नमः	-कण्ठादिनाभ्यन्तं,
क्लीं नमः	- मध्यमोः,	सकलह्रीं नमः	- मूर्धादिकण्ठान्तं,
ऐं नमः	- अनामिकयोः	सौः नमः	- पादांगुष्ठयोः,
सौः नमः	- कनिष्ठिकयोः,	ऐं नमः	- पादतर्जन्योः,
ॐ नमः	- मूर्ध्नि,	क्लीं नमः	- पादमध्यमयोः,
ह्रीं नमः	- मुखे,	ह्रीं नमः	- पादानामिकयोः,
श्रीं नमः	हृदि,	श्रीं नमः	- पादकनिष्ठिकयोः।

हयग्रीवमत (लोपामुद्रा/अगस्त्यमत) में स्थिति क्रम से तीनो न्यासों को गुरु से जानकर करें।

(10.20) लघुषोढान्यास: (21 - 26)

अस्य श्रीलघुषोढान्यासस्य श्री दक्षिणामूर्ति ऋषि:, गायत्री छन्द:, गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिपीठरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोग:।

अथ ऋष्यादिन्यास:-

अस्य श्रीलघुषोढान्यासस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषये नम: -शिरसि,
गायत्रीछन्दसे नम: - मुखे,
गणेशग्रह नक्षत्रयोगिनीराशिपीठरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नम: -हृदये,
श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोगाय नम: -करसंपुटे।

अथ करन्यास:-

7 अं कं खं गं घं ङं आं ऐं - अंगुष्ठाभ्यां नम:,
7 इं चं छं जं झं ञं ई क्लीं - तर्जनीभ्यां नम:,
7 उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौ: - मध्यमाभ्यां नम:,
7 एं तं थं दं धं नं ऐं ऐं - अनामिकाभ्यां नम:,
7 ओं पं फं बं भं मं औं क्लीं - कनिष्ठिकाभ्यां नम:,
7 अं यं वं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं अ: सौ: - करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

अथ हृदयादिन्यास: -

7 अं कं खं गं घं ङं आं सौ: - हृदयाय नम:,
7 इं चं छं जं झं ञं ई क्लीं - शिरसे स्वाहा,
7 उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौ: - शिखायै वषट्,
7 एं तं थं दं धं नं ऐं ऐं - कवचाय हुम्,
7 ओं पं फं बं भं मं औं क्लीं - नेत्रत्रयाय वौषट्,
7 अं यं वं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं अ:सौ: - अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

उद्यत्सूर्यसहस्राभां पीनोन्नतपयोधराम्।
रक्तमाल्याम्बरलेपां रक्तभूषणभूषिताम्।।

पाशांकुशधनुर्बाणभास्वत्पाणिचतुष्टयाम्।
लसन्नेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासिमस्तकाम्।।
गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिनीम्।
देवीं पीठमयीं ध्यायेन्मातृकां सुन्दरीं पराम्।।

(इस प्रकार देवी का समष्टिरूप से ध्यान करके गणेश आदि प्रत्येक का व्यष्टिरूप से ध्यान कर उनके न्यास करे)

(10.21) **गणेशमातृका न्यासः**

अथ गणेश ध्यानम्

गणांकुशवराभीतिपाणिं रक्ताब्जहस्तयोः।
प्रियमालिंगितं रक्तं त्रिनेत्रं गणेशं भजे।।
तरुणादित्यसंकाशान् गजवक्त्रांस्त्रिलोचनान्,
पाशांकुशवराभीतिकरान् शक्तिसमन्वितान्।
ते तु सिन्दूरवर्णाभाः सर्वालंकारभूषिताः,
एकहस्तधृताम्भोजा इतरालिंगितप्रियाः।।

अथ गणेशन्यासः

4 गं अं श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय नमः – शिरसि,
4 गं आं ह्रींयुक्ताय विघ्नराजाय नमः –मुखवृत्ते,
4 गं इं तुष्टियुक्ताय विनायकाय नमः – दक्षनेत्रे,
4 गं ईं शान्तियुक्ताय शिवोत्तमाय नमः – वामनेत्रे,
4 गं उं पुष्टियुक्ताय विघ्नहर्त्रे नमः – दक्षकर्णे,
4 गं ऊं सरस्वतीयुक्ताय विघ्नकर्त्रे नमः – वामकर्णे,
4 गं ऋं रतियुक्ताय विघ्नराजाय नमः – दक्षनासापुटे,
4 गं ॠं मेधायुक्ताय गणनायकाय नमः – वामनासापुटे,
4 गं लृं कान्तियुक्तायैकदन्ताय नमः – दक्षकपोले,
4 गं लॄं कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय नमः – वामकपोले,
4 गं एं मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय नमः – ऊर्ध्वोष्ठे,
4 गं ऐं जटायुक्ताय निरंजनाय नमः – अधरोष्ठे,

4 गं ओं तीव्रायुक्ताय कपर्दभृते नमः - ऊर्ध्वदंतपंक्तौ,
4 गं औं ज्वालिनीयुक्ताय दीर्घमुखाय नमः अधोदंतपंक्तौ,
4 गं अं नन्दायुक्ताय शंकुकर्णाय नमः - जिह्वाग्रे,
4 गं अः सुरसायुक्ताय वृषध्वजाय नमः - कण्ठे,
4 गं कं कामरूपिणीयुक्ताय गणनाथाय नमः - दक्षबाहुमूले,
4 गं खं सुभ्रूयुक्ताय गजेन्द्राय नमः - दक्षकूर्परे,
4 गं गं जयिनीयुक्ताय शूर्पकर्णाय नमः दक्षमणिबन्धे,
4 गं घं सत्यायुक्ताय त्रिलोचनाय नमः दक्षकरांगुलिमूले,
4 गं ङं विघ्नेशीयुक्ताय लम्बोदराय नमः - दक्षकरांगुल्यग्रे,
4 गं चं सुरूपायुक्ताय महानादाय नमः - वामबाहुमूले,
4 गं छं कामदायुक्ताय चतुर्मूर्तये नमः - वामकूर्परे,
4 गं जं मदविह्वलायुक्ताय सदाशिवाय नमः - वाममणिबन्धे,
4 गं झं विकटायुक्ताय आमोदाय नमः - वामकरांगुलिमूले,
4 गं ञं पूर्णायुक्ताय दुर्मुखाय नमः - वामकरांगुल्यग्रे,
4 गं टं भूतिदायुक्ताय सुमुखाय नमः - दक्षोरुमूले,
4 गं ठं भूमियुक्ताय प्रमोदाय नमः - दक्षजानुनि,
4 गं डं शक्तियुक्ताय एकपादाय नमः - दक्षगुल्फे,
4 गं ढं रमायुक्ताय द्विजिह्वाय नमः दक्षपादांगुलिमूले,
4 गं णं मानुषीयुक्ताय शूराय नमः - दक्षपादांगुल्यग्रे,
4 गं तं मकरध्वजायुक्ताय वीराय नमः - वामोरुमूले,
4 गं थं वीरिणीयुक्ताय षण्मुखाय नमः वामजानुनि,
4 गं दं भ्रुकुटीयुक्ताय वरदाय नमः - वामगुल्फे,
4 गं धं लज्जायुक्ताय वामदेवाय नमः - वामपादांगुलिमूले,
4 गं नं दीर्घघोणयुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः - वामपादांगुल्यग्रे,
4 गं पं धनुर्धरायुक्ताय द्वितुण्डाय नमः - दक्षपार्श्वे,
4 गं फं यामिनीयुक्ताय सेनान्ये नमः - वामपार्श्वे,
4 गं बं रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये नमः - पृष्ठे,
4 गं भं चन्द्रिकायुक्ताय मत्ताय नमः - नाभौ,

4 गं मं शशिप्रभायुक्ताय विमत्ताय नमः – जठरे,
4 गं यं लोलायुक्ताय मत्तवाहनाय नमः – हृदये,
4 गं रं चपलायुक्ताय जटिने नमः – दक्षकुक्षौ,
4 गं लं ऋद्धि युक्ताय मुण्डिने नमः – गलपृष्ठे,
4 गं वं दुर्भगायुक्ताय खड्गिने नमः – वामकुक्षौ,
4 गं शं सुभगायुक्ताय वरेण्याय नमः –हृदयादि दक्षकरांगुल्यन्तं,
4 गं षं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय नमः –हृदयादि वामकरांगुल्यन्तं,
4 गं सं दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय नमः –हृदयादि दक्षपादांगुल्यन्तं,
4 गं हं कालीयुक्ताय गणेशाय नमः –हृदयादि वामपादांगुल्यन्तं,
4 गं ळं कालकुब्जिकायुक्ताय मेघनादाय नमः –हृदयादिगुह्यान्तं,
4 गं क्षं विघ्नहारिणीयुक्ताय गणेश्वराय नमः –हृदयादिमूर्धान्तं।

अथ करन्यासः

4 गं अं त्वगात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः – अंगुष्ठाभ्यां नमः,
4 गं आं असृगात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः –तर्जनीभ्यां नमः,
4 गं इं मांसात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः – मध्यमाभ्यां नमः,
4 गं ईं मेदात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः – अनामिकाभ्यां नमः,
4 गं उं अस्थ्यात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः –कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
4 गं ऊं मज्जात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः –करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ अंगन्यासः

4 गं ऋं ॠं शुक्रात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः –हृदयाय नमः,
4 गं लृं लॄं शक्तात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः –शिरसे स्वाहा,
4 गं एं क्रोधात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः –शिखायै वषट्,
4 गं ऐं आत्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः –कवचाय हुम्,
4 गं ओं औं विघ्नेशह्रींभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः –नेत्रत्रयाय वौषट्,
4 गं अं अः विघ्नराजश्रींभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः –अस्त्राय फट्।
4 गं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं –अस्त्राय फट्।

इसके अनन्तर **श्री गणेश कवच** का पाठ अवश्य करना चाहिये।

अथ विनियोग:

ॐ अस्य श्री गणेशकवचमहामन्त्रस्य कश्यप ऋषि:, श्रीमन्महागणाधिपतिदेवता, अनुष्टुप्छन्द:, गं बीजं, ह्रीं शक्ति:, क्लीं कीलकं, श्रीमन्महागणाधिपतिदेवताप्रीत्यर्थे गणेशकवचपाठे विनियोग:।

अथ ऋष्यादिन्यास: -

ॐ श्रीकश्यपर्षये नम: –शिरसि।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतिदेवतायै नम: – हृदये।

ॐ श्री अनुष्टुप्छन्दसे नम: – मुखे।

ॐ गं बीजाय नम: – गुह्ये।

ॐ ह्रीं शक्तये नम: – पादयो:।

ॐ क्लीं कीलकाय नम: – नाभौ।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतिदेवताप्रीत्यर्थे गणेशकवचपाठे विनियोगाय नम: – सर्वांगे।

मंत्रा:	अथ करन्यास:	अथ अंगन्यास:
ॐ गां नम:	**अंगुष्ठाभ्यां नम:**	**हृदयाय नम:**
ॐ गीं नम:	**तर्जनीभ्यां नम:**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ गूं नम:	**मध्यमाभ्यां नम:**	**शिखायै वषट्**
ॐ गैं नम:	**अनामिकाभ्यां नम:**	**कवचाय हुम्**
ॐ गौं नम	**कनिष्ठिकाभ्यां नम:**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
ॐ ग: नम:	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:**	**अस्त्राय फट्**

ॐ भूर्भुव:स्वरोमिति दिग्बन्ध:।

अथ ध्यानम् :-

वन्दे सिंहगतं विनायकममुं दिग्बाहुमाद्ये युगे,
त्रेतायां तु मयूरवाहनममुं षड्बाहुकं सिद्धिदं।
द्वापरे तु गजाननं युगभुजं रक्तांगरागं विभुं,
तुर्ये तु द्विभुजं सितसंगरुचिरं सर्वार्थदं सर्वदा।।1।

अथ कवचम् :

विनायकश्शिखां पातु परमात्मा परात्पर:।
अतिसुन्दरकायस्तु मस्तकं सुमदोत्कट:।।1।।

ललाटं काश्यपः पातु भ्रूयुग्मं तु महोदरः।
नयने फालचन्द्रस्तु गजास्यश्चोष्ठपल्लवौ।।2।।
जिह्वां पातु गणक्रीडश्चिबुकं गिरिजासुतः।
वाचं विनायकः पातु दन्तान् रक्षतु दुर्मुखः।।3।।
श्रवणौ पाशपाणिस्तु नासिकां चिन्तितार्थदः।
गणेशस्तु मुखं कण्ठं पातु देवो गणंजयः।।4।।
स्कन्धौ पातु गजस्कन्धः स्तनौ विघ्नविनाशनः।
हृदयं गणनाथस्तु हेरम्बो जठरं महान्।।5।।
धराधरः पातु पार्श्वे पृष्ठं विघ्नहरश्शुभः।
लिंगं गुह्यं सदा पातु वक्रतुण्डो महाबलः।।6।।
गणक्रीडो जानुजंघे ऊरू मंगलमूर्तिमान्।
एकदन्तो महाबुद्धिः पादौ गुल्फौ सदाऽवतु।।7।।
क्षिप्रप्रसादनो बाहू पाणी आशाप्रपूरकः।
अंगुलीश्च नखान्पादं हस्तौ पात्वरिनाशनः।।8।।
सर्वांगानि मयूरेशो विश्वव्यापी सदाऽवतु।
अनुक्तमपि यत्स्थानं धूमकेतुस्सदाऽवतु।।9।।
आमोदस्त्वग्रतः पातु प्रमोदः पृष्ठतोऽवतु।
प्राच्यां रक्षतु बुद्धीश आग्नेय्यां सिद्धिदायकः।।10।।
दक्षिणस्यामुमापुत्रः नैर्ऋत्यां तु गणेश्वरः।
प्रतीच्यां विघ्नकर्ताऽव्यात् वायव्यां गजकर्णकः।।11।।
कौबेर्यां निधिपः पायादीशान्यामीशनन्दनः।
दिवाऽव्यादेकदन्तस्तु रात्रौ सन्ध्यासु विघ्नहृत्।।12।।
राक्षसासुर - वेताल - ग्रह - भूतपिशाचतः।
पाशाङ्कुशधरः पातु रजस्सत्त्वं तमस्स्मृतिम्।।13।।
ज्ञानं धर्मं च लक्ष्मीं च लज्जां कीर्तिं दयां कुलं।
वपुर्धनं च धान्यं गृहान्दारान्सखीन्सुतान्।।14।।
सर्वायुधधरः पौत्रान् मयूरेशोऽवतात्सदा।
कपिलोऽजाविकं पातु गवाश्वं विकटोऽवतु।।15।।

त्रिसन्ध्यं जपते यस्तु वज्रसारतनुर्भवेत्।
यात्राकाले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फलं लभेत्।।16।।
एकविंशतिवारं च पठेत्तावद्दिनानि च।
कारागृहगतं सद्यो राज्ञा बद्धं च मोचयेत्।।17।।
राजदर्शनवेलायां पठेद्यस्तु त्रिवारतः।
स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतीश्च सभां जयेत्।।18।।
इदं गणेशकवचं कश्यपेन समीरितम्।
सर्वरक्षाकरं सर्वसर्वकामप्रपूरकम्।।19।।

इति श्रीमन्महागणाधिपतिदेवताप्रीत्यर्थं समर्पणमस्तु।।

(10.22) ग्रहमातृका न्यासः

अथ नवग्रहध्यानम्

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतं च पाण्डुरम्,
कृष्णं धूम्रं धूम्रधूम्रं भावयेद्रविपूर्वकान्।
कामरूपधरान् देवान् दिव्याभरणभूषितान्,
वामोरुन्यस्तहस्तांश्च दक्षहस्तवरप्रदान्।।
शक्तयोऽपि तथा ध्येया वराभयकराम्बुजाः।
स्वस्वप्रियांकनिलयाः सर्वाभरणभूषिताः।।

अथ ग्रहन्यासः

4 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः रेणुकायुक्ताय सूर्याय नमः – हृदयादधः हृज्जठरसन्निधौ,
4 यं रं लं वं अमृतायुक्ताय चन्द्राय नमः – भ्रूमध्ये,
4 कं खं गं घं ङं धर्मायुक्ताय भौमाय नमः – नेत्रयोः,
4 चं छं जं झं ञं यशस्विनीयुक्ताय बुधाय नमः –श्रोत्रे,
4 टं ठं डं ढं णं शांकरीयुक्ताय बृहस्पतये नमः – कण्ठे,
4 तं थं दं धं नं ज्ञानस्वरूपायुक्ताय शुक्राय नमः – हृदि,
4 पं फं बं भं मं शक्तियुक्ताय शनैश्चराय नमः – नाभौ,
4 शं षं सं हं कृष्णायुक्ताय राहवे नमः – मुखे,

4 ळं क्षं धूम्रायुक्ताय केतवे नमः - गुदे।

(10.23) नक्षत्रमातृकान्यासः

अथ नक्षत्र ध्यानम्

ज्वलत्कालानलप्रख्या वरदाभयपाणयः।
नतिपाणयोऽश्विनपूर्वाः सर्वाभरणभूषिताः।।

अथ नक्षत्रन्यासः

4 अं आं अश्विन्यै नमः ललाटे,
4 इं भरण्यै नमः दक्षनेत्रे,
4 ईं उं ऊं कृत्तिकायै नमः वामनेत्रे,
4 ऋं ॠं लृं ॡं रोहिण्यै नमः दक्षकर्णे,
4 एं मृगशिरसे नमः - वामकर्णे,
4 ऐं आर्द्रायै नमः - दक्षनासापुटे,
4 ओं औं पुनर्वसवे नमः -वामनासापुटे,
4 कं पुष्याय नमः दक्षस्कन्धे,
4 खं गं आश्लेषायै नमः कण्ठे,
4 घं ङं मघायै नमः वामस्कन्धे,
4 चं पूर्वाफाल्गुन्यै नमः पृष्ठे,
4 छं जं उत्तराफाल्गुन्यै नमः दक्षकूर्परे,
4 झं ञं हस्ताय नमः - वामकूर्परे,
4 टं ठं चित्रायै नमः - दक्षमणिबन्धे,
4 डं स्वात्यै नमः वाममणिबन्धे,
4 ढं णं विशाखायै नमः दक्षहस्ते,
4 तं थं दं अनुराधायै नमः वामहस्ते,
4 धं नं ज्येष्ठायै नमः नाभौ,
4 पं फं पूर्वाषाढायै नमः दक्षोरौ,
4 बं भं उत्तराषाढायै नमः वामोरौ,
4 मं श्रवणायै नमः दक्षजानुनि,
4 यं रं धनिष्ठायै नमः - वामजानुनि,
4 लं वं शततारकायै नमः - दक्षजंघायां,

4 शं षं पूर्वाभाद्रपदायै नमः – वामजंघायां,

4 सं हं उत्तराभाद्रपदायै नमः दक्षपादे,

4 ळं क्षं अं अः रेवत्यै नमः – वामपादे।

इसके अनन्तर **नक्षत्रसूक्त** का पाठ अवश्य करे।

अथ नक्षत्रसूक्तम्

(अथर्ववेद – काण्ड 19. अनुवाक 1. सूक्त 8 और 9)

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि।
तुर्मिशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम्।।1।।

सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरषमार्द्रा।
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे।।2।।

पुण्यं पूर्वा फाल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्।।3।।

अन्नं पूर्वा रासताम् मे अषाढा ऊर्ज देव्युत्तरा आवहन्तु।
अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः धनिष्ठाः कुर्वताम् सुपुष्टिम्।।4।।

आ मे महच्छतभिषग् वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्म।
आ रेवती चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयिं भरण्य आवहन्तु।।5।।

(और)

यानि नक्षत्राणि दिव्यऽन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु।
प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु।।1।।

अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे।
योगं प्रपद्ये क्षेमं च क्षेमं च प्रपद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु।।2।।

स्वस्ति तं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु।
सुहवमग्ने स्वस्त्यऽमर्त्य गत्वा पुनरायाभिनन्दन्।।3।।

अनुहवं परिहवं परिवादं परिक्षवम्।
सर्वैर्मे रिक्तकुम्भान् परा तान्सवितः सुव।।4।।

अपऽपापं परिऽक्षवं पुण्यं भक्षीमहि क्षवम्।
शिवा ते पाप नासिकां पुण्याऽगश्चाभि मेहताम्।।5।।

इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते।
सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि।।6।।

स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु।।7।।

(10.24) योगिनीमातृका न्यासः

1. अथ विशुद्धिचक्रस्थडाकिनीदेवी ध्यानम्

कण्ठस्थाने विशुद्धौ नृपदलकमले श्वेतवर्णा त्रिनेत्रां,
हस्तैः खट्वांगखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्मसन्धारयन्तीं।
वक्त्रेणैकेन युक्तां पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्तां,
त्वक्स्थां वन्देऽमृताद्यैः परिवृतवपुषं डाकिनीं वीरवन्द्यां।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डां डीं डं मलवरयूं डाकिन्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः मम त्वचं रक्ष रक्ष त्वगात्मने नमः।

(कण्ठस्थ विशुद्धिचक्रमें डाकिनी देवीकी पूजा उक्त मन्त्रों से कर विशुद्धि चक्र कमल के 16 दलों में उसकी आवरण शक्तियों का न्यास करे।)

4 अं अमृतायै नमः, 4 आं आकर्षिण्यै नमः, 4 इं इन्द्राण्यैनमः, 4 ईं ईशान्यै नमः, 4 उं उमायै नमः, 4 ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नमः, 4 ऋं ऋद्धिदायै नमः, 4 ॠं ॠकारायै नमः, 4 लृं लृकारायै नमः, 4 ॡं ॡकारायै नमः, 4 एं एकारायै नमः, 4 ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नमः, 4 ओं ओंकारायै नमः, 4 औं औषध्यै नमः, 4 अं अम्बिकायै नमः, 4 अः अक्षरायै नमः।

2. अथ अनाहतचक्रस्थराकिनीदेवी ध्यानम्

हृत्पद्मे भानुपत्रद्विवदनलसितां दंष्ट्रिणीं श्यामवर्णा-
मक्षं शूलं कपालं डमरुमपि भुजैर्धारयन्तीं त्रिनेत्रां।
रक्तस्थां कालरात्रिप्रभृतिपरिवृतां स्निग्धभक्तैकसक्तां,
श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यामभिमतफलदां राकिनीं भावयामः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रां रीं रं मलवरयूं राकिण्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं मम रक्तं रक्ष रक्ष असृगात्मने नमः।

(हृदयस्थ अनाहतचक्रमें राकिनी देवी की पूजा उक्त मन्त्रों से कर अनाहत चक्रकमल के 12 दलों में उसकी आवरण शक्तियों का न्यास करे।)

4 कं कालरात्र्यै नमः, 4 खं खण्डितायै नमः, 4 गं गायत्र्यै नमः, 4 घं घण्टाकर्षिण्यै नमः, 4 ङं ङार्णायै नमः, 4 चं चण्डायै नमः, 4 छं छायायै नमः, 4 जं जयायै नमः, 4 झं झंकारायै नमः, 4 ञं ज्ञानरूपायै नमः, 4 टं टंकहस्तायै नमः, 4 ठं ठंकारिण्यै नमः।

3. अथ मणिपुरचक्रस्थलाकिनीदेवी ध्यानम्

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलसितां दंष्ट्रिणीं रक्तवर्णां,
शक्तिं दम्भोलिदण्डाभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोग्राम्।
डामर्याद्यैः परीतां पशुजनभयदां मांसधात्वेकनिष्ठां,
गौडान्नासक्तचित्तां सकलसुखकरीं लाकिनीं भावयामः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लां लीं लं मलवरयूं लाकिन्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं मम मांसं रक्ष रक्ष मांसात्मने नमः।

(नाभिस्थ मणिपुरचक्रमें लाकिनी देवीकी पूजा उक्त मन्त्रों से कर मणिपुरचक्रकमल के 8 दलों में उसकी आवरण शक्तियों का न्यास करे।)

4 डं डामर्यै नमः, 4 ढं ढंकारिण्यै नमः, 4 णं णार्णायै नमः, 4 तं तामस्यै नमः, 4 थं स्थाण्व्यै नमः, 4 दं दाक्षायण्यै नमः, 4 धं धात्र्यै नमः, 4 नं नार्यै नमः, 4 पं पार्वत्यै नमः, 4 फं फट्कारायै नमः।

4. अथ स्वाधिष्ठानचक्रस्थ काकिनीदेवी ध्यानम्

स्वाधिष्ठानाख्यपद्मे रसदललसिते वेदवक्त्रां त्रिनेत्रां,
हस्ताब्जैर्धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालांकुशानात्तगर्वाम्।
मेदोधातुप्रतिष्ठामलिमदमुदितां बन्धिनीमुख्ययुक्तां,
पीतां दध्योदनेष्टाभिमतफलदां काकिनीं भावयामः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कां कीं कं मलवरयूं काकिन्यै नमः।
4 बं भं मं यं रं लं मम मेदो रक्ष रक्ष मेदआत्मने नमः।

(गुह्यस्थानस्थ स्वाधिष्ठानचक्रमें काकिनी देवीकी पूजा उक्त मन्त्रों से कर स्वाधिष्ठानचक्रकमल के 6 दलों में उसकी आवरण शक्तियों का न्यास करे।)

4 बं बन्धिन्यै नमः, 4 भं भद्रकाल्यै नमः, 4 मं महामायायै नमः, 4 यं यशस्विन्यै नमः, 4 रं रक्तायै नमः, 4 लं लम्बोष्ठ्यै नमः।

5. अथ मूलाधारचक्रस्थ साकिनीदेवी ध्यानम्

मूलाधारस्य पत्रे श्रुतिदललसिते पंचवक्त्रां त्रिनेत्रां,
धूम्राभामस्थिसंस्थां श्रृणिमपि कमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम्।
बिभ्राणां बाहुदण्डैः सुललितवरदापूर्वशक्त्यावृतां तां,
मुद्गान्नासक्तचित्तां मधुमदमुदितां साकिनीं भावयामः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सां सीं सं मलवरयूं साकिन्यै नमः। 4 वं शं षं सं ममास्थि रक्ष रक्षास्थ्यात्मने नमः।

(पायूपस्थमध्यगत मूलाधारचक्रमें साकिनी देवीकी पूजा उक्त मन्त्रों से कर मूलाधारचक्रकमल के 4 दलों में उसकी आवरण शक्तियों का न्यास करे।)

4 वं वरदायै नमः, 4 शं श्रियै नमः,
4 षं षण्डायै नमः, 4 सं सरस्वत्यै नमः।

6. अथ आज्ञाचक्रस्थ हाकिनीदेवी ध्यानम्

भ्रूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुगकलिते शुक्लवर्णां कराब्जै-
र्बिभ्राणां ज्ञानमुद्रां डमरुकममलामक्षमालां कपालं।
षड्वक्त्रां मज्जसंस्थां त्रिनयनलसितां हंसवत्यादियुक्तां,
हारिद्रान्नैकसक्तां सकलसुखकरीं हाकिनीं भावयामः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हां हीं हं मलवरयूं हाकिन्यै नमः।
4 हं क्षं मम मज्जां रक्ष रक्ष मज्जात्मने नमः।

(भ्रूमध्यस्थ आज्ञाचक्र में हाकिनी देवी की पूजा उक्त मन्त्रों से कर

आज्ञाचक्रकमल के 2 दलों में उसकी आवरण शक्तियों का न्यास करे।)
4 हं हंसवत्यै नमः, 4 क्षं क्षमावत्यै नमः।

7. अथ सहस्रारचक्रस्थ याकिनीदेवी ध्यानम्

मुण्डव्योमस्थपद्मे दशशतदलके कर्णिकाचन्द्रसंस्थां,
रेतोनिष्ठां समस्तायुधकलितकरां सर्वतो वक्त्रपद्माम्।
आदिक्षान्तार्णशक्तिप्रकरपरिवृतां सर्ववर्णां भवानीं,
सर्वान्नासक्तचित्तां परशिवरसिकां याकिनीं भावयामः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यां यीं यं मलवरयूं याकिन्यैः नमः। 4 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मम शुक्रं रक्ष रक्ष शुक्रात्मने नमः।

(मूर्ध्निस्थित सहस्रारचक्रमें याकिनीदेवीकी उक्त मन्त्रों से पूजाकर सहस्रार चक्रकमल के 1000 दलों में उसकी आवरण शक्तियों का न्यास करे।)

4 अं अमृतायै नमः, 4 आं आकर्षिण्यै नमः, 4 इं इन्द्राण्यै नमः, 4 ईं ईशान्यै नमः, 4 उं उमायै नमः, 4 ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नमः, 4 ऋं ऋद्धिदायै नमः, 4 ॠं ॠकारायै नमः, 4 लृं लृकारायै नमः, 4 लॄं लॄकारायै नमः, 4 एं एकारायै नमः, 4 ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नमः, 4 ओं ओंकारायै नमः, 4 औं औषध्यै नमः, 4 अं अम्बिकायै नमः, 4 अः अक्षरायै नमः 4 कं कालरात्र्यै नमः, 4 खं खण्डितायै नमः, 4 गं गायत्र्यै नमः, 4 घं घण्टाकर्षिण्यै नमः, 4 ङं ङार्णायै नमः, 4 चं चण्डायै नमः, 4 छं छायायै नमः, 4 जं जयायै नमः, 4 झं झंकारायै नमः, 4 ञं ज्ञानरूपायै नमः, 4 टं टंकहस्तायै नमः, 4 ठं ठंकारिण्यै नमः 4 डं डामर्यै नमः, 4 ढं ढंकारिण्यै नमः, 4 णं णार्णायै नमः, 4 तं तामस्यै नमः, 4 थं स्थाणव्यै नमः, 4 दं दाक्षायण्यै नमः, 4 धं धात्र्यै नमः, 4 नं नार्यै नमः, 4 पं पार्वत्यै नमः, 4 फं फट्कारायै नमः 4 बं बन्धिन्यै नमः, 4 भं भद्रकाल्यै नमः, 4 मं महामायायै नमः, 4 यं यशस्विन्यै नमः, 4 रं रक्तायै नमः, 4 लं लम्बोष्ठ्यै नमः, 4 वं वरदायै नमः, 4 शं श्रियै नमः, 4 षं षण्डायै नमः, 4 सं सरस्वत्यै नमः, 4 हं हंसवत्यै नमः, 4 क्षं क्षमावत्यै नमः।

इसके अनन्तर तत्त्वशुद्धिमन्त्रों के तीन आवृत्ति पाठ करे–

"ॐ प्राणापानव्यानोदानसमाना मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। वाङ्मनश्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणरेतोबुद्ध्या-कूतिसंकल्पा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳ-स्वाहा। शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोदरशिश्नोपस्थपायवो मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। त्वक्चर्ममाꣳस रुधिरमेदोऽस्थिमज्जा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳ स्वाहा। पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳस्वाहा। अन्नमयप्राण-मयमनोमयविज्ञानमयानन्दमयात्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳ स्वाहा।"

(10.25) अथ राशिमातृका न्यासः

अथ द्वादशराशि ध्यानम्

> **रक्तश्वेतहरितपाण्डुचित्रकृष्णपिशंगकान्।**
> **कपिशबभ्रुकिर्मीरकृष्णधूम्रान् क्रमात्स्मरेत्।।**

अथ राशिन्यासः

4 अं आं इं ईं मेषाय नमः – दक्षिणपादे,
4 उं ऊं वृषाय नमः – लिंगदक्षभागे,
4 ऋं ॠं लृं लॄं मिथुनाय नमः – दक्षकुक्षौ,
4 एं ऐं कर्काय नमः – हृदयदक्षभागे,
4 ओं औं सिंहाय नमः – दक्षबाहुमूले,
4 अं अः शं षं सं हं ळं कन्यायै नमः – दक्षशिरोभागे,
4 कं खं गं घं ङं तुलायै नमः – वामशिरोभागे,
4 चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः – वामबाहुमूले,
4 टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः –हृदयवामभागे,
4 तं थं दं धं नं मकराय नमः – वामकुक्षौ,
4 पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः – लिंगवामभागे,
4 यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः – वामपादे।

(10.26) पीठमातृकान्यासः

अथ पीठ ध्यानम्

सितासितारुणश्यामहरितपीतान्यनुक्रमात्।
पुनः क्रमेण देवेशि पंचाशत्पीठसंचयः।
पीठानीह स्मरेद्विद्वान् सर्वकामार्थसिद्धये।।

अथ पीठन्यासः

4 अं कामरूपपीठाय नमः – शिरसि,
4 आं वाराणसीपीठाय नमः – मुखे,
4 इं नेपालपीठाय नमः – दक्षनेत्रे,
4 ईं पौण्ड्रवर्धनपीठाय नमः – वामनेत्रे,
4 उं पुरस्थितकाश्मीरपीठाय नमः – दक्षकर्णे,
4 ऊं कान्यकुब्जपीठाय नमः – वामकर्णे,
4 ऋं पूर्णशैलपीठाय नमः – दक्षनासापुटे,
4 ॠं अर्बुदाचलपीठाय नमः – वामनासापुटे,
4 लृं आम्रातकेश्वरपीठाय नमः – दक्षगण्डे,
4 लॄं एकाम्नायपीठाय नमः – वामगण्डे,
4 एं त्रिस्रोतसपीठाय नमः – ऊर्ध्वोष्ठे,
4 ऐं कामकोटिपीठाय नमः – अधरोष्ठे,
4 ओं कैलासपीठाय नमः – ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ,
4 औं भृगुनगरपीठाय नमः – अधोदन्तपंक्तौ,
4 अं केदारपीठाय नमः – जिह्वाग्रे,
4 अः चन्द्रपुष्करिणीपीठाय नमः – कण्ठे,
4 कं श्रीपुरपीठाय नमः – दक्षबाहुमूले,
4 खं ओंकारपीठाय नमः – दक्षकूर्परे,
4 गं जालन्धरपीठाय नमः – दक्षमणिबन्धे,
4 घं मालवपीठाय नमः – दक्षकरांगुलिमूले,
4 ङं कुलान्तकपीठाय नमः – दक्षकरांगुल्यग्रे,
4 चं देवीकोटपीठाय नमः – वामबाहुमूले,
4 छं गोकर्णपीठाय नमः – वामकूर्परे,

4 जं मारुतकेश्वरपीठाय नमः – वाममणिबन्धे,
4 झं अट्टहासपीठाय नमः – वामकरांगुलिमूले,
4 ञं विरजापीठाय नमः – वामकरांगुल्यग्रे,
4 टं राजगेहपीठाय नमः – दक्षोरुमूले,
4 ठं महापथपीठाय नमः – दक्षजानुनि,
4 डं कोलापुरपीठाय नमः – दक्षगुल्फे,
4 ढं एलापुरपीठाय नमः – दक्षपादांगुलिमूले,
4 णं कालेश्वरपीठाय नमः –दक्षपादांगुल्यग्रे,
4 तं जयन्तिकापीठाय नमः – वामोरुमूले,
4 थं उज्जयिनीपीठाय नमः – वामजानुनि,
4 दं चित्रापीठाय नमः – वामगुल्फे,
4 धं क्षीरिकापीठाय नमः – वामपादांगुलिमूले,
4 नं हस्तिनापुरपीठाय नमः – वामपादांगुल्यग्रे,
4 पं उड्डीशपीठाय नमः – दक्षपार्श्वे,
4 फं प्रयागपीठाय नमः – वामपार्श्वे,
4 बं षष्ठीशपीठाय नमः – पृष्ठे,
4 भं मायापुरिपीठाय नमः – नाभौ,
4 मं मलयपीठाय नमः – जठरे,
4 यं श्रीशैलपीठाय नमः – हृदये,
4 रं मेरुपीठाय नमः – दक्षस्कन्धे,
4 लं गिरिवरपीठाय नमः – गलपृष्ठे,
4 वं महेन्द्रपीठाय नमः – वामस्कन्धे,
4 शं वामनपीठाय नमः – हृदयादिदक्षकरांगुल्यन्तं,
4 षं हिरण्यपुरपीठाय नमः – हृदयादिवामकरांगुल्यन्तं,
4 सं महालक्ष्मीपुरपीठाय नमः – हृदयादिदक्षपादांगुल्यन्तं,
4 हं ओड्यानपीठाय नमः – हृदयादिवामपादांगुल्यन्तं,
4 ळं छायाछत्रपीठाय नमः – हृदयादिगुह्यान्तं,
4 क्षं क्षत्रपुरपीठाय नमः – हृदयादिमूर्धान्तं।

(इस प्रकार लघुषोढान्यास पूरा हुआ)।

(10.27) **अथ श्रीचक्रन्यासः**

अथ विनियोगः

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपंचदशाक्षरीमहामन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, पंक्तीश्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः, शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रसाद-सिद्ध्यर्थे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः

4 आनन्दभैरवर्षये नमः –शिरसि, **4 पंक्तीछन्दसे नमः** –मुखे,
4 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमः – हृदये, **4 ऐं बीजाय नमः** –गुह्ये,
4 सौः शक्तये नमः – पादयोः, **4 क्लीं कीलकाय नमः** –नाभौ,
4 श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्ध्यर्थे विनियोगाय नमः – सर्वांगे।

अथ करन्यासः

4 कएईलह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, **4 कएईलह्रीं** अनामिकाभ्यां नमः,
4 हसकहलह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, **4 हसकहलह्रीं** कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
4 सकलह्रीं मध्यमाभ्यां नमः, **4 सकलह्रीं**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यासः

4 कएईलह्रीं हृदयाय नमः, **4 कएईलह्रीं** कवचाय हुम्,
4 हसकहलह्रीं शिरसे स्वाहा, **4 हसकहलह्रीं** नेत्रत्रयाय वौषट्,
4 सकलह्रीं शिखायै वषट्, **4 सकलह्रीं** अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

ध्यायेत्कामेश्वरांकस्थां कुरुविन्दमणिप्रभाम्।
शोणाम्बास्रगालेपां सर्वांगीणविभूषणाम्।।
सौन्दर्यशेवधिं सेषुचापपाशांकुशोज्ज्वलाम्।
स्वभाभिरणिमाद्याभिः सेव्यां सर्वनियामिकाम्।।
सच्चिदानन्दवपुषां सदयापांगविभ्रमाम्।
सर्वलोकैकजननीं स्मेरास्यां ललिताम्बिकाम्।।

अथ पुष्पांजलि:

शिवे शिवसुशीतलामृततरंगगन्धोल्लस-
न्नवावारणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले,
षडंगपरिवारिते कलित एष पुष्पांजलि:।।

(अब चिन्तन करे कि अपना शरीर ही श्रीचक्र है, इसलिये मेरा यह शरीर त्वगादि आकार रहित ज्वलायमान कालाग्नि के समान अत्यन्त तेजस्वी है) अब सर्वांग में व्याप्त करते हुये सामान्य न्यास करे-

4 समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरापररहस्ययोगिनीचक्रदेवताभ्यो नमः।

अब प्रत्येक अंग में न्यास करे-

4 गं गणपतये नमः	–	दक्षोरौ,
4 क्षं क्षेत्रपालाय नमः	–	दक्षांसे,
4 यं योगिनीभ्यो नमः	–	वामांसे,
4 वं वटुकाय नमः	–	वामोरौ,
4 लं इन्द्राय नमः	–	पादांगुष्ठद्वयाग्रे,
4 रं अग्नये नमः	–	दक्षजानुनि,
4 टं यमाय नमः	–	दक्षपार्श्वे,
4 क्षं निर्ऋतये नमः	–	दक्षांसे,
4 वं वरुणाय नमः	–	मूर्ध्नि,
4 यं वायवे नमः	–	वामांसे,
4 सं सोमाय नमः	–	वामपार्श्वे,
4 हं ईशानाय नमः	–	वामजानुनि,
4 हंसः ब्रह्मणे नमः	–	मूर्ध्नि,
4 अं अनन्ताय नमः	–	मूलाधारे।

(10.28) **त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः**

4 अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः - प्रणाम कर

4 चतुरस्राद्यरेखायै नमः –सर्वांग में न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे

4 अणिमासिद्ध्यै नमः – दक्षांसपृष्ठे,

4 लघिमासिद्ध्यै नमः – दक्षपाण्यंगुल्यग्रेषु,

4 महिमासिद्ध्यै नमः – दक्षोरुसन्धौ,

4 ईशित्वसिद्ध्यै नमः – दक्षपादांगुल्यग्रेषु,

4 वशित्वसिद्ध्यै नमः – वामपादांगुल्यग्रेषु,

4 प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः – वामोरुसन्धौ,

4 भुक्तिसिद्ध्यै नमः – वामपाण्यंगुल्यग्रेषु,

4 इच्छासिद्ध्यै नमः – वामांसपृष्ठे,

4 प्राप्तिसिद्ध्यै नमः – शिखामूले,

4 सर्वकामसिद्ध्यै नमः – शिर:पृष्ठे,

4 चतुरस्रमध्यरेखायै नमः – सर्वांगे।

प्रत्येक अंग में न्यास करे –

4 ब्राह्म्यै नमः – पादांगुष्ठद्वये, **4 माहेश्वर्यै नमः** – दक्षपार्श्वे,

4 कौमार्यै नमः – मूर्ध्नि, **4 वैष्णव्यै नमः** – वामपार्श्वे,

4 वाराह्यै नमः वामजानुनि, **4 इन्द्राण्यै नमः** – दक्षजानुनि,

4 चामुण्डायै नमः – दक्षांसे, **4 महालक्ष्म्यै नमः** – वामांसे।

4 चतुरस्रान्त्यरेखायै नमः – सर्वांग में न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे –

4 सर्वसंक्षोभिण्यै नमः – पादांगुष्ठद्वये,

4 सर्वविद्राविण्यै नमः – दक्षपार्श्वे,

4 सर्वाकर्षिण्यै नमः – मूर्ध्नि,

4 सर्ववशंकर्यै नमः – वामपार्श्वे,

4 सर्वोन्मादिन्यै नमः – वामजानुनि,

4 सर्वमहांकुशायै नमः – दक्षजानुनि

4 सर्वखेचर्यै नमः – दक्षांसे,

4 सर्वबीजायै नमः – वामांसे,

4 सर्वयोनये नमः – द्वादशान्ते,

4 सर्वत्रिखण्डायै नमः –पादांगुष्ठद्वये,

4 अं आं त्रैलोक्यमोहनचक्रेश्वर्यै त्रिपुरायै नमः –हृदये।

अब हृदय में त्रैलोक्यमोहनचक्र को समर्पित करे–

एता: प्रकटयोगिन्य: त्रैलोक्यमोहनचक्रे समुद्रा: ससिद्धय: सायुधा: सशक्तय: सवाहना: सर्वा न्यस्ता: सन्तु।

(10.29) **सर्वाशापरिपूरकचक्रन्यास:**

4 सर्वाशापरिपूरकचक्राय नम: –प्रणाम कर सर्वांग न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे

4 कामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – दक्षकर्णपृष्ठे,
4 बुद्ध्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – दक्षांसे,
4 अहंकाराकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – दक्षकूर्परे,
4 शब्दाकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – दक्षकरतलपृष्ठयो:,
4 स्पर्शाकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – दक्षोरौ स्फिचि च,
4 रूपाकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – दक्षजानुनि,
4 रसाकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – दक्षगुल्फे,
4 गन्धाकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – दक्षपादतले प्रपदे च,
4 चित्ताकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – वामपादतले प्रपदे च,
4 धैर्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – वामगुल्फे,
4 स्मृत्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – वामजानुनि,
4 नामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – वामोरौ स्फिचि च,
4 बीजाकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – वामकरतलपृष्ठयो:,
4 आत्माकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – वामकूर्परे,
4 अमृताकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – वामांसे,
4 शरीराकर्षिण्यै नित्याकलायै नम: – वामकर्णपृष्ठे,
7 सर्वाशापरिपूरकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरेश्यै नम: – हृदये।

अब हृदय में सर्वाशापरिपूरकचक्र को समर्पित करे–

एता गुप्तयोगिन्य: सर्वाशापरिपूरकचक्रे समुद्रा: ससिद्धय: सायुधा: सशक्तय: सवाहना: सर्वा न्यस्ता: सन्तु।

(10.30) सर्वसंक्षोभणचक्रन्यासः

4 ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः –

प्रणाम कर सर्वांग न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे –

4 अनंगकुसुमायै नमः – दक्षललाटास्थि,
4 अनंगमेखलायै नमः – दक्षबाहुमूलास्थि,
4 अनंगमदनायै नमः – दक्षोरौ,
4 अनंगमदनातुरायै नमः – दक्षगुल्फे,
4 अनंगरेखायै नमः – वामगुल्फे,
4 अनंगवेगिन्यै नमः – वामोरौ,
4 अनंगांकुशायै नमः – वामबाहुमूलास्थि,
4 अनंगमालिन्यै नमः – वामललाटास्थि,
4 ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्रेश्वर्यै त्रिपुरसुन्दर्यै नमः – हृदये।

अब हृदय में सर्वाशापरिपूरकचक्र को समर्पित करे–

एता गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

(10.31) सर्वसौभाग्यदायकचक्रन्यासः

4 हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः –

प्रणाम कर सर्वांग न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे –

4 सर्वसंक्षोभिण्यै नमः – ललाटमध्ये,
4 सर्वविद्राविण्यै नमः – ललाटदक्षभागे,
4 सर्वाकर्षिण्यै नमः – दक्षगण्डे,
4 सर्वाह्लादिन्यै नमः – दक्षांसे,
4 सर्वसंमोहिन्यै नमः – दक्षपार्श्वे,
4 सर्वस्तभिन्यै नमः – दक्षोरौ,
4 सर्वजृम्भिण्यै नमः – दक्षजंघायां,
4 सर्ववशंकर्यै नमः – वामजंघायां,
4 सर्वरंजिन्यै नमः – वामोरौ,
4 सर्वोन्मादिन्यै नमः – वामपार्श्वे,

4 सर्वार्थसाधिन्यै नमः – वामांसे,
4 सर्वसंपत्तिपूरिण्यै नमः – वामगण्डे,
4 सर्वमन्त्रमय्यै नमः – ललाटवामभागे,
4 सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्यै नमः – शिरःपृष्ठे,
4 **हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरवासिन्यै नमः** – हृदये।
अब हृदय में सर्वसौभाग्यदायकचक्र को समर्पित करे–
एता सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

(10.32) **सर्वार्थसाधकचक्रन्यासः**
4 ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः –
प्रणाम कर सर्वांग न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे –
4 सर्वसिद्धिप्रदायै नमः – दक्षनेत्रनासापुटयोः,
4 सर्वसम्पत्प्रदायै नमः – नासामूले दक्षसृक्किणि,
4 सर्वप्रियंकर्यै नमः – वामनेत्रे दक्षस्तने,
4 सर्वमंगलकारिण्यै नमः – वामबाहुमूले दक्षवृषणे,
4 सर्वकामप्रदायै नमः – वामोरुमूले सीविन्या दक्षभागे,
4 सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः –वामजानुनि सीविन्या वामभागे,
4 सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः – दक्षजानुनि वामस्तने,
4 सर्वविघ्नविनाशिन्यै नमः – गुदे वामवृषणे,
4 सर्वांगसुन्दर्यै नमः – दक्षोरुमूले वामसृक्किणि,
4 सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः – दक्षबाहुमूले वामनासापुटे,
4 ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रियै नमः – हृदये।
अब हृदय में सर्वसौभाग्यदायकचक्र को सपर्पित करे–
एता कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

(10.33) **सर्वरक्षाकरचक्रन्यास:**

4 ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः –

प्रणाम कर सर्वांग न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे –

4 सर्वज्ञायै नमः – दक्षनासापुटे,

4 सर्वशक्त्यै नमः – दक्षसृक्किणि ओष्ठप्रान्ते,

4 सर्वैश्वर्यप्रदायिन्यै नमः – दक्षस्तने,

4 सर्वज्ञानमय्यै नमः – दक्षमुष्के,

4 सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः – सीविन्या दक्षभागे,

4 सर्वाधारस्वरूपायै नमः – वाममुष्के सीविन्या वामभागे,

4 सर्वपापहरायै नमः – वामस्तने,

4 सर्वानन्दमय्यै नमः – वामसृक्किणि,

4 सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः – वामनासापुटे,

4 सर्वेप्सितफलप्रदायै नमः – नासाग्रे,

4 ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरमालिन्यै नमः– हृदि।

अब हृदय में सर्वरक्षाकरचक्र को समर्पित करे–

एता निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

(10.34) **सर्वरोगहरचक्रन्यास:**

4 ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः –

प्रणाम कर सर्वांग न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे –

4 अं – अः (16) रबलूं वशिनिवाग्देवतायै नमः – दक्षचिबुके,

4 कं – ङं (5) कलह्रीं कामेश्वरीवादेवतायै नमः– दक्षकण्ठे,

4 चं – ञं (5) नबलीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः – हृदयदक्षभागे,

4 टं – णं (5) यलूं विमलावाग्देवतायै नमः – नाभिदक्षभागे,

4 तं – नं (5) जमरीं अरुणावाग्देवतायै नमः –नाभिवामभागे,

4 पं – मं (5) हसलवयूं जयिनीवाग्देवतायै नमः – हृदयवामभागे,

4 यं रं लं वं झमरयूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः – वामकण्ठे,

4 शं – क्षं (6) क्षमरीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः – वामचिबुके,

4 ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरासिद्ध्यै नमः - हृदये।
अब हृदय में सर्वसौभाग्यदायकचक्र को समर्पित करे-
एता रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

(10.35) **आयुधन्यासः**

अपने हृदय में त्रिकोण की भावना करके उसमें पूर्वादि दिशा में क्रम से चारों आयुधों का न्यास करे -
4 द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यो बाणेभ्यो नमः-त्रिकोण पृष्ठे,
4 धं सर्वसम्मोहनाय धनुषे नमः -त्रिकोणदक्षे,
4 ह्रीं सर्ववशीकरणाय पाशाय नमः -त्रिकोणाग्रे,
4 क्रों सर्वस्तम्भनाय अंकुशाय नमः -त्रिकोणवामे।

(10.36) **सर्वसिद्धिप्रदचक्रन्यासः**

4 ह्स्रैं हसकलरीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः -
प्रणाम कर सर्वांग न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे -
4 कएईलह्रीं कामरूपपीठस्थायै महाकामेश्वर्यै नमः
-त्रिकोणाग्रकोणे,
4 हसकहलह्रीं पूर्णागिरिपीठस्थायै महाभगमालिन्यै नमः -
तद्दक्षकोणे,
4 सकलह्रीं जालन्धरपीठस्थायै महावज्रेश्वर्यै नमः -तद्वामकोणे,
4+15 ओड्यानपीठस्थायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः - तन्मध्ये,

अब त्रिकोण के निचले नोक से आरम्भ कर दाहिनी ओर से चलते हुये प्रत्येक भुजा पर 5 नित्याओं का न्यास कर अन्त में बीच में स्थित बिन्दु में महानित्या का न्यास करे-
(दाहिनी भुजा)
4 अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै नमः,
4 आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे

सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगवशंकरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं भं ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै नमः, 4 इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्यायै नमः, 4 ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै नमः, 4 उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै नमः,

(ऊपरी भुजा)

4 ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै नमः, 4 ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यायै नमः, 4 ॠं ॐ ह्रीं हुं खं चं छं क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्यायै नमः, 4 ऌं ऐं क्लीं सौः ऌं कुलसुन्दरीनित्यायै नमः, 4 ॡं हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः ॡं नित्यानित्यायै नमः,

(बायीं भुजा)

4 एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्यायै नमः, 4 ऐं भमरयूं ऐं विजयानित्यायै नमः, 4 ओं स्वौं ओं सर्वमंगलानित्यायै नमः, 4 औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं रं रं रं रं रं रं रं हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्यायै नमः, 4 अं चक्रौं अं चित्रानित्यायै नमः,

(बिन्दु में)

4 अः 15 अः ललितामहानित्यायै नमः।

4 ह्स्रैं हसकलरीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्रेश्वर्यै त्रिपुराम्बायै नमः
– हृदये।

अब हृदय में सर्वसिद्धिप्रदकचक्र को समर्पित करे–

एता अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

(10.37) **सर्वानन्दमयचक्रन्यास:**

4 + 15 सर्वानन्दमयचक्राय नमः –

प्रणाम कर सर्वांग न्यास करके प्रत्येक अंग में न्यास करे –

4 + 15 श्रीललितायै नमः – हृदयमध्ये,

4 + 15 सर्वानन्दमयचक्रेश्वर्यै श्रीललितायै नमः – हृदये।

अब हृदय में सर्वानन्दमयचक्र को समर्पित करे–

एता परापररहस्ययोगिनी सर्वानन्दमयचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवारा न्यस्ताः सन्तु।

तत्पश्चात् योनिमुद्रा दर्शाके मूल को जपकर पुनः करांगन्यास करे।

अथ करन्यासः

4 कएईलह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, **4 कएईलह्रीं** अनामिकाभ्यां नमः,
4 हसकहलह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, **4 हसकहलह्रीं** कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
4 सकलह्रीं मध्यमाभ्यां नमः, **4 सकलह्रीं**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यासः

4 कएईलह्रीं हृदयाय नमः, **4 कएईलह्रीं** कवचाय हुम्,
4 हसकहलह्रीं शिरसे स्वाहा, **4 हसकहलह्रीं** नेत्रत्रयाय वौषट्,
4 सकलह्रीं शिखायै वषट्, **4 सकलह्रीं** अस्त्राय फट्।

(10.38) **महाषोढान्यासः (39 – 44)**

अस्य श्रीमहाषोढान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, जगतीच्छन्दः, श्रीमदर्धनारीश्वरो देवता, श्रीविद्यांगत्वेन महाषोढान्यासे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः

ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः – शिरसि,
ॐ जगतीच्छन्दसे नमः – मुखे,
ॐ श्रीमदर्धनारीश्वरदेवतायै नमः – हृदये,
श्रीविद्यांगत्वेन महाषोढान्यासे विनियोगाय नमः – अस्त्राय फट्।

अथ करन्यासः

4 हसौः सहौः हौं ईशानाय नमः – अंगुष्ठयोः,

4 हसौ: सहौ: हें तत्पुरुषाय नमः – तर्जन्योः,
4 हसौ: सहौ: हुं अघोराय नमः – मध्यमयोः,
4 हसौ: सहौ: हिं वामदेवाय नमः – अनामिकयोः,
4 हसौ: सहौ: हं सद्योजाताय नमः – कनिष्ठिकयोः।

अथ अंगन्यासः

4 हसौ: सहौ: हौं ईशानाय नमः – मूर्ध्नि,
4 हसौ: सहौ: हें तत्पुरुषाय नमः – मुखे,
4 हसौ: सहौ: हुं अघोराय नमः – हृदये,
4 हसौ: सहौ: हिं वामदेवाय नमः – गुह्ये,
4 हसौ: सहौ: हं सद्योजाताय नमः – पादयोः।

अथ पंचवक्त्रन्यासः

(अंगुष्ठ आदि क्रम से एक एक अंगुलि से एक एक वक्त्र का न्यास करे)

4 हसौ: सहौ: हौं ईशानायोर्ध्ववक्त्राय नमः – मूर्ध्नि,
4 हसौ: सहौ: हें तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः - मुखे,
4 हसौ: सहौ: हुं अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः – दक्षकर्णे,
4 हसौ: सहौ: हिं वामदेवायोत्तरवक्त्राय नमः – वामकर्णे,
4 हसौ: सहौ: हं सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः – कण्ठकूपे।

पुनः अथ करन्यासः

ॐ हसां –अंगुष्ठाभ्यां नमः, **ॐ हसीं** – तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ हसूं –मध्यमाभ्यां नमः, **ॐ हसैं** – अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ हसौं–कनिष्ठिकाभ्यां नमः, **ॐ हसः** –करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

अथ अंगन्यासः

ॐ हसां – हृदयाय नमः, **ॐ हसीं** – शिरसे स्वाहा,
ॐ हसूं – शिखायै वषट्, **ॐ हसैं** – कवचाय हुम्,
ॐ हसौं – नेत्रत्रयाय वौषट्, **ॐ हसः** – अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

पंचवक्त्रं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम्।
चन्द्रसूर्यसहस्राभं शिवशक्त्यात्मकं भजे।।

(10.39) प्रपंचन्यासः

6 = ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः सहौः।

6 अं प्रपंचरूपायै श्रियै नमः – शिरसि,
6 आं द्वीपरूपायै मायायै नमः – मुखे,
6 इं जलधिरूपायै कमलायै नमः – दक्षनेत्रे,
6 ईं गिरिरूपायै विष्णुवल्लभायै नमः – वामनेत्रे,
6 उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नमः – दक्षकर्णे,
6 ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै नमः – वामकर्णे,
6 ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नमः – दक्षनासापुटे,
6 ॠं वनरूपायै कमलवासिन्यै नमः – वामनासापुटे,
6 ऌं आश्रमरूपायै इन्दिरायै नमः – दक्षगण्डे,
6 ॡं गुहारूपायै मायायै नमः – वामगण्डे,
6 एं नदीरूपायै रमायै नमः – ऊर्ध्वोष्ठे,
6 ऐं चत्वररूपायै पद्मायै नमः – अधरोष्ठे,
6 ओं उद्भिज्जरूपायै नारायणप्रियायै नमः – ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ,
6 औं स्वेदजरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नमः – अधोदन्तपंक्तौ,
6 अं अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नमः – जिह्वाग्रे,
6 अः जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नमः – कण्ठे,
6 कं लवरूपायै आर्यायै नमः – दक्षबाहुमूले,
6 खं त्रुटिरूपायै उमायै नमः – दक्षकूर्परे,
6 गं कलारूपायै चण्डिकायै नमः – दक्षमणिबन्धे,
6 घं काष्ठारूपायै दुर्गायै नमः – दक्षकरांगुलिमूले,
6 ङं निमेषरूपायै शिवायै नमः – दक्षकरांगुल्यग्रे,
6 चं श्वासरूपायै अपर्णायै नमः – वामबाहुमूले,

6 छं घटिकारूपायै अम्बिकायै नमः – वामकूर्परे,
6 जं मुहूर्तरूपायै सत्यै नमः – वाममणिबन्धे,
6 झं प्रहररूपायै ईश्वर्यै नमः – वामकरांगुलिमूले,
6 ञं दिवसरूपायै शाम्भव्यै नमः – वामकरांगुल्यग्रे,
6 टं सन्ध्यारूपायै ईशान्यै नमः – दक्षोरुमूले,
6 ठं रात्रिरूपायै पार्वत्यै नमः – दक्षजानुनि,
6 डं तिथिरूपायै सर्वमंगलायै नमः – दक्षगुल्फे,
6 ढं वाररूपायै दाक्षायण्यै नमः – दक्षपादांगुलिमूले,
6 णं नक्षत्ररूपायै हैमवत्यै नमः – दक्षपादांगुल्यग्रे,
6 तं योगरूपायै महामायायै नमः – वामोरुमूले,
6 थं करणरूपायै महेश्वर्यै नमः – वामजानुनि,
6 दं पक्षरूपायै मृडान्यै नमः – वामगुल्फे,
6 धं मासरूपायै रुद्राण्यै नमः – वामपादांगुलिमूले,
6 नं राशिरूपायै शर्वाण्यै नमः – वामपादांगुल्यग्रे,
6 पं ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै नमः – दक्षपार्श्वे,
6 फं अयनरूपायै काल्यै नमः – वामपार्श्वे,
6 बं वत्सररूपायै कात्यायन्यै नमः – पृष्ठे,
6 भं युगरूपायै गौर्यै नमः – नाभौ,
6 मं प्रलयरूपायै भवान्यै नमः – जठरे,
6 यं पंचभूतरूपायै ब्राह्म्यै नमः – हृदये,
6 रं पंचतन्मात्रारूपायै वागीश्वर्यै नमः – दक्षकक्षे,
6 लं पंचकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै नमः – गलपृष्ठे,
6 वं पंचज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै नमः – वामकक्षे,
6 शं पंचप्राणरूपायै सरस्वत्यै नमः – हृदयादिदक्षकरांगुल्यन्तं,
6 षं गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नमः – हृदयादिवामकरांगुल्यन्तं,
6 सं अन्तःकरणचतुष्टयरूपायै वाक्प्रदायै नमः– हृदयादिदक्षपादांगुल्यन्तं,
6 हं अवस्थाचतुष्टयरूपायै शारदायै नमः–हृदयादिवामपादांगुल्यन्तं,

6 ळं सर्वधातुरूपायै भारत्यै नमः – कट्यादिपादांगुल्यन्तं,
6 क्षं दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नमः – कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं,
6 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सकलप्रपंचाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः हसौः सहौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ – सर्वांगे।

(10.40) अथ भुवनन्यासः

6 अं आं इं अतललोकनिलयशतकोटिगुह्याद्ययोगिनीमूल देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – पादयोः,
6 ईं उं ऊं वितललोकनिलयशतकोटिगुह्यतरान्तयोगिनीमूल देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – गुल्फयोः,
6 ऋं ॠं लृं सुतललोकनिलयशतकोट्यतिगुह्याचिन्त्ययोगिनी मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – जंघयोः,
6 ॡं एं ऐं महातललोकनिलयशतकोटिमहागुह्यस्वतन्त्रयोगिनी मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – जान्वोः,
6 ओं औं तलातललोकनिलयशतकोटिपरमगुह्येच्छायोगिनी मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – ऊर्वोः,
6 अं अः रसातललोकनिलयशतकोटिरहस्यज्ञानयोगिनी मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – स्फिचोः,
6 कं खं गं घं ङं पाताललोकनिलयशतकोटिरहस्यतरक्रिया योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – मूलाधारे,
6 चं छं जं झं ञं भूर्लोकनिलयशतकोट्यतिरहस्यडाकिनी-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – स्वाधिष्ठाने,
6 टं ठं डं ढं णं भुवर्लोकनिलयशतकोटिमहारहस्यराकिनी-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – मणिपूरके,
6 तं थं दं धं नं स्वर्लोकनिलयशतकोटिपरमरहस्यलाकिनी-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – अनाहने,

6 पं फं बं भं मं महर्लोकनिलयशतकोटिगुप्तकाकिनीयोगिनी मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – विशुद्धौ,
6 यं रं लं वं जनलोकनिलयशतकोटिगुप्ततरसाकिनीयोगिनी मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – आज्ञायां,
6 शं षं सं हं तपोलोकनिलयशतकोट्यतिगुप्तहाकिनीयोगिनी मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – ललाटे,
6 ळं क्षं सत्यलोकनिलयशतकोटिमहागुप्तयाकिनीयोगिनी–मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः – ब्रह्मरन्ध्रे,
6 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सकलभुवनाधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः हसौः सहौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ – सर्वांगे।

(10.41) अथ मूर्तिन्यासः

6 अं केशवायाक्षरशक्त्यै नमः – शिरसि,
6 आं नारायणायाद्याशक्त्यै नमः – मुखे,
6 इं माधवायेष्टदेवतायै नमः – दक्षिणांसे,
6 ईं गोविन्दायेशान्यै नमः – वामांसे,
6 उं विष्णवे उमायै नमः – दक्षपार्श्वे,
6 ऊं मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै नमः – वामपार्श्वे,
6 ऋं त्रिविक्रमाय ऋद्ध्यै नमः – दक्षकट्यां,
6 ॠं वामनाय रूपिण्यै नमः – वामकट्यां,
6 लृं श्रीधराय लुप्तायै नमः – दक्षोरौ,
6 ॡं हृशीकेशाय लूनदोषायै नमः – वामोरौ,
6 एं पद्मनाभायैकनायिकायै नमः – दक्षजानुनि,
6 ऐं दामोदरायैककारिण्यै नमः – वामजानुनि,
6 ओं वासुदेवायौघवत्यै नमः – दक्षजंघायां,
6 औं संकर्षणायौर्वकामायै नमः – वामजंघायां,

6 अं प्रद्युम्नायांजनप्रभायै नमः – दक्षपादे,
6 अः मं अनिरुद्धायास्थिमालाधरायै नमः – वामपादे,
6 कं भं भवाय करभद्रायै नमः –दक्षपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्,
6 खं बं शर्वाय खगबलायै नमः –वामपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्,
6 गं फं हराय गरिमाफलप्रदायै नमः – दक्षपार्श्वे,
6 घं पं पशुपतये घोरपादायै नमः – वामपार्श्वे,
6 ङं नं उग्राय पंक्तिवासायै नमः – दक्षदोर्मूले,
6 चं धं महादेवाय चन्द्रार्धधारिण्यै नमः – वामदोर्मूले,
6 छं दं भीमाय छन्दोमय्यै नमः – कण्ठे,
6 जं थं ईशानाय जगत्स्थानायै नमः – वदने,
6 झं तं तत्पुरुषाय झंकृत्यै नमः – दक्षकर्णे,
6 ञं णं अघोराय ज्ञानदायै नमः वामकर्णे,
6 टं ढं सद्योजाताय टंकढक्कधरायै नमः – भाले,
6 ठं डं वामदेवाय ठंकृतिडामर्यै नमः – शिखायां,
6 यं ब्रह्मणे यक्षिण्यै नमः – मूलाधारे,
6 रं प्रजापतये रंजिन्यै नमः – स्वाधिष्ठाने,
6 लं वेधसे लक्ष्म्यै नमः – मणिपूरके,
6 वं परमेष्ठिने वज्रिण्यै नमः – अनाहते,
6 शं पितामहाय शशिधरायै नमः – विशुद्धौ,
6 षं विधात्रे षडाधारालयायै नमः – आज्ञायाम्,
6 सं विरिंचये सर्वनायिकायै नमः – अर्धेन्दौ,
6 हं स्रष्ट्रे हसिताननायै नमः – रोधिन्याम्,
6 ळं चतुराननाय ललितायै नमः – नादे,
6 क्षं हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः – नादान्ते,
6 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सकलत्रिमूर्त्यात्मिकायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः हसौः सहौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ – सर्वांगे।

(10.42) अथ मन्त्रन्यास:

6 अं आं इं एकलक्षकोटिभेदप्रणवाद्येकाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधि देवतायै सकलफलप्रदायै एककूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः मूलाधारे,
6 ईं उं ऊं द्विलक्षकोटिभेदहंसादिद्व्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्विकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः स्वाधिष्ठाने,
6 ऋं ॠं लृं त्रिलक्षकोटिभेदवह्न्यादित्र्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधि देवतायै सकलफलप्रदायै त्रिकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः -मणिपूरके,
6 लॄं एं ऐं चतुर्लक्षकोटिभेदचन्द्रादिचतुरक्षरात्मकाखिलमन्त्राधि देवतायै सकलफलप्रदायै चतुष्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः अनाहते,
6 ओं औं अं अः पंचलक्षकोटिभेदसूर्यादिपंचाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधि देवतायै सकलफलप्रदायै पंचकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः - विशुद्धौ,
6 कं खं गं षड्लक्षकोटिभेदस्कन्दादिषडक्षरात्मकाखिलमन्त्राधि देवतायै सकलफलप्रदायै षट्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः -आज्ञायां,
6 घं ङं चं सप्तलक्षकोटिभेदगणपत्यादिसप्ताक्षरात्मकाखिलमन्त्रा धिदेवतायै सकलफलप्रदायै सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः - बिन्दौ,
6 छं जं झं अष्टलक्षकोटिभेदवटुकाद्यष्टाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधि देवतायै सकलफलप्रदायै अष्टकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः - अर्धेन्दौ,
6 ञं टं ठं नवलक्षकोटिभेदब्रह्मादिनवाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः - रोधिन्यां,
6 डं ढं णं दशलक्षकोटिभेदविष्ण्वादिदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधि देवतायै सकलफलप्रदायै दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः - नादे,
6 तं थं दं एकादशलक्षकोटिभेदरुद्राद्येकादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्रा धिदेवतायै सकलफलप्रदायै एकादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः - नादान्ते,
6 धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेदवाण्यादिद्वादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधि देवतायै सकलफलप्रदायै द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः - शक्तौ,
6 फं बं भं त्रयोदशलक्षकोटिभेदलक्ष्म्यादित्रयोदशाक्षरात्मकाखिल मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः - व्यापिकायां,

6 मं यं रं चतुर्दशलक्षकोटिभेदगौर्यादिचतुर्दशाक्षरात्मकाखिल मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः
– समनस्थाने,

6 लं वं शं पंचदशलक्षकोटिभेददुर्गादिपंचदशाक्षरात्मकाखिल मन्त्राधि देवतायै सकलफलप्रदायै पंचदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः –उन्मन्यां,

6 षं सं हं ळं क्षं षोडषलक्षकोटिभेदत्रिपुरादिषोडषाक्षरात्मका-खिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षोडशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः
– ध्रुवमण्डले,

6 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सकलमन्त्राधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः हसौः सहौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ – सर्वांगे।

(10.43) अथ देवतान्यासः

6 अं आं सहस्रकोटिऋषिकुलसेवितायै निवृत्त्यम्बादेव्यै नमः
– दक्षपादे,

6 इं ईं सहस्रकोटियोगिनीकुलसेवितायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः
– वामपादे,

6 उं ऊं सहस्रकोटितपस्विकुलसेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः
– दक्षगुल्फे,

6 ऋं ॠं सहस्रकोटिशान्तकुलसेवितायै शान्ताम्बादेव्यै नमः
– वामगुल्फे,

6 लृं लॄं सहस्रकोटिमुनिकुलसेवितायै शान्त्यतीताम्बादेव्यै नमः
– दक्षजंघायां,

6 एं ऐं सहस्रकोटिदैवतकुलसेवितायै हृल्लेखाम्बादेव्यै नमः
– वामजंघायां,

6 ओं औं सहस्रकोटिराक्षसकुलसेवितायै गगनाम्बादेव्यै नमः
– दक्षजानुनि,

6 अं अः सहस्रकोटिविद्याधरकुलसेवितायै रक्ताम्बादेव्यै नमः
– वामजानुनि,

6 कं खं सहस्रकोटिसिद्धकुलसेवितायै महोच्छुष्माम्बादेव्यै नमः
- दक्षांगे,
6 गं घं सहस्रकोटिसाध्यकुलसेवितायै करालिकाम्बादेव्यै नमः
- वामांगे,
6 ङं चं सहस्रकोटयप्सरःकुलसेवितायै जयाम्बादेव्यै नमः
- दक्षोरुमूले,
6 छं जं सहस्रकोटिगन्धर्वकुलसेवितायै विजयाम्बादेव्यै नमः
- वामोरुमूले,
6 झं ञं सहस्रकोटिगुह्यककुलसेवितायै अजिताम्बादेव्यै नमः - दक्षपार्श्वे,
6 टं ठं सहस्रकोटियक्षकुलसेवितायै अपराजिताम्बादेव्यै नमः
- वामपार्श्वे,
6 डं ढं सहस्रकोटिकिन्नरकुलसेवितायै वामाम्बादेव्यै नमः-दक्षस्तने,
6 णं तं सहस्रकोटिपन्नगकुलसेवितायै ज्येष्ठाम्बादेव्यै नमः
- वामस्तने,
6 थं दं सहस्रकोटिपितृकुलसेवितायै रौद्रयम्बादेव्यै नमः - दक्षदोर्मूले,
6 धं नं सहस्रकोटिगणेश्वरकुलसेवितायै मायाम्बादेव्यै नमः
- वामदोर्मूले,
6 पं फं सहस्रकोटिभैरवकुलसेवितायै कुण्डलिन्यम्बादेव्यै नमः
- दक्षभुजे,
6 बं भं सहस्रकोटिवटुककुलसेवितायै काल्यम्बादेव्यै नमः
- वामभुजे,
6 मं यं सहस्रकोटिक्षेत्रेशकुलसेवितायै कालरात्र्यम्बादेव्यै नमः
दक्षांसे,
6 रं लं सहस्रकोटिप्रमथकुलसेवितायै भगवत्यम्बादेव्यै नमः
- वामांसे,
6 वं शं सहस्रकोटिब्रह्मकुलसेवितायै सर्वेश्वर्यम्बादेव्यै नमः
- दक्षकर्णे,
6 षं सं सहस्रकोटिविष्णुकुलसेवितायै सर्वज्ञाम्बादेव्यै नमः - वामकर्णे,
6 हं ळं सहस्रकोटिरुद्रकुलसेवितायै सर्वकर्त्र्यम्बादेव्यै नमः - भाले,

6 क्षं सहस्रकोटिचराचरकुलसेवितायै कुलशक्त्यम्बादेव्यै नमः
- ब्रह्मरन्ध्रे,

6 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सकलदेवताधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः हसौः सहौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ - सर्वांगे।

(10.44) अथ मातृकाभैरवन्यासः

6 कं खं गं घं ङं अनन्तकोटिभूचरीकुलसेवितायै आं क्षां मंगलाम्बायै आं क्षां ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिभूचरकुलसहिताय अं क्षं मंगलनाथाय अं क्षं असितांगभैरवनाथाय नमः - मूलाधारे,

6 चं छं जं झं ञं अनन्तकोटिखेचरीकुलसेवितायै ईं ळां चर्चिकाम्बादेव्यै ईं ळां माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिवेताल कुलसहिताय इं ळं चर्चिकानाथाय इं ळं रुरुभैरवनाथाय नमः
- स्वाधिष्ठाने,

6 टं ठं डं ढं णं अनन्तकोटिपातालचरीकुलसेवितायै ऊं हां योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊं हां कौमार्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिपिशा -चकुलसहिताय उं हं योगेश्वरनाथाय उं हं चण्डभैरवनाथाय नमः
- मणिपूरके,

6 तं थं दं धं नं अनन्तकोटिदिक्चरीकुलसेवितायै ॠं सां हरसिद्धाम्बादेव्यै ॠं सां वैष्णव्यम्बादेव्यैअनन्तकोट्यप स्मारकुलसहिताय ऋं सं हरसिद्धनाथाय ऋं सं क्रोधभैरवनाथाय नमः - अनाहते,

6 पं फं बं भं मं अनन्तकोटिसहचरीकुलसेवितायै लॄं षां भट्टिन्यम्बादेव्यै लॄं षां वाराह्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिब्रह्मराक्षस-कुलसहिताय लृं षं भट्टिनाथाय लृं षं उन्मत्तभैरवनाथाय नमः
- विशुद्धौ,

6 यं रं लं वं अनन्तकोटिगिरिचरीकुलसेवितायै ऐं शां किलिकिला-

म्बादेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटि चेटककुलसहिताय ऐं शं किलिकिलनाथाय ऐं शं कपालिभैरवनाथाय नमः – आज्ञायां,
6 शं षं सं हं अनन्तकोटिवनचरीकुलसेवितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डाम्बादेव्यै अनन्तकोटिप्रेतकुलसहिताय ओं वं कालरात्रिनाथाय ओं वं भीषणभैरवनाथाय नमः – भाले,
6 ळं क्षं अनन्तकोटिजलचरीकुलसेवितायै अः ळां भीषणाम्बादेव्यै अः ळां महालक्ष्म्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिकूष्माण्डकुलसहिताय अं ळं भीषणनाथाय अं ळं संहारभैरवनाथाय नमः – ब्रह्मरन्ध्रे,
6 कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं समस्तमातृकाभैरवदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः हसौः सहौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ – सर्वांगे।
इसके बाद करन्यास और अंगन्यास करके अर्धनारीश्वर का ध्यान करे–

अथ करन्यास:

ॐ हसां – अंगुष्ठाभ्यां नमः, **ॐ हसीं** – तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ हसूं – मध्यमाभ्यां नमः, **ॐ हसैं** – अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ हसौं –कनिष्ठिकाभ्यां नमः, **ॐ हसः** करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ अंगन्यास:

ॐ हसां – हृदयाय नमः, **ॐ हसीं** – शिरसे स्वाहा,
ॐ हसूं – शिखायै वषट्, **ॐ हसैं** – कवचाय हुम्,
ॐ हसौं – नेत्रत्रयाय वौषट्,**ॐ हसः** – अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

अमृतार्णमध्योद्यत्स्वर्णद्वीपे मनोरमे।
कल्पवृक्षवनान्तःस्थे नवमाणिक्यमण्डपे।।1।।
नवरत्नमयश्रीमत् सिंहासनगताम्बुजे।
त्रिकोणान्तस्समासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम्।।2।।
अर्धाम्बिकासमायुक्तं प्रविभक्तविभूषणम्।
कोटिकन्दर्पलावण्यं सदा षोडशवार्षिकम्।।3।।

मन्दस्मितमुखाम्भोजं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्।
दिव्याम्बरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम्।।4।।
पानपात्रञ्च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः।
विद्यासंसदि बिभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम्।।5।।
महाषोढोदिताशेष - देवतागणसेवितम्।
एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम्।।6।।
पुरुषं वा स्मरेद्देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत्।
अथवा निष्कलं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम्।।7।।

(इस प्रकार महाषोढान्यास पूरा हुआ और पूर्वोक्त 9 गणों में दर्शित न्यासों में से 1-5 गणों में दर्शित 36 न्यासों को विस्तार कर 44 न्यासों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 6 - 9 गणों में दर्शित 37 - 54 न्यासों को यहां नही प्रस्तुत किया गया है क्योंकि वे विशेष अधिकारी के लिये गुरु द्वारा ही बताये जाते हैं। दक्षिण भारत में दक्षिणामूर्तिमत में 4 और विशेष न्यास हैं जिनको अब दर्शा रहे हैं-)

(10.45) **अथ पंचावृत्तिन्यासः**

7 अं आं - नेत्रयोः, **7 इं ईं** - नासापुटे,
7 उं ऊं - गण्डद्वयोः, **7 ऋं ॠं** - कर्णयोः,
7 लृं लॄं - ओष्ठद्वयोः, **7 एं ऐं** - दन्तपंक्तौ,
7 ओं औं - चिबुके, **7 अं अः** - भाले,
7 अं - शिखायां, **7 आं** - शिरसि,
7 इं - ललाटे, **7 ईं** - भ्रूमध्ये,
7 उं - नासापुटे, **7 ऊं** - मुखे,
7 ऋं ॠं लृं लॄं एं - दक्षकरसन्ध्यग्रेषु,
7 ऐं ओं औं अं अः - वामकरसन्ध्यग्रेषु,
7 अं आं - शिरसि, **7 इं ईं** - ललाटे,
7 उं ऊं - नेत्रयोः, **7 ऋं ॠं लृं लॄं एं**- दक्षपादसन्ध्यग्रेषु,
7 ऐं ओं औं अं अः - वामपादसन्ध्यग्रेषु।

(10.46) अथ मण्डलत्रयन्यासः

4 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः सोम मण्डलाय नमः शिखादिकण्ठान्तं,

4 कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं सूर्यमण्डलाय नमः – कण्ठादिनाभ्यन्तं,

4 यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं वह्निमण्डलाय नमः – नाभ्यादिपादान्तं।

(10.47) श्रीकण्ठमातृकान्यासः

4 अं श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः – ललाटे,

4 आं अनन्तेशविरजाभ्यां नमः – मुखे,

4 इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः – कर्णे,

4 ईं लोलाक्षीत्रिमूर्तीभ्यां नमः – नासिके,

4 उं अमरेशवर्तुलाभ्यां नमः गण्डयोः,

4 ऊं वर्गीशदीर्घघोणाभ्यां नमः – दन्तेषु,

4 ऋं भारभूतीशदीर्घमुखाभ्यां नमः – ओष्ठयोः,

4 ॠं ईशगोमुखाभ्यां नमः – जिह्वायां,

4 लृं स्थानेशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः – मुखमध्ये,

4 ॡं धरेशकुम्भोदराभ्यां नमः – पृष्ठे,

4 एं झिण्टीशोर्ध्वकेशाभ्यां नमः – सर्वांगे,

4 ऐं भौतीशविकृताभ्यां नमः – हृदये,

4 ओं सद्योज्वालामुखीभ्यां नमः – स्तनौ,

4 औं अनुग्रहोल्कामुखीभ्यां नमः – कुक्षौ,

4 अं अक्रूरश्रीमुखाभ्यां नमः – लिंगे,

4 अः महासेनविद्यामुखाभ्यां नमः – पादयोः,

4 कं क्रोधेशमहाकाल्याभ्यां नमः –करांगुष्ठयोः,

4 खं चण्डीशसरस्वतीभ्यां नमः – करतर्जन्योः,

4 गं पंचान्तकसर्वसिद्धिभ्यां नमः –करमध्यमयोः,

4 घं गौरीप्रकीर्तिभ्यां नमः –करानामिकयोः,

4 ङं शिवोत्तमेशाभ्यां नमः — करकनिष्ठिकयोः,
4 चं त्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः —ब्रह्मरन्ध्रे,
4 छं रुद्रमन्त्रशक्तिभ्यां नमः —दक्षनेत्रे,
4 जं कूर्मशक्तिभ्यां नमः — वामनेत्रे,
4 झं एकनेत्रभूतमात्राभ्यां नमः — दक्षस्कन्धे,
4 ञं चतुराननाय नमः वामस्कन्धे,
4 टं लम्बोदराय नमः दक्षकूर्परे,
4 ठं अजेकद्राविण्यै नमः — वामकूर्परे,
4 डं सर्वेशनागीभ्यां नमः —दक्षमणिबन्धे,
4 ढं सोमेशाय नमः —वाममणिबन्धे,
4 णं खेचर्यै नमः — दक्षहस्ते,
4 तं लांगुलीशायै नमः वामहस्ते,
4 थं मंजीर्यै नमः — नाभौ,
4 दं दारकेशाय नमः — दक्षकटौ,
4 धं रूपिण्यै नमः — वामकटौ,
4 नं अर्धनारीशाय नमः — दक्षोरौ,
4 पं उमाकान्ताय नमः — वामोरौ,
4 फं काकोदराय नमः — दक्षजानुनि,
4 बं आषाढपूतनायै नमः — वामजानुनि,
4 भं चण्डीशाय नमः — दक्षजंघे,
4 मं भद्रकाल्यै नमः — वामजंघे,
4 यं योगिन्यै नमः —दक्षपादगुल्फे,
4 रं मीनेशशंखिनीभ्यां नमः —वामपादगुल्फे,
4 लं मेषाय नमः दक्षवृषणे,
4 वं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः — वामवृषणे,
4 शं शिखीशकुब्जायुताय नमः —दक्षशिरोभागे,
4 षं छलगण्डकपर्दिन्याय नमः —वामशिरोभागे,
4 सं विरण्डेशवज्राय नमः —पादांगुष्ठयोः,

4 हं महाकालजयाय नमः पादतर्जन्योः,
4 ळं बालीशसुमुखेश्वर्यै नमः – पादमध्यमयोः,
4 क्षं भुजंगरेवत्यै नमः –पादानामिकयोः,
4 अं पिनाकिमाधव्यै नमः –पादकनिष्ठिकयोः,
4 आं खड्गीशवारुण्यै नमः – दक्षकरसन्ध्यग्रेषु,
4 इं केशववायव्यै नमः – वामकरसन्ध्यग्रेषु,
4 ईं श्वेतरक्षविदारिण्यै नमः –दक्षपादसन्ध्यग्रेषु,
4 उं भृगुसहजायै नमः – वामपादसन्ध्यग्रेषु,
4 ऊं नकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः – हृदये,
4 ऋं भवेशव्यापिने नमः – शिखायां,
4 ॠं संवर्तकमहामायायै नमः – शिरसि,
4 यं त्वगात्मभ्यां बालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः –हृदये,
4 रं असृगात्मभ्यां भुजंगेशरेवतीभ्यां नमः – दक्षांसे,
4 लं मांसात्मभ्यां पिनाकिमाधवीभ्यां नमः – वामांसे,
4 वं मेदात्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमः – कण्ठे,
4 शं अस्थ्यात्मभ्यां केशवायवीभ्यां नमः – मुखे,
4 षं मज्जात्मभ्यां श्वेतरक्षविदारिणीभ्यां नमः – नेत्रे,
4 सं शुक्रात्मभ्यां भृगुसहजाभ्यां नमः – कर्णे,
4 हं शक्त्यात्मभ्यां नकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः – नासिके,
4 ळं क्रोधात्मभ्यां भवेशव्यापिनीभ्यां नमः – ललाटे,
4 क्षं आत्मभ्यां संवर्तकमहामायाभ्यां नमः – शिरसि।

तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र को 8 बार आवृत्ति कर अभिमन्त्रित करे और अपने ऊपर प्रोक्षण करे–

'4 आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।'

(10.48) केशवादिकलामातृकान्यासः

ॐ अथ श्रीकेशवादिकलामातृकान्यासस्य साध्यनारायण ऋषिः, गायत्री छन्दः, लक्ष्मीनारायणो देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यास:

ॐ अथ श्रीकेशवादिकलामातृकान्यासस्य साध्यनारायण ऋषये नमः – शिरसि, **गायत्रीछन्दसे नमः** – मुखे, **लक्ष्मीनारायणदेवताभ्यो नमः** – हृदये, **हल्बीजेभ्यो नमः** – गुह्ये, **स्वरशक्तिभ्यो नमः** – पादयो:, **श्रीविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः** – सर्वांगे।

अथ करन्यास:

ॐ ह्रीं – अंगुष्ठाभ्यां नम:, **ॐ श्रीं** – तर्जनीभ्यां नम:, **ॐ क्लीं** – मध्यमाभ्यां नम:, **ॐ ह्रीं** – अनामिकाभ्यां नम:, **ॐ श्रीं** – कनिष्ठिकाभ्यां नम:, **ॐ क्लीं** – करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

अथ अंगन्यास:

ॐ ह्रीं – हृदयाय नम:, **ॐ श्रीं** – शिरसे स्वाहा, **ॐ क्लीं** – शिखायै वषट्, **ॐ ह्रीं** – कवचाय हुम्, **ॐ श्रीं** – नेत्रत्रयाय वौषट्, **ॐ क्लीं** अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

शंखचक्रगदापद्मकुंभादर्शाब्जपुस्तकम्।
बिभ्रतं मेघचपलावर्णं लक्ष्मीहरिं भजे।।

अथ न्यास:

ॐह्रींश्रींक्लीं अं क्लींश्रींह्रींॐ केशवकीर्तिभ्यां नमः – शिरसि,
ॐह्रींश्रींक्लीं आं क्लींश्रींह्रींॐ नारायणकान्तिभ्यां नमः – मुखे,
ॐह्रींश्रींक्लीं इं क्लींश्रींह्रींॐ माधवतुष्टिभ्यां नमः – दक्षनेत्रे,
ॐह्रींश्रींक्लीं ईं क्लींश्रींह्रींॐ गोविन्दपुष्टिभ्यां नमः – वामनेत्रे,
ॐह्रींश्रींक्लीं उं क्लींश्रींह्रींॐ विष्णुधृतिभ्यां नमः – दक्षकर्णे,
ॐह्रींश्रींक्लीं ऊं क्लींश्रींह्रींॐ मधुसूदनशान्तिभ्यां नमः – वामकर्णे,
ॐह्रींश्रींक्लीं ऋं क्लींश्रींह्रींॐ त्रिविक्रमक्रियाभ्यां नमः
–दक्षनासापुटे,
ॐह्रींश्रींक्लीं ॠं क्लींश्रींह्रींॐ वामनदयाभ्यां नमः –वामनासापुटे,
ॐह्रींश्रींक्लीं ऌं क्लींश्रींह्रींॐ श्रीधरमेधाभ्यां नमः –दक्षगण्डे,

ॐह्रींश्रींक्लीं लृं क्लींश्रींह्रींॐ हृषीकेशहर्षाभ्यां नमः – वामगण्डे,
ॐह्रींश्रींक्लीं एं क्लींश्रींह्रींॐ पद्मनाभश्रद्धाभ्यां नमः –ऊर्ध्वोष्ठे,
ॐह्रींश्रींक्लीं ऐं क्लींश्रींह्रींॐ दामोदरलज्जाभ्यां नमः –अधरोष्ठे,
ॐह्रींश्रींक्लीं ओं क्लींश्रींह्रींॐ वासुदेवलक्ष्मीभ्यां नमः
–ऊर्ध्वदंतपंक्तौ,
ॐह्रींश्रींक्लीं औं क्लींश्रींह्रींॐ संकर्षणसरस्वतीभ्यां नमः
–अधोदंतपंक्तौ,
ॐह्रींश्रींक्लीं अं क्लींश्रींह्रींॐ प्रद्युम्नप्रीतिभ्यां नमः – मूर्ध्नि,
ॐह्रींश्रींक्लीं अः क्लींश्रींह्रींॐ अनिरुद्धरतिभ्यां नमः – मुखे,
ॐह्रींश्रींक्लीं कं क्लींश्रींह्रींॐ चक्रिजयाभ्यां नमः –दक्षबाहुमूले,
ॐह्रींश्रींक्लीं खं क्लींश्रींह्रींॐ गदिदुर्गाभ्यां नमः – दक्षकूर्परे,
ॐह्रींश्रींक्लीं गं क्लींश्रींह्रींॐ शार्ङ्गिप्रभाभ्यां नमः दक्षमणिबन्धे,
ॐह्रींश्रींक्लीं घं क्लींश्रींह्रींॐ खड्गीसत्याभ्यां नमः
– दक्षहस्तांगुलिमूले,
ॐह्रींश्रींक्लीं ङं क्लींश्रींह्रींॐ शंखचंडाभ्यां नमः – दक्षहस्तांगुल्यग्रे,
ॐह्रींश्रींक्लीं चं क्लींश्रींह्रींॐ हलिवाणीभ्यां नमः – वामबाहुमूले,
ॐह्रींश्रींक्लीं छं क्लींश्रींह्रींॐ मुसलिविलासिनीभ्यां नमः – वामकूर्परे,
ॐह्रींश्रींक्लीं जं क्लींश्रींह्रींॐ शूलिविजयाभ्यां नमः –वाममणिबन्धे,
ॐह्रींश्रींक्लीं झं क्लींश्रींह्रींॐ पाशिविरजाभ्यां नमः वामांगुलिमूले,
ॐह्रींश्रींक्लीं ञं क्लींश्रींह्रींॐ अंकुशिविश्वाभ्यां नमः – वामांगुल्यग्रे,
ॐह्रींश्रींक्लीं टं क्लींश्रींह्रींॐ मुकुन्दविनताभ्यां नमः – दक्षोरुमूले,
ॐह्रींश्रींक्लीं ठं क्लींश्रींह्रींॐ नन्दजसुनन्दाभ्यां नमः – दक्षजानुनि,
ॐह्रींश्रींक्लीं डं क्लींश्रींह्रींॐ नन्दिसत्याभ्यां नमः – दक्षगुल्फे,
ॐह्रींश्रींक्लीं ढं क्लींश्रींह्रींॐ नरऋद्धिभ्यां नमः – दक्षपादांगुलिमूले,
ॐह्रींश्रींक्लीं णं क्लींश्रींह्रींॐ नरकजित्समृद्धिभ्यां नमः – दक्षपादांगुल्यग्रे,
ॐह्रींश्रींक्लीं तं क्लींश्रींह्रींॐ हरिशुद्धिभ्यां नमः – वामोरुमूले,
ॐह्रींश्रींक्लीं थं क्लींश्रींह्रींॐ कृष्णबुद्धिभ्यां नमः – वामजानुनि,
ॐह्रींश्रींक्लीं दं क्लींश्रींह्रींॐ सत्यभुक्तिभ्यां नमः – वामगुल्फे,

ॐह्रींश्रींक्लीं धं क्लींश्रींह्रींॐ सात्वतमतिभ्यां नमः – वामपादांगुलिमूले,
ॐह्रींश्रींक्लीं नं क्लींश्रींह्रींॐ सौरिक्षमाभ्यां नमः –वामपादांगुल्यग्रे,
ॐह्रींश्रींक्लीं पं क्लींश्रींह्रींॐ शूररमाभ्यां नमः – दक्षपार्श्वे,
ॐह्रींश्रींक्लीं फं क्लींश्रींह्रींॐ जनार्दनोमाभ्यां नमः – वामपार्श्वे,
ॐह्रींश्रींक्लीं बं क्लींश्रींह्रींॐ भूधरक्लेदिनीभ्यां नमः – पृष्ठे,
ॐह्रींश्रींक्लीं भं क्लींश्रींह्रींॐ विश्वमूर्तिक्लिन्नाभ्यां नमः – नाभौ,
ॐह्रींश्रींक्लीं मं क्लींश्रींह्रींॐ वैकुण्ठसुधाभ्यां नमः – जठरे,
ॐह्रींश्रींक्लीं यं क्लींश्रींह्रीं ॐ त्वगात्मभ्यां पुरुषोत्तमवसुधाभ्यां नमः
– हृदये,
ॐह्रींश्रींक्लीं रं क्लींश्रींह्रींॐ असृगात्मभ्यां बलीपराभ्यां नमः
–दक्षांसे,
ॐह्रींश्रींक्लीं लं क्लींश्रींह्रींॐ मांसात्मभ्यां बलानुजपरायणाभ्यां
नमः – ककुदि,
ॐह्रींश्रींक्लीं वं क्लींश्रींह्रींॐ मेदात्मभ्यां बलसूक्ष्माभ्यां नमः
– वामांसे,
ॐह्रींश्रींक्लीं शं क्लींश्रींह्रींॐ अस्थ्यात्मभ्यां वृषघ्नसन्ध्याभ्यां
नमः – हृदयादिदक्षकराग्रान्तं,
ॐह्रींश्रींक्लीं षं क्लींश्रींह्रींॐ मज्जात्मभ्यां वृषप्रज्ञाभ्यां नमः
– हृदयादिवामकराग्रान्तं,
ॐह्रींश्रींक्लीं सं क्लींश्रींह्रींॐ शुक्रात्मभ्यां हंसप्रभाभ्यां नमः
- हृदयादिदक्षपादाग्रान्तं,
ॐह्रींश्रींक्लीं हं क्लींश्रींह्रींॐ प्राणात्मभ्यां वराहनिशाभ्यां नमः
– हृदयादिवामपादाग्रान्तं,
ॐह्रींश्रींक्लीं ळं क्लींश्रींह्रींॐ शक्त्यात्मभ्यां विमलमेघाभ्यां नमः
– हृदयादिनाभ्यन्तं,
ॐह्रींश्रींक्लीं क्षं क्लींश्रींह्रींॐ परमात्मभ्यां नृसिंहविद्युताभ्यां नमः
– हृदयादिमूर्धान्तं।

केशवमातृकास्तोत्र का पाठ करे –

केशवः कीर्तिसंयुक्तः कान्तिर्नारायणान्विता।
माधवः तुष्टिसंयुक्तो गोविन्दः पुष्टिसंयुतः।।1।।

विष्णुस्तु धृतिसंयुक्तः शान्तियुङ्मधुसूदनः।
त्रिविक्रमः क्रियायुक्तो वामनो दययान्वितः।।2।।

श्रीधरो मेधया युक्तो हृषीकेशश्च हर्षया।
पद्मनाभयुता श्रद्धा लज्जा दामोदरान्विता।।3।।

वासुदेवश्च लक्ष्मीयुतस्संकर्षणः सरस्वती।
प्रद्युम्नः प्रीतिसंयुक्तो अनिरुद्धो रतिसंयुतः।।4।।

चक्री जया गदी दुर्गा शार्ङ्गी तु प्रभयान्वितः।
खड्गी तु सत्यया युक्तः शंखी चण्डासमन्वितः।।5।।

हली वाणीसमायुक्तो मुसली च विलासिनी।
शूली विजयामायुक्तो पाशी विरजयान्वितः।।6।।

अंकुशी विश्वामायुक्तो मुकुन्दो विनतायुतः।
नन्दजस्सुनन्दायुक्तो नन्दी सत्यासमन्वितः।।7।।

नर ऋद्धिर्नरकजित्समृद्धिः शुद्धियुक्सदा।
कृष्णबुद्धि सत्यभुक्ति सात्वतो मतिसंयुतः।।8।।

सौरीक्षमे शूररमे जनार्दन उमान्वितः।
भूधर क्लेदिनीयुक्तो विश्वमूर्तिश्च क्लिन्नया।।9।।

वैकुण्ठश्च सुधायुक्तो वसुधापुरुषोत्तमौ।
बली तु परमायुक्तो बलानुजपरायणे।।10।।

बलसूक्ष्मे वृषघ्नस्तु सन्ध्यायुक्प्रज्ञया वृषः।
हंस प्रभासमायुक्तो वराहो निशयान्वितः।
विमलो मेघयायुक्तो नृसिंहो विद्युतायुतः।।11।।

इन न्यासों के द्वारा उपास्य के साथ अपना अभेद आपादन पूरा हुआ।

11. अथ पात्रासादनम्

वर्धनीकलशस्थापनम्
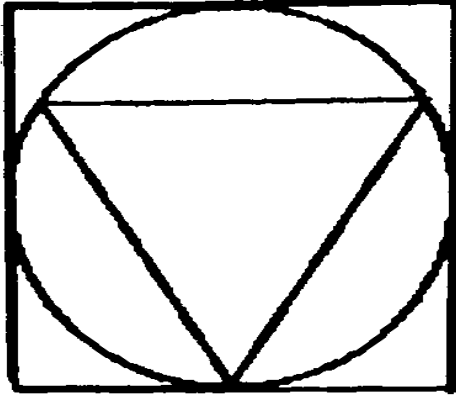
चित्र 6
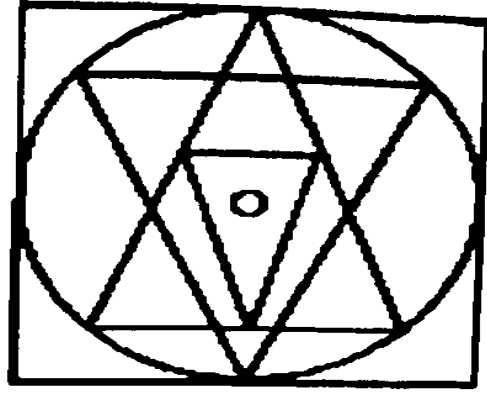
चित्र 7

अपने सामने बायीं ओर चतुरस्र के अन्दर वृत्त और उसके अन्दर त्रिकोण लेखन द्वारा मण्डल (चित्र 6 को देखे) को निर्माण कर मृगीमुद्रा दर्शाकर मूलमन्त्र से मण्डल की गन्धपुष्पाक्षतादि से अर्चना करें। कर्पूरादि से सुवासित शुद्ध जल से भरे हुये कलश की मण्डल पर पूर्वोक्त पृ. 75 कलश स्थापना विधि से गन्ध पुष्पाक्षतादि से अलंकृत कर स्थापित करे। मूल मन्त्र से कलशस्थ जल को अभिमन्त्रित कर धेनु मुद्रा दर्शावे। उस अभिमत्रिंत जल से पूजा के समस्त उपकरण और अपने ऊपर प्रोक्षण करे।

11.1 सामान्यार्घ्यपात्रस्थापनम्

अपने सामने दायीं ओर वर्धनीपात्र के जल से बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त और चतुरस्र मण्डल (चित्र 7 को देखें) का निर्माण कर मृगीमुद्रा दर्शाये। अब चतुरस्र में बालाषडंगों से क्रमशः आग्नेय, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य और मध्य में गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे–

4 ऐं हृदयाय नमः, हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं शिरसे स्वाहा, शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः शिखायै वषट्, शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 ऐं कवचाय हुम्, कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः अस्त्राय फट्, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

षट्कोण में अपने सामने से प्रदक्षिणा के क्रम से पूजा करे -

4 ऐं 5 हृदयाय नमः, हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं 6 शिरसे स्वाहा, शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः 4 शिखायै वषट्, शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 ऐं 5 कवचाय हुम्, कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं 6 नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः 4 अस्त्राय फट्, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

यहां मन्त्र के आदि में स्थित 4= ॐ ऐं ह्रीं श्रीं और मन्त्र के मध्य में स्थित 5 = कएईलह्रीं, 6= हसकहलह्रीं और 4=सकलह्रीं। त्रिकोण में अपने सामने से प्रदक्षिणा के क्रम से पूजा करे -

4 ऐं कएईलह्रीं नमः, **4 क्लीं हसकहलह्रीं नमः,**

4 सौः सकलह्रीं नमः, **4 + 15 नमः** - बिन्दौ।

"**4 अस्त्राय फट्**" मन्त्र से सामान्यार्घ्य पात्र के आधाररूप मण्डल पर प्रोक्षण करे।

"**4 अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः**" इस मन्त्र से मण्डल की पूजा करे। उस मण्डल में अग्नि मण्डल की भावना करके पूजा करे -

4 अग्नि दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः।

तत्पश्चात् उस अग्निमण्डल के रूप में भावित मण्डल में ही अग्नि की दस कलाओं की भावना कर पूजा करे -

4 यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः, **4 षं सुश्रीकलायै नमः,**

4 रं ऊष्माकलायै नमः, **4 सं सुरूपाकलायै नमः,**

4 लं ज्वलिनीकलायै नमः, **4 हं कपिलाकलायै नमः,**

4 वं ज्वालिनीकलायै नमः, **4 ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः,**

4 शं विस्फुलिंगिनीकलायै नमः, **4 क्षं क्रव्यवाहिनीकलायै नमः।**

जल से धोये हुये **शंख** को '**अस्त्राय फट्**' मन्त्र से ग्रहण कर निम्न मन्त्र से उसे मण्डल पर स्थापित करे -

'4 उं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः।' गन्धपुष्पाक्षतादि से शंख में सूर्यमण्डल की भावना कर पूजा करे –

'4 आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेश-यन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथे-नादेवो याति भुवनानि पश्यन्।
हां हीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः'

चित्र 8

चित्र 8 में दर्शाये क्रम से सूर्य की 12 कलाओं की पूजा करे –

4 कं भं तपिनीकलायै नमः,
4 खं बं तापिनीकलायै नमः,
4 गं फं धूम्राकलायै नमः,
4 घं पं मरीचिकलायै नमः,
4 ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः,
4 चं धं रुचिकलायै नमः,
4 छं दं सुषुम्नाकलायै नमः,
4 जं थं भोगदाकलायै नमः,
4 झं तं विश्वाकलायै नमः,
4 ञं णं बोधिनीकलायै नमः,
4 टं ढं धारिणीकलायै नमः
4 ठं डं क्षमाकलायै नमः।

वर्धनीपात्रस्थ जल से शंख को निम्न मन्त्र से भरे और दो बूंद दूध डाले – **'4 मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यामृताय नमः।'** शंख व शंखस्थ जल में सोममण्डल की भावना कर 16 कलाओं की पूजा करें –

4 आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य सङ्गथे।
सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः।

4 अं अमृताकलायै नमः,
4 आं मानदाकलायै नमः,
4 इं पूषा कलायै नमः,
4 ईं तुष्टिकलायै नमः,
4 उं पुष्टिकलायै नमः,
4 ऊं रतिकलायै नमः,
4 ऋं धृतिकलायै नमः,
4 ॠं शशिनीकलायै नमः,
4 लृं चन्द्रिकाकलायै नमः,
4 लॄं कान्तिकलायै नमः,
4 एं ज्योत्स्नाकलायै नमः,
4 ऐं श्रीकलायै नमः,
4 ओं प्रीतिकलायै नमः,
4 औं अंगदाकलायै नमः,
4 अं पूर्णाकलायै नमः,
4 अः पूर्णामृताकलायै नमः।

मण्डल की पूजा के समान शंख की भी आग्नेय, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य और मध्य में बालाषडंग से पूजा करे

4 ऐं हृदयाय नमः, हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं शिरसे स्वाहा, शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः शिखायै वषट्, शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 ऐं कवचाय हुम्, कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः अस्त्राय फट्, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

"**अस्त्राय फट्**" से रक्षित करे। "**कवचाय हुम्**" से अवगुण्ठन कर धेनु और योनिमुद्रायें दर्शाये। मूलमन्त्र से 7 बार अभिमन्त्रित करें। निम्न मन्त्र से शंखस्थ जल को पूजा के उपकरण और अपने ऊपर छिड़के तथा थोड़ा जल वर्धनीपात्र में डाले -

ललितार्चनकाले हि यानि यानि हि साम्प्रतम्।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै।।

11.2 विशेषार्घ्यविधिः

सामान्यार्घ्य जल से उसी के दाहिने बगल में सामान्यार्घ्य केलिये निर्मित मण्डल के समान (चित्र 7, पृ. 187 देखे) बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त और चतुरस्र का निर्माण करे। मत्स्य मुद्रा दर्शाये। बिन्दु में 'ईं' लिखे। गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे -

4 ऐं हृदयाय नमः, हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं शिरसे स्वाहा, शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः शिखायै वषट्, शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 ऐं कवचाय हुम्, कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः अस्त्राय फट्, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

षट्कोण में अपने सामने से प्रदक्षिणा के क्रम से पूजा करे -

4 ऐं 5 हृदयाय नमः, हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं 6 शिरसे स्वाहा, शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः 4 शिखायै वषट्, शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 ऐं 5 कवचाय हुम्, कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 क्लीं 6 नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

4 सौः 4 अस्त्राय फट्, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

चित्र 9

त्रिकोण में अपने सामने से प्रदक्षिणा के क्रम से पूजा करे –

4 ऐं कएईलह्रीं नमः, **4 क्लीं हसकहलह्रीं नमः,**

4 सौः सकलह्रीं नमः, **4 + 15 नमः** – बिन्दौ।

"4 अस्त्राय फट्" मन्त्र से विशेषार्घ्य पात्र के आधाररूप मण्डल पर प्रोक्षण करे।

"4 अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः" इस मन्त्र से मण्डल की पूजा करे। उस मण्डल में अग्नि मण्डल की भावना करके पूजा करे – **4 अग्नि दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः।** तत्पश्चात् अग्निमण्डल के रूप में भावित उस मण्डल में ही अग्नि की दस कलाओं की पूजा करे –

4 यं धूम्रार्चिकलायै नमः, 4 षं सुश्रीकलायै नमः,
4 रं ऊष्माकलायै नमः, 4 सं सुरूपाकलायै नमः,
4 लं ज्वलिनीकलायै नमः, 4 हं कपिलाकलायै नमः,
4 वं ज्वालिनीकलायै नमः, 4 ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः,
4 शं विस्फुलिंगिनीकलायै नमः, 4 क्षं क्रव्यवाहिनीकलायै नमः।

जल से धोये हुये **विशेषार्घ्यपात्र** को **'अस्त्राय फट्'** मन्त्र से ग्रहण कर निम्न मन्त्र से उसे मण्डल पर स्थापित करे

'4 क्लीं हसकहलह्रीं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राय नमः।'

4 ह्रीं ऐं महालक्ष्मीश्वरी परमस्वामिनी ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनी सोमसूर्याग्निभक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छ आगच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा। 4 आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्। हां हीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः'

अब प्रदक्षिणा के क्रम से सूर्य की 12 कलाओं की पूजा करे -

4 कं भं तपिनीकलायै नमः, 4 छं दं सुषुम्नाकलायै नमः,
4 खं बं तापिनीकलायै नमः, 4 जं थं भोगदाकलायै नमः,
4 गं फं धूम्राकलायै नमः, 4 झं तं विश्वाकलायै नमः,
4 घं पं मरीचिकलायै नमः, 4 ञं णं बोधिनीकलायै नमः,
4 ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः, 4 टं ढं धारिणीकलायै नमः,
4 चं धं रुचिकलायै नमः, 4 ठं डं क्षमाकलायै नमः।

बिन्दु युक्त अकारादिक्षकारान्त **अं...क्षं** और **क्षं...अं** क्षकारादि-अकारान्त मातृकाओं से, कस्तूरी आदि सुगन्धित द्रव्यों से वासित जल से विशेषार्घ्य पात्र को भरे, थोड़ा दूध डाले और अष्टगन्धयुक्त पुष्प को डालकर नागकेसर डाले। गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे -

'4 मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यामृताय नमः।' विशेषार्घ्य पात्र व तत्रस्थ जल में सोममण्डल की भावना कर 16 कलाओं की पूजा करे - **4 आप्यायस्व समेतु ते**

विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य सङ्गथे। सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः।

4 अं अमृताकलायै नमः, **4 लृं चन्द्रिकाकलायै नमः,**
4 आं मानदाकलायै नमः, **4 लॄं कान्तिकलायै नमः,**
4 इं पूषा कलायै नमः, **4 एं ज्योत्स्नाकलायै नमः,**
4 ईं तुष्टिकलायै नमः, **4 ऐं श्रीकलायै नमः,**
4 उं पुष्टिकलायै नमः, **4 ओं प्रीतिकलायै नमः,**
4 ऊं रतिकलायै नमः, **4 औं अंगदाकलायै नमः,**
4 ऋं धृतिकलायै नमः, **4 अं पूर्णाकलायै नमः,**
4 ॠं शशिनीकलायै नमः, **4 अः पूर्णामृताकलायै नमः।**

'**ॐ जूं सः स्वाहा**' मन्त्र से 8 बार उसे अभिमन्त्रित करे। उस अर्घ्यामृत में (चित्र 10 को देखे) प्रदक्षिणा के विपरीत क्रम से अकारादि (16), ककारादि (16) व थकारादि (16) वर्णात्मक तीन रेखाओं से त्रिकोण बनाये। उसके भीतर विपरीत क्रम से व्यंजनवर्णों को और बाहर प्रदक्षिणा क्रम से पंचदशी मन्त्र (तीन कूट को तीन रेखा पर) को लिखें। तत्पश्चात् बिन्दु में ' ईं ' लिखकर बिन्दु के बाहर उसके बायीं और दाहिनी ओर '**हं**' और '**सः**' को लिखे । '**4 हं सः नमः**' मन्त्र से
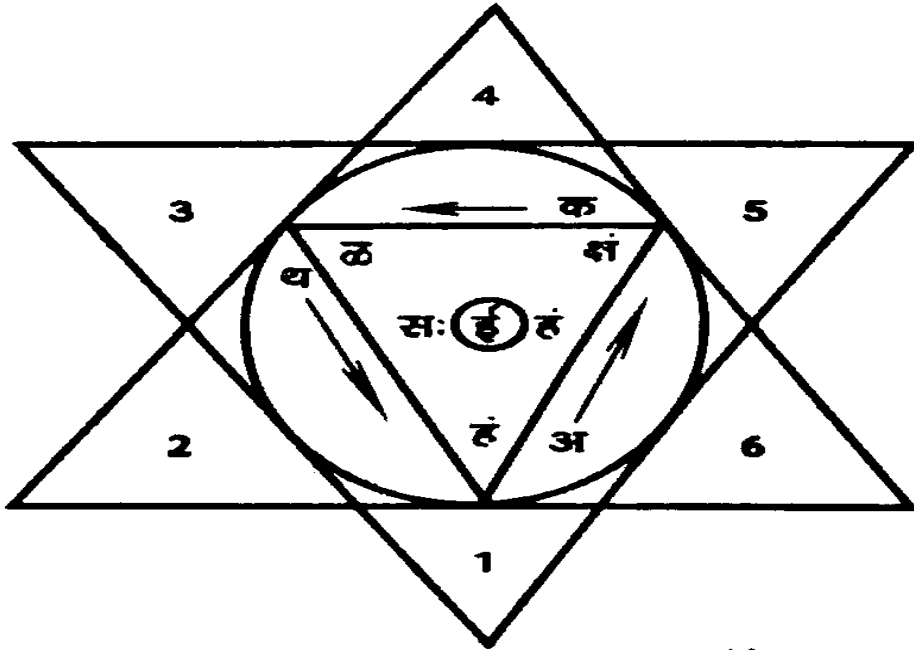
चित्र 10

पूजा करे। इसके बाद त्रिकोण पर एक वृत्त से घेरा बनाकर वृत्त को स्पर्श करते हुये षट्कोण बनाये।

'4 ऐं क्लीं सौः चिन्मयीमानन्दलक्षणाममृतकलशपिशितहस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा।' मन्त्र से अर्घ्यपात्रस्थ जल की अर्चना करके एक आचमनी से जल लेकर मन्त्र बोले – **'4 वषट्'** और वापस अर्घ्यपात्र में इस मन्त्र को बोलते हुये डाले – **'4 स्वाहा'** और **'4 हुं'** मन्त्र से अवगुण्ठन करे, **'4 वौषट्'** से धेनुमुद्रा दर्शावे, **'4 फट्'** से संरक्षित करे, **'4 नमः'** से पुष्प अर्पण करे, **'4 ऐं क्लीं सौः'** से गालिनीमुद्रा द्वारा निरीक्षण करे, **'4 ऐं'** से योनिमुद्रा द्वारा नमस्कार करे, **'4 ऐं क्लीं सौः'** से 7 बार अभिमन्त्रित कर षोडश अथवा पांच उपचारों से पूजन करे। अर्घ्य जल से पूजासाधनों और अपने ऊपर प्रोक्षण कर **'सर्व विद्यामयं भवति'** – ऐसी भावना करे।

11.3 शुद्धिसंस्कारः

विशेषार्घ्यपात्र के दाहिने भाग में सामान्यार्घ्यपात्र के जल से पुनः चतुरस्र के अन्दर वृत्त और उसके अन्दर त्रिकोण का लेखन द्वारा मण्डल (चित्र 6, पृष्ठ 187 को देखे) को निर्माण कर मत्स्यमुद्रा दर्शाकर मण्डल की पूजा करे– **'4 ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय'**, मण्डल पर शुद्धिपात्र को रखे। **'4 औं श्लीं पशु हुं फट्'** मन्त्र से 8 बार अभिमन्त्रित करे और निम्न मन्त्रों से पूजा करे –

'4 सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।। वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूत-दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।। अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर-तरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। ईशानस्सर्वविद्या-नामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवों।। अब इसके नीचे पुनः दो मण्डल [चतुरस्र के अन्दर वृत्त

और उसके अन्दर त्रिकोण का लेखन द्वारा मण्डल (चित्र 6, पृष्ठ 187 को देखे) को निर्माण कर मत्स्यमुद्रा दर्शाये] बनाये, क्रमशः प्रथम पर गुरुपात्र और द्वितीय पर अपने पात्र को निम्न मन्त्रों से स्थापित करे – '4 **हंसश्शिवस्सोऽहं, सोऽहं हंसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोऽहं, हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं नमः।'** और
'4 हंसः नमः'। इसके पश्चात् विशेषार्घ्यपात्र को हाथ से स्पर्श किये हुये निम्न 94 मन्त्रों से अभिमन्त्रित करे –
(वह्निकला –10) **4 यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः, 4 रं ऊष्माकलायै नमः, 4 लं ज्वलिनीकलायै नमः, 4 वं ज्वालिनीकलायै नमः, 4 शं विस्फुलिंगिनीकलायै नमः, 4 षं सुश्रीकलायै नमः, 4 सं सुरूपाकलायै नमः, 4 हं कपिलाकलायै नमः, 4 ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः, 4 क्षं क्रव्यवाहिनीकलायै नमः।**

(सूर्यकला–12) **4 कं भं तपिनीकलायै नमः, 4 खं बं तापिनीकलायै नमः, 4 गं फं धूम्राकलायै नमः, 4 घं पं मरीचिकलायै नमः, 4 ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः, 4 चं धं रुचिकलायै नमः, 4 छं दं सुषुम्नाकलायै नमः, 4 जं थं भोगदाकलायै नमः, 4 झं तं विश्वाकलायै नमः, 4 ञं णं बोधिनीकलायै नमः, 4 टं ढं धारिणीकलायै नमः, 4 ठं डं क्षमाकलायै नमः।**

(चन्द्रकला–16) **4 अं अमृताकलायै नमः, 4 आं मानदाकलायै नमः, 4 इं पूषाकलायै नमः, 4 ईं तुष्टिकलायै नमः, 4 उं पुष्टिकलायै नमः, 4 ऊं रतिकलायै नमः, 4 ऋं धृतिकलायै नमः, 4 ॠं शशिनीकलायै नमः, 4 ऌं चन्द्रिकाकलायै नमः, 4 ॡं कान्तिकलायै नमः, 4 एं ज्योत्स्नाकलायै नमः, 4 ऐं श्रीकलायै नमः, ओं प्रीतिकलायै नमः, 4 औं अंगदाकलायै नमः, 4 अं पूर्णाकलायै नमः, 4 अः पूर्णामृताकलायै नमः।**

(ब्रह्मकला–10) **4 कं सृष्ट्यै नमः, 4 खं ऋद्ध्यै नमः, 4 गं स्मृत्यै नमः, 4 घं मेधायै नमः, 4 ङं कान्त्यै नमः, 4 चं लक्ष्म्यै नमः, 4 छं**

द्युत्यै नमः, 4 जं स्थिरायै नमः, 4 झं स्थित्यै नमः, 4 ञं सिद्ध्यै नमः, 4 हंसश्शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहन्नमः।।

(विष्णुकला-10) 4 टं जरायै नमः, 4 ठं पालिन्यै नमः, 4 डं शान्त्यै नमः, 4 ढं ईश्वर्यै नमः, 4 णं रत्यै नमः, 4 तं कामिकायै नमः, 4 थं वरदायै नमः, 4 दं ह्लादिन्यै नमः, 4 धं प्रीत्यै नमः, 4 नं दीर्घायै नमः, 4 प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।।

(रुद्रकला-10) 4 पं तीक्ष्णायै नमः, 4 फं रौद्र्यै नमः, 4 बं भयायै नमः, 4 भं निद्रायै नमः, 4 मं तन्द्र्यै नमः, 4 यं क्षुदायै नमः, 4 रं क्रोधिन्यै नमः, 4 लं क्रियायै नमः, 4 वं उद्गार्यै नमः, 4 शं मृत्यवे नमः, 4 त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

(ईश्वरकला-4) 4 षं पीतायै नमः, 4 सं श्वेतायै नमः, 4 हं अरुणायै नमः, 4 क्षं असितायै नमः, 4 तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदं।।

(सदाशिवकला-16) 4 अं निवृत्यै नमः, 4 आं प्रतिष्ठायै नमः, 4 इं विद्यायै नमः, 4 ईं शान्त्यै नमः, 4 उं इन्धिकायै नमः, 4 ऊं दीपिकायै नमः, 4 ऋं रेचिकायै नमः, 4 ॠं मोचिकायै नमः, 4 लृं परायै नमः, 4 ॡं सूक्ष्मायै नमः, 4 एं सूक्ष्मामृतायै नमः, 4 ऐं ज्ञानायै नमः, 4 ओं ज्ञानामृतायै नमः, 4 औं आप्यायिन्यै नमः, 4 अं व्यापिन्यै नमः, 4 अः व्योमरूपायै नमः।
4 विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु। आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।। गर्भं धेहि सिनीवाली गर्भं धेहि सरस्वती। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा नमः।।, 4 ऐं क्लीं सौः नमः, 4 अखण्डैकरसानन्दकरे पर सुधात्मनि।

स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके नमः।।, 4 अकुलस्थामृताकारे शुद्धासनकरे परे। अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि नमः।।, 4 तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि। भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु नमः।।, 4 ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा नमः, 4 ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः नमः।

अभिमन्त्रित इस विशेषार्घ्य जल से थोड़ा गुरुपात्र में ड़ाले और गुरुत्रय का स्मरण कर अर्पण करे (यदि गुरु पूजास्थल में हो तो उनके हाथ में समर्पित कर दे)।

पुनः अपने पात्र में भी थोड़ा जल विशेषार्घ्य पात्र से ड़ाले और मूलाधार में बालाग्र मात्र अनादिवासनारूप ईन्धन से प्रज्वलित कुण्डलिनी में अधिष्ठित चिदग्निमण्डल का ध्यान कर मानस पूजा करे–

4 कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः।

उस चिदग्नि में मानस आहुतियां दे –

7 पुण्यं जुहोमि स्वाहा, 7 पापं जुहोमि स्वाहा, 7 कृत्यं जुहोमि स्वाहा, 7 अकृत्यं जुहोमि स्वाहा, 7 संकल्पं जुहोमि स्वाहा, 7 विकल्पं जुहोमि स्वाहा, 7 धर्मं जुहोमि स्वाहा, 7 अधर्मं जुहोमि स्वाहा, 7 अधर्मं जुहोमि वौषट्, (अब पूर्णाहुति की भावना करे) **4 इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा, 4 आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।**

(अपने आप को कुण्डलिनीरूपी चिदग्नि में होमबुद्धि से हवन करे) विशेषार्घ्यपात्र से कलशपात्र में थोड़ा जल डाले। तत्पश्चात् विसर्जन पर्यन्त शंख और विशेषार्घ्यपात्र को **न हिलाव**।

12. अन्तर्याग:

(मानस पूजा करे) मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त विलास करती बिसतन्तुतनीयसी, विद्युत्पुंजपिंजरा, दसहजारसूर्य के प्रकाशके समान प्रकाशवाली, पूर्णचन्द्र की रश्मियों के शीतल तेज से युक्त, परमचिति की भावना करे। उस देह व्याप्त तेज में देहस्थचक्रों और श्रीचक्रस्थ-देवियों का ध्यान करे-

1. मूलाधार से नीचे अकुलसहस्रारचक्र में भूपुरस्थित देवी का,
2. मूलाधार से नीचे अकुलसहस्रार के ऊपर रक्तवर्णषड्दल विषुवचक्र में षोडशदलस्थित देवी का,
3. चतुर्दल मूलाधारचक्र में अष्टदलस्थित देवी का,
4. षड्दल स्वाधिष्ठान चक्र में चतुर्दशारस्थित देवी का,
5. दशदल मणिपुरचक्र में बहिर्दशारस्थित देवी का,
6. द्वादशदल अनाहत में अन्तर्दशारस्थित देवी का,
7. षोडशदल विशुद्धिचक्र में अष्टारस्थित देवी का,
8. लम्बिकाग्र में स्थित ललनाचक्र में आयुधदेवियों का और त्रिकोण स्थित देवी का,
9. द्विदल आज्ञाचक्र में बिन्दुस्थित देवी का, ध्यान करके पुष्प-पूरितांजलियुक्त खुद को उनके समक्ष अर्पण कर तत्तत्पूजामन्त्रों से 9 चक्रों में 9 आवरणों की पूजा करे और देवी के बायें हाथ में पूजा को समर्पित करें।

तत्पश्चात् समस्त चक्रों और आवरणों को श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी में विलीन होने की भावना करें। देवी के चरणकमलों में स्थित जीवात्मा को हृदय में लाकर देवी के साथ होने की भावना करते हुये हस्तगत पुष्पों से देवी की अर्चना करे। पंचोपचारमुद्रा सहित पंचोपचारपूजा की भावना करे। देवी की नासिका में पीतवर्णपृथिवीतत्त्वात्मिका चन्दन रूपीगन्धदेवता, श्रोत्र में असितवर्णाकाशतत्त्वात्मिका पुष्पदेवता, नाभि में श्यामवर्णवायुतत्त्वात्मिका धूपदेवता, नयन में रक्तवर्णाग्नितत्त्वात्मिका

दीपदेवता, जिह्वा में शुक्लवर्णजलतत्त्वात्मिका नैवेद्यदेवता के विलीन होने की भावना करे। मूलविद्या का मानस उच्चारण करते हुये खुद को देवी के चरणों में विलीन कर हृदय में स्थित ज्योतिर्मयी बिन्दु सहित देवी को संक्षोभिणी आदि 9 मुद्राओं (षोडशी उपासक हो तो 10 मुद्राओं) को दर्शाकर कुछ क्षण मौन रहे। पुनः देवी से प्रेरित मनवाला होकर पुष्पों से भरी अंजलि से प्रणाम करते हुये अपने सामने देवी की कल्पना करे –

4 ह्रीं श्रीं सौः श्रीललिताया अमृतचैतन्यमूर्तिं कल्पयामि नमः।

ध्यानम्

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं,
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्शेखराम्।
हस्तैरिक्षुधनुःसृणीसुमकरां पाशं मुदा बिभ्रतीं,
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत्।।1।।

सकुंकुमविलेपनामलिकचुंबिकस्तूरिकां,
समन्दहसितेक्षणां सशरचापपाशांकुशां।
अशेषजनमोहिनीमरुणमाल्यभूषाम्बरां,
जपाकुसुमभासुरां जपविधौ स्मरेदम्बिकां।।2।।

13. आवाहनम्

4 हस्त्रैं हसकलरीं हस्त्रौः

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातः एह्येहि परमेश्वरि।।1।।

देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।2।।

4 श्रीचक्रललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकामावाहयामि नमः।
4 कामेश्वर्यादिविचित्रामावाहयामि नमः।
4 विचित्रादिकामेश्वरीमावाहयामि नमः।
4 ओघानन्दनाथमावाहयामि नमः।
4 समयदेवतामावाहयामि नमः।
4 आम्नायदेवतामावाहयामि नमः।
4 पंचपंचिकादेवतामावाहयामि नमः।
4 मातंगीदेवतामावाहयामि नमः।
4 वाराहीदेवतामावाहयामि नमः।
4 आवरणदेवतामावाहयामि नमः।

(भावना करे कि–श्रीकामेश्वरी के अंकोपवेशन विना जो नित्यादि अणिमापर्यन्त श्रीदेवीसमानाकृतिवेषभूषणायुधशक्तिचक्र और ओघत्रय–गुरुमण्डल नही हो सकते वे सब श्रीललिता के समक्ष विराजमान हैं।)

ऐं वागीश्वरी च विद्महे क्लीं कामेश्वरी च धीमहि ।
सौः तन्नो देवीः प्रचोदयात्।

इस ललितागायत्री को 8 बार जपे और स्वहृदयस्थ देवी को गन्धाक्षतपुष्प से भावित कर पुष्पादि को श्रीयन्त्र पर रखें।

7 आवाहिता भव, 7 संस्थापिता भव, 7 सन्निधापिता (सन्निहिता) भव, 7 सन्निरुद्धा भव, 7 सम्मुखा भव, 7 अवगुण्ठिता भव, 7 शान्ता भव, 7 वरदा भव, प्रसीद प्रसीद प्रसीद।

(आवाहनादि मुद्राओं को भी दर्शाकर प्रार्थना (वन्दना), धेनु और योनिमुद्रा को भी दर्शावे। तत्पश्चात् हृदयादि षडंगमुद्रा और बाणादि आयुधमुद्राओं को तत्तन्मन्त्रों के सहित दर्शावे।)

14. प्रधानपूजाप्रकरणम्

14.1 अथ मण्डप पूजा

(गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे)।

महामाणिक्यवैडूर्यकांचनस्तम्भसंयुतं ,
मुक्तादामसमाकीर्णं रत्नवैडूर्यमण्डितं।
मन्दवायुगतिक्रान्तं गन्धधूपसुमनोहरं,
रत्नचामरघण्टादि वितानैरुपशोभितं।
जातिचम्पककल्लारैः केतकीमल्लिकादिभिः,
बद्धामिश्रितमालाभिः सुवृत्ताभिरलंकृतं।
चतुर्द्वारसमायुक्तं ध्यायेत्सौभाग्यमण्डपम्।।

4 नवरत्नखचितदिव्यश्रीसौभाग्यमण्डपाय नमः, यागमण्डपाय नमः, भोगमण्डपाय नमः, कनकमण्डपाय नमः।।

14.2 अथ द्वारपाल पूजा

(गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे)।

4 पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः ब्राह्मयै नमः भवान्यै नमः।
4 दक्षिणाम्नायमयदक्षिणद्वाराय नमः कौमार्यै नमः वैष्णव्यै नमः।
4 पश्चिमाम्नायमयपश्चिमद्वाराय नमः वाराह्यै नमः इन्द्राण्यै नमः।
4 उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय नमः चामुण्डायै नमः महालक्ष्म्यै नमः।

14.3 अथाष्टदलपूजा

(गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे)।

4 लक्ष्म्यै नमः– पूर्वदले, **4 महालक्ष्म्यै नमः** – आग्नेयदले,
4 त्रिशक्त्यै नमः – दक्षिणदले,
4 सर्वसाम्राज्यदायिन्यै नमः – नैर्ऋत्यदले ,
4 श्रीविद्यायै नमः – पश्चिमदले , **4 परं ज्योतिष्यै नमः** – वायव्यदले,
4 परनिष्कलायै नमः –उत्तरदले, **4 शाम्भव्यै नमः** – ईशान्यदले
4 श्रीत्रिपुरसुन्दर्यै नमः –मध्ये।

14.4 अथ षोडशदलपूजा

(गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे)।

**4 अजपायै नमः, 4 मातृकायै नमः, 4 त्वरितायै नमः,
4 पारिजातेश्वर्यै नमः, 4 त्रिपुरायै नमः, 4 पंचबाणेश्यै नमः,
4 अमृतपीठेश्वर्यै नमः, 4 सुधायै नमः, 4 अमृतेश्वर्यै नमः,
4 महेश्वर्यै नमः, 4 अन्नपूर्णेश्वर्यै नमः, 4 सिद्धलक्ष्म्यै नमः,
4 मातंग्यै नमः, 4 भुवनेश्वर्यै नमः, 4 वाराह्यै नमः,
4 देव्यै नमः,** (मध्ये) **4 श्रीत्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।**

14.5 अथ दिग्देवतापूजा

(गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे)।

4 वशिन्यै नमः, 4 कामेश्वर्यै नमः, 4 मोदिन्यै नमः, 4 विमलायै नमः, 4 अरुणायै नमः, 4 जयिन्यै नमः, 4 सर्वेश्वर्यै नमः, 4 कौलिन्यै नमः, 4 विद्यायोगिन्यै नमः, 4 रेचिकायोगिन्यै नमः, 4 मोचिकायोगिन्यै नमः, 4 मातृकायोगिन्यै नमः, 4 दीपिकायोगिन्यै नमः, 4 ज्ञानयोगिन्यै नमः, 4 आप्यायिनीयोगिन्यै नमः, 4 व्यापिनीयोगिन्यै नमः, 4 व्योमरूपयोगिन्यै नमः, 4 गन्धाकर्षिण्यै नमः, 4 रसाकर्षिण्यै नमः, 4 रूपाकर्षिण्यै नमः, 4 स्पर्शाकर्षिण्यै नमः, 4 शब्दाकर्षिण्यै नमः।

14.6 अथ पीठपूजा

(गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे)।

4 आधारशक्त्यै नमः, 4 मूलप्रकृत्यै नमः, 4 कूर्माय नमः, 4 वराहाय नमः, 4 दिग्गजेभ्यो नमः, 4 शेषाय नमः, 4 भूमण्डलाय नमः, 4 अमृताम्भोनिधये नमः, 4 रत्नाद्वीपाय नमः, 4 नानावृक्षमहोद्यानाय नमः, 4 कल्पवृक्षाय नमः, 4 सुवर्णमण्टपाय नमः, 4 सुवर्णपुष्पाय नमः, 4 कन्दाय नमः, 4 नालाय नमः, 4 मूलाय नमः, 4 किंजल्केभ्यो नमः, 4 पत्रेभ्यो नमः, 4 दलेभ्यो नमः, 4 बीजेभ्यो नमः।

(इसके बाद अष्टादशपीठस्तोत्र के पाठ पूर्वक इन्द्राक्षीस्तोत्र का पाठ करे)

अथाष्टादशपीठस्तोत्रम्

लंकायां शांकरीदेवी कामाक्षी कांचिकापुरे।
प्रद्युम्ने सिंहलादेवी चामुण्डी क्रौंचपट्टने।।
हयश्चक्रे कामरूपी पीठायां पुरुहूतिका।
माधुर्या एकवीरा च गया मांगल्यगौरिका।।
ओड्याणी गिरिकादेवी प्रयागे माधवेश्वरी।
कुरुक्षेत्रे महामाया उज्जयिन्यां तु कालिका।।
कोल्लाटे त्वुत्तरालक्ष्मी: श्रीशैले भ्रमराम्बिका।
मराठे च महालक्ष्मी काश्मीरे च सरस्वती।।
वाराणस्यां विशालाक्षी अलम्पुर्या च जोगुला।
इत्यष्टादशपीठानि प्रोक्तानि भृगुसूरिभि:।।

अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

नेत्राणां दशभि: शतै: परिवृतामत्युग्रचर्माम्बरां।
हेमांम्बां महतीं विलंबितशिखामामुक्तकेशान्वितां।1।
घण्टालम्बितपादपद्मयुगलां नागेव कुम्भस्तनीं।
इन्द्राक्षीं परिचिन्तयामि मनसा प्रत्यक्षसिद्धिप्रदां।2।

इन्द्राक्षीं शिवयुवतीं नानालंकारभूषितां।
प्रसन्नवदनाम्भोजमप्सरोगणसेविताम्।3।
इन्द्राक्षीं द्विभुजं देवि पीतवस्त्रसमन्वितां।
वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम्।4।

भक्ताभीष्टप्रदायिनीं त्रिनयनां सिंहाधिरूढां शिवां।
वामेनांकुशपाशशूलसहितां विविधायुधैर्वृतां।5।
शंखं चक्रं धनुश्चैव खड्गं च तथा दक्षिणे।
नित्यानन्दी निराहारी निष्कलायै नमो नम:।6।
चन्द्रबिम्बजटाधारी चन्द्रावली नमोऽस्तु ते।
महादेवी महादुर्गी महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।7।

श्रीदेवी प्रथमं नाम द्वितीयं परमेश्वरी।
तृतीयं शार्ङ्गवी प्रोक्तं चतुर्थं कुलसुन्दरी।8।
पंचमन्तु जगन्माता षष्ठं चैव तु पार्वती।
सप्तमन्तु हरादेवी अष्टमं हरिवल्लभा।9।
कात्यायनी नवमन्तु चामुण्डी दशमं तथा।
एकादशी तु लक्ष्मीश्च द्वादशी सुरसुन्दरी।10।
एतानि द्वादश नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
एकमासे जपेन्नित्यं सिद्धिर्भवति सर्वदा।11।
द्विमासं सर्वकार्याणि षण्मासात्राज्यमुच्यते।
नित्यं यस्तु पठेत्प्राज्ञः स मुक्तः स्यान्न संशयः।12।

14.7 अथ नवशक्तिपूजा

(गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे)।

4 जयायै नमः, 4 विजयायै नमः, 4 अजितायै नमः, 4 अपराजितायै नमः, 4 नित्यायै नमः, 4 विलासिन्यै नमः, 4 दोग्ध्र्यै नमः, 4 अघोरायै नमः, 4 मंगलायै नमः, 4 सर्वशक्ति कमलासनायै नमः, 4 सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वालंकारभूषितायै असमानलावण्यायै महात्रिपुरसुन्दर्यै पीठनवशक्त्योर्मध्ये रत्नसिंहासनं परिकल्पयामि।

14.8 अथ सिंहासनम्

त्रिनेत्रे जगतां नाथे कामेशी लोकवन्दिते।
रत्नसिंहासनं तुभ्यं दास्यामि शिवसुन्दरी।।

4 सिंहासनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि।

14.9 अथ चतुष्षष्ठ्युपचारपूजा (64 उपचार)

(64 उपचारों से देवी की पूजा करे। यदि समर्थ न हो तो पुष्पाक्षत से अर्चना करे अथवा सामान्यार्घ्यपात्र के जल से दूसरे पात्र में थोड़ा गिराते

हुये भावना करे कि देवी को अर्पण कर रहा हूँ।)

1. 4 श्रीललितायै नमः पाद्यं कल्पयामि समर्पयामि नमः,
2. 4 श्री ललितायै नमः आभरणावरोपणं कल्पयामि नमः,
3. 4 श्री ललितायै नमः सुगन्धतैलाभ्यंगं कल्पयामि नमः,
4. 4 श्री ललितायै नमः मज्जनशालाप्रवेशनं कल्पयामि नमः,
5. 4 श्रीललितायै नमः मज्जनमण्डपमणिपीठोपवेशनं कल्पयामि नमः,
6. 4 श्रीललितायै नमः दिव्यस्नानीयोद्वर्तनं कल्पयामि नमः,
7. 4 श्रीललितायै नमः उष्णोदकस्नानं कल्पयामि नमः,
8. 4 श्रीललितायै नमः कनककलशच्युतसकलतीर्थाभिषेचनं कल्पयामि नमः, (श्रीसूक्त का पाठ करते हुये अभिषेक भी करे)
9. 4 श्रीललितायै नमः धौतवस्त्रपरिमार्जनं कल्पयामि नमः,
10. 4 श्रीललितायै नमः अरुणदुकूलपरिधानं कल्पयामि समर्पयामि नमः,
11. 4 श्रीललितायै नमः अरुणकुचोत्तरीयं कल्पयामि नमः,

12 (क.) 4 श्रीललितायै नमः आलेपमण्डपप्रवेशनं कल्पयामि नमः,

12 (ख.) 4 श्रीललितायै नमः आलेपमण्डपमणिपीठोपवेशनं कल्पयामि नमः,

13. 4 श्रीललितायै नमः चन्दनागरुकुंकुममृगमदकर्पूरकस्तूरी गोरोचनादिदिव्यगन्धसर्वांगीणविलेपनं कल्पयामि नमः,
14. 4 श्रीललितायै नमः केशभारस्य कालागरुधूपं कल्पयामि समर्पयामि नमः,
15. 4 श्रीललितायै नमः मल्लिकामालतीजातिचंपकाशोक शतपत्रपूगपुन्नागकुहलीकह्लारमुख्यसर्वर्तुकुसुममालां कल्पयामि समर्पयामि नमः,

16 (क.) 4 श्रीललितायै नमः भूषणमण्डपप्रवेशनं कल्पयामि नमः,

16 (ख.) 4 श्रीललितायै नमः भूषणमण्डपमणिपीठोपवेशनं कल्पयामि नमः,

17. 4 श्रीललितायै नमः नवमणिमुकुटं कल्पयामि नमः,
18. 4 श्रीललितायै नमः चन्द्रशकलं कल्पयामि नमः,

19. 4 श्रीललितायै नमः सीमन्तसिन्दूरं कल्पयामि नमः,
20. 4 श्रीललितायै नमः तिलकरत्नं कल्पयामि नमः,
21. 4 श्रीललितायै नमः कालांजनं कल्पयामि नमः,
22. 4 श्रीललितायै नमः वालीयुगलं कल्पयामि नमः,
23. 4 श्रीललितायै नमः मणिकुण्डलयुगलं कल्पयामि नमः,
24. 4 श्रीललितायै नमः नासाभरणं कल्पयामि नमः,
25. 4 श्रीललितायै नमः अधरयावकं कल्पयामि नमः,
26. 4 श्रीललितायै नमः प्रथमभूषणं कल्पयामि नमः,
27. 4 श्रीललितायै नमः कनकचिंताकं कल्पयामि नमः,
28. 4 श्रीललितायै नमः पदकं कल्पयामि नमः,
29. 4 श्रीललितायै नमः महापदकं कल्पयामि नमः,
30. 4 श्रीललितायै नमः मुक्तावलीं कल्पयामि नमः,
31. 4 श्रीललितायै नमः एकावलीं कल्पयामि नमः,

(इसके बाद कुछ मतों में चार उपचार अधिक किये जाते हैं – छन्नवीर, केयूरयुगलचतुष्टय, वलयावली और ऊर्मिकावली।),

32. 4 श्रीललितायै नमः कांचीदाम कल्पयामि नमः,
33. 4 श्रीललितायै नमः कटिसूत्रं कल्पयामि नमः,
34. 4 श्रीललितायै नमः सौभाग्याभरणं कल्पयामि नमः,
35. 4 श्रीललितायै नमः पादकटकं कल्पयामि नमः,
36. 4 श्रीललितायै नमः रत्ननूपुरं कल्पयामि नमः,
37. 4 श्रीललितायै नमः पादांगुलीयकं कल्पयामि नमः,
38. 4 श्रीललितायै नमः एककरे पाशं कल्पयामि नमः,
39. 4 श्रीललितायै नमः अन्यकरे अंकुशं कल्पयामि नमः,
40. 4 श्रीललितायै नमः इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं कल्पयामि नमः,
41. 4 श्रीललितायै नमः अपरकरे पुष्पबाणान् कल्पयामि नमः,
42. 4 श्रीललितायै नमः श्रीमन्माणिक्यपादुके कल्पयामि नमः,
43. 4 श्रीललितायै नमः स्वसमानवेषाभिः आवरणदेवताभिः सह महाचक्राधिरोहणं कल्पयामि नमः,

44. 4 श्रीललितायै नमः कामेश्वरांकपर्यंकोपवेशनं कल्पयामि नमः,
45. 4 श्रीललितायै नमः अमृतासवचषकं कल्पयामि नमः,
46. 4 श्रीललितायै नमः आचमनीयं कल्पयामि नमः,
47. 4 श्रीललितायै नमः कर्पूरवीटिकां कल्पयामि नमः,
48. 4 श्रीललितायै नमः आनन्दोल्लासविलासहासं कल्पयामि नमः,
49. 4 श्रीललितायै नमः मंगलारार्तिक्यं कल्पयामि नमः,

(शुद्ध थाली पर कुंकुम/चन्दन/या अन्य द्रव्य से अष्ट/षट्/चतुर्दल कमल को लिखकर चन्द्राकारचरुगोलक में अथवा चना/मूंग से निर्मित कर्णिका में व दलों में जौ/गेहूं की पिष्टि से निर्मित अथवा मिट्टि से निर्मित त्रिकोणशिरस्क डमर्वादि आकृतिवाले 4 अंगुल गहरे 5/7/9 दीपक रखकर उनमें गौ का घी भरके कर्पूर युक्त बत्तियां रखके मूलमन्त्र से प्रज्वलित करे। तदनन्तर नवाक्षरी रत्नेश्वरीविद्या – **"4 श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं"** से अभिमन्त्रित कर चक्रमुद्रा दर्शावे और मूलमन्त्र से गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे। आरती करते वक्त घण्टा बजाना है, अतः मन्त्र उच्चारण पूर्वक उसकी पुनः गन्धाक्षतपुष्प से पूजा कर बजावे। मन्त्र –

"4 जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा।"

अब अपने जानु को जमीन पर रखकर आरती को पूरे शरीर पर 3 बार व प्रत्येक अंग पर 3–3 बार और अन्त में पुनः पूरे शरीर पर 9 बार घुमावे। देवी की आरती को गावे और अन्त में इस श्लोक को पढ़े–

समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवी नवात्मके।
आरार्तिक्यमिदं तुभ्यं गृहाण मम सिद्धये।।

50. 4 श्रीललितायै नमः छत्रं कल्पयामि नमः,
51. 4 श्रीललितायै नमः चामरयुगलं कल्पयामि नमः,
52. 4 श्रीललितायै नमः दर्पणं कल्पयामि नमः,
53. 4 श्रीललितायै नमः तालवृन्तं कल्पयामि नमः,
54. 4 श्रीललितायै नमः गन्धं कल्पयामि समर्पयामि नमः,
55. 4 श्रीललितायै नमः पुष्पं कल्पयामि समर्पयामि नमः,

56. 4 श्रीललितायै नमः धूपं कल्पयामि समर्पयामि नमः,

57. 4 श्रीललितायै नमः दीपं कल्पयामि समर्पयामि नमः,

58. (देवी के सामने व अपने दाहिने तरफ चतुरस्रमण्डल बनाकर आधार के ऊपर भोजन को रखके मूलमन्त्र से प्रोक्षण कर "**वं**" बीज से धेनुमुद्रा दर्शाते हुये भोजन के अमृत होने की भावना करे। मूलमन्त्र से 3 बार अभिमन्त्रित करें-)

4 श्रीललितायै नमः आपोशनं कल्पयामि नमः,

अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा,

4 ऐं प्राणाय स्वाहा, 4 क्लीं व्यानाय स्वाहा, 4 सौः अपनाय स्वाहा, 4 ऐं क्लीं समानाय स्वाहा, 4 क्लीं सौः उदानाय स्वाहा, सांगायै सायुधायै सपरिवारायै श्रीश्रीललितायै नमः नैवेद्यं कल्पयामि समर्पयामि नमः। (प्राणादि- सातमुद्रा दर्शावे)

(देवी द्वारा भोजन करने हेतु पर्दा डालके कुछ क्षण आंख बन्द कर मूलमन्त्र को जपते रहे, तदनन्तर चुटकी बजाकर पर्दा हटाकर उत्तरापोषण प्रदान करे)

4 श्रीललितायै नमः अमृतापिधानमसि स्वाहा,

4 कएईलह्रीं आत्मतत्त्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु,

4 हसकहलह्रीं विद्युत्तत्त्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु,

4 सकलह्रीं शिवतत्त्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु,

4+15 सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु,

(देवी तृप्त हो गयी है ऐसी भावना कर भोजन को हटाकर नैर्ऋत्य दिशा में रखें व वस्त्र से भूशुद्धि करे)

59. 4 श्रीललितायै नमः हस्तप्रक्षालनं कल्पयामि नमः,

60. 4 श्रीललितायै नमः गण्डूषान् कल्पयामि नमः,

61. 4 श्रीललितायै नमः आचमनीयं कल्पयामि नमः,

62. 4 श्रीललितायै नमः कर्पूरवीटिकां कल्पयामि नमः,

63. 4 श्रीललितायै नमः दक्षिणां कल्पयामि नमः,

64. 4 श्रीललितायै नमः मन्त्रपुष्पं कल्पयामि नमः।

4 द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्रों हसखफ्रें ह्सौः ऐं

(नवमुद्रा दर्शावे। यदि षोडशी उपासक है तो दशमुद्रा दर्शावे) तत्पश्चात् तीन बार विशेषार्घ्य प्रदान करे- **4+15 श्रीललिताम्बा महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

14.10 चतुरासनपूजा

नैर्ऋते च गणेशानं सूर्य वायव्य एव च।
ईशाने विष्णुमाग्नेये शिवं चैव प्रपूजयेत्।।

अर्थात् नैर्ऋत्यदिशा में गणेशजी, वायव्य में सूर्य, ईशान में विष्णु और आग्नेयदिशा में शिवजी की पूजा करे। किन्तु नित्योत्सव में तत्तद्देवता के मन्त्र से तर्पण मात्र करने का विधान है।

14.11 गणपतिपूजा

अथ ध्यानम्

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजाचक्राब्जपाशोत्पल-,
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः।।

ॐ श्रीमहागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि, ॐ गं महागणपतये नमः, आसनं समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि, अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, मधुपर्कं समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि, वस्त्रालंकारान्समर्पयामि, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, गन्धान्धारयामि, (पुष्पार्चनं करे-) **ॐ सुमुखाय नमः, ॐ एकदन्ताय नमः, ॐ कपिलाय नमः, ॐ गजकर्णकाय नमः, ॐ लम्बोदराय नमः, ॐ विकटाय नमः, ॐ विघ्नराजाय नमः, ॐ विनायकाय नमः, ॐ धूमकेतवे नमः, ॐ गणाध्यक्षाय नमः, ॐ फालचन्द्राय नमः, ॐ गजाननाय नमः, ॐ वक्रतुण्डाय नमः, ॐ शूर्पकर्णाय नमः, ॐ हेरम्बाय नमः, ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः। ॐ गं श्रीमहागणपतये**

नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि, 4 गं श्रीमहागण -पतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (तीन बार तर्पण दे) ॐ महागणपतये नमः धूपमाघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं समर्पयामि, मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोषणं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं च समर्पयामि, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् । ॐ महागणपतये नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणानमस्कारा-न्समर्पयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारांश्च समर्पयामि। अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीगणपतिः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।

(14.12) सूर्यपूजा

अथ ध्यानम्

अध्यारूढं रथेन्दे वसुदलसहिते वृत्तषट्कोणमध्ये,
भास्वन्तं भास्करन्तं शुभदमसिगदाशंखचक्राब्जयुग्मं।
वेदाकारं त्रिमूर्तिं त्रिविधनयगुणं विश्वरूपं पुराणं,
ह्रींह्रींह्रूंकाररूपं सुरनुतमनिशं भावयेद्धृत्सरोजे।।

श्री आदित्यं ध्यायामि, आवाहयामि, ॐ घृणिः आदित्याय नमः आसनं समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि, अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि, वस्त्रालंकारान् समर्पयामि, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, गन्धान्धारयामि समर्पयामि। (पुष्पार्चन करे-)
ॐ मित्राय नमः, ॐ रवये नमः, ॐ सूर्याय नमः, ॐ भानवे नमः, ॐ खगाय नमः, ॐ पूष्णे नमः, ॐ हिरण्यगर्भाय नमः, ॐ मरीचये नमः, ॐ आदित्याय नमः, ॐ सावित्रे नमः, ॐ अर्काय नमः, ॐ भास्कराय नमः। ॐ आदित्याय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि, 4 घृणिः आदित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (तीन बार तर्पण दे), ॐ आदित्याय नमः धूपं आघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोषणं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं च समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। ॐ भास्कराय विद्महे

महाद्युतिकराय धीमहि। तन्नो आदित्यः प्रचोदयात्। आदित्याय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि, प्रदक्षिणानमस्कारान्समर्पयामि, समस्तराजोपचारदेवोपचारान्समर्पयामि। अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः आदित्यः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।

(14.13) विष्णुपूजा

अथ ध्यानम्

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगं।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

श्रीमहाविष्णुं ध्यायामि, आवाहयामि, महाविष्णवे नमः आवाहनं समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि, अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, मधुपर्कं समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि, वस्त्रालंकारान्समर्पयामि, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, गन्धान्धारयामि समर्पयामि। (पुष्पार्चन करे-)
ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ मधुसूदनाय नमः, ॐ त्रिविक्रमाय नमः, ॐ वामनाय नमः, ॐ श्रीधराय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः, ॐ पद्मनाभाय नमः, ॐ दामोदराय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि, 4 ॐ श्रीनारायणाय नमः महाविष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः(तीन बार तर्पण दे), ॐ महाविष्णवे नमः धूपं आघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोषणं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं च समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्। महाविष्णवे नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि, प्रदक्षिणा-नमस्कारान्समर्पयामि, समस्तराजोपचारदेवोपचारान्समर्पयामि। अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहाविष्णुः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।

(14.14) शिवपूजा

अथ ध्यानम्

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं,
वामांकारूढगौरीनिबिडकुचभराभोगगाढोपगूढं।
सर्वालंकारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिनेत्रं,
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशं।।

साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि, आवाहयामि, साम्बपरमेश्वराय नमः आसनं समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि, अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि, वस्त्रालंकारान् समर्पयामि, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, गन्धान्धारयामि, (पुष्पार्चन करे–) **ॐ भवाय नमः, ॐ शर्वाय नमः, ॐ ईशानाय नमः, ॐ पशुपतये नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ उग्राय नमः, ॐ भीमाय नमः, ॐ महते नमः। ॐ श्रीसाम्बपरमेश्वराय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि, 4 ॐ नमः शिवाय साम्बपरमेश्वरपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** (तीन बार तर्पण दे), **ॐ साम्बपरमेश्वराय नमः धूपं आघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोषणं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं च समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। साम्बपरमेश्वराय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि, प्रदक्षिणानमस्कारान्समर्पयामि, समस्तराजोपचारदेवोपचारान्समर्पयामि। अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः साम्ब–परमेश्वरः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।**

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुरायतनार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यजल से देवी के बायें हाथ में पूजा को समर्पित करे)।

(14.15) लयांगपूजा

7 श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (बिन्दु पर तीन बार जल छोड़े)।

(14.16) षडंगार्चनम्

(देवी के समक्ष बिन्दु पर आग्नेय, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य कोण, मध्य और पूर्वदिशा में क्रम से जल छोड़े)

4 ऐं कएईलह्रीं हृदयाय नमः, हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। 4 क्लीं हसकहलह्रीं शिरसे स्वाहा, शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। 4 सौः सकलह्रीं शिखायै वषट्, शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। 4 ऐं कएईलह्रीं कवचाय हुम्, कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। 4 क्लीं हसकहलह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। 4 सौः सकलह्रीं अस्त्राय फट्, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(षोडशी उपासक हो तो षोडशीषट्क से षडंगपूजा करे)।

(14.19) नित्यादेवीपूजनम्

(अब त्रिकोण के बिन्दु में पहले महानित्या का 3 बार पूजन करके बिन्दु में ही तिथि के साथ नित्याओं का 3 - 3 बार पूजन कर अन्त में पुनः बिन्दु में महानित्या का 3 बार पूजन करे)

4 अः कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं अः श्रीललितामहा नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ अं प्रतिपत्तिथ्यभि-मानिनीकामेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ आं द्वितीयातिथ्यभिमानिनीभगमालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ इं तृतीयातिथ्यभिमानिनीनित्यक्लिन्नानित्या-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ ई चतुर्थीतिथ्यभिमानिनी-भेरुण्डानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ उं पंचमी-तिथ्यभिमानिनीवह्निवासिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ ऊं षष्ठीतिथ्यभिमानिनीमहावज्रेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ ऋं सप्तमीतिथ्यभिमानिनीशिवदूतीनित्या-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ ॠं अष्टमीतिथ्यभिमानि-

नीत्वरितानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ लृं **नवमीतिथ्यभिमानिनीकुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ लृं दशमीतिथ्यभिमानिनीनित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ एं एकादशीतिथ्यभिमानिनीनीलपताकानित्या-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,** 4 ॐ ऐं द्वादशीतिथ्यभिमा-निनीविजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ ओं त्रयोदशीतिथ्यभिमानिनीसर्वमंगलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ औं चतुर्दशीतिथ्यभिमानिनीज्वालामालिनी-नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ अं **पूर्णिमातिथ्यभिमानिनीचित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 ॐ अः अमावस्यातिथ्यभिमानिनीललितामहानित्याश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, 4 अः कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं अः श्रीललिता महानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**
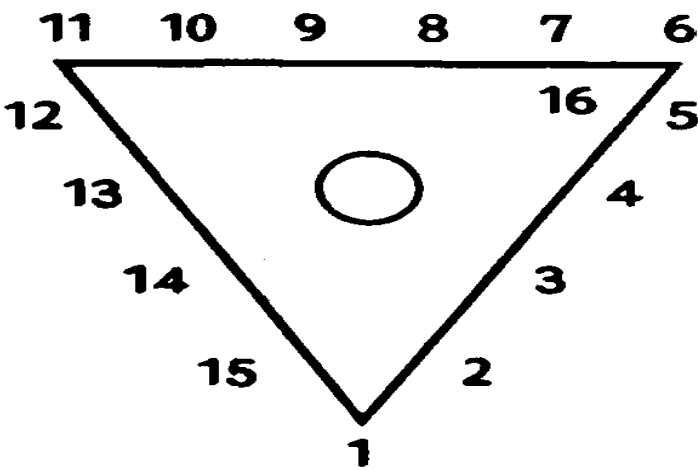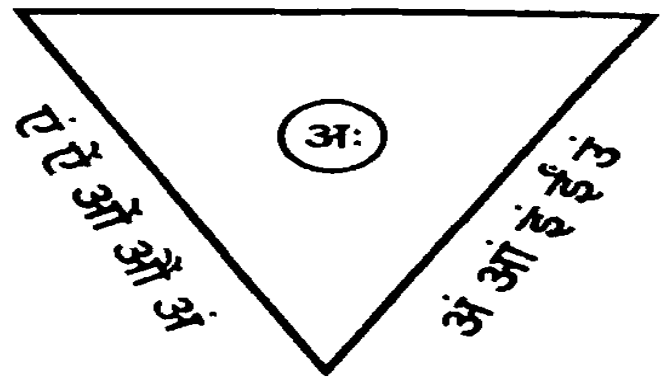
त्रिकोण के निचले नोक से आरम्भ कर दाहिनी भुजा (चित्र 11 एवं 12 देखें) से चलते हुये प्रत्येक भुजा पर 5 नित्याओं का पूजन कर अन्त में पुनः बिन्दु में महानित्या का पूजन करे- (दाहिनी भुजा)

4 अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै नमः, 4 आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे

क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्व सत्त्वान् भगव-शंकरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै नमः, 4 इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्यायै नमः, 4 ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै नमः, 4 उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै नमः, (ऊपरी भुजा)
4 ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै नमः, 4 ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यायै नमः, 4 ॠं ॐ ह्रीं हुं खं चं छं क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्यायै नमः, 4 लृं ऐं क्लीं सौः लृं कुलसुन्दरीनित्यायै नमः, 4 लॄं हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः लॄं नित्यानित्यायै नमः, (बायीं भुजा) 4 एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्यायै नमः, 4 ऐं भमरयूं ऐं विजयानित्यायै नमः, 4 ओं स्वौं ओं सर्वमंगलानित्यायै नमः, 4 औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं रं रं रं रं रं रं रं हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्यायै नमः, 4 अं चक्रौं अं चित्रानित्यायै नमः, (बिन्दु में) 4 अः ॐ अं आं इं ईं....औं अं अः ललितामहानित्यायै नमः। (यह शुक्लपक्ष में पूजन करने का क्रम है। कृष्णपक्ष में इसके विपरीत क्रम से करना है।

(14.18) गुरुमण्डलार्चनम्

4 परौघेभ्यो नमः। (बिन्दु और त्रिकोण में पुष्पांजलि देकर महापादुका का पूजन करे-) 4 ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्दनाथ श्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(त्रिकोण की पूर्वरेखा में वामकोण से आरम्भ करे)

4 उड्डीशानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

4 प्रकाशानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

4 **विमर्शानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

4 **आनन्दानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

(त्रिकोण की दक्षरेखा में दक्षकोण से आरम्भ करे)

4 **षष्ठीशानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

4 **ज्ञानानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

4 **सत्यानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

4 **पूर्णानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

(त्रिकोण की वामरेखा में स्वाग्रकोण से आरम्भ करे)

4 **मित्रेशानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

4 **स्वभावानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

4 **प्रतिभानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

4 **सुभगानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

(चित्र 13 में बिन्दु के ऊपरी भाग में दर्शायी गयी तीन सीधी रेखाओं में दिव्यसिद्धमानवौघों का पूजन करे)
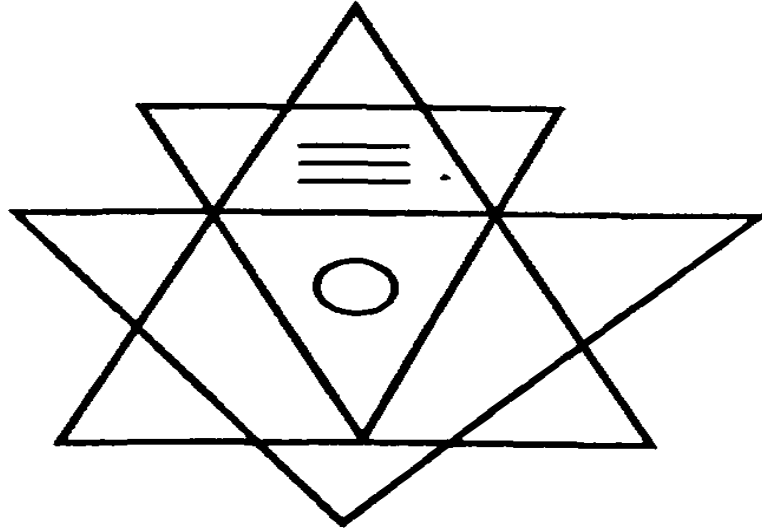
चित्र 13

4 **दिव्यौघसिद्धौघमानवौघेभ्यो नमः**

(पुष्पांजलि देकर प्रथमरेखा में दिव्यौघ –)

4 **परप्रकाशानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

4 **परशिवानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

4 पराशक्त्यम्बाश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 कौलेश्वरानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 शुक्लदेव्यम्बाश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 कुलेश्वरानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 कामेश्वर्यम्बाश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(द्वितीयरेखा में सिद्धौघ)

4 भोगसमयानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 क्लिन्नसमयानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 संयमसमयानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 सहजसमयानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(अन्य के मत में दो अधिक है - क्रीडानन्द, परावरानन्द)

(तृतीयरेखा में मानवौघ)

4 गगनानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 विश्वानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 विमलानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 मदनानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 भुवनानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 लीलाम्बानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 स्वात्मानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
4 प्रियानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(पुनः तीनों रेखाओं पर परमेष्ठिगुरु, परमगुरु और स्वगुरु के ध्यान पूर्वक दाहिने हाथ की अनामिका और अंगुष्ठ से अक्षत ग्रहण कर जल सहित बिन्दु पर छोड़े -)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वात्मारामपंजरविलीनचेतस्क अमुकश्रीपरमेष्ठिगुरु **पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतुअमुकश्री**परमगुरुपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वरूपनिरूपणहेतुअमुकश्रीगुरुपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(गुरु, परमगुरु और परमेष्ठिगुरु यदि गृहस्थ हो तो उनकी पत्नी का नाम भी लेना चाहिये- अमुका**म्बासहितामुकश्री**.......)।

(आम्नायार्चन से दर्शनदेवतार्चन पर्यन्त दाहिने हाथ के अंगुष्ठ और तर्जनी से अक्षत सहित जल से तीन बार अर्घ्य दें-)

(14.19) आम्नायार्चनम्

4 पूर्वाम्नाय इन्द्रदेवताश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 दक्षिणाम्नाय यमदेवताश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 पश्चिमाम्नायवरुणदेवताश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 उत्तराम्नाय कुबेरदेवताश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(14.20) सुन्दर्यर्चनम्

7 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।

(14.21) गणपत्यर्चनम्

7 ग्लौं ग्लः गणपतये नमः वरवरद सर्वजनं मे वशमानय शीघ्रं कुरु कुरु स्वाहा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(14.22) पीठत्रयार्चनम्

7 कएईलह्रीं कामरूपपीठे कामेश्वरीरुद्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7 हसकहलह्रीं पूर्णागिरिपीठे वज्रेश्वरीविष्णुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7 सकलह्रीं जालन्धरपीठे भगमालिनीब्रह्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(14.23) मण्डलत्रयार्चनम्

4 ऐं अग्निमण्डलश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।

4 क्लीं सूर्यमण्डलश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।
4 सौः चन्द्रमण्डलश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।

(14.24) भैरवार्चनम्

4 फट् फां फीं असितांगभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 फट् फां फीं रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 फट् फां फीं चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 फट् फां फीं क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 फट् फां फीं उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 फट् फां फीं कपालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 फट् फां फीं भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4 फट् फां फीं संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(14.25) मण्डलार्चनम्

7 हंसश्शिवस्सोऽहं सोऽहं हंसश्शिवः हंसश्शिवस्सोऽहं हंसः ह्सखफ्रें हसक्षमलवरयूं श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(14.26) वटुकार्चनम्

7 राजराजेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7 क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7 भूतनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7 वटुकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7 मंजिष्ठभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(14.27) लक्ष्म्यर्चनम्

7+15 श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्य-जननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्यालक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7+15 श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्य-

जननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीलक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7+15 श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्य-
जननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमहालक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7+15 श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्य-
जननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीत्रिशक्तिलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7+15 श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसर्वसाम्राज्यलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(इसके बाद शिवकवच का पाठ करें)

अथ शिव कवचम्

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं निःशेषपापौघहरं पवित्रं।
जयप्रदं सर्वविपत्प्रमोगचं वक्ष्यामि श्रेष्ठं कवचं च तुभ्यं।1।

ऋषभ उवाच –

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरं।
वक्ष्ये तुभ्यं शिववर्म सर्वरक्षाकरं नृणां।2।

शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययं।3।

हृत्पुण्डरीकान्तरसन्निविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशं।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत्परानन्दमयं महेशं।4।

ध्यानावभूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः।
षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात्कवचेन रक्षां।5।

मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गभीरे।
तन्नामदिव्यं वरमन्त्रमूलं धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थं।6।

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्ति ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा।
अणोरणियानुरुशक्तिरेकस्स ईश्वरः पातु भयादशेषात्।7।

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं पायात्स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः।
योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः।8।

कल्पावसाने लोकानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः ।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वातादिभीतेरखिलाच्च तापात् ।9 ।
प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः ।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रं ।10 ।
कुठारवेदांकुशपाशटंककपालखट्वांगगुणान्दधानः ।
चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्यां ।11 ।
कुन्देन्दुशंखस्फटिकावभासो वेदाक्षमालावरदाभयंकरः ।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावस्सद्योधिजातोऽवतु मां प्रतीच्यां ।12 ।
वराक्षमालाभयटंकहस्तस्सरोजकिंजल्कसमानवर्णः ।
त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ।13 ।
देवाभयेष्टांकुशपाशटंकढक्काक्षकापालिकशूलपाणिः ।
शिवद्युतिस्पंचमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः ।14 ।
मूर्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिः फालं ममाव्यादथ फालनेत्रः ।
नेत्रे ममाव्याद्भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः ।15 ।
पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः कपालमव्यात्सततं कपाली ।
वक्त्रं सदा रक्षतु पंचवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः ।16 ।
कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः ।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात् ।17 ।
ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी ।
हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात्कटिं धूर्जटिरीश्वरो मे ।18 ।
ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात् ।
जंघायुगं पुंगवकेतुरव्यात्पादौ ममाव्यात्सुरवन्द्यपादः ।19 ।
महेश्वरः पातु दिनादियामे मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः ।
त्र्यम्बकः पातु तृतीययामे वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे ।20 ।
पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गंगाधरो रक्षतु मां निशीथे ।
गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युंजयो रक्षतु सर्वकालं ।21 ।

अन्तस्स्थितं रक्षतु शेखरो मां स्थाणुस्सदा पातु बहिस्स्थितं मां।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात् ।22।

तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः पायाद्व्रजन्तं प्रमथादिनाथः।
वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवःशयानं। 23।

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठश्शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः।24

कल्पान्तकालोग्रपटुप्रकोपस्स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवारमहाभयाद्रक्षतु वीरभद्रः।25।

पत्यश्च मातंगघटावरोधी सहस्रलक्षायुतकोटिभीषं।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां छिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया।26।

निहन्तुदस्यून्प्रलयानलार्चिर्ज्वलत्त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य।
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंसान्सन्त्रासयत्वीश धनुष्पिनाकः।27।

दुस्स्वप्नदुशकुनदुर्गतिदौर्मनस्य
दुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सहदुर्यशांसि।
उत्पाततापविषभीतिमसकृद्ग्रहार्तिं
व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः।28।

(14.28) देव्यम्बार्चनम्

7 ह्सौं ह्लीलसयूं ह्सौः विद्येश्वर्युन्मोदिनी देव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि।

7+15 गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्यादिसमयविद्येश्वरी-पर्यन्तचतुर्विंशतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि।

7 ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्ने मदद्रवे कुले ह्सौः समयविद्येश्वरी भोगिनीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि।

7+15 भैरवाष्टकनवसिद्धौघवटुकत्रयपदयुगसहितायै सौभाग्यविद्या-

दिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तत्रिंशत्सहस्रदेवता परिसेवितायै पूर्णागिरिपीठ-स्थितायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि।

7 ह्सैं ह्सीः ह्सौः ह्खपसौं भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं ह्खजपेमघोरमुखी चं छं किणि किणि विच्चे ह्सौः ह्ख्जसछें ह्सौः समयविद्येश्वरी कुम्बिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि।

7+15 दशदूतिमण्डलत्रयोदशवीरचतुःषष्ठीसिद्धनाथसहितायै लोपामुद्रादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धर-पीठस्थायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि।

7 ह्सखछें महाचण्डयोगेश्वरीकालिके फट् समयविद्येश्वरी कालिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि।

7+15 नवमुद्रापंचवीरावलीसहितायै तुर्याम्बादिसमयविद्येश्वरी-पर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै ओड्याणपीठस्थितायै श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि।

(14.29) पदार्चनम्

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं प्रकाशपददिव्यश्रीपादुकां पूजयामि।
हसकहलह्रीं सकलह्रीं विमर्शपददिव्यश्रीपादुकां पूजयामि।

(14.30) दूत्यर्चनम्

4 अं........अः योगिन्यम्बादूतिश्रीपादुकां पूजयामि।
4 अं..........अः सिद्धाम्बादूतिश्रीपादुकां पूजयामि।
4 अं......अः महायोन्यम्बादूतिश्रीपादुकां पूजयामि।
4 अं....अः दिव्ययोन्यम्बादूतिश्रीपादुकां पूजयामि।
4 अं....अः सिद्धनाथाम्बादूतिश्रीपादुकां पूजयामि।
4 अं....अः शंखयोन्यम्बादूतिश्रीपादुकां पूजयामि।
4 अं.....अः पद्मयोन्यम्बादूतिश्रीपादुकां पूजयामि।

(14.31) वीरावल्यर्चनम्

7 ब्रह्मवीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि ।
7 विष्णुवीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि ।
7 रुद्रवीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि ।
7 ईश्वरवीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि ।
7 सदाशिववीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि ।

(14.32) अम्बार्चनम्

7 राकिण्यम्बास्वरूपिण्यै श्रीपादुकां पूजयामि ।
7 लाकिन्यम्बास्वरूपिण्यै श्रीपादुकां पूजयामि ।
7 साकिन्यम्बास्वरूपिण्यै श्रीपादुकां पूजयामि ।
7 याकिन्यम्बास्वरूपिण्यै श्रीपादुकां पूजयामि ।
7 हाकिन्यम्बास्वरूपिण्यै श्रीपादुकां पूजयामि ।

(14.33) ग्रन्थ्यर्चनम्

7 कएईलह्रीं ब्रह्मग्रन्थिविभेदिन्यै श्रीपादुकां पूजयामि ।
7 हसकहलह्रीं विष्णुग्रन्थिविभेदिन्यै श्रीपादुकां पूजयामि ।
7 सकलह्रीं रुद्रग्रन्थिविभेदिन्यै श्रीपादुकां पूजयामि ।

(14.34) योगिन्यर्चनम्

ॐ जयायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ जयन्त्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ दिव्ययोन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ सिद्धयोन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ प्रेताश्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ काल्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ वेताल्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ विजयायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ अपराजितायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ महायोन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि ।

ॐ माहेश्वर्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ डाकिन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ कालरात्र्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ रौद्र्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ हुंकार्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऊर्ध्वकेशिन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ सुष्वांगायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ दुर्मुख्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ खट्वांगिन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ मालिन्यै नमः नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ विकाल्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ कंकाल्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ त्राटिक्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ यमदूत्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ केशिन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ रोमगंगाप्रवाहिन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ कामकालाक्ष्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ विरूपाक्ष्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ नरभोजिकायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ वीरभद्रायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ कलहप्रियायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ घोररक्ताक्ष्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भयंकर्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ चण्ड्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ महादूत्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ करालिन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ दमन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ विडाल्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ संजयायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ अधोमुख्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ व्याघ्र्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ प्रेतभक्षिण्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ विकट्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ कपाल्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ मुण्डाग्रधारिण्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ कांक्षिण्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ धूर्जट्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ घोर्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ विषम्बिन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ घटकात्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ धूम्रायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ राक्षस्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ विश्वरूपायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ चण्डमात्र्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ वाराह्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भैरव्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ मुण्डधारिण्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऊर्ध्वाक्ष्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ लम्बोष्ठ्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ मत्तयोगिन्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ रक्तायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि।
(इसके बाद दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला का पाठ करे)

दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी।।1।।
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला।।2।।
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता।।3।।
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी।।4।।
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी।।5।।
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।
नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः।।6।।
पठेत्सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः।।7।।

।।ऊँ श्रीदुर्गार्पणमस्तु।।

(14.35) कामेश्वर्यर्चनम्

4 ऐं क्लीं सौः ॐ नमो कामेश्वरी इच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्त्व-वशंकरी सर्वजगत्क्षोभणकरी हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं कामेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(14.36) भगमालिन्यर्चनम्

4 अं आं ऐं भगभुगे भगिनी भगोदरी भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनी सर्वभगवशंकरी भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भग विच्चे क्षुभक्षोभय सर्वसत्त्वान् भगवशंकरी ऐं ब्लूं जें ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्या श्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.37) नित्यक्लिन्नार्चनम्

4 इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.38) भेरुण्डार्चनम्

4 ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं च्रौं छ्रौं ज्रौं झ्रौं स्वाहा ई भेरुण्डानित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.39) वह्निवासिन्यर्चनम्

4 उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.40) महाविद्येश्वर्यर्चनम्

4 ऊं ॐ ह्रीं फ्रें सः नित्यक्लिन्ने मदद्रवे महाविद्येश्वरीनित्या श्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.41) शिवदूत्यर्चनम्

4 ऋं ॐ ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतिनित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.42) त्वरितानित्यार्चनम्

4 ॠं ॐ ह्रीं हुं खेचेच्छेक्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरिता नित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.43) कुलसुन्दर्यर्चनम्

4 लृं ऐं क्लीं सौः लृं कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(इसके बाद श्रीत्रिपुरसुन्दरीस्तोत्र का पाठ करे-)

श्रीत्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियतां प्रणतास्स्मृतां।।1

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरं।
सरस्वतीमतिं दक्षदुहितरं नमः शिवां ।।2

तापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीं।
अनस्त्रां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवां।।3

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभां।
पाशांकुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकां।।4

त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुहं भजे।
नमामि त्वामहं देवि महाभयविनाशिनी।।5

महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीं।
प्रपद्ये शरणं देवि दुं दुर्गे दुरितं हर।।6

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीं।
क्षीरेणस्नापिते देवि चन्दनेन विलेपिते।।7

बिल्वपत्रार्चिते माता दुर्गेऽहं शरणंगतः।
विनाशय मेऽघं देवि मां च मोचय मोचय।।8

(14.44) नित्यार्चनम्

4 लृं ऐं क्लीं सौः ह्मौं स्किं ह्स्रौं सौः क्लीं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः लृं नित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.45) नीलपताकिन्यर्चनम्

4 एं ह्रीं फ्रें न्त्रं ह्रीं क्रों नित्यमदद्रवे हुं क्रों फ्रें ह्रीं एं नीलपताकिनी नित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.46) विजयार्चनम्

4 ऐं हौं भमरयूं स्फ्रें ऐं विजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.47) सर्वमंगलार्चनम्

4 ओं ॐ स्वौं ओं सर्वमंगलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(इसके बाद मंगलचण्डिकास्तोत्र का पाठ करे-)

मंगलचण्डिकास्तोत्रम्

रक्ष रक्ष जगन्मात देवि मंगलचण्डिके।
हांके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके।1।

हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायके।
शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचण्डिके।2।

मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले।
सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये।3।

पूज्ये मंगलकारे च मंगलाभीषु देवते।
पूज्ये मंगलभूपस्य मनुवंशस्य संततं।4।

मंगलाधिशान्ति देवि मंगलानां च मंगले।
संसारमंगलाधारे मोक्षमंगलदायिनी।5।

सारे च मंगलाधारे पारे च सर्वकर्मणां।
प्रतिमंगलवारे च पूज्ये मंगलसुखप्रदे।6।

(14.48) ज्वालामालिन्यर्चनम्

4 औं ॐ नमो भगवती ज्वालामालिनी देवदेवी सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं रं रं रं रं रं रं हुंफट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.49) विचित्रार्चनम्

4 अं ॐ चौं विचित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.50) श्रीविद्यादेवतार्चनम्

4 अः ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः पंचदशी ह्रीं श्रीं अः श्रीमहालक्ष्मीश्वरी सर्व सौभाग्यजननी महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.51) महालक्ष्म्यर्चनम्

4 ह्रीं श्रीं महालक्ष्मीश्वरी सर्वसौभाग्यजननी महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.52) लक्ष्म्यर्चनम्

4 श्रीं ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः सर्वसौभाग्यजननी महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.53) त्रिशक्त्यर्चनम्

4 ऐं ह्रींश्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रें ह्रीं क्लीं त्रिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.54) सर्वसाम्राज्यलक्ष्म्यर्चनम्

4 ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं हसकहलह्रीं श्रीं सर्वसाम्राज्यलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.55) श्रीविद्यार्चनम्

4 ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीविद्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.56) परंज्योत्यर्चनम्

4 ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः। हंसः हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि । तन्नो हंसः प्रचोदयात्। परंज्योतिश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.57) परनिष्कलार्चनम्

4 ह्रीं श्रीं ॐ हंसः परनिष्कलाशाम्भवी परनिष्कलाशाम्भवा श्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.58) अजपार्चनम्

4 ह्रीं श्रीं ॐ हंसः अजपाशाम्भवी अजपाशाम्भवा श्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.59) मातृकादेव्यर्चनम्

4 ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं श्रीमातृकादेवीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.60) श्रीविद्यार्चनम्

7 श्रीं ह्रीं श्रीविद्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.61) त्वरितार्चनम्

4 ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हूं ऐं ब्लूं स्त्रीं खेचेच्छेक्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् त्वरिताश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.62) पारिजातेश्वर्यर्चनम्

4 ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हं सं कं लं ह्रें ह्रीं हसकहलह्रीं ॐ सरस्वती श्रीपारिजातेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.63) त्रिपुटार्चनम्

4 ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुटाश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.64) पंचबाणेश्यर्चनम्

4 ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः पंचबाणेशीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.65) अमृतपीठेश्वर्यर्चनम्

7 ॐ ह्रीं हंसः जूं संजीविनी जीवं प्राणग्रन्थिस्थं कुरु कुरु स्वाहा श्रीअमृतपीठेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.66) पुनः श्रीविद्यार्चनम्

7 श्रीं ह्रीं श्रीविद्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.67) सुधाश्र्यर्चनम्

4 ह्रीं श्रीं हौ स्रां स्त्रीं श्रीं क्लीं ऐं वद वद वाग्वादिनी ह्स्रें क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनी महाक्षोभं कुरु कुरु ह्सलयीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सलयौं श्रीसुधाश्रीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.68) अमृतेश्वर्यर्चनम्

4 ऐं ब्लूं झ्रूं जुं सः सौः क्लीं हें अमृतेश्वरी अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा श्रीअमृतेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.69) अन्नपूर्णार्चनम्

4 क्लीं ऐं सौः श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवत्यन्नपूर्णे ममाभीष्टमन्नं देहि स्वाहा श्रीअन्नपूर्णाश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.70) पुनः श्रीविद्यार्चनम्

7 श्रीं ह्रीं श्रीविद्याश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.71) सिद्धलक्ष्म्यर्चनम्

4 ज्क्रीं ऐं क्लीं त्रें क्लीं महाचण्डे तेज:संकर्षिणे काममन्थने हः मदद्रवे कुले ह्स्रौः सिद्धलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.72) राजमातंग्यर्चनम्

7 ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति राजमातंगीश्वरी सर्वजनमनोहरी सर्वमुखरंजनी क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशंकरी सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरी सर्वदुष्टमृगवशंकरी सर्वसत्त्ववशंकरी सर्वलोकवशंकरी त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं रीं क्लीं ऐं राजमातंगीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.73) भुवनेश्वर्यर्चनम्

4 श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं भुवनेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(14.74) वाराह्यर्चनम्

4 ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवती वार्ताली वाराही वाराही वराहमुखि ऐं ग्लौं अन्धे अन्धिनी नमः रुन्धे रुन्धिनी नमः जम्भे जम्भिनी नमः मोहे मोहिनी नमः स्तम्भे स्तम्भिनी नमः ऐं सौः ऐं सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वा स्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वशं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि त.न.।

(अब सांगोपांग नवावरण पूजा आरम्भ करें-)

15. आवरणपूजाप्रकरणम्

4 संविन्मये परे देवि परामृतरुचिप्रिये।
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि परिवारार्चनाय मे।।

(15.1) चतुरस्रे त्रैलोक्यमोहनचक्रे प्रथमावरण पूजा

4 अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः

(पुष्पांजलि दे और न्यास करे-)

7 हृदयाय नमः वाग्देवताश्रीपा.पू.त.न.।(आग्नेय)

7 शिरसे स्वाहा वाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. ।(ईशान्ये)

7 शिखायै वषट् वाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. ।(वायव्ये)

7 कवचाय हुं वाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. ।(नैऋत्ये)

7 नेत्रत्रयाय वौषट् वाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. ।(पुरतः)

7 अस्त्राय फट् वाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. । (सर्वदिक्षु)

(लकारप्रकृतिकपृथिवीतत्त्व के प्रतीकरूपी चतुरस्र परिधि/रेखाओं में से प्रथम सफेदरंग की परिधि/रेखा पर प्रवेशदृष्ट्या पहले चारों द्वार के दक्षिण भाग में और उसके बाद वायव्यादि 4 विदिशा एवं पश्चिम व पूर्व में पूजा करे–)
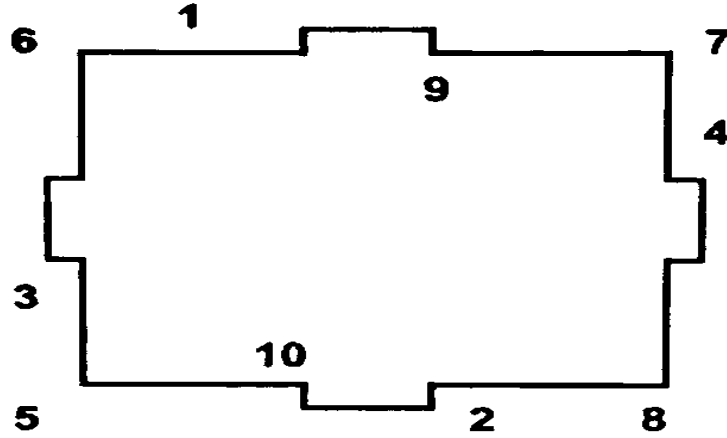
चित्र 14

4 अं अणिमासिद्धिश्रीपा.पू.त.न. – पूर्वद्वार,

4 लं लघिमासिद्धिश्रीपा.पू.त.न. – पश्चिमद्वार,

4 मं महिमासिद्धिश्रीपा.पू.त.न. – उत्तरद्वार,

4 ईं ईशित्वसिद्धिश्रीपा.पू.त.न. – दक्षिणद्वार,

4 वं वशित्वसिद्धिश्रीपा.पू.त.न. – वायव्य,

4 पं प्राकाम्यसिद्धिश्रीपा.पू.त.न. – ईशान,

4 गं गरिमासिद्धिश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेय,

(अथवा **भुं भुक्तिसिद्धिश्रीपा.पू.त.न.**)

4 पं प्राप्तिसिद्धिश्रीपा.पू.त.न. –नैऋत्य,

4 इं इच्छासिद्धिश्रीपा.पू.त.न. – पूर्वे,

(अथवा **अं अनघासिद्धिश्रीपा.पू.त.न.**),

4 सं सर्वकामसिद्धिश्रीपा.पू.त.न. – पश्चिमे,

(अथवा **आं आकृतिसिद्धिश्रीपा.पू.त.न.**)।
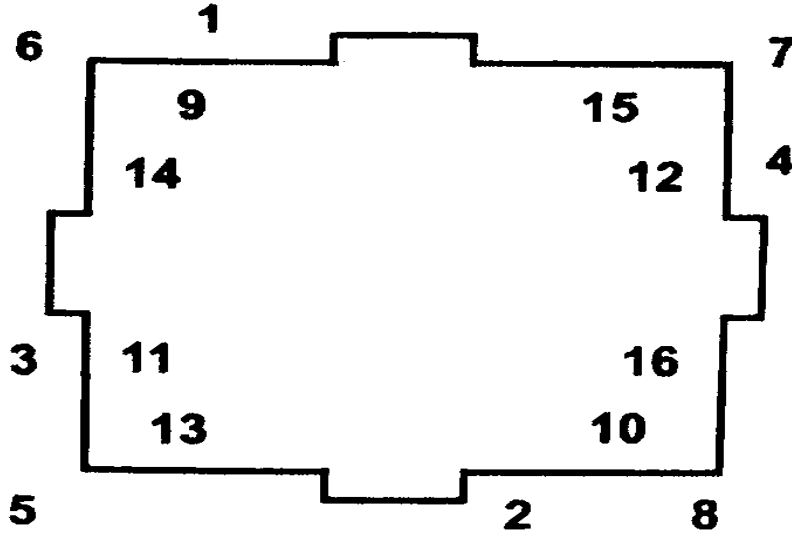
चित्र 15

(द्वितीय/मध्य लालरंग की परिधि/रेखा पर प्रवेशदृष्ट्या पहले द्वारों के बायें भाग में और उसके बाद वायव्यादि 4 विदिशा में पूजा करे–)

4 आं ब्राह्मीमातृकाश्रीपा.पू.त.न. – पूर्वद्वार,
4 ईं माहेश्वरीमातृकाश्रीपा.पू.त.न. – पश्चिमद्वार,
4 लृं वाराहीमातृकाश्रीपा.पू.त.न. – उत्तरद्वार,
4 ऐं माहेन्द्री (इंद्राणी)मातृकाश्रीपा.पू.त.न. – दक्षिणद्वार,
4 ऊं कौमारीमातृकाश्रीपा.पू.त.न. – वायव्य,
4 ॠं वैष्णवीमातृकाश्रीपा.पू.त.न. – ईशान,
4 औं चामुण्डामातृकाश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेय,
4 अः महालक्ष्मीमातृकाश्रीपा.पू.त.न. – नैॠत्य,
4 आं ब्राह्मीमातृकाविद्यायुधां अर्पयामि – पूर्वद्वार,
4 ईं माहेश्वरीमातृकाशूलायुधां अर्पयामि – पश्चिमद्वार,
4 लृं वाराहीमातृकाशक्त्यायुधां अर्पयामि – उत्तरद्वार,
4 ऐं माहेन्द्री (इंद्राणी)मातृकाचक्रायुधामर्पयामि –दक्षिणद्वार,
4 ऊं कौमारीमातृकांकुशायुधां अर्पयामि –वायव्य,
4 ॠं वैष्णवीमातृकावज्रायुधां अर्पयामि – ईशान,
4 औं चामुण्डामातृकादण्डायुधां अर्पयामि – आग्नेय,
4 अः महालक्ष्मीमातृकापद्मायुधां अर्पयामि – नैॠत्य।
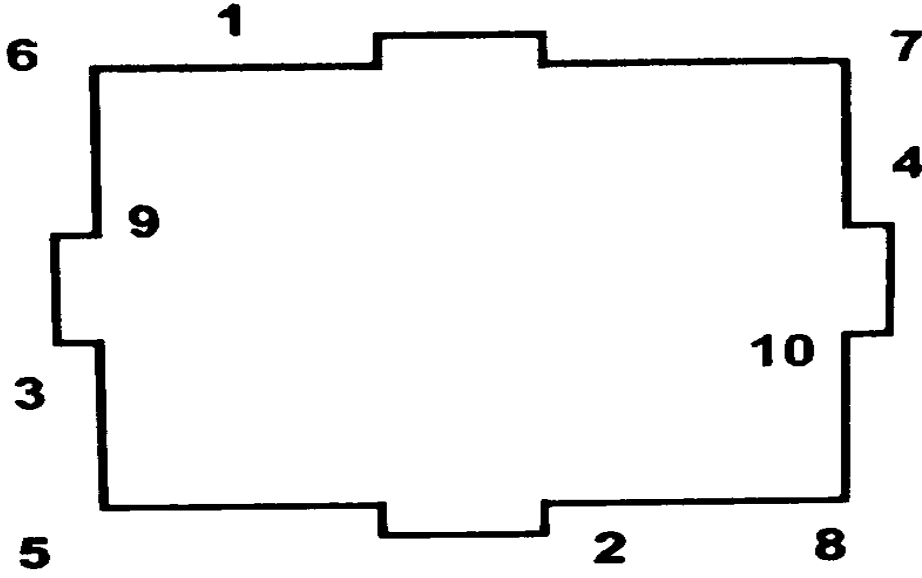
चित्र 16

(तृतीय पीलेरंग की परिधि/रेखा पर प्रवेशदृष्ट्या पहले द्वारों के मध्य भाग में और उसके बाद वायव्यादि 4 विदिशा एवं उत्तर और दक्षिण में पूजा करे-)

4 द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – पूर्वद्वार,
4 द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – पश्चिमद्वार,
4 क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – उत्तरद्वार,
4 ब्लूं सर्ववशंकरीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – दक्षिणद्वार,
4 सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – वायव्य,
4 क्रों सर्वमहांकुशामुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – ईशान,
4 हसकफ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेय,
4 ह्सौः सर्वबीजमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न. –नैऋत्य,
4 ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – उत्तरे,
4 ह्स्रैं हसकलरीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.– दक्षिणे।
4 एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहनचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः।

(पुष्पांजलि देकर सिद्धि और मुद्रा के नाम के साथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः जोड़कर सिद्धि को दाहिने हाथ में और मुद्रा को बायें हाथ में समर्पित करे, जैसे कि-)

4 अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वरी श्रीपा.पू.त.न.,
4 अं अणिमासिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,
4 द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,
4 द्रां (सर्वसंक्षोभिणीमुद्रा दर्शावे)।

अथ ध्यानम् –

तप्तहेमसमानाभाः पाशांकुशधराश्शुभाः।
साधकेभ्यः प्रयच्छन्ति रत्नौघं तां विचिन्तयेत्।।

अथ प्रार्थना –

त्रैलोक्यमोहनेचक्रे योगिन्यः प्रकटा इमाः।
पूजितास्तर्पितास्सन्तु स्वेष्टदेति प्रार्थयेत्।।

अथ सूर्याराधना

"ॐ आ कृष्णेन (सत्येन – कृष्णयजुर्वेद) **रजसा वर्तमानो निवेशयन्न-मृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।।"**
– (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद) –
ॐ उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोहन्तूत्तरान्दिवं। हृद्रोगं मम सूर्यः हरिमाणं च नाशय। शुकेषु मे हरिमाणं। रोपणाकसुदध्मसि। अथो हारिद्रवेषु मे। हरिमाणां निदध्मसि। उदगादियमादित्यो। विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मह्यं रन्थयन्। मोऽहं द्विषते रथं। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। (सूर्य को अर्घ्यपुष्पांजलि दे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)

4 प्रकटयोगिनीमयूखायै प्रथमावरणदेवतासहितायै श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

त्रिवृत्तात्मके त्रिवर्गसाधकचक्रे प्रथमावरणांगपूजा

[श्रीदक्षिणामूर्तिमत में प्रथमावरणरूपी रेखात्रयात्मक त्रैलोक्य मोहनचक्र

और षोडशारात्मक सर्वाशापरिपूरकचक्र के मध्य में त्रिवृत्तात्मक त्रिवर्गसाधकचक्र भी है, जिसमें संहारक्रम से सफेद, लाल और काले रंग से अंकित तीन (वृत्त) गोल हैं। यद्यपि हयग्रीवमत और आनन्दभैरवमत में इस त्रिवृत्तात्मक त्रिवर्गसाधकचक्र का उल्लेख नहीं है तथापि दक्षिणामूर्ति मत के अनुसार उनकी पूजा इस प्रकार की जाती है-]

4 त्रिवर्गसाधकचक्राय नमः।

(शुक्लवर्णात्मक मायाबीजप्रकृतिक प्रथमवृत्तरेखा में प्रदक्षिणा क्रम से देवी के अग्रभाग से आरम्भ करें-)

4 कं कालरात्रिश्रीपा.पू.त.न. **4 खं खण्डिताश्रीपा.पू.त.न.**
4 गं गायत्रीश्रीपा.पू.त.न. **4 घं घण्टाकर्षिणीश्रीपा.पू.त.न.**
4 ङं ङार्णाश्रीपा.पू.त.न. **4 चं चण्डाश्रीपा.पू.त.न.**
4 छं छायाश्रीपा.पू.त.न. **4 जं जयाश्रीपा.पू.त.न.**
4 झं झंकारिणीश्रीपा.पू.त.न. **4 ञं ज्ञानरूपाश्रीपा.पू.त.न.**
4 टं टंकहस्ताश्रीपा.पू.त.न. **4 ठं ठंकारिणीश्रीपा.पू.त.न.**
4 डं डामरीश्रीपा.पू.त.न. **4 ढं ढंकारिणीश्रीपा.पू.त.न.**
4 णं णार्णाश्रीपा.पू.त.न. **4 तं तामसीश्रीपा.पू.त.न.**
4 थं स्थाण्वीश्रीपा.पू.त.न. **4 दं दाक्षायणीश्रीपा.पू.त.न.**
4 धं धात्रीश्रीपा.पू.त.न. **4 नं नारीश्रीपा.पू.त.न.**
4 पं पार्वतीश्रीपा.पू.त.न. **4 फं फट्कारिणीश्रीपा.पू.त.न.**
4 बं बन्धिनीश्रीपा.पू.त.न. **4 भं भद्रकालीश्रीपा.पू.त.न.**
4 मं महामायाश्रीपा.पू.त.न. **4 यं यशस्विनीश्रीपा.पू.त.न.**
4 रं रक्ताश्रीपा.पू.त.न. **4 लं लम्बोष्ठीश्रीपा.पू.त.न.**
4 वं वरदाश्रीपा.पू.त.न. **4 शं श्रीश्रीपा.पू.त.न.**
4 षं षण्डाश्रीपा.पू.त.न. **4 सं सरस्वतीश्रीपा.पू.त.न.**
4 हं हंसवतीश्रीपा.पू.त.न. **4 क्षं क्षमावतीश्रीपा.पू.त.न.।**

(द्वितीयवृत्तमें प्रदक्षिणा के विपरीतक्रम से पूजा आरम्भ करे-)

4 अं अमृताश्रीपा.पू.त.न. **4 आं आकर्षिणीश्रीपा.पू.त.न.**
4 इं इन्द्राणीश्रीपा.पू.त.न. **4 ईं ईशानीश्रीपा.पू.त.न.**

4 उं उमाश्रीपा.पू.त.न. 4 ऊं ऊर्ध्वकेशीश्रीपा.पू.त.न.
4 ऋं ऋद्धिदाश्रीपा.पू.त.न. 4 ॠं ॠकाराश्रीपा.पू.त.न.
4 लृं लृकाराश्रीपा.पू.त.न. 4 लॄं लॄकाराश्रीपा.पू.त.न.
4 एं एपदाश्रीपा.पू.त.न. 4 ऐं ऐश्वर्यात्मिकाश्रीपा.पू.त.न.
4 ओं ओंकाराश्रीपा.पू.त.न. 4 औं औषधीश्रीपा.पू.त.न.
4 अं अम्बिकाश्रीपा.पू.त.न. 4 अः अक्षराश्रीपा.पू.त.न.।

(तृतीयवृत्तमें प्रदक्षिणा के विपरीतक्रम से ही पूजा आरम्भ करे-)

4 अं कामेश्वरीश्रीपा.पू.त.न. 4 आं भगमालिनीश्रीपा.पू.त.न.
4 इं नित्यक्लिन्नाश्रीपा.पू.त.न. 4 ईं भेरुण्डाश्रीपा.पू.त.न.
4 उं वह्निवासिनीश्रीपा.पू.त.न. 4 ऊं महावज्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.
4 ऋं शिवदूतीश्रीपा.पू.त.न. 4 ॠं त्वरिताश्रीपा.पू.त.न.
4 लृं कुलसुन्दरीश्रीपा.पू.त.न. 4 लॄं नित्यानित्याश्रीपा.पू.त.न.
4 एं नीलपताकाश्रीपा.पू.त.न. 4 ऐं विजयाश्रीपा.पू.त.न.
4 ओं सर्वमंगलाश्रीपा.पू.त.न. 4 औं ज्वालामालिनीश्रीपा.पू.त.न.
4 अं चित्राश्रीपा.पू.त.न. 4 अः ललितामहानित्याश्रीपा.पू.त.न.
4 कामेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.।

4 एताः मातृकायोगिन्यः त्रिवर्गसाधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पांजलिः)

त्रिवर्गसाधके चक्रे षोडशस्वरसंयुते।
एता मातृकायोगिन्यः पूजितास्सन्त्विदं वदेत्॥

7 त्रिपुरेशिनीचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
4 गं गरिमासिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ऐं महायोनिमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ऐं (महायोनिमुद्रा दर्शावे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमस्यांगार्चनं॥

4 त्रिवर्गसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै कालरात्र्यादिसहितमातृका योगिनी-

रूपायै त्रिपुरेशिनीदेव्यै नमः (सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)

4 प्रथमावरणांगदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टा-रिकायै नमः। (योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

(15.2) षोडशारे सर्वाशापरिपूरकचक्रे द्वितीयावरणपूजा

7 सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः। (पुष्पांजलि दे)

(श्वेतवर्णा सकारप्रकृतिका षोडशकलात्मिका चन्द्रस्वरूपा अमृतस्राविणी षोडशदलकमलवासिनीदेवियों की पूजा करे)

4 अं कामाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – पश्चिमे,
4 आं बुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,
4 इं अहंकाराकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. –नैर्ऋत्ये,
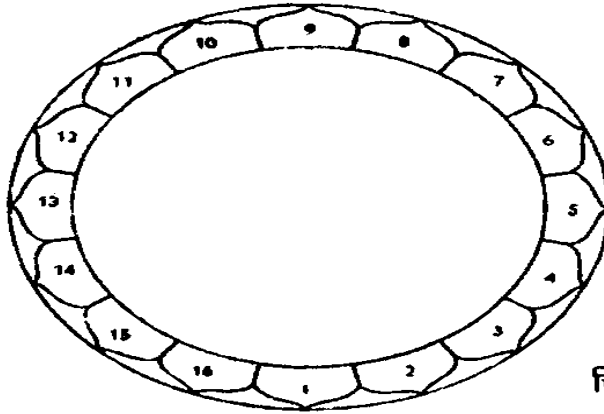
चित्र 17

4 ईं शब्दाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,
4 उं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – दक्षिणे,
4 ऊं रूपाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,
4 ऋं रसाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेये,
4 ॠं गन्धाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,
4 लृं चित्ताकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – ऐन्द्रे,
4 लॄं धैर्याकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,
4 एं स्मृत्याकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – ईशान्ये,
4 ऐं नामाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,

4 औं बीजाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – कौबेरे,
4 औं आत्माकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,
4 अं अमृताकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – वायव्ये,
4 अः शरीराकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये।
4 एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः।
(पुष्पांजलिः)

सर्वाशापरिपूरके चक्रे षोडशस्वरसंयुते।
गुप्ता एतास्या योगिन्यः पूजितास्सन्त्विदं वदेत्।।

मंगलाराधना –

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।
अपां रेतांसि जिन्वति।।
ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।(पुष्पांजलि दे)
7 त्रिपुरेशीचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
4 लं लघिमासिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,
4 द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,
4 द्रीं (सर्वविद्राविणीमुद्रा दर्शावे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)
4 गुप्तयोगिनीमयूखायै द्वितीयावरणदेवतासहितायै श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

(15.3) अष्टारे सर्वसंक्षोभिणीचक्रे तृतीयावरणपूजा

4 ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः
(पुष्पांजलि दे)

(हकारप्रकृतिका अष्टमूर्त्यात्मकशिवाभिन्ना जपाकुसुममित्रा अष्टदल-कमलवासिनी देवियों की पूर्वादि क्रम से पूजा करे-)

4 कं खं गं घं ङं अनंगकुसुमादेवीश्रीपा.पू.त.न. - पूर्वे,
4 चं छं जं झं ञं अनंगमेखलादेवीश्रीपा.पू.त.न. - आग्नेये,
4 टं ठं डं ढं णं अनंगमदनादेवीश्रीपा.पू.त.न. - दक्षिणे,
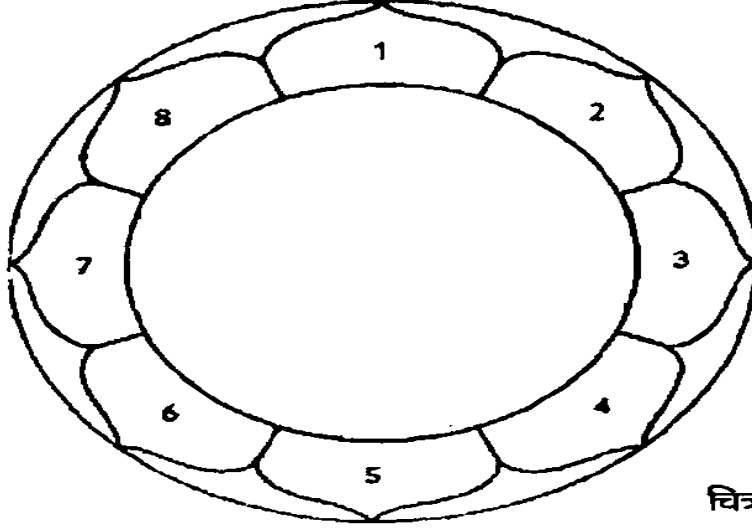
चित्र 18

4 तं थं दं धं नं अनंगमदनातुरादेवीश्रीपा.पू.त.न. - नैर्ऋत्ये,
4 पं फं बं भं मं अनंगरेखादेवीश्रीपा.पू.त.न. - पश्चिमे,
4 यं रं लं वं अनंगवेगिनीदेवीश्रीपा.पू.त.न. - वायव्ये,
4 शं षं सं हं अनंगांकुशादेवीश्रीपा.पू.त.न. - उत्तरे,
4 ळं क्षं अनंगमालिनीदेवीश्रीपा.पू.त.न. - ईशान्ये,

4 एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः।

(पुष्पांजलिः)

सर्वसंक्षोभिणे चक्रे देव्या गुप्ततराभिधा।
पूजितास्सन्त्विति प्रोच्याकर्षमुद्रां प्रदर्शयेत्।।

शुक्राराधना

"ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽअमृत-

म्मधु।।" – (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद) –

ॐ शुक्रन्तेऽअन्यद्यजतन्तेऽन्यद्विषुरूपेऽहनि द्यौरिवासि।
विश्वा हि मायाऽवसि स्वधा वो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु।।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः। (पुष्पांजलि दे)

7 त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,

4 मं महिमासिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,

4 क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,

4 क्लीं (सर्वाकर्षिणीमुद्रा दर्शावे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)

4 गुप्ततरयोगिनीमयूखायै तृतीयावरणदेवतासहितायै श्री ललिता-महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

(15.4) चतुर्दशारे सर्वसौभाग्यचक्रे चतुर्थावरणपूजा

4 हैं हक्लीं हसौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः। (पुष्पांजलि दे)

(ईकारप्रकृतिका चौदहभुवनरूपीमहामायारूपिणी दाडिमीप्रसूनसहोदरा चतुर्दशारवासिनी देवियों की पूजा पश्चिमकोण से आरम्भ करे–)
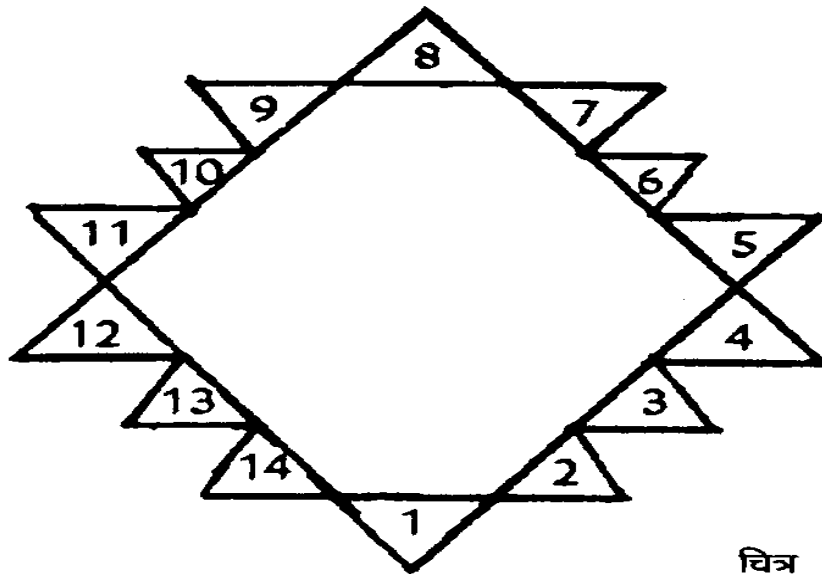
चित्र 19

4 कं सर्वसंक्षोभिणीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. –पश्चिमे,
4 खं सर्वविद्राविणीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – नैर्ऋत्ये,
4 गं सर्वाकर्षिणीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – दक्षिणे,
4 घं सर्वाह्लादिनीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेये,
4 ङं सर्वसम्मोहिनीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – पूर्वे,
4 चं सर्वस्तम्भिनीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – ईशान्ये,
4 छं सर्वजृम्भिणीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – उत्तरे,
4 जं सर्ववशंकरीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – वायव्ये,
4 झं सर्वरंजनीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – पुरतः,
4 ञं सर्वोन्मादिनीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – ऊर्ध्वे,
4 टं सर्वार्थसाधिनीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – अधः,
4 ठं सर्वसंपत्तिपूरणीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – दिक्षु,
4 डं सर्वमन्त्रमयीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – विदिक्षु,
4 ढं सर्वद्वन्द्वक्षयंकरीशक्तिश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये।

4 एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पांजलिः)

सर्वसौभाग्यदे चक्रे संप्रदायाभिधा इमा।
योगिन्यस्पूजितास्तृप्ता मंगलानि दिशं तु मे।।

चन्द्राराधना

ॐ आप्यायस्व स मे तु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यं। भवा वाजस्य संगथे।। ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः। (पुष्पांजलि)

7 हैं हक्लीं हसौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
4 ईं ईशित्वसिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ब्लूं सर्ववशंकरीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ब्लूं (सर्ववशंकरीमुद्रा दर्शावे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)

4 संप्रदाययोगिनीमयूखायै चतुर्थावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

(15.5) दशारे सर्वार्थसाधकचक्रे पंचमावरणपूजा

4 हसैं हसक्लीं हससौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः। (पुष्पांजलि दे)

(एकारप्रकृतिका दशावतारात्मकविष्णुस्वरूपिणी प्रभापराभूत-सिंदूरवर्णमयी बहिर्दशारवासिनी देवियों की पूजा नैर्ऋत्य से आरम्भ करे-)
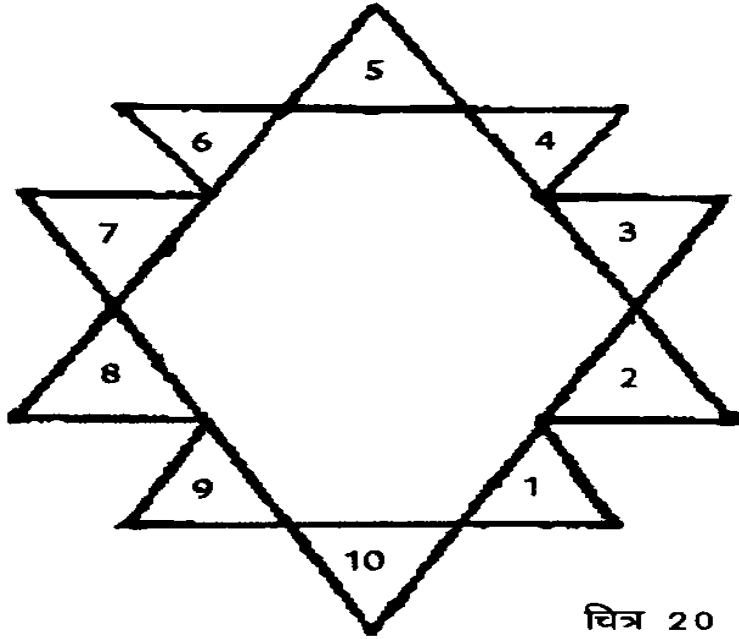
चित्र 20

4 णं सर्वसिद्धिप्रदादेवीश्रीपा.त.न. - नैर्ऋत्ये,
4 तं सर्वसम्पत्प्रदादेवीश्रीपा.त.न. - दक्षिणे,
4 थं सर्वप्रियंकरीदेवीश्रीपा.त.न. - आग्नेये,
4 दं सर्वमंगलकारिणीदेवीश्रीपा.त.न. - पूर्वे,
4 धं सर्वकामप्रदादेवीश्रीपा.त.न. - ईशान्ये,
4 नं सर्वदु:खविमोचिनीदेवीश्रीपा.त.न. - उत्तरे,
4 पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेवीश्रीपा.त.न. - वायव्ये,
4 फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवीश्रीपा.त.न. - पश्चिमे,

4 बं सर्वांगसुन्दरीदेवीश्रीपा.त.न. – ऊर्ध्वे,
4 भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवीश्रीपा.त.न. – अधः।
4 एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पांजलिः)

सर्वार्थसाधके चक्रे पंचमे सर्वतः स्थिताः।
पूजिताः कुलयोगिन्यः सन्तु मेऽभीष्टसिद्धिदाः।।

बुधाराधना

ॐ उद्‌बुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृहीत्वनमिष्ठा पूर्ते संसृजे धाम यं च।
पुनः कृण्वंस्त्वा पितरं युवानमन्वातांसि त्वसि सन्तु मे तम् ।।
ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (पुष्पांजलि दे)
7 हसैं हसक्लीं हससौः त्रिपुरश्रीचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
4 वं वशित्वसिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,
4 सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,
4 सः (सर्वोन्मादिनीमुद्रा दर्शावे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)
4 कुलोत्तीर्णयोगिनीमयूखायै पंचमावरणदेवतासहितायै श्री ललिता–महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

(15.6) दशारे सर्वारक्षाकरचक्रे षष्ठावरणपूजा

4 ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः।
(पुष्पांजलि दे)

(रेफप्रकृतिका दशकलात्मकवैश्वानरस्वरूपिणी जपासुमनः सहचरी अन्तर्दशारवासिनी देवियों की पूजा नैर्ऋत्य से आरम्भ करे–)
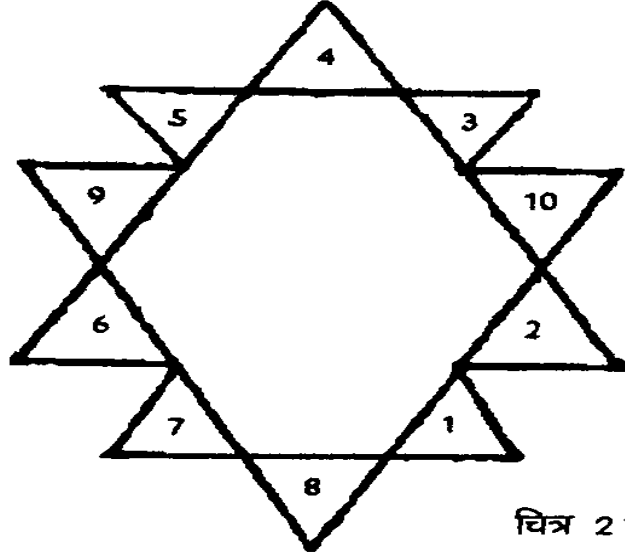
चित्र 21

4 मं सर्वज्ञादेवीश्रीपा.त.न. – नैर्ऋत्ये,
4 यं सर्वशक्तिदेवीश्रीपा.त.न. – दक्षिणे,
4 रं सर्वैश्वर्यप्रदादेवीश्रीपा.त.न. – आग्नेये,
4 लं सर्वज्ञानमयीदेवीश्रीपा.त.न. – पूर्वे,
4 वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवीश्रीपा.त.न. – ईशान्ये,
4 शं सर्वाधारस्वरूपादेवीश्रीपा.त.न. – उत्तरे,
4 षं सर्वपापहरादेवीश्रीपा.त.न. – वायव्ये,
4 सं सर्वानन्दमयीदेवीश्रीपा.त.न. – पश्चिमे,
4 हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवीश्रीपा.त.न. – ऊर्ध्वे,
4 क्षं सर्वेप्सितफलप्रदादेवीश्रीपा.त.न. – अधः।

4 एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पांजलिः)

सर्वरक्षाकरे चक्रे निगर्भाः पूजिता इमाः।
योगिन्यस्तर्पिता सन्तु मामभीष्टफलप्रदाः।।

गुर्वाराधना

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु।
यद्दीदयच्छ वसऽऋत प्रजा ततदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रम्।।
ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः। (पुष्पांजलि दे)

7 ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
4 पं प्राकाम्यसिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,
4 क्रों सर्वमहांकुशामुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,
4 क्रों (सर्वमहांकुशामुद्रा दर्शावे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठाख्यावरणार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)

4 निगर्भयोगिनीमयूखायै षष्ठावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

(15.7) अष्टारे सर्वरोगहरचक्रे सप्तमावरणपूजा

4 ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः। (पुष्पांजलि दे)
(ककारप्रकृतिका अष्टमूर्त्यात्मककामेश्वरस्वरूपिणी पद्मरागवर्णमयी अष्टारवासिनी देवियों की पूजा पश्चिम से आरम्भ करे-)
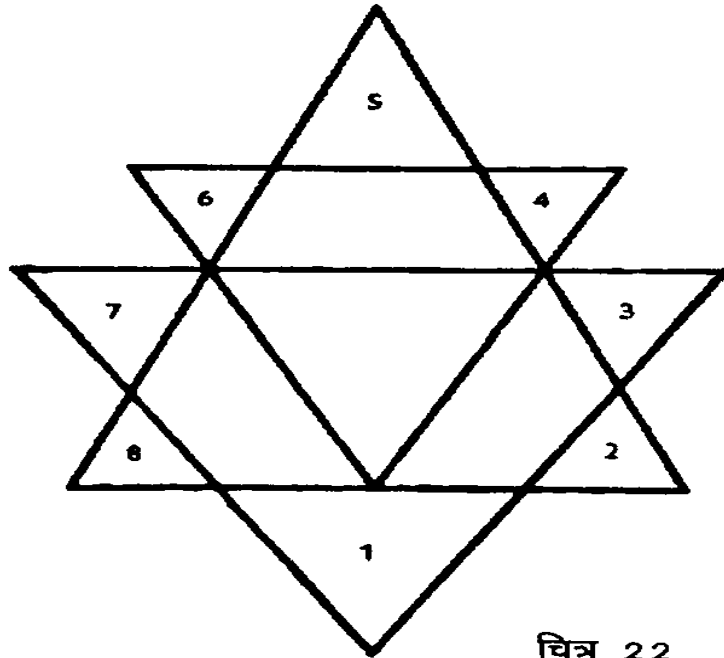
चित्र 22

4 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूँ
वशिनीवाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. – पश्चिमे,

4 कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. – नैर्ऋत्ये,
4 चं छं जं झं ञं न्ब्लीं मोदिनीवाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. – दक्षिणे,
4 टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेये,
4 तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. – पूर्वे,
4 पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. – ईशाने,
4 यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. – उत्तरे,
4 शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवताश्रीपा.पू.त.न. – वायव्ये।
4 एताः रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पांजलिः)

सर्वरोगहरे चक्रे रहस्याः पूजिता मया।
तर्पिताः सन्त्वित्युक्त्वा च दद्यात्कुसुमांजलीं।।

शन्याराधना

"ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।।" – (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद) –
ॐ शमग्निरग्निर्भिस्करच्छन्नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वा त्वरया अपस्स्रिधः।। ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।(पुष्पांजलि)
7 ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
4 भुं भुक्तिसिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ह्स्ख्फ्रें (सर्वखेचरीमुद्रा दर्शावे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)
4 रहस्ययोगिनीमयूखायै सप्तमावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

(15.8) सर्वसिद्धिप्रदाचक्रे अष्टमावरणपूजा
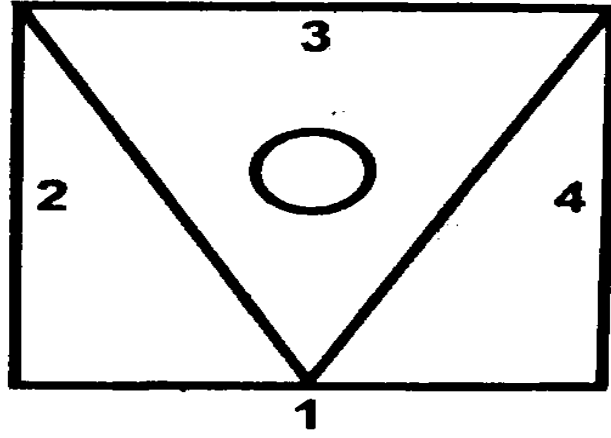
चित्र 23

(मध्यत्र्यस्रबहिर्वासिनी आयुधों की पूजा पश्चिम से आरम्भ करे-)

4 यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः कामेश्वरकामेश्वरी जृम्भणबाणेभ्यो नमः बाणशक्तिश्रीपा.पू.त.न. –पश्चिमे,

4 थं धं कामेश्वरकामेश्वरीसंमोहनधनुर्भ्यो नमः धनुश्शक्ति श्रीपा.पू.त.न. – उत्तरे,

4 ह्रीं आं कामेश्वरकामेश्वरीवशीकरणपाशेभ्यो नमः पाशशक्ति-श्रीपा.पू.त.न. – पूर्वे,

4 क्रों क्रों कामेश्वरकामेश्वरीस्तम्भनांकुशेभ्यो नमः अंकुश शक्ति-श्रीपा.पू.त.न. – दक्षिणे।

4 ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः। (पुष्पांजलि दें)

(नादप्रकृतिकगुणत्रयप्रधानत्रिशक्तिरूपरेखा त्रयात्मिका बन्धूक-पुष्पबन्धुकिरणरूपिणी त्रिकोणनिवासिनी देवियों की पूजा अग्रदक्षवा-मकोण और बिन्दु क्रम से करे-)

4 ऐं कएईलह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ नवयोनि चक्रात्मक आत्मतत्त्व सृष्टिकृत्य जाग्रद्दशाधिष्ठायक इच्छाशक्ति वाग्भवात्मक वागीश्वरीस्वरूप रुद्रात्मशक्ति महाकामेश्वरी श्रीपा. पू.त.न.। गौरी विमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टपदी नवपदी बभूविषी सहस्राक्षरे परमे व्योमन्।

कामेश्वरी रुद्रशक्ति शरच्चन्द्रशतप्रभा।
स्मर्तव्यान्दधति हस्तैः पुस्तकाभिरवस्रजाः।।

4 क्लीं हसकहलह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ दशारद्वय-चतुर्दशारचक्रात्मकविद्यातत्त्व स्थितिकृत्य स्वप्नदशाधिष्ठायक ज्ञानशक्ति कामराजात्मककामकलास्वरूप विष्णवात्मशक्ति महा-वज्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.।

सक्तुमिव तितउनावुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्र सखायस्सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि।
वज्रेश्वरी विष्णुशक्तिः रुद्रान्मार्ताण्डसप्रभा।
इक्षु चाप वराभीतिपुष्पबाणलसत्करा।।

4 सौः सकलह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ अष्टदल षोडशदलचतुरस्रचक्रात्मक शिवतत्त्व संहारकृत्य सुषुप्ति दशाधि-ष्ठायक क्रियाशक्तिशक्तिबीजात्मक परापरशक्ति स्वरूप ब्रह्मात्म-शक्ति महाभगमालिनीश्रीपा.पू.त.न.। प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। धीनाम् वित्र्यवतु।।

भगमाला ब्रह्मशक्ति सप्तहाटकसुप्रभा।
ज्ञानमुद्रां परं पाशमंकुशं दधति करैः।।

4 ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्यानपीठे चर्यानन्दनाथ समस्तचक्रात्मक सपरिवार परमतत्त्व सृष्टिस्थितिसंहारकृत्य तुरीयदशाधिष्ठायक इच्छाज्ञानक्रिया-शान्ताशक्ति वाग्भवकामराजशक्तिबीजात्मक परमशक्तिस्वरूप ब्रह्मात्मशक्ति श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपा.पू.त.न.।

4 एताः अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पांजलिः)

सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे योगिन्यः पूजिता मया।
दिशन्त्विति रहस्याख्या मंगलं मे निरन्तरं।।

राह्वाराधना

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूति सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।(पुष्पांजलि)

7 ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
4 इं इच्छासिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ह्सौः सर्वबीजमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ह्सौः (सर्वबीजमुद्रा दर्शावे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)

4 अतिरहस्ययोगिनीमयूखायै अष्टमावरणदेवतासहितायै श्री ललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।

(योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

(15.9) सर्वकामप्रदचक्रे नवमावरणपूजा

4 कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सर्वानन्दमयचक्राय नमः।
(पुष्पांजलिः)(बिन्द्वभिन्नपरब्रह्मात्मकबिन्दुचक्रवासिनी श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरी आदि देवियों की पूजा करे-)

4+15 श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (तीन बार तर्पण दे)।

7 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञीश्रीपा.पू.त.न.,
7 श्रीललिताम्बाश्रीपा.पू.त.न.,
7 सर्वमन्त्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 सर्वपीठेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 सर्वविद्येश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 सर्ववागीश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 सर्वयोगीश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 सर्वसिद्धेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 सर्वतत्त्वेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,

7 आम्नायदेवताश्रीपा.पू.त.न.,
7 ज्ञानाम्बाश्रीपा.पू.त.न.,
7 अन्नपूर्णेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 पंचरत्नेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 षड्दर्शनदेवतेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
7 सकलजगदुत्पत्तिश्रीमातृकां श्रीपा.पू.त.न.,
7 एताः परापरातिरहस्ययोगिन्यः सर्वानन्दमयचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पांजलिः)

केत्वाराधना

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।
ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः। (पुष्पांजलि)
7 +15 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपा.पू.त.न.,
4 पं प्राप्तिसिद्धिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.,
4 ऐं (सर्वयोनिमुद्रा दर्शावे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनं।।

(सामान्यार्घ्यपात्र के जल से देवी के बायें हाथ में जल छोड़ते हुये पूजा को समर्पित करे)

4 परापरातिरहस्ययोगिनीमयूखायै नवमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।

(योनिमुद्रा से प्रणाम करे)।

[नवमावरणपूजा में **षोडशी उपासकों** के द्वारा विशेष कर्तव्य)

4+ॐ+15 तुरीयाम्बा श्रीपा.पू.त.न. (तीनबार तर्पण दे),
4 सर्वानन्दमये चक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथात्मक तुरीय-दशाधिष्ठायक शान्त्यतीतकलात्मक प्रकाशविमर्शसामरस्यात्मक परब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्तिः सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वपीठेश्वरी

सर्वयोगेश्वरी सकलजगदुत्पत्तिमातृका सचक्रा सदेवता सासना सायुधा सशक्ति सवाहना सपरिवारा सचक्रेशिका परया अपरया परापरया सपर्यया सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टाः सन्तु नमः श्रीपा.पू.त.न. (समष्ट्यंजलि दे)।

4 सं सर्वकामसिद्धि श्रीपा.पू.त.न.,

4 ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपा.पू.त.न.

4 ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः (सर्वत्रिखण्डामुद्रा दर्शावे)।]

16. पंचपंचिकापूजा प्रकरणम्

(बिन्दुचक्र के ऊपर सिंहासन के आकार में पीठ की भावना करके मध्यवायव्येशानाग्नेयनैर्ऋत्यकोण के क्रम से पूजा करे-)
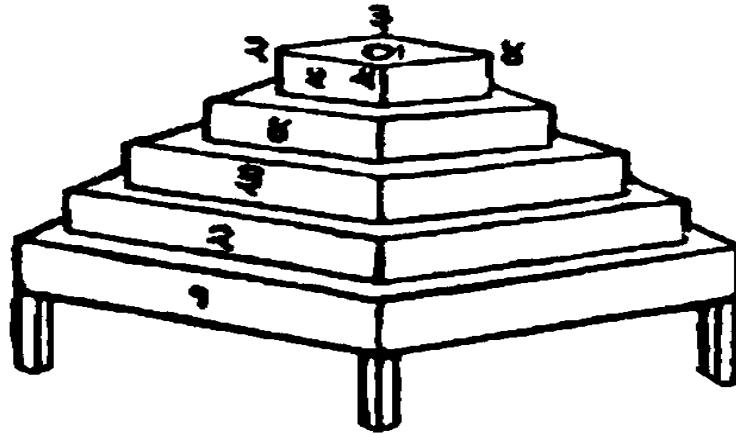
चित्र 24

(16. 1) पंचलक्ष्म्यम्बाः

7 श्रीविद्यालक्ष्म्यम्बाश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,

4 श्रीं लक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपा.पू.त.न. – वायव्ये,

4 ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपा.पू.त.न. – ईशाने,

4 श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिशक्तिलक्ष्म्यम्बाश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेये,

4 श्रीं सहकलह्रीं श्रीं सर्वसाम्राज्यलक्ष्म्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.

– नैर्ऋत्ये।

(16.2) पंचकोशाम्बाः

7 श्रीविद्याकोशाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,

4 ॐ ह्रीं हंसस्सोऽहं स्वाहा परंज्योतिःकोशाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – वायव्ये,

4 ॐ हंसः परानिष्कलाकोशाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – ईशाने,

4 हंसः अजपाकोशाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेये,

4 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मातृकाकोशाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – नैर्ऋत्ये।

(16.3) पंचकल्पलताः

7 श्रीविद्याकल्पलताश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,

4 ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं त्वरिता(पंचकामेश्वरी) कल्पलताश्रीपा. पू.त.न. – वायव्ये,

4 ॐ ह्रीं ह्रां हसकलह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः पारिजातेश्वरी कल्पलताश्रीपा.पू.त.न. – ईशाने,

4 श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुटा(कुमारी) कल्पलताश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेये,

4 द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः पंचबाणेश्वरीकल्पलताश्रीपा.पू.त.न. – नैर्ऋत्ये।

(16.4) पंचकल्पद्रुमाः

7 श्रीविद्याकामदुघाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,

4 ॐ ह्रीं हंसः जुं संजीवनि जीवं प्राणग्रन्थिस्थं कुरु कुरु स्वाहा अमृतपीठेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – वायव्ये,

4 ऐं वद वद वाग्वादिनी ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः सुधाकामदुघाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – ईशाने,

4 ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरी अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा अमृतेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेये,

4 ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभि लषितमन्नं देहि स्वाहा अन्नपूर्णाकामदुघाम्बाश्रीपा.पू.त.न. –नैर्ऋत्ये।

(16.5) पंचरत्नाम्बा:

7 श्रीविद्यारत्नाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – मध्ये,
4 ज्झ्रीं महाचण्डे तेजःसंकर्षिणि कालमन्थाने हः सिद्धलक्ष्मी रत्नाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – वायव्ये,
4 ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातंगेश्वरि सर्व जनमनोहरि सर्वमुखरंजनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशंकरि सर्वस्त्री-पुरुषवशंकरि सर्वदुष्टमृगवशंकरि सर्वसत्त्ववशंकरि सर्वलोकव-शंकरि त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं राजमातंगीश्वरीरत्नाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – ईशाने,
4 श्रीं ह्रीं श्रीं भुवनेश्वरीरत्नाम्बाश्रीपा.पू.त.न. – आग्नेये,
4 ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः ऐं सौं ऐं सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्त-चक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा वाराहीरत्नाम्बा श्रीपा.पू.त.न. – नैर्ऋत्ये।

17. उपांगपूजाप्रकरणम्

(17.1) षड्दर्शनपूजा

4 तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा। तारादेवताधिष्ठितबौद्धदर्शनश्रीपा.पू.त.न।
4 ॐ भूर्भुस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। परोरजसे सावदोम्। ब्रह्मदेवताधिष्ठितवैदिकदर्शन श्रीपा.पू.त.न.।
4 ॐ ह्रीं नमश्शिवाय। रुद्रदेवताधिष्ठितशैवदर्शनश्रीपा.पू.त.न।
4 ॐ ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्यों। सूर्यदेवताधिष्ठितसौरदर्शनश्रीपा.पू.त.न.।
4 ॐ नमो नारायणाय। विष्णुदेवताधिष्ठितवैष्णवदर्शनश्रीपा.पू.त.न.।
4 ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं। भुवनेश्वरीदेवताधिष्ठितशाक्तदर्शनश्रीपा.पू.त.न.।

(17.2) षडाधारपूजा

4 सां हंसःमूलाधाराधिष्ठितदेवतायै साकिनीसहितगणनाथ स्वरूपिण्यै नमः। गणनाथस्वरूपिण्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.।

4 कां सोऽहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठितदेवतायै काकिनीसहितब्रह्म स्वरूपिण्यै नमः। ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.।

4 लां हंसस्सोऽहं मणिपूरकाधिष्ठितदेवतायै लाकिनीसहित विष्णुस्वरूपिण्यै नमः। विष्णुस्वरूपिण्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.।

4 रां हंसश्शिवस्सोऽहं अनाहताधिष्ठितदेवतायै राकिनीसहित सदाशिवस्वरूपिण्यै नमः। सदाशिवस्वरूपिण्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.।

4 डां सोऽहं हंसश्शिवः विशुद्ध्यधिष्ठितदेवतायै डाकिनीसहित जीवेश्वरस्वरूपिण्यै नमः। जीवेश्वरस्वरूपिण्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.।

4 हां हंसश्शिवस्सोऽहं सोऽहं हंसश्शिवः आज्ञाधिष्ठितदेवतायै हाकिनी-सहितपरमात्मस्वरूपिण्यै नमः। परमात्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपा पू.त.न.।

(17.3) आम्नायसमष्टिपूजा

4 हस्रैं हसकलरीं हस्रौः पूर्वाम्नायसमयविद्येश्वर्युन्मोदिनी देव्यम्बाश्री-पा.पू.त.न.।

7 गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्येश्वरीपर्यन्तचतुर्विंशति-सहस्रदेवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै पूर्वाम्नायसमष्टि-रूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपा.पू.त.न।

4 ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्सौः। दक्षिणाम्नाय समयविद्येश्वरीभोगिनीदेव्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.।

7 भैरवाष्टकनवसिद्धौघबटुकत्रयपदयुगसहितायै सौभाग्यविद्या-दिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तत्रिंशत्सहस्रदेवतापरिसेवितायै पूर्णागिरि-पीठस्थितायै दक्षिणाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपा.पू.त.न.।

4 हस्रैं हस्रीं हस्रौः हसखफ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं हसखफ्रें अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे हस्रैं हसखफ्रें हस्रौः। पश्चिमाम्नायसमयविद्येश्वरीकुंचिकादेव्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.।

7 दशदूतिमण्डलत्रयदशवीरचतुःषष्टिसिद्धनाथसहितायै लोपामुद्रादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धरपीठस्थितायै पश्चिमाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपा.पू.त.न.।

4 हसखफ्रें महाचण्डयोगीश्वरी कालिके फट्। उत्तराम्नाय समय-विद्येश्वरीकालिकादेव्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.।

7 नवमुद्रापंचवीरावलिसहितायै तुर्याम्बादिसमयविद्येश्वरी पर्यन्त-द्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै औड्याणपीठस्थितायै उत्तराम्नायसम-ष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपा.पू.त.न.।

(षोडशी उपासकों केलिये विशेष :-

4 मखपरयघच् महिचनडयङ् गंशफर् ऊर्ध्वाम्नायसमयविद्येश्वर्यम्बा श्रीपा.पू.त.न.।

7 श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजगुरुमण्डलसहितायै पराम्बादिसमयवि-द्येश्वरीपर्यन्ताशीतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै शाम्भवीपीठस्थितायै ऊर्ध्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरीश्रीपा.पू.त.न.।

4 भगवति विच्चे महामाये मातंगिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि हसखफ्रें हसखफ्रें हस्रौः। अनुत्तरशांकर्यम्बाश्रीपा.पू.त.न.।

7 परिपूर्णानन्दनाथादिनवनाथसहितायै चतुर्दशमूलविद्यादिश्रीपूर्ति-विद्यान्तानन्तदेवतापरिसेवितायै अनुत्तराम्नाय समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपा.पू.त.न.।)

(17.4) दण्डनाथपूजा

ॐ पंचम्यै नमः।
ॐ दण्डनाथायै नमः।
ॐ संकेतायै नमः।
ॐ समयेश्वर्यै नमः।
ॐ समयसंकेतायै नमः।
ॐ वाराह्यै नमः।
ॐ पोत्रिण्यै नमः।
ॐ शिवायै नमः।
ॐ वार्ताल्यै नमः।
ॐ महासेनायै नमः।
ॐ आज्ञाचक्रेश्वर्यै नमः।
ॐ अरिघ्न्यै नमः।

(17.5) मन्त्रिणीनामार्चनम्

ॐ संगीतयोगिन्यै नमः।
ॐ श्यामायै नमः।
ॐ श्यामलायै नमः।
ॐ मन्त्रनायिकायै नमः।
ॐ मन्त्रिण्यै नमः।
ॐ सचिवेशान्यै नमः।
ॐ प्रधानेश्यै नमः।
ॐ शुक्रप्रियायै नमः।
ॐ वीणावत्यै नमः।
ॐ वैणिक्यै नमः।
ॐ मुद्रिण्यै नमः।
ॐ प्रियंकप्रियायै नमः।
ॐ नीपप्रियायै नमः।
ॐ कदम्बवनवासिन्यै नमः।
ॐ कदम्बेश्यै नमः।
ॐ सदामदायै नमः।

(17.6) श्यामलापूजा

ॐ नमो भगवती मातंग्यै नमः।
ॐ नमो भगवती सर्वजनमनोहर्यै नमः।
ॐ नमो भगवती सर्वराजवशंकर्यै नमः।
ॐ नमो भगवती सर्वमुखरंजन्यै नमः।
ॐ नमो भगवती सर्वस्त्रीपुरुषवशंकर्यै नमः।
ॐ नमो भगवती सर्वदुष्टवशंकर्यै नमः।
ॐ नमो भगवती सर्वलोकवशंकर्यै नमः।

(17.7) वाराहीपूजा

ॐ नमो भगवती वार्ताल्यै नमः।
ॐ नमो भगवती वाराह्यै नमः।
ॐ नमो भगवती अन्ध्यै नमः।
ॐ नमो भगवती रुण्ध्यै नमः।
ॐ नमो भगवती जम्भ्यै नमः।
ॐ नमो भगवती मोहिन्यै नमः।
ॐ नमो भगवती स्तम्भिन्यै नमः।

(17.8) ललितानामार्चनम्

ॐ शिवायै नमः।
ॐ माहेश्वर्यै नमः।
ॐ सौम्यायै नमः।
ॐ भवान्यै नमः।
ॐ विमलायै नमः।
ॐ ललितायै नमः।
ॐ असमानलावण्यायै नमः।
ॐ बालाम्बायै नमः।
ॐ परायै नमः।
ॐ राजराजार्चितायै नमः।
ॐ कामेश्यै नमः।
ॐ देववृन्दनिषेवितायै नमः।
ॐ कामितार्थवरदायै नमः।
ॐ त्रिपुरायै नमः।
ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
ॐ परात्परायै नमः।
ॐ ललिताश्रीत्रिपुरसुन्दर्यै नमः।

(इसके बाद ललितासहस्रनाम / त्रिशति / अष्टोत्तरशतनाम से कुंकुम / कामना के अनुसार पुष्पादि से अर्चना करें।)

18. अवशिष्टोपचारप्रकरणम्

(18.1) धूपं

ॐ कृष्णवाहमधिगृह्ययायिनं। भुजैश्चतुर्भिर्जगदादिकारणम्।। देवादिदेवं सकलारिषूदनं। चैतन्यरूपं प्रणमामि वायुम्।।
ॐ आवायव्यया वाययोमावायव्या वायव्योमा वायव्यमावाय व्योम्।।

वनस्पतिरसोद्भूते गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दरीदेवताभ्यो नमः। धूपमाघ्रापयामि। धूपान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(18.2) दीपं

ॐ उद्दीप्यस्व जातवेद चोपघ्नन्निर्वृत्तिमनु। पशूंश्च मह्यमावह जीवनं च दिशो दश।। मानो हिंसिर्जातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत्। अभिद्रदग्न आगाहिरियमापरिपातया।।

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दरीदेवताभ्यो नमः। दीपं दर्शयामि। दीपान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (मूलमन्त्र के उच्चारण सहित सर्वसंक्षोभिण्यादि मुद्राओं को दर्शाकर मूलमन्त्र से तीन बार तर्पण देके महानैवेद्य को समर्पित करे-)

(18.3) नैवेद्यं

(देवी के सामने व अपने दाहिने तरफ चतुरस्रमण्डल बनाकर आधार के ऊपर भोजन को रखके "**7 ह्रः अस्त्राय फट्**" से प्रोक्षण कर पुनः "**7 ॐ जूं सः वौषट्**" और "**ॐ जूं यं**" से पुनः सात-सात बार प्रोक्षण करे। "**ॐ जूं रं**" से दाहिने हाथ से स्पर्श करे और "**वं**" बीज से धेनुमुद्रा दर्शाते हुये भोजन के अमृत होने की भावना करे। मूलमन्त्र से 7 बार अभिमन्त्रित करें-)

7 सांगायै सायुधायै सपरिवारायै श्रीश्रीललितायै नमः नैवेद्यं कल्पयामि नमः। 4 श्रीललितायै नमः आपोशनं कल्पयामि नमः, सत्येन त्वर्तेन परिषिंचयामि अमृतमस्तु। अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

हेमपात्रगतं देवि परमान्नं सुसंस्कृतम्।
पंचधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि।।

7 श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दरीदेवताभ्यो नमः। नैवेद्यं समर्पयामि।

7 ऐं ॐ जूं वं प्राणाय स्वाहा, 7 क्लीं ॐ जूं वं व्यानाय स्वाहा, 7 सौः ॐ जूं वं अपानाय स्वाहा, 7 ऐं क्लीं ॐ जूं वं समानाय स्वाहा, 7 क्लीं सौः ॐ जूं वं उदानाय स्वाहा। प्राण मुद्रा आदि सात मुद्राओं को दर्शाये। भोजन ध्यानम् :-

श्रीचक्रं प्रियवासिनीं भगवतीं श्रीराजराजेश्वरीं।
भक्तानामभयप्रदां वरनिधिमानन्दसंदायिनीम्।।
ब्रह्मेशाच्युतवन्दितां मुनिनुतां गन्धर्वसंसेवितां।
त्वां देवीं त्रिपुरां परात्परमयीं श्रीब्रह्मविद्यां भजे।।

(देवी द्वारा भोजन करने हेतु पर्दा डालके कुछ क्षण आंख बन्द कर मूलमन्त्र को जपते रहे, तदनन्तर चुटकी बजाकर पर्दा हटाकर उत्तरापोषण प्रदान करे)

4 श्रीललितायै नमः अमृतापिधानमसि स्वाहा,

4 कएईलह्रीं आत्मतत्त्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु,

4 हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु,
4 सकलह्रीं शिवतत्त्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु,
4+15 सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु,
(थोड़ा–थोड़ा सामान्यार्घ्यपात्र का जल अर्पण करके देवी भोजन पाकर तृप्त हो गयी है ऐसी भावना कर भोजन को हटाकर नैर्ऋत्य दिशा में रखें व "**ॐ सहस्राराय हुं फट्**" मन्त्र से भूशुद्धि करे।)

(18.4) पुष्पं

याः फलिनीर्या अफला अपुष्पाः याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंच त्वं हसः स्वाहा।।
7 श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दरीदेवताभ्यो नमः। पुष्पं समर्पयामि।

(18.5) पानीयं

समस्तदेवदेवेशि सर्वव्याप्तिकरं परं।
अखण्डानन्दसंपूर्णे गृहाण जलमुत्तमम्।।
सुधामण्डलमध्यस्थां सान्द्रानन्दामृतात्मिकाम्।
वागातीतां मनोरम्यां वरदां वेदमातरम्।।
7 श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दर्यै नमः। अमृतपानीयं समर्पयामि।

(18.6) उत्तरापोषणं

उत्तरापोषणार्थं ते दद्मि तोयं सुवासितं।
मुखपाणे विशुद्ध्यर्थं पुनस्तोयं ददामि ते।।
4 श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दर्यै नमः अमृतापिधानमसि स्वाहा।
7 श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दर्यै नमः। उत्तरापोषणं समर्पयामि।

(18.7) करोद्वर्तनम्

कर्पूरादीनि द्रव्याणि सुगन्धीनि महेश्वरी।
गृहाण त्वं जगन्मातः करोद्वर्तनहेतवे।।
ॐ शिवेनमाचक्षुषा पश्यतापश्शवयातन्वोपस्पृशत। त्वं च मे सर्व अग्निरप्सुषदोहुवेवो मयि वर्चो बलमोजो निधत्तः। ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः। स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणैवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः। 7 श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दर्यै नमः। करोद्वर्तनं समर्पयामि।

(18.8) ताम्बूलं

एलालवंगकर्पूर नागवल्लीदलैर्युतं।
पूगभागेरितं देवि ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। तत्सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनप्रतिमायां जप्त्वा देवता सान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवि सन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। य एवं वेद। 7 श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दर्यै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि।

(18.9) नीराजनं

4 श्रीललितायै नमः मंगलारार्तिक्यं कल्पयामि नमः (शुद्ध थाली पर कुंकुम/चन्दन/या अन्य द्रव्य से अष्ट/षट्/चतुर्दल कमल को लिखकर चन्द्राकारचरुगोलक में अथवा चना/मूंग से निर्मित कर्णिका में व दलों में जौ/गेहूं की पिष्टि से निर्मित अथवा मिट्टि से निर्मित त्रिकोणशिरस्क डमर्वादि आकृतिवाले 4 अंगुल गहरे 5/7/9 दीपक रखकर उनमें गौ का घी भरके कर्पूर युक्त बत्तियां रखके मूलमन्त्र से प्रज्वलित करे। तदनन्तर नवाक्षरी रत्नेश्वरीविद्या – "**4 श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं**" से अभिमन्त्रित कर चक्रमुद्रा दर्शावे और मूलमन्त्र से गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे। आरती करते वक्त घण्टा बजाना है, अतः मन्त्रपूर्वक उसकी पुनः गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करके बजावे। मन्त्र – "**4 जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा।**" अब अपने जानु को जमीन पर रखकर अथवा खडे होकर आरती को पूरे शरीर पर 3 बार व प्रत्येक अंग पर 3 – 3 बार और अन्त में पुनः पूरे शरीर पर 7 बार घुमावे। देवी की आरती को गावे और अन्त में इस श्लोक को पढ़े–)

अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये।।
अग्निर्ज्योती रविर्ज्योतिर्ज्योतिः सर्वेश्वरः प्रभुः।
नीराजयामि देवेशि त्वं ज्योतिः सर्वगं शिवे।।

सोऽहमर्कः परं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रस्सर्वज्योतिरतोऽस्म्यहम्।।

इसके बाद वैदिक मन्त्र से आरती करे –

ॐ सोमो वा एतस्य राज्यमाधत्ते। यो राजा सन्राज्यो वासो मे न यजते। देवसुवमेतानि हवींषि भवन्ति। एतावन्तो वै देवानां सवाः। त एवास्मै सर्वान्प्रयच्छन्ति। त एवं पुनः सुवन्ते राज्याय। देवसु राजा भवति। ॐ अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः। नक्षत्रं देवमिन्द्रियं। इदमासां विचक्षणं। हविरासं जुहोतन। यस्य भान्ति रश्मयो यस्य केतवः। यस्यै मा विश्वा भुवनानि सर्वा। सकृत्तिकाभिरभिसंवसानः। अग्निर्नो देवस्सुविते दधातु।। (इस श्लोक से अर्पण करे)

"समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवी नवात्मके।
आरार्तिक्यमिदं तुभ्यं गृहाण मम सिद्धये।।"

7 श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दर्यै नमः। आरार्तिक्यं समर्पयामि।

(18.10) मन्त्रपुष्पांजलिः

ॐ योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान्प्रजावान्पशुमान्भवति। चन्द्रमा वाऽपां पुष्पं। पुष्पवान्प्रजावान्पशुमान्भवति। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान्भवति। अग्निर्वाऽपामायतनं। आयतनवान्भवति। योऽग्नेरायतनं वेद। आयतनावान्भवति। आपो वाऽग्नेरायतनं। आयतनवान्भवति। य एवं वेद। योऽपां वा आयतनं वेद। आयतनवान्भवति। वायुर्वा अपामायतनं। आयतनवान्भवति। यो वायोरायतनं वेद। आयतनवान्भवति। आपो वै वायोरायतनं। आयतनवान्भवति। य एवं वेद। यो अपामायतनं वेद। आयतन-वान्भवति। असौ वै तपन्नपामायतनं। आयतनवान्भवति। योऽमुष्य तपत आयतनं वेद। आयतनवान्भवति।आपो वा अमुष्य तपत आयतनं। आयतनवान्भवति। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान्भवति। चन्द्रमा वाऽपामायतनं ।आयतनवान्भवति। यश्चन्द्रमस आयतनं वेद। आयतनवान्भवति। आपो वै चन्द्रमस आयतनं। आयतनवान्भवति। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद।

आयतनवान्भवति। नक्षत्राणि वाऽपामायतनं। आयतनवान्भवति। यो नक्षत्राणामायतनं वेद। आयतनवान्भवति। आपो वै नक्षत्राणा-मायतनं। आयतनवान्भवति। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान्भवति। पर्जन्यो वाऽपामायतनं । आयतनवान्भवति। यः पर्जन्यस्यायतनं वेद। आयतनवान्भवति। आपो वै पर्जन्यस्या-यतनं। आयतनवान्भवति। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान्भवति। संवत्सरो वाऽपामायतनं। आयतनवान्भवति। यस्संवत्सरस्यायतनं वेद। आयतनवान्भवति। आपो वै संवत्सर-स्यायतनं। आयतनवान्भवति। य एवं वेद। योऽप्सु नावं प्रतिष्ठितां वेद। स प्रत्येवावतिष्ठति। हरिः ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो दधातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो, विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।।

नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
भक्त्या दत्तानि पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि।।

7 श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दर्यै नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।

(18.11) प्रार्थना

देहि देवि परं ज्ञानं देहि देवि परं सुखं।
धनं देहि यशो देहि कामं मोक्षं च देहि मे।।
वत्सतुभ्यं यथावक्त्रं पीतशेषं कुलामृतं।
त्वच्छत्रून्संहरिष्यामि तवाभीष्टं ददाम्यहम्।।

(18.12) प्रदक्षिणा

अजेशशक्तिगणपभास्कराणां क्रमादिमाः।
वेदार्धचन्द्रवह्न्यद्रिसंख्याः स्युः सर्वसिद्धये।।

(18.13) कामकलाध्यानम्

अनुस्वारयुक्त तुरीयस्वर (**ईं:**) में स्थित अनुस्वाररूपी बिन्दु में मुख को, विसर्गरूपी दो बिन्दु में स्तनद्वय को, सपरार्ध में योनि और **सौः** इस शक्तिबीज में हृदय की भावना करते हुये कामकलारूपी देवी का ध्यान करे।

होमः

'यद्यग्निकार्यसंपत्तिः' इस सूत्र के अनुसार होम करने व न करने में विकल्प है। अर्थात् नित्य जप संख्या के दशांश नित्य होम करने में विकल्प है। यदि होम करना चाहते हैं तो होम प्रकरण (पृ. 54 – 69 एवं 270–283) में बतायी गयी विधि से होम को महाव्याहृतिहोम के पूर्व तक करके बलिदान दे। यदि होम नहीं करना है तो कामकलाध्यान के बाद बलिदान दे।

(18.14) बलिदानं

देवी के दाहिने भाग में सामान्यार्घ्यपात्र के जल से त्रिकोण, वृत्त और चतुरस्र का मण्डल बनाकर–

'4 ऐं व्यापकमण्डलाय नमः' मन्त्र से गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करके उस मण्डल पर अधिकजलयुक्त खीरादि से भरे तीन पात्र रखें।

'4 ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुम् फट् स्वाहा' मन्त्र की तीन बार आवृत्ति करे और दाहिने हाथ में जल लेकर तत्त्वमुद्रा द्वारा बायें हाथ से उस जल को स्पर्श करके उस जल को बलि पर प्रोक्षण करे। बायें पैर की एड़ी से जमीन पर तीन बार घात करके हाथ से ताली बजाये। **बाणमुद्रा** से भूतों द्वारा बलि ग्रहण कर लेने की भावना कर प्रणाम करे।

(18.15) जपविधिः

यथाशक्ति एकाक्षरी/त्र्यक्षरी/षडक्षरी/अष्टाक्षरी/पंचदशाक्षरी षोडशी मन्त्र का गुरु द्वारा बतायी गयी विधि से अथवा सर्वसामान्य निम्न विधि से जप करें–

'ॐ अस्य श्री मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति / हयग्रीव /आनन्दभैरव ऋषिः,

अनुष्टुप्/ गायत्री/पंक्ती छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादि न्यासः-

4 श्रीदक्षिणामूर्ति/हयग्रीव/आनन्दभैरव ऋषये नमः – शिरसि,
4 श्रीअनुष्टुप्/गायत्री/पंक्ती छन्दसे नमः – मुखे,
4 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमः – हृदि,
4 ऐं बीजाय नमः – गुह्ये,
4 सौः शक्तये नमः – पादयोः,
4 क्लीं कीलकाय नमः – नाभौ,
4 श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी प्रसादसिद्ध्यर्थे विनियोगाय नमः – सर्वांगे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः – तीन बार पूरे शरीर को व्याप्त करते हुये न्यास करे। (षोडशी मन्त्र के कर और हृदयादि न्यास में फरक है, गुरु से ही जानकर करे।)

मन्त्राः	अथ हृदयादिन्यासः	अथ करन्यासः
4 कएईलह्रीं नमः	हृदयाय नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः
4 हसकहलह्रीं नमः	शिरसे स्वाहा	तर्जनीभ्यां नमः
4 सकलह्रीं नमः	शिखायै वषट्	मध्यमाभ्यां नमः
4 कएईलह्रीं नमः	कवचाय हुम्	अनामिकाभ्यां नमः
4 हसकहलह्रीं नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्	कनिष्ठिकाभ्यां नमः
4 सकलह्रीं नमः	अस्त्राय फट्	करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः

ॐ भूर्भुवस्स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्

सिन्धुरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्,
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहां।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।।

(जप आरम्भ करने से पहले और जप करने के बाद जपकर्म के **अंगभूत कुछ मन्त्रों का पाठ करना होता है। वे इस प्रकार हैं–)**

(18.15–1) जपपूर्वांगमन्त्राः

शक्त्युत्थापनमुद्रा से अपने शरीर में शून्यता की भावना कर **'ईं'** इस कामकलामन्त्र के चिन्तनपूर्वक गुरु द्वारा बतायी प्रक्रिया के अनुसार **'ईं'** का अपने आत्मरूपेण परिणाम होने की भावना करे। फिर गुरु, देवता, मन्त्र और अपनी अभेदरूपता का ध्यान करके निम्न विधि का पालन करे–

शिरोमुद्रा से **'4 ह्रीं'** इस महासेतुविद्या से सिर पर न्यास करके हृदय पर हाथ रखकर हृदयमुद्रा से **'4 ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवती स्वाहा'** इस कुल्लुकाविद्या को 3 बार जपे। न्यास मुद्रा से **'4 ॐ'** इस एकाक्षर सेतुमन्त्र से कण्ठ पर न्यास करके कण्ठ के सामने हाथ रखके मृगीमुद्रा से **'4 ह्रीं'** इस महासेतुविद्या को 3 बार जपे। न्यास मुद्रा से **'4 ह्रीं'** इस महासेतुविद्या से नाभि पर न्यास करके नाभि के सामने हाथ रखके मृगीमुद्रा से **'4 अं......क्षं (51) ऐं कएई......(15) ऐं अं.......क्षं (51)'** कुल 121 अक्षरवाले इस निर्वाणमन्त्र को 3 बार जपे। न्यास मुद्रा से **'4 ह्रीं'** इस महासेतुविद्या से नाभि के नीचे पेट पर न्यास करके स्वाधिष्ठान पर **'4 ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं'** इस कामेश्वरी मन्त्र को 3 बार जपे। न्यास मुद्रा से **'4 ह्रीं'** इस महासेतुविद्या से मूलाधार पर न्यास करके मूलाधार पर **'4 ईं'** इस कामकलामन्त्र को 3 बार जपे। ज्ञानमुद्रा में स्थित होकर **'4 समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भ रहस्यातिरहस्यपरापररहस्ययोगिनीभ्यो नमः'** इस समष्टिमन्त्र को 3 बार जपे। ज्ञानमुद्रा में ही स्थित रहकर **'4 ईएकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं'** इस पंचदशाक्षरी के उत्कीलनमन्त्र को 3 बार जपे। संजीविनी देवी का ध्यान कर पंचोपचार पूजा करे–

विद्युदक्षीं परां विद्यां कालिकां देशभाषिणीम्।
खड्गमुण्डविकाराख्यां व्याघ्रचर्मविभूषिताम्।।

रक्तमाल्याम्बरधरां घोररूपां चतुर्भुजाम्।
सिद्ध्यर्थं चिन्तयेद्देवीं सर्वविद्यासंजीविनीम्।।

तत्पश्चात् '**4 श्रीं क्लीं क्लीं हैं हैं कलह्रीं सौः सकलह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं**' इस सप्तदशाक्षरी संजीविनीमन्त्र को 7 बार जपे। '**4 ह्रीं श्रीं हंसः कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं हंसः ह्रीं श्रीं**' इस 23 अक्षरवाले प्राणमन्त्र को 7 बार जपे। '**4 ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं कएईलह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं हसकहलह्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं हकलएह्रीं हकहलह्रीं हएकलह्रीं ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं कहलएह्रीं कहएलह्रीं कहहलह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं हंसः सोऽहं सकलह्रीं**' इस 73 अक्षरवाले दीपिनीमन्त्र को 7 बार जपे। तत्पश्चात् पंचदशीमन्त्र को 3 बार जपे। (सूतक लग जावे तो सूतक निवारण केलिये '**7+15**' को 10 बार जपके इन 6 विघ्नहरमन्त्रों के प्रत्येक मंत्र को तीन तीन बार जपे – '**4 इरि मिलि किरि किलि परिमिरोम्। 4 ॐ ह्रीं नमो भगवति महात्रिपुरभैरवि मम त्रैपुररक्षां कुरु कुरु। 4 संहर संहर विघ्नरक्षो विभीषकान् कालय हुं फट् स्वाहा। 4 ब्लूं रक्ताभ्यो योगिनीभ्यो नमः। 4 सां सारसाय बह्वशनाय नमः। 4 दुं मुं लुं षुं मुं लुं षुं ह्रीं चामुण्डायै नमः।**) (षोडशी उपासकों केलिये उक्त के अलावा निम्न पंचरत्नमन्त्रों को जपना होगा– '**7 ॐ ह्रीं श्रीं हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयूं यरलवक्षमलवरयूं ॐ ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं ॐ**' इस महाकामेश्वरमन्त्र को 10 बार जपे। '**4 श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं**' इसको 3 बार जपे। ' **4 ऐं क्लीं सौः बालायै नमः**' इसको 3 बार जपे। '**4 ऐं क्लीं उच्छिष्टचण्डालि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा**' इसको 3 बार जपे। '**ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं क्रीं श्रीं उग्रतारे सौः क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा**' इसको 3 बार जपे।) सब साधकों के द्वारा इस न्यास को करके ही मन्त्र जपना है–

4 ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भगवती त्रिपुरसुन्दरी स्वाहा – शिरसि, **4 ॐ** – कण्ठे, **4 ह्रीं** – सहस्रारे, **4 औं श्रीं अं ऐं क्लीं सौः अं......क्षं** (51) – नाभौ, **4 क्लीं** – लिंगे, **4 ऐं क्लीं सौः** – जिह्वायाम्।।

(18.15-2) अथ स्वमन्त्रजपः

अब संस्कारित माला से दीक्षा द्वारा प्राप्त तथा संस्कारित व उत्कीलित **अपने मन्त्र** (एकाक्षरी आदि) का संकल्प के अनुसार जप करे।

(18.15-3) जपोत्तरांगमन्त्राः

4 ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः, 4 ऐं क्लीं सौः, 4 ह्रीं क्लीं सौः, 4 हैं ह्क्लीं ह्सौः, 4 ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः, 4 ह्रीं क्लीं ब्लें, 4 ह्रीं श्रीं सौः, 4 ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्सौः, 7+15 – प्रत्येक को 3 – 3 बार जपे। **4 ऐं क्लीं सौःसौः क्लीं ऐं ऐं क्लीं सौः** (श्रियोऽंगबाला), **4 ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णेश्वरि ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा** (श्रिय उपांगमन्नपूर्णा), **4 ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरी स्वाहा** (श्रिय प्रत्यंगमश्वारूढा) –श्री के इनअंगभूत तीनों मन्त्रों को 10–10 बार जपे। तत्पश्चात् सबीज सर्वसंक्षोभिण्यादि मुद्राओं को दर्शाकर प्रार्थना करे–

'गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा।।'

माला को गोमुखी में वापस सुरक्षित रखे –

'त्वं माला सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा।।'

(19) होमः

'यद्यग्निकार्यसंपत्तिः' इस सूत्र के अनुसार होम करने व न करने में विकल्प है, अर्थात् नित्यजप संख्या का दशांश नित्यहोम करने में विकल्प है। यदि नित्य होम करना चाहते हैं अथवा अनुष्ठान के अन्त में होम करना है तो निम्न विधि से होम को महाव्याहृतिहोम के पूर्व तक करके बलिदान दे, तदनन्तर होम का शेष कर्म करे।

पूजामण्डप के ईशान अथवा उत्तर भाग में एक हाथ लम्बा–चौड़ा और चार अंगुल ऊँचा चौकोर स्थण्डिल का निर्माण कर मूलमन्त्रोच्चारण पूर्वक निरीक्षण करे। **'फट्'** मन्त्र से सामान्यार्घ्यपात्र के जल से प्रोक्षण कर कुशा से ताडन करे। **'हुम्'** से अवगुण्ठन करे। स्थण्डिल पर क्रमशः

पूर्वाग्र तीन रेखा खींचे और उन पर उत्तराग्र क्रमशः मध्य, पश्चिम और पूर्व में तीन रेखा खीचें। उन रेखाओं पर लेखन क्रम से गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे - 7 **ब्रह्मणे नमः**, 7 **यमाय नमः**, 7 **सोमाय नमः**, 7 **रुद्राय नमः**, 7 **विष्णवे नमः**, 7 **इन्द्राय नमः**।। इसके बाद अपने शरीर में षडंगन्यास करे- 7 **सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः**, 7 **स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा**, 7 **उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्**, 7 **धूमव्यापिने कवचाय हुम्**, 7 **सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्**, 7 **धनुर्धराय अस्त्राय फट्**।। अब स्थण्डिल की क्रमशः गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे - 7 **सहस्रार्चिषे नमः** - आग्नेय, 7 **स्वस्तिपूर्णाय नमः** - ईशान, 7 **उत्तिष्ठपुरुषाय नमः** - नैर्ऋत्य, 7 **धूमव्यापिने नमः** - वायव्य, 7 **सप्तजिह्वाय नमः** - मध्य और 7 **धनुर्धराय नमः** - सर्वदिशा। स्थण्डिल पर अष्टकोणषट्कोण त्रिकोणात्मक अग्निचक्र को प्रवेशद्वार के अनुसार लिखे और त्रिकोण में अष्टदिक् की भावना कर प्रदक्षिणा के क्रम से पीठशक्तियों की पूजा करे - 7 **पीतायै नमः**, 7 **श्वेतायै नमः**, 7 **अरुणायै नमः**, 7 **कृष्णायै नमः**, 7 **धूम्रायै नमः**, 7 **तीव्रायै नमः**, 7 **स्फुलिंगिन्यै नमः**, 7 **रुचिरायै नमः**, 7 **ज्वालिन्यै नमः**। (पीठ के बीच में -) 7 **तं तमसे नमः**, 7 **रं रजसे नमः**, 7 **सं सत्त्वाय नमः**, 7 **आं आत्मने नमः**, 7 **अं अन्तरात्मने नमः**, 7 **पं परमात्मने नमः**, 7 **ह्रीं ज्ञानात्मने नमः**। (त्रिकोण में -) 7 **ॐ ह्रीं वागीश्वरीवागीश्वराभ्यां नमः** (इस मन्त्र से वागीश्वरी और वागीश्वर में उत्पन्न होनेवाली अग्नि के माता-पिता की भावना करते हुये पूजा करके स्थण्डिल के बाहर आग्नेय, ईशान अथवा नैर्ऋत्य दिशा में अरणि अथवा सूर्यकान्तमणि से अग्नि को उत्पन्न करे अथवा द्विज के घर से ताम्रपात्र में लाकर रखे)। **अग्नि कर्मप्रकरण** (पृष्ठसंख्या 54-70) में उक्त विधि से अग्नि के संस्कार व अंगभूतकर्म को करे। **तत्र विशेषः** - उस अग्नि से क्रव्यादांश के रूप में एक अंगारे को अलगकर '**फट्**' मन्त्र से नैर्ऋत्य दिशा में फेंके। अग्नि को '**मूलमन्त्र**' से निरीक्षण कर '**ॐ सुदर्शनायास्त्रराजाय फट्**' मन्त्र से कुशाओं से अग्नि का ताड़न कर अवगुण्ठन करे। धेनु

और योनिमुद्रा दर्शाकर अग्निदेवता का आवाहन करे – '**7 रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा**' और स्वमूलाधार में विद्यमान संविदग्नि को नेत्रद्वारा वागीश्वर के बीज को वागीश्वरी की योनि में प्रवेश होने की भावना कर बाह्य अग्नि में स्थापित करे। तत्पश्चात् '**7 कवचाय हुम्**' मन्त्र से समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त करे। अग्नि का उपस्थान करे–

7 अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतो मुखम्।।

और उत्थापन करे – '**7 उत्तिष्ठ पुरुष हरितपिंगल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा**'। अब ताम्रपात्रस्थ उस अग्नि को '**ॐ ह्रीं**' मन्त्र से स्थण्डिल के ऊपर तीन बार घुमाकर अग्नि को पात्र से स्थण्डिल पर रखे। '**7 चित्पिंगल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञपय स्वाहा**' से समिधायें डालकर अग्नि को प्रदीप्त कर ज्वालिनीमुद्रा दर्शाये। तत्पश्चात् अग्नि के गर्भाधान से विवाह पर्यन्त संस्कारों (पृष्ठसंख्या 60–62) की भावना करते हुये अक्षत को अग्नि में निम्न विधि से अर्पण करे – '**7 ऐं नमः अस्याग्नेः गर्भाधानकर्म, पुंसवनकर्म, सीमन्तोन्नयनकर्म, जातकर्म, ललितानिरिति नाम्ना नामकरणकर्म कल्पयामि नमः। 7 ऐं नमः अस्य ललिताग्नेः अन्नप्राशनकर्म, चौलकर्म, उपनयनकर्म, गोदानकर्म, विवाहकर्म कल्पयामि नमः।**' तदनन्तर सामान्यार्घ्यपात्रस्थ जल से मूल–मन्त्रोच्चारणपूर्वक अग्नि का परिसेचन कर अग्नि के अलंकारार्थ आज्याहुति देके कुशाओं से आस्तरण कर्म करे। परिधियों से परिधान कर वैश्वानर अग्नि के विराजमान होने की भावना करे –

'त्रिनयनमरुणाप्तं बद्धमौलिं सुशुक्लां,
शुक्रमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम्।
अभिमतवरशक्तिं स्वस्तिकाभीतिहस्तं,
नमस्ते कनकमालालंकृतांसं कृशानुम्।।'

8 कोणों में प्रदक्षिणा क्रम से आज्याहुति दे– '**7 जातवेदसे नमः, 7**

सप्तजिह्वाय नमः, 7 हव्यवाहनाय नमः, 7 अश्वोदराय नमः, 7 वैश्वानराय नमः, 7 कौमारतेजसे नमः, 7 विश्वमुखाय नमः, 7 देवमुखाय नमः।'

पुनः अक्षतों से षट्कोण में षडंगन्यास करे -

'7 सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः, 7 स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा, 7 उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्, 7 धूमव्यापिने कवचाय हुम्, 7 सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्, 7 धनुर्धराय अस्त्राय फट्।।'

पुष्पाक्षत से अग्नि की पूजा करे - **'7 रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा।'** अग्नि की सात जिह्वाओं में आज्याहुति दें- **'7 हिरण्यायै नमः हिरण्याय इदं न मम स्वाहा** - ईशाने, 7 **कनकायै नमः कनकाया इदं न मम स्वाहा** - पूर्वे, 7 **रक्तायै नमः रक्ताया इदं न मम स्वाहा** - आग्नेये, 7 **कृष्णायै नमः कृष्णाया इदं न मम स्वाहा** - नैर्ऋत्ये, 7 **सुप्रभायै नमः सुप्रभाया इदं न मम स्वाहा** - पश्चिमे, 7 **अतिरिक्तायै नमः अतिरिक्ताया इदं न मम स्वाहा** - वायव्ये, 7 **बहुरूपायै नमः बहुरूपाया इदं न मम स्वाहा** - मध्ये। तीन विशेष आहुति दे- **'7 रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा अग्नये इदं न मम स्वाहा, 7 उत्तिष्ठपुरुष हरितपिंगल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा अग्नये इदं न मम स्वाहा, 7 चित्पिंगल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञपय स्वाहा अग्नये इदं न मम स्वाहा।'** अग्नि के मध्य भाग में स्थित बहुरूपानामक जिह्वा में देवी का आवाहन करे-

'4 ह्स्रैं हसकलरीं ह्स्रौः । महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि।।'

पंचोपचार पूजा करे -

लं पृथिवीतत्त्वात्मिकायै गन्धं समर्पयामि तर्पयामि नमः,
हं आकाशतत्त्वात्मिकायै पुष्पं समर्पयामि तर्पयामि नमः,
यं वायुतत्त्वात्मिकायै धूपं समर्पयामि तर्पयामि नमः,

रं अग्नितत्त्वात्मिकायै दीपं समर्पयामि तर्पयामि नमः,
वं अमृततत्त्वात्मिकायै नैवेद्यं समर्पयामि तर्पयामि नमः,
सं सर्वतत्त्वात्मिकायै सर्वोपचारपूजार्थं अक्षतान्समर्पयामि तर्पयामि नमः।

अब होम आरम्भ करे-

4 गं महागणपतये नमः स्वाहा (3 बार),
7 श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः स्वाहा (10 बार),
(अब एक एक बार-) 4 कएईलह्रीं हृदयाय नमः हृदयदेव्यै नमः स्वाहा, 4 हसकहलह्रीं शिरसे स्वाहा शिरोदेव्यै नमः स्वाहा, 4 सकलह्रीं शिखायै वषट् शिखादेव्यै नमः स्वाहा, 4 कएईलह्रीं कवचाय हुम् कवचदेव्यै नमः स्वाहा, 4 हसकहलह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयदेव्यै नमः स्वाहा, 4 सकलह्रीं अस्त्राय फट् अस्त्रदेव्यै नमः स्वाहा। 4 अः कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं अः श्री ललितामहानित्यायै नमः स्वाहा (-3 बार, बाकि सब एक बार-) 4 अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगवशंकरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं भं ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्यायै नमः स्वाहा, 4 ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै नमः स्वाहा, 4 उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 ॠं ॐ ह्रीं हुं खे चे छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्यायै नमः स्वाहा, 4 ऌं ऐं क्लीं सौः ऌं कुलसुन्दरीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 ॡं हसकलरडैं हसकलरडीं

हसकलरडौः लृं नित्यानित्यायै नमः स्वाहा, 4 एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्यायै नमः स्वाहा, 4 ऐं भमरयूं ऐं विजयानित्यायै नमः स्वाहा, 4 ओं स्वौं ओं सर्वमंगलानित्यायै नमः स्वाहा, 4 औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं रं रं रं रं रं रं रं हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 अं चक्रौं अं चित्रानित्यायै नमः स्वाहा, 4 अः 15 अः ललितामहानित्यायै नमः स्वाहा।

(यह शुक्लपक्ष में हवन करने का क्रम है। कृष्णपक्ष में इसके विपरीत क्रम से हवन करना है।)

4 परौघेभ्यो नमः स्वाहा।

4 ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्द नाथात्मकचर्यानन्दनाथाय स्वाहा।

4 उड्डीशानन्दनाथाय स्वाहा। 4 प्रकाशानन्दनाथाय स्वाहा।

4 विमर्शानन्दनाथाय स्वाहा। 4 आनन्दानन्दनाथाय स्वाहा।

4 षष्ठीषानन्दनाथाय स्वाहा। 4 ज्ञानानन्दनाथाय स्वाहा।

4 सत्यानन्दनाथाय स्वाहा। 4 पूर्णा नन्दनाथाय स्वाहा।

4 मित्रेशानन्दनाथाय स्वाहा। 4 स्वभावानन्दनाथाय स्वाहा।

4 प्रतिभानन्दनाथाय स्वाहा। 4 सुभगानन्दनाथाय स्वाहा।

4 दिव्यौघसिद्धौघमानवौघेभ्यो स्वाहा।

4 परप्रकाशानन्दनाथाय स्वाहा। 4 परशिवानन्दनाथाय स्वाहा।

4 पराशक्त्यम्बानन्दनाथाय स्वाहा। 4 कौलेश्वरानन्दनाथाय स्वाहा।

4 शुक्लदेव्यम्बानन्दनाथाय स्वाहा। 4 कुलेश्वरानन्द नाथाय स्वाहा।

4 कामेश्वर्यम्बानन्दनाथाय स्वाहा। 4 भोगसमयानन्दनाथाय नमः।

4 क्लिन्नसमयानन्दनाथाय स्वाहा।

4 संयमसमयानन्दनाथाय स्वाहा। 4 सहजसमयानन्दनाथाय स्वाहा।

4 गगनानन्दनाथाय स्वाहा। 4 विश्वानन्दनाथाय स्वाहा।

4 विमलानन्दनाथाय स्वाहा। 4 मदनानन्दनाथाय स्वाहा।

4 भुवनानन्दनाथाय स्वाहा। 4 लीलाम्बानन्दनाथाय स्वाहा।
4 स्वात्मानन्दनाथाय स्वाहा। 4 प्रियानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वात्माराम पंजरविलीनचेतस्क अमुकश्रीपरमेष्ठिगुरवे **स्वाहा।**
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतुअमुकश्रीपरमगुरवे **स्वाहा।**
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वरूपनिरूपणहेतुअमुकश्रीगुरवे **स्वाहा।** (गुरु, परमगुरु और परमेष्ठि गुरु यदि गृहस्थ हो तो उनकी पत्नी का नाम भी लेना चाहिये- अमुकाम्बा **सहितामुकश्री**)।
4 अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः स्वाहा। 4 अं अणिमासिद्ध्यै स्वाहा। 4 लं लघिमासिद्ध्यै स्वाहा। 4 मं महिमासिद्ध्यै स्वाहा। 4 ईं ईशित्वसिद्ध्यै स्वाहा। 4 वं वशित्वसिद्ध्यै स्वाहा। 4 पं प्राकाम्यसिद्ध्यै स्वाहा। 4 गं गरिमासिद्ध्यै स्वाहा। 4 भुं भुक्ति-सिद्ध्यै स्वाहा। 4 पं प्राप्तिसिद्ध्यै स्वाहा। 4 इं इच्छासिद्ध्यै स्वाहा। 4 अं अनघासिद्ध्यै स्वाहा। 4 सं सर्वकामसिद्ध्यै स्वाहा। 4 आं आकृतिसिद्ध्यै स्वाहा। 4 आं ब्राह्मीमातृकायै स्वाहा। 4 ईं माहेश्वरी-मातृकायै स्वाहा। 4 लूं वाराहीमातृकायै स्वाहा। 4 ऐं माहेन्द्री (इन्द्राणी) मातृकायै स्वाहा। 4 ऊं कौमारीमातृकायै स्वाहा। 4 ॠं वैष्णवीमातृकायै स्वाहा। 4 औं चामुण्डामातृकायै स्वाहा। 4 महालक्ष्मीमातृकायै स्वाहा। 4 आं ब्राह्मीमातृकाविद्यायुधायै स्वाहा। 4 ईं माहेश्वरीमातृकाशूलायुधायै स्वाहा। 4 लूं वाराहीमातृका-शक्त्यायुधायै स्वाहा। 4 ऐं माहेन्द्री (इन्द्राणी) मातृकाचक्रायुधायै स्वाहा। 4 ऊं कौमारी मातृकांकुशायुधायै स्वाहा। 4 ॠं वैष्णवी-मातृकावज्रायुधायै स्वाहा। 4 औं चामुण्डामातृकादण्डायुधायै स्वाहा। 4 महालक्ष्मीमातृकापद्मायुधायै स्वाहा। 4 द्रां सर्वसंक्षो-भिणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 ब्लूं सर्ववशंकरी-

मुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 क्रों सर्वमहांकुशामुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 हसकफ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 ह्सौः सर्वबीजमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 हस्रैं हसकलरीं हस्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 अं अणिमासिद्ध्यै स्वाहा। 4 द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 त्रिवर्गसाधकचक्राय स्वाहा। 4 कं कालरात्र्यै स्वाहा। 4 खं खण्डितायै स्वाहा। 4 गं गायत्र्यै स्वाहा। 4 घं घण्टाकर्षिण्यै स्वाहा। 4 ङं ङार्णायै स्वाहा। 4 चं चण्डायै स्वाहा। 4 छं छायायै स्वाहा। 4 जं जयायै स्वाहा। 4 झं झंकारिण्यै स्वाहा। 4 ञं ज्ञानरूपायै स्वाहा। 4 टं टंकहस्तायै स्वाहा। 4 ठं ठंकारिण्यै स्वाहा। 4 डं डामर्यै स्वाहा। 4 ढं ढंकारिण्यै स्वाहा। 4 णं णार्णायै स्वाहा। 4 तं तामस्यै स्वाहा। 4 थं स्थाण्व्यै स्वाहा। 4 दं दाक्षायण्यै स्वाहा। 4 धं धात्र्यै स्वाहा। 4 नं नार्यै स्वाहा। 4 पं पार्वत्यै स्वाहा। 4 फं फट्कारिण्यै स्वाहा। 4 बं बन्धिन्यै स्वाहा। 4 भं भद्रकाल्यै स्वाहा। 4 मं महामायायै स्वाहा। 4 यं यशस्विन्यै स्वाहा। 4 रं रक्ताश्रियै स्वाहा। 4 लं लम्बोष्ठ्यै स्वाहा। 4 वं वरदायै स्वाहा। 4 शं श्रियै स्वाहा। 4 षं षण्डायै स्वाहा। 4 सं सरस्वत्यै स्वाहा। 4 हं हंसवत्यै स्वाहा। 4 क्षं क्षमावत्यै स्वाहा। 4 अं अमृत्यै स्वाहा। 4 आं आकर्षिण्यै स्वाहा। 4 इं इन्द्राण्यै स्वाहा। 4 ईं ईशान्यै स्वाहा। 4 उं उमायै स्वाहा। 4 ऊं ऊर्ध्वकेश्यै स्वाहा। 4 ऋं ऋद्धिदायै स्वाहा। 4 ॠं ॠकारायै स्वाहा। 4 ऌं ऌकारायै स्वाहा। 4 ॡं ॡकारायै स्वाहा। 4 एं एपदायै स्वाहा। 4 ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै स्वाहा। 4 ओं ओंकारायै स्वाहा। 4 औं औषध्यै स्वाहा। 4 अं अम्बिकायै स्वाहा। 4 अः अक्षरायै स्वाहा। 4 अं कामेश्वर्यै स्वाहा। 4 आं भगमालिन्यै स्वाहा। 4 इं नित्यक्लिन्नायै स्वाहा। 4 ईं भेरुण्डायै स्वाहा। 4 उं वह्निवासिन्यै स्वाहा। 4 ऊं महावज्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 ऋं शिवदूत्यै स्वाहा। 4 ॠं त्वरितायै स्वाहा। 4 ऌं कुलसुन्दर्यै स्वाहा। 4 ॡं नित्यानित्यायै स्वाहा। 4 एं

नीलपताकायै स्वाहा। 4 ऐं विजयायै स्वाहा। 4 ओं सर्वमंगलायै स्वाहा। 4 औं ज्वालामालिन्यै स्वाहा। 4 अं चित्रायै स्वाहा। 4 अः ललितामहानित्यायै स्वाहा। 4 कं कामेश्वर्यै स्वाहा। 4 खं त्रिपुरेशिनीचक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 गं गरिमासिद्ध्यै स्वाहा। 4 ऐं महायोनिमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 प्रथमावरणांगदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै स्वाहा। 7 सर्वा-शापरिपूरकचक्राय स्वाहा। 4 अं कामाकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 आं बुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 इं अहंकाराकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 ईं शब्दाकर्षिणी-नित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 उं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 ऊं रूपाकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 ऋं रसाकर्षिणी-नित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 ॠं गन्धाकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 लृं चित्ताकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 ॡं धैर्याकर्षिणी-नित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 एं स्मृत्याकर्षिणी नित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 ऐं नामाकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 ओं बीजाकर्षिणी नित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 औं आत्माकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 अं अमृताकर्षिणीनित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 अः शरीराकर्षिणी-नित्याकलादेव्यै स्वाहा। 4 त्रिपुरेशीचक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 लं लघिमासिद्ध्यै स्वाहा। 4 द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 गुप्तयोगिनीमयूखायै द्वितीयावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिकायै स्वाहा। 4 ह्रीं क्लीं सौः सर्व-संक्षोभणचक्राय स्वाहा। 4 कं खं गं घं ङं अनंगकुसुमादेव्यै स्वाहा। 4 चं छं जं झं ञं अनंगमेखलादेव्यै स्वाहा। 4 टं ठं डं ढं णं अनंगमदनादेव्यै स्वाहा। 4 तं थं दं धं नं अनंगमदनातुरादेव्यै स्वाहा। 4 पं फं बं भं मं अनंगरेखादेव्यै स्वाहा। 4 यं रं लं वं अनंगवेगिनीदेव्यै स्वाहा। 4 शं षं सं हं अनंगांकुशादेव्यै स्वाहा। 4 ळं क्षं अनंग-मालिनीदेव्यै स्वाहा। 4 त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 मं महिमासिद्ध्यै स्वाहा। 4 क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4

गुप्ततरयोगिनीमयूखायै तृतीयावरणदेवतासहितायै श्रीललिता–महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै स्वाहा। 4 हैं हक्लीं हसौः सर्वसौभाग्य दायकचक्राय स्वाहा। 4 कं सर्वसंक्षोभिणीशक्त्यै स्वाहा। 4 खं सर्वविद्राविणीशक्त्यै स्वाहा। 4 गं सर्वाकर्षिणीशक्त्यै स्वाहा। 4 घं सर्वाह्लादिनीशक्त्यै स्वाहा। 4 ङं सर्वसम्मोहिनीशक्त्यै स्वाहा। 4 चं सर्वस्तम्भिनीशक्त्यै स्वाहा। 4 छं सर्वजृम्भिणीशक्त्यै स्वाहा। 4 जं सर्ववशंकरीशक्त्यै स्वाहा। 4 झं सर्वरंजनीशक्त्यै स्वाहा। 4 ञं सर्वोन्मादिनीशक्त्यै स्वाहा। 4 टं सर्वार्थसाधिनीशक्त्यै स्वाहा। 4 ठं सर्वसंपत्तिकरणीशक्त्यै स्वाहा। 4 डं सर्वमन्त्रमयीशक्त्यै स्वाहा। 4 ढं सर्वद्वन्द्वक्षयंकरीशक्त्यै स्वाहा। 4 हैं हक्लीं हसौः त्रिपुरवासिनी–चक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 ईं ईशित्वसिद्ध्यै स्वाहा। 4 ब्लूं सर्ववशंकरी–मुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 संप्रदाययोगिनीमयूखायै चतुर्थावरणदेवता–सहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै स्वाहा। 4 हसैं हसक्लीं हससौः सर्वार्थसाधकचक्राय स्वाहा। 4 णं सर्वसिद्धि–प्रदादेव्यै स्वाहा। 4 तं सर्वसम्पत्प्रदादेव्यै स्वाहा। 4 थं सर्वप्रियंकरी–देव्यै स्वाहा। 4 दं सर्वमंगलकारिणीदेव्यै स्वाहा। 4 धं सर्वकाम–प्रदादेव्यै स्वाहा। 4 नं सर्वदुःखविमोचिनीदेव्यै स्वाहा। 4 पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेव्यै स्वाहा। 4 फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेव्यै स्वाहा। 4 बं सर्वांगसुन्दरीदेव्यै स्वाहा। 4 भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेव्यै स्वाहा। 4 मं सर्वज्ञादेव्यै स्वाहा। 4 यं सर्वशक्तिदेव्यै स्वाहा। 4 रं सर्वैश्वर्यप्रदादेव्यै स्वाहा। 4 लं सर्वज्ञानमयीदेव्यै स्वाहा। 4 वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेव्यै स्वाहा। 4 शं सर्वाधारस्वरूपादेव्यै स्वाहा। 4 षं सर्वपापहरादेव्यै स्वाहा। 4 सं सर्वानन्दमयीदेव्यै स्वाहा। 4 हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेव्यै स्वाहा। 4 क्षं सर्वेप्सितफलप्रदादेव्यै स्वाहा। 4 ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 पं प्राकाम्यसिद्ध्यै स्वाहा। 4 क्रों सर्वमहांकुशामुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 निगर्भयोगिनी–मयूखायै षष्ठावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी–पराभट्टारिकायै स्वाहा। 4 ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय स्वाहा। 4

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै स्वाहा। 4 कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवतायै स्वाहा। 4 चं छं जं झं ञं न्ब्लीं मोदिनीवाग्देवतायै स्वाहा। 4 टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै स्वाहा। 4 तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै स्वाहा। 4 पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै स्वाहा। 4 यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै स्वाहा। 4 शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवतायै स्वाहा। 4 ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 भुं भुक्तिसिद्ध्यै स्वाहा। 4 ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 रहस्ययोगिनीमयूखायै सप्तमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टा-रिकायै स्वाहा। 4 यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः कामेश्वरकामेश्वरीजृम्भणबाणेभ्यो नमः बाणशक्त्यै स्वाहा। 4 थं धं कामेश्वरकामेश्वरीसंमोहिनिधनुर्भ्यो नमः धनुश्शक्त्यै स्वाहा। 4 ह्रीं आं कामेश्वरकामेश्वरीवशीकरणपाशेभ्यो नमः पाशशक्त्यै स्वाहा। 4 क्रों क्रों कामेश्वरकामेश्वरीस्तम्भनांकुशेभ्यो नमः अंकुशशक्त्यै स्वाहा। 4 ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय स्वाहा। 4 ऐं कएईलह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथनवयो-निचक्रात्मक आत्मतत्त्वसृष्टिकृत्य जाग्रद्दशाधिष्ठायक इच्छाशक्ति वाग्भवात्मक वागीश्वरीस्वरूपरुद्रात्मशक्तिमहाकामेश्वर्यै स्वाहा। 4 क्लीं हसकहलह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ दशारद्वय चतुर्दशारचक्रात्मकविद्यातत्त्वस्थितिकृत्यस्वप्नदशाधिष्ठायक ज्ञानशक्तिकामराजात्मककामकलास्वरूपविष्णवात्मशक्ति महावज्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 सौः सकलह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ अष्टदलषोडशदलचतुरस्रचक्रात्मकशिवतत्त्व संहारकृत्य सुषुप्तिदशाधिष्ठायकक्रियाशक्तिशक्तिबीजात्मकपरापरशक्ति-स्वरूपब्रह्मात्मशक्तिमहाभगमालिन्यै स्वाहा। 4 ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्यानपीठे चर्यानन्दनाथ-समस्तचक्रात्मकसपरिवारपरमतत्त्व सृष्टिस्थितिसंहारकृत्य तुरीय-

दशाधिष्ठायक इच्छाज्ञानक्रियाशान्ताशक्ति वाग्भवकामराज-शक्तिबीजात्मक परमशक्तिस्वरूप ब्रह्मात्मशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा। 4 ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 इं इच्छासिद्ध्यै स्वाहा। 4 ह्सौः सर्वबीजमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 अतिरहस्ययोगिनी-मयूखायै अष्टमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिकायै स्वाहा। 4 कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सर्वानन्दमयचक्राय स्वाहा। 4+15 श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिकायै स्वाहा। 4 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै स्वाहा। 4 श्रीललिताम्बायै स्वाहा। 4 सर्वमन्त्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 सर्वपीठेश्वर्यै स्वाहा। 4 सर्वविद्येश्वर्यै स्वाहा। 4 सर्ववागीश्वर्यै स्वाहा। 4 सर्वयोगीश्वर्यै स्वाहा। 4 सर्वसिद्धेश्वर्यै स्वाहा। 4 सर्वतत्त्वेश्वर्यै स्वाहा। 4 आम्नायदेवतायै स्वाहा। 4 ज्ञानाम्बायै स्वाहा। 4 अन्नपूर्णेश्वर्यै स्वाहा। 4 पंचरत्नेश्वर्यै स्वाहा। 4 षड्दर्शनदेवतेश्वर्यै स्वाहा। 4 सकलजगदुत्पत्तिश्रीमातृकायै स्वाहा। 4 +15 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै स्वाहा। 4 पं प्राप्तिसिद्ध्यै स्वाहा। 4 ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 परापरा-तिरहस्ययोगिनीमयूखायै नवमावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै स्वाहा।

(षोडशी उपासकों केलिये विशेष – **4 तुरीयाविद्यात्मिकातुरीयाम्बायै स्वाहा। 4 सं सर्वकामसिद्ध्यै स्वाहा। 4 ह्स्रैं हसकलरीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै स्वाहा। 4 महाषोडशी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पराभट्टारिकायै स्वाहा।**)

होम करने के बाद पुष्प फल सहित बचे हुये आज्य से स्रुवापात्र को भरकर स्रुवा से ढकके अग्नि के ऊपर पकड़े हुये खड़े होकर आहुति दे- **ॐ ऐं ह्रीं रीं ऐं क्लीं सौः वौषट्**। तत्पश्चात् पृष्ठ संख्या 266 में बतायी हुयी विधि से **बलिदान** दे। उसके बाद महाव्याहृतिहोम केवल आज्य से करे- **7 भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा, अग्नये च पृथिव्यै च महत इदं न मम स्वाहा। 7 भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च**

महते च स्वाहा, वायवे चान्तरिक्षाय च महत इदं न मम स्वाहा। 7 स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा, आदित्याय च दिवे च महत इदं न मम स्वाहा। 7 भूर्भुवः स्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा, चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महत इदं न मम स्वाहा। (ब्रह्मार्पण आहुति दे–) **4 ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यत्कृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा, परब्रह्मण इदं न मम स्वाहा।** (प्रायश्चित्त आहुति दे–) **अस्मिन्ललिताहोमकर्मणि मध्ये संभावितसमस्तमन्त्रलोप तन्त्रलोपद्रव्यलोपक्रियालोपाज्यलोपन्यूनातिरेकविस्मृतिविपर्यास प्रायश्चित्तार्थं सर्वप्रायश्चित्तं होष्यामि ॐ भूर्भुवस्स्वः प्रजापतये स्वाहा** (इति मनसा), **प्रजापतये इदं न मम स्वाहा** (इति मनसा)**। ॐ श्री विष्णवे नमः स्वाहा, विष्णवे इदं न मम स्वाहा। ॐ नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम स्वाहा।** (जल का स्पर्श करे और अग्नि देवता केलिये विशेष आहुति दे–) **4 सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धामप्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति योनिरापृणस्व घृतेन स्वाहा।।अग्नये सप्तवत इदं न मम स्वाहा।** (अब आज्यादि पात्रों को उत्तरदिशा में रख दें और 3 बार प्राणायाम करे। अग्नि का परिसिंचन करे–) **अदिते-ऽन्वमंस्थाः, अनुमतेऽन्वमंस्थाः, सरस्वतेऽन्वमंस्थाः, देव सवितः प्रासावीः।** (प्रणीता पात्र को अपने सामने रखकर–) **पूर्णमसि पूर्णं मे भूयाः, सदसि सन्मे भूयाः, सर्वमसि सर्वं मे भूयाः।** (अन्य जल को उसमें मिलाकर पूर्वादि दिशा से प्रदक्षिणा लगाते हुये निम्न मन्त्र का पाठ करते हुये जल को स्थण्डिल के चारों ओर गिराते जाये। पूर्वदिशा में–) **देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्।** (दक्षिणदिशा में–) **मासाः पितरो मार्जयन्ताम्।** (पश्चिमदिशा में–) **गृहाः पशवो मार्जयन्ताम्।** (उत्तरदिशा में–) **आप ओषधयो मार्जयन्ताम्।** (ऊर्ध्वदिशा में यानि ईशान कोण में–) **यज्ञः संवत्सरो यज्ञपतिर्मार्जयन्ताम्।** (थोड़ा अपने ऊपर प्रोक्षण

कर ले और शेष जल को अपने सामने गिरावे-) **ब्राह्मणे वामृतं हितं येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा तेन सहस्रधारेण पावमान्यः पुनन्तु माम्।** (परिस्तरण कुशाओं को हटाकर उत्तरदिशा में फेंके और **आरती** करके **नैवेद्य** अर्पण करने के बाद अग्नि का उद्वास करने हेतु प्रार्थना करे-)

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।। (उद्वास करे-)
उपावरोह जातवेदः पुनस्त्वं देवेभ्यो हव्यं वह नः प्रजानन्।
आयुः प्रजां रयिमस्मासु धेहि अजस्रोः दीदिहि नो दुरोणे।।

(ललिताग्नि को अपनी चिदग्नि में विलीन करने की भावना कर हृदय पर हाथ रखे-) **ललिताग्निमात्मन्युद्वास्यामि नमः।** (स्रुवा से थोड़ा भस्म लेकर अपने को व अन्यों को तिलक लगाये - ललाट, कण्ठ, भुजा और हृदय पर लगाये-) **त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषम्। तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।**

20. क्षमाप्रार्थना

न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं,
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणं।।1।।

विधेरज्ञानेन द्रविण - विरहेणालसतया,
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।2।।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः,
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।3।।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।4।।

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया,
मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता,
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणं।।5।।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा,
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं,
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।।6।।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो,
जटाधारी कंठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं,
भवानि त्वत्पाणिग्रहण परिपाटीफलमिदं।।7।।

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववांछापि च न मे,
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै,
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।।8।।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः,
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे,
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।।9।।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं,
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः,
क्षुधातृशार्ता जननीं स्मरन्ति।।10।।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं,
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं,
न हि माता समुपेक्षते सुतं।।11।।

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।12।।

21. सुवासिनीपूजनम्

निमन्त्रण देकर बुलायी गयी गौरीरूपिणी दीक्षाप्राप्त सुवासिनी के चरणों को धोकर आसन पर बिठाये। (यदि वह दीक्षाप्राप्त सुवासिनी नहीं है तो इस शोधन विधि को करे - **7 त्रिपुरायै नमः इमां शक्तिं पवित्रां कुरु कुरु मम शक्तिं कुरु कुरु स्वाहा**। इस अभिषेकमन्त्र से सामान्यार्घ्यपात्र के जल से तीन बार प्रोक्षण करे और कहे -

ॐ शान्तिरस्तु शिवं चास्तु प्रणश्यत्वशुभं च यत्,
यत एव आगतं पापं तत्रैव निगच्छतु।

अब उसके कान में '**ह्रीं**' को 3 बार जपे।) अब उसमें साक्षात् देवी की भावना करके - '**7 शक्त्यै अमुकं कल्पयामि समर्पयामि नमः**' मन्त्र से हल्दी, कुंकुम, चन्दन, पट्टवासः, वस्त्र, आभूषण (संभव हो तो), पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल आदि देने के बाद खड़े होकर उसके हाथ में मूलमन्त्र से पुष्पांजलि समर्पण करे। तत्पश्चात् बैठके क्षीरपात्र लेकर गुरु परम्परा के अनुसार दाहिने हाथ में तर्पण दे और बायें हाथ में जल देकर अनुमति ले '**होष्यामि**', जवाब में सुवासिनी कहे - '**जुहोधि**'। तब उपासक कहे- '**7+15 सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः**

स्वाहा', सुवासिनी स्वीकार करे। (यदि सुवासिनी अदीक्षिता है तो उपासक केवल बाला का ही प्रयोग करे)। पुनः पूर्ववत् क्षीरपात्र को लेकर

अलिपात्रमिदं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम्।
स्वीकृत्य सुभगे देवि यशो देहि रिपून् दह।।

4 इदं पवित्रममृतं।' सुवासिनी के हाथ में दे। भोजन कराके दक्षिणा, ताम्बूलादि देकर सन्तुष्ट करके विदा करे।

22. तत्त्वशोधनम्-श्रीगुरुस्तोत्रम्

षडंगदेवतां नित्यां दिव्याद्योघत्रयीगुरून्।
नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः।।
4 अमुकानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः।
4 अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे।।
4 अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने।
यदिदं गुरुस्तोत्रं स्वस्वरूपोपलक्षणं।।
बालभावानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम्।
मातृवात्सल्यसदृशं त्वया देवि विधीयताम्।।

यदि श्रीगुरुदेव पूजा स्थल में हैं तो उनका और यदि गुरु उपस्थित नहीं है तो समुपस्थित पंचदशी अथवा षोडशी साधक की पादुका मन्त्र से पूजा करे और गुरु केलिये जो पात्र आसादन किये गये थे उन्हें उनके हाथ में दे। उनके हस्तप्रक्षालन कराके '**7 शक्त्यै समर्पयामि नमः**' मन्त्र से 3 बार पुष्पांजलि देकर पुनः इस मन्त्र से पुष्पांजलि दे – '**4 समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलकौलनिगर्भरहस्यातिरहस्य-योगिनीश्रीपादुकाभ्यो नमः।**' पुनः पात्र को लेकर आचमन मन्त्रों से तत्त्वशोधन करे- **7 कएईलह्रीं प्रकृत्यहंकारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुः-श्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाका-शवायुवह्निसलिलभूम्यात्मना अं... अः(16) 4 कएईलह्रीं आत्म-तत्त्वेनाणवमलशोधनार्थं स्थूलदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। आत्मा मे शुध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा। 7**

हसकहलह्रीं मायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मना कं........मं (25) 4 हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वेन कार्मिकमलशोधनार्थं सूक्ष्मदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। अन्तरात्मा मे शुध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा। 7 सकलह्रीं शिवशक्तिसदाशिवेश्वर-शुद्धविद्यात्मना यं... क्षं (9) 4 सकलह्रीं शिवतत्त्वेन मायिकमल-शोधनार्थं कारणदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। परमात्मा मे शुध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा। 7+15 प्रकृत्य-हंकारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षु:श्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थ-शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूमिमायाकलाविद्या-रागकालनियतिपुरुषशिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना अं आं ....ळं क्षं (50)+15 सर्वतत्त्वेन सर्वदेहं सर्वदेहाभिमानिनं जीवात्मानं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। ज्ञानात्मा मे शुध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।। [बाला उपासक एक ही पात्र से चारों तत्त्वशोधन करे किन्तु पंचदशी उपासक चार पात्र से चारतत्त्वशोधन करे। षोडशी व पूर्णाभिषिक्त उपासक 3 बीजपुट से 3 तत्त्व का और समग्रमूल से सर्वतत्त्व का शोधन करे। 4 तत्त्वशोधन केलिये 4 पात्र ग्रहण करने के अलावा पंचमपात्र से –

7 पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

4 आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। ओमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।]

(उपस्थित गुरु अथवा साधक से अनुमति लेकर होम की भावना से अपनी चिदग्नि में हवन करे। उसके बाद पात्र को धोकर उसमें पुष्पाक्षत डाल कर –) **4 देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।**
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पात्रं पूर्णतरं कुरु।।

(गुरु अथवा साधक के हाथ में समर्पित करे।)

23. पूजासमर्पणम्

(सामान्यार्घ्यपात्र का जल लेकर-)

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देवी गृहाणाराधनं मम।।

(देवी के बायें हाथ में पूजा को समर्पित करे। शंख को लेकर देवी के ऊपर तीन बार घुमाये और उसके जल को सब पर और अपने ऊपर छिड़के, शंख को धोकर रखें। तत्पश्चात् मूलमन्त्र से तीर्थ और प्रसाद ग्रहण कर वितरण करे।

24. देवतोद्वासनम्

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि यन्मयाऽऽचरितं शिवे।
तव कृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।

(समस्त आवरण देवताओं को देवी में विलय होने की और अपने हृदय में देवी के साथ अपने अभेद होने की भावना करे -

हृत्पद्मकर्णिकामध्ये शिवेन सह सुन्दरि।
प्रविश त्वं महादेवि सर्वैरावरणैः सह।।

हृदय में देवी की मानस पंचोपचार पूजा करके खेचरीमुद्रा दर्शाकर प्रणाम करे।

25. शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां,
यतेन्द्रियाणां च तपोधनानाम्।

देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां,
करोतु शान्तिं भगवान्कुलेशः।।

नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः,
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम्।
सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था,
यस्यां गुरोश्चरणपंकजमेव लभ्यम्।।

शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम्।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु।।

विशेषार्घ्यपात्र को मूलमन्त्र से देवी के चरणों से मस्तक तक घुमाकर उसमें विद्यमान क्षीर को दूसरे पात्र में डालकर - **4 आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।** - मन्त्र से कुछ स्वयं पी ले और शेष वितरण करे। **अनेन यथाज्ञानेन यथाशक्तिसंपादितद्रव्यैः मया कृतेन श्रीत्रिपुरसुन्दर्या सपर्याकर्मणा भगवती श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी प्रीयतां न मम।** समस्त पात्रों को धोकर अग्नि में तपाकर रखें। यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराके स्वयं भोजन विधि के अनुसार भोजन करे।

हरिः ॐ तत्सत्।

26. खड्गमालामंत्रः

अस्य श्रीखड्गमालामन्त्रस्य उपस्थाधिष्ठायिने वरुणादित्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, सात्त्विकककारभट्टारकपीठस्थित कामेश्वरांकनीया महाकामेश्वरीश्रीललिताभट्टारिका देवता, ऐं कएईलह्रीं बीजं, क्लीं हसकहलह्रीं शक्तिः, सौः सकलह्रीं कीलकं, श्रीललिताप्रसाद-सिद्ध्यर्थे खड्गमालामन्त्रपाठे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

4 उपस्थाधिष्ठायिने वरुणादित्य ऋषये नमः -शिरसि,
4 श्रीगायत्रीछन्दसे नमः -मुखे,
4 श्रीललिताभट्टारिकादेवतायै नमः - हृदये,
4 ऐं कएईलह्रीं बीजाय नमः - गुह्ये,
4 क्लीं हसकहलह्रीं शक्तये नमः - पादयोः,
4 सौः सकलह्रीं कीलकाय नमः - नाभौ,
4 श्रीललिताप्रसादसिद्ध्यर्थे खड्गमालामन्त्रपाठे विनियोगाय नमः - सर्वांगे।

अथ करन्यासः -

4 ऐं कएईलह्रीं - अंगुष्ठाभ्यां नमः, **4 क्लीं हसकहलह्रीं** - तर्जनीभ्यां नमः, **4 सौः सकलह्रीं** - मध्यमाभ्यां नमः, **4 ऐं कएईलह्रीं** - अनामिकाभ्यां नमः, **4 क्लीं हसकहलह्रीं** - कनिष्ठिकाभ्यां नमः, **4 सौः सकलह्रीं** - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादि न्यासः -

4 ऐं कएईलह्रीं -हृदयाय नमः, **4 क्लीं हसकहलह्रीं** -शिरसे स्वाहा, **4 सौः सकलह्रीं**- शिखायै वषट्, **4 ऐं कएईलह्रीं** - कवचाय हुम्, **4 क्लीं हसकहलह्रीं** -नेत्रत्रयाय वौषट्, **4 सौः सकलह्रीं** -अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम् -

ह्रींकारासनगर्भितानलशिखां सौः क्लीं कलां बिभ्रतीं,
सौवर्णाम्बरधारिणीं वरसुधाधौतां त्रिनेत्रोज्ज्वलाम्।
वन्दे पुस्तकपाशमंकुशधरां स्रग्भूषितामुज्ज्वलां,
त्वां गौरीं त्रिपुरां परात्परकलां श्रीचक्रसंचारिणीम्।।

तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड्भोक्ता भविष्यति।।

आरक्ताभां त्रिनेत्रामरुणिमवसनां रत्नताटंकरम्याम्,
हस्ताम्भोजैस्पाशांकुशमदनधनुस्सायकैर्विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुंगवक्षोरुहपरिविलुठत्तारहारोज्ज्वलांगीम्,
ध्यायेदम्भोरुहस्थामरुणिमवसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीम्,
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्शेखराम्।
हस्तैरिक्षुधनुःसृणिसुमकरां पाशं मुदा बिभ्रतीम्,
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत्।।

4 लं पृथिवीतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै गन्धं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 हं आकाशतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै पुष्पं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 यं वायुतत्त्वात्मिकायै श्रीललिता-

देव्यै धूपं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 रं वह्नितत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै दीपं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 वं अमृततत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै नैवेद्यं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 सं सर्वतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै सर्वोपचारान्परि-कल्पयामि समर्पयामि नमः।

4 त्रिपुरसुन्दर्यै नमः, 4 हृदयदेव्यै नमः, 4 शिरोदेव्यै नमः, 4 शिखादेव्यै नमः, 4 कवचदेव्यै नमः, 4 नेत्रदेव्यै नमः, 4 अस्त्रदेव्यै नमः, 4 कामेश्वर्यै नमः, 4 भगमालिन्यै नमः, 4 नित्यक्लिन्नायै नमः, 4 भेरुण्डायै नमः, 4 वह्निवासिन्यै नमः, 4 महावज्रेश्वर्यै नमः, 4 शिवदूत्यै नमः, 4 त्वरितायै नमः, 4 कुलसुन्दर्यै नमः, 4 नित्यायै नमः, 4 नीलपताकायै नमः, 4 विजयायै नमः, 4 सर्वमंगलायै नमः, 4 ज्वालामालिन्यै नमः, 4 चित्रायै नमः, 4 महानित्यायै नमः, 4 परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः, 4 मित्रीशमय्यै नमः, 4 षष्ठीशमय्यै नमः, 4 उड्डीशमय्यै नमः, 4 चर्यानाथमय्यै नमः, 4 लोपामुद्रामय्यै नमः, 4 अगस्त्यमय्यै नमः, 4 कालतापनमय्यै नमः, 4 धर्माचार्यमय्यै नमः, 4 मुक्तकेशीश्वर-मय्यै नमः, 4 दीपकलानाथमय्यै नमः, 4 विष्णुदेवमय्यै नमः, 4 प्रभाकर-देवमय्यै नमः, 4 तेजोदेवमय्यै नमः, 4 मनोजदेवमय्यै नमः, 4 कल्याणदेवमय्यै नमः, 4 रत्नदेवमय्यै नमः, 4 वासुदेवमय्यै नमः, 4 श्रीरामानन्दमय्यै नमः, 4 अणिमासिद्ध्यै नमः, 4 लघिमासिद्ध्यै नमः, 4 महिमासिद्ध्यै नमः, 4 ईशित्वसिद्ध्यै नमः, 4 वशित्वसिद्ध्यै नमः, 4 प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः, 4 भुक्तिसिद्ध्यै नमः, 4 इच्छासिद्ध्यै नमः, 4 प्राप्तिसिद्ध्यै नमः, 4 सर्वकामसिद्ध्यै नमः, 4 ब्राह्म्यै नमः, 4 माहेश्वर्यै नमः, 4 कौमार्यै नमः, 4 वैष्णव्यै नमः, 4 वाराह्यै नमः, 4 माहेन्द्र्यै नमः, 4 चामुण्डायै नमः, 4 महालक्ष्म्यै नमः, 4 सर्वसंक्षोभिण्यै नमः, 4 सर्वविद्राविण्यै नमः, 4 सर्वाकर्षिण्यै नमः, 4 सर्ववशंकर्यै नमः, 4 सर्वोन्मादिन्यै नमः, 4 सर्वमहांकुशायै नमः, 4 सर्वखेचर्यै नमः, 4 सर्वबीजायै नमः, 4 सर्वयोन्यै नमः,

4 सर्वत्रिखण्डायै नमः, 4 त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै नमः, 4 प्रकटयोगिन्यै नमः, 4 कामाकर्षिण्यै नमः, 4 बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः, 4 अहंकाराकर्षिण्यै नमः, 4 शब्दाकर्षिण्यै नमः, 4 स्पर्शाकर्षिण्यै नमः, 4 रूपाकर्षिण्यै नमः, 4 रसाकर्षिण्यै नमः, 4 गन्धाकर्षिण्यै नमः, 4 चित्ताकर्षिण्यै नमः, 4 धैर्याकर्षिण्यै नमः, 4 स्मृत्याकर्षिण्यै नमः, 4 नामाकर्षिण्यै नमः, 4 बीजाकर्षिण्यै नमः, 4 आत्माकर्षिण्यै नमः, 4 अमृताकर्षिण्यै नमः, 4 शरीराकर्षिण्यै नमः, 4 सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै नमः, 4 गुप्तयोगिन्यै नमः, 4 अनंगकुसुमायै नमः, 4 अनंगमेखलायै नमः, 4 अनंगमदनायै नमः, 4 अनंगमदनातुरायै नमः, 4 अनंगरेखायै नमः, 4 अनंगवेगिन्यै नमः, 4 अनंगांकुशायै नमः, 4 अनंगमालिन्यै नमः, 4 सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै नमः, 4 गुप्ततरयोगिन्यै नमः, 4 सर्वसंक्षोभिण्यै नमः, 4 सर्वविद्राविण्यै नमः, 4 सर्वाकर्षिण्यै नमः, 4 सर्वाह्लादिन्यै नमः, 4 सर्वसम्मोहिन्यै नमः, 4 सर्वस्तभिन्यै नमः, 4 सर्वजृम्भिण्यै नमः, 4 सर्ववशंकर्यै नमः, 4 सर्वरंजिन्यै नमः, 4 सर्वोन्मादिन्यै नमः, 4 सर्वार्थसाधिन्यै नमः, 4 सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै नमः, 4 सर्वमन्त्रमय्यै नमः, 4 सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्यै नमः, 4 सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै नमः, 4 सम्प्रदाययोगिन्यै नमः, 4 सर्वसिद्धिप्रदायै नमः, 4 सर्वसम्पत्प्रदायै नमः, 4 सर्वप्रियंकर्यै नमः, 4 सर्वमंगलकारिण्यै नमः, 4 सर्वकामप्रदायै नमः, 4 सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः, 4 सर्वमृत्युप्रशमिन्यै नमः, 4 सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः, 4 सर्वांगसुन्दर्यै नमः, 4 सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः, 4 सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै नमः, 4 कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः, 4 सर्वज्ञायै नमः, 4 सर्वशक्त्यै नमः, 4 सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः, 4 सर्वज्ञानमय्यै नमः, 4 सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः, 4 सर्वाधारस्वरूपायै नमः, 4 सर्वपापहरायै नमः, 4 सर्वानन्दमय्यै नमः, 4 सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः, 4 सर्वेप्सितफलप्रदायै नमः, 4 सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै नमः, 4 निगर्भयोगिन्यै नमः, 4 वशिन्यै नमः, 4 कामेश्वर्यै नमः, 4 मोदिन्यै नमः, 4

विमलायै नमः, 4 अरुणायै नमः, 4 जयिन्यै नमः, 4 सर्वेश्वर्यै नमः, 4 कौलिन्यै नमः, 4 सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः, 4 रहस्ययोगिन्यै नमः, 4 बाणिन्यै नमः, 4 चापिन्यै नमः, 4 पाशिन्यै नमः, 4 अंकुशिन्यै नमः, 4 महाकामेश्वर्यै नमः, 4 महावज्रेश्वर्यै नमः, 4 महाभगमालिन्यै नमः, 4 महाश्रीसुन्दर्यै नमः, 4 सर्वसिद्धि-प्रदचक्रस्वामिन्यै नमः, 4 स्वामिन्यै नमः, 4 अतिरहस्ययोगिन्यै नमः, 4 श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः, 4 सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै नमः, 4 परापररहस्ययोगिन्यै नमः, 4 त्रिपुरायै नमः, 4 त्रिपुरेश्यै नमः, 4 त्रिपुरसुन्दर्यै नमः, 4 त्रिपुरवासिन्यै नमः, 4 त्रिपुराश्रियै नमः, 4 त्रिपुरमालिन्यै नमः, 4 त्रिपुरासिद्धायै नमः, 4 त्रिपुराम्बामहात्रिपुर-सुन्दर्यै नमः, 4 महामहेश्वर्यै नमः, 4 महामहाराज्ञ्यै नमः, 4 महामहाशक्त्यै नमः, 4 महामहागुप्तायै नमः, 4 महामहाज्ञप्तायै नमः, 4 महामहानन्दायै नमः, 4 महामहास्पन्दायै नमः, 4 महामहा-शयायै नमः, 4 महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमः। 4 श्रीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीपरदेवतार्पणमस्तु।

एषा विद्या महासिद्धिदायिनी स्मृतिमात्रतः।
अग्निवातमहाक्षोभे राज्ञो राष्ट्रस्य विप्लवे।।1।।

लुण्ठने तस्करभये संग्रामे सलिलप्लवे।
समुद्रयानविक्षोभे भूतप्रेतादिके भये।।2।।

अपस्मार ज्वरव्याधि मृत्यु क्षामाधिजे भये।
शाकिनी पूतना यक्ष रक्ष कूष्माण्डजे भये।।3।।

मित्रभेदे ग्रहभये व्यसने वाभिचारिके।
अन्येष्वपि च दोषेषु मालामन्त्रं स्मरेन्नरः।।4।।

सर्वोपद्रवनिर्मुक्तः साक्षाच्छिवमयो भवेत्।
आपत्काले नित्यपूजां विस्तारात्कर्तुमारभेत्।।5।।

एकवारं जपध्यानं सर्वपूजाफलं लभेत्।
नवावरण देवीनां ललिताया महौजसः।।6।।
एकत्र गणना रूपो वेदवेदांगगोचरः।
सर्वागमरहस्यार्थः स्मरणात्पापनाशिनी।।7।।
ललिताया महेशान्या मालाविद्या महीयसी।
नरवश्यं नरेन्द्राणां वश्यं नारीवशंकरम्।।8।।
अणिमादिगुणैश्वर्य रंजनं पापभंजनम्।
तत्तदावरणस्थायिदेवतावृन्दमन्त्रकम्।।9।।
मालामन्त्रं परं गुह्यं परंधाम प्रकीर्तितम्।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।।10।।
शक्तिमालापंचधा स्याच्छिवमाला च तादृशी।
तस्माद्गोप्यतराद्गोप्यं रहस्यं भुक्तिमुक्तिदम्।।11।।

इति श्रीवामकेश्वरतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे
देवीखड्गमालास्तोत्रं संपूर्णं।।

27. श्रीयन्त्रपूजासंक्षिप्तविधिः

श्रीविद्यार्णव आदि ग्रन्थोक्त श्रीयन्त्र का पूजन करने की संक्षिप्त विधि निम्न प्रकार से है। प्रातः कालीन दैनिक कृत्य (आत्मचिन्तन, करदर्शन, पृथिवीवन्दना, शौचकर्म, दन्तधावन, स्नानादि) करके नित्य वैदिक व तान्त्रिकी सन्ध्या करे। तत्पश्चात् मातृकान्यास पर्यन्त कर्मकर स्वेष्ट एकाक्षर्यादि मन्त्र का न्यास करके ध्यान करे-

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनां।
पाशांकुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे।।

पंचोपचार (सद्रव्य अथवा मानस) पूजन करे -

4 लं पृथिवीतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै गन्धं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। (कनिष्ठिकांगुष्ठाभ्यां)।

4 हं आकाशतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै पुष्पं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। (अंगुष्ठतर्जनीभ्यां)।

4 यं वायुतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै धूपं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः । (तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां)।

4 रं वह्नितत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै दीपं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। (अंगुष्ठमध्यमाभ्यां)।

4 वं अमृततत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै नैवेद्यं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। (अंगुष्ठानामिकाभ्यां)।

4 सं सर्वतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै सर्वोपचारान् परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। (सर्वाभिरंगुलीभिः)।

आनन्दस्वरूपोऽहं - ऐसी भावना करे। पूर्वोक्त विधि से कलशस्थापना कर उसके जल से पूजाद्रव्य का प्रोक्षण करे। शंख की स्थापना पूर्वक पूजन कर उसके जल से स्वयं और पूजोपकरण पर प्रोक्षण करे। पाद्यादि पात्रों को पूर्वोक्त विधि से आसादन कर आसनपूजा आदि को यन्त्र के ऊपर ही आरम्भ करे - **4 आधारशक्तये नमः, 4 प्रकृतये नमः, 4 कूर्मासनाय नमः, 4 अनन्तासनाय नमः, 4 पृथिव्यै नमः, 4 रक्ताम्बुधये नमः, 4 रत्नद्वीपाय नमः, 4 नन्दनोद्यानाय**

नमः, 4 रत्नमण्डपाय नमः, 4 कल्पवृक्षाय नमः, 4 रत्नवेदिकायै नमः, 4 रत्नसिंहासनाय नमः। पीठ के ऊपर बैन्दवचक्र में – **4 हसौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः बैन्दवे हसरैं हसकलरीं हसरौः।** – इस मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके हाथों से त्रिखण्डामुद्रा दर्शाते हुये नासिकापुट से प्रवाहित तेज से युक्त पुष्पांजलि को मूर्ति पर लाकर –

4 महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि।।

– मन्त्र से तेज को मूर्ति में स्थापित होने की भावना करे। पंचोपचार से पूजन करे –**4 लं पृथिवीतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै गन्धं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 हं आकाशतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै पुष्पं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 यं वायुतत्त्वा-त्मिकायै श्रीललितादेव्यै धूपं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 रं वह्नितत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै दीपं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 वं अमृततत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै नैवेद्यं परिकल्पयामि समर्पयामि नमः। 4 सं सर्वतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै सर्वोपचारा-न्परिकल्पयामि समर्पयामि नमः।** अथवा आवाहनादि उपचार यथा-शक्ति निम्न प्रकार से सम्पादन करें–

1. आवाहनं – **देवेशि भक्तिसुलभे सर्वावरणसंयुते।**
यावत्त्वं पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव।।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीं आवाहयामि पूजयामि नमः।

2. आसनं – **त्रिनेत्रे जगतां नाथे कामेशि लोकवन्दिते।**
रत्नसिंहासनं तुभ्यं दास्यामि शिवसुन्दरी।।
सिंहासनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि पूजयामि नमः।

3. पाद्यं – **त्रैलोक्यपावनानन्त शशिकोटिसमप्रभे।**
पाद्यं मयार्पितं देवि गृहाण शशिशेखरे।।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि पूजयामि नमः।

4. अर्घ्यं – **कावेरीतुंगभद्रादि महानदीसमुद्भवं।**
दिव्यगन्धान्वितं तोयमर्घ्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि पूजयामि नमः।

5. आचमनं - **आचम्यतां जलं दिव्यं पुण्यतीर्थसमुद्भवं।**
सर्वलक्षणसंपूर्णे राजराजेश्वरप्रिये।।
मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि पूजयामि नमः।

6. स्नानं - श्रीसूक्त का पाठ करते हुए मधुपर्क, पंचामृत, शुद्धोदकादि स्नान कराये और अर्पण करे। **स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि पूजयामि नमः।**

7. वस्त्रं - **मया चित्रपटच्छन्नं निजगुह्योरुतेजसे।**
निरावरणसिद्ध्यर्थं वासस्ते कल्पयाम्यहम्।।

7 क. उत्तरीयं (उपवस्त्रं) - **यमाश्रित्य महाविष्णुः जगत्संरक्षकः सदा। तस्मै ते परमेशान्यै कल्पयाम्युत्तरीयकम्।**
आच्छादनार्थं वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि पूजयामि नमः।

8. आभरणं (यज्ञोपवीतं वा)- **स्वभावसुन्दरांगायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे। भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यहमीश्वरि।।**
अलंकारार्थमाभूषणं समर्पयामि पूजयामि नमः।

8क. हरिद्रा - **सौभाग्यशुभदे देवि सर्वमंगलदायिनी।**
हरिद्रान्ते प्रदास्यामि गौरि कुमारि वल्लभे।।
सौन्दर्यसिद्ध्यर्थं हरिद्रां समर्पयामि पूजयामि नमः।

8ख. कुंकुमं - **कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं रक्ताभं सुमनोहरं।**
कुंकुमेनार्चिते देवि संगृहाण महेश्वरि।।
मुखकान्त्यर्थं कुंकुमं समर्पयामि पूजयामि नमः।

8ग. सिन्धूरं - **चारुशालूरसंभूतं वंशसारसमुद्भवं।**
सीमन्तभूषणं चूर्णं लाक्षारञ्जितमस्तु ते।।
सुमंगलीरूपसिद्ध्यर्थं समर्पयामि पूजयामि नमः।

9. गन्धं - **गन्धचन्दनसम्मिश्रं कुंकुमादिसमन्वितं।**
गृह्णीष्व देवि लोकेशि मया दत्तं सुरेश्वरि।।
सुवासनार्थं गन्धं समर्पयामि पूजयामि नमः।

9क. अक्षतं - **सर्वाश्रये महादेवि सर्वशक्तिसमन्विते।**
अक्षतां च गृहाण त्वं महामाये शिवप्रिये।।

सर्वक्षतिनिवारणार्थमक्षतं समर्पयामि पूजयामि नमः।

10. पुष्पमाला –**मल्लिकाजातीकुसुमैः केतकीचम्पकादिभिः।**
पूजार्थं ग्रथितामाला मालेयं प्रतिगृह्यताम्।।
शोभावृद्ध्यर्थं पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि पूजयामि नमः।
(यथाशक्ति व यथासामर्थ्य षडंगार्चन आदि पूजन करके अवशिष्टोपचारों को करे।)

27.1 षडंगार्चनम्

बिन्दु में देवी की पूजा 3 बार करे–

4+15 श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

4 ऐं कएईलह्रीं हृदयाय नमः, हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः – आग्नेये।

4 क्लीं हसकहलह्रीं शिरसे स्वाहा, शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः – ईशाने।

4 सौः सकलह्रीं शिखायै वषट्, शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः – नैर्ऋत्ये।

4 ऐं कएईलह्रीं कवचाय हुम्, कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः – वायव्ये।

4 क्लीं हसकहलह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः – मध्ये।

4 सौः सकलह्रीं अस्त्राय फट्, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः – सर्वदिक्षु।

(षोडशी उपासक हो तो षोडशीषट्क से षडंगपूजा करे)। तत्पश्चात् मध्य, पूर्वादि क्रम से त्र्यस्र में और पुनः मध्य में गुरुपंक्ति की पूजा करे– **4 गुरुपंक्तिभ्यो नमः, 4 गुरुपादुकाभ्यो नमः, 4 परमगुरु पादुकाभ्यो नमः, 4 परापरगुरुपादुकाभ्यो नमः।** इसके बाद उपस्थित आचार्य व उनकी पादुकाओं का पूजन कर अर्घ्यपात्रों की स्थापना करें।

27.2 अथावरणपूजा

1. चतुरस्रत्रैलोक्यमोहनचक्र में-

प्रथम रेखा में – 4 अणिमाद्यष्टदेवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

मध्यरेखा में – 4 ब्राह्म्याद्यष्टदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

अन्त्यरेखा में – 4 सर्वसंक्षोभिण्यादिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्र के सामने– 4 त्रिपुराचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

4 एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहनचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करे)।

1क. वृत्तत्रयत्रिवर्गसाधनचक्र के बाह्य वृत्त में **4 कालरात्र्यादिचतुस्त्रिशंद्देवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।** मध्य वृत्त में– **4 अमृतादिषोडशदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।** अन्तर्वृत्त में–**4 कामेश्वर्यादिषोडशदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।** चक्र के सामने – **4 त्रिपुराचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। 4 एताः मातृकायोगिन्यः त्रिवर्गसाधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिता सन्तुष्टाः सन्तु नमः** (अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करें)

2. षोडशदलसर्वाशापरिपूरकचक्र में – **4 अं... अः कामाकर्षिण्यादिषोडशनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।** चक्र के सामने – **4 त्रिपुरेशीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। 4 एताः गुप्त योगिन्यः सर्वाशापरिपूरकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्त र्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः।** (अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करे)।

3. अष्टदलसर्वसंक्षोभणचक्र में – **4 अनंगकुसुमाद्यष्टदेवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।** चक्र के सामने – **4 त्रिपुरसुन्दरी चक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। 4 एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभण–**

चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करे)।

4. चतुर्दशारसर्वसौभाग्यदायकचक्र में 4 सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दश देवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। चक्र के सामने – 4 त्रिपुरवासिनी चक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। 4 एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करे)।

5. बहिर्दशारसर्वार्थसाधकचक्र में 4 सर्वसिद्धिप्रदादिदशदेवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। चक्र के सामने – 4 त्रिपुरश्रीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। 4 एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करे)।

6. अन्तर्दशारसर्वरक्षाकरचक्र में 4 सर्वज्ञादिदशदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। चक्र के सामने – 4 त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। 4 एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकर चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करे)।

7. अष्टारसर्वरोगहरचक्र में 4 वशिन्याद्यष्टदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। चक्र के सामने – 4 त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। 4 एताः वशिन्यादियोगिन्यः सर्वरोगहरचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करे)।

8. सर्वसिद्धिप्रदचक्र के अन्तराल त्रिकोण में –
4 महाकामेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
दक्षिणकोणे – **4 महावज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।**
वामकोणे– **4 महाभगमालिनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।**
चक्र के सामने– **4 त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।**
4 एताः कामेश्वर्याद्यायोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः।
(अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करे)।

9. सर्वानन्दमयचक्र के बिन्दुचक्र में –
4 महात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः (3 बार)।
वामभाग में–**योनिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि नमः।**
चक्र के सामने – **4 त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। 4 एताः सच्चिदानन्दस्वरूपिणी परापरातिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमयचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः।** (अर्घ्य जल से देवी को समर्पित करे)।

<u>अवशिष्टोपचाराः</u>

इसके बाद विस्तृतविधिप्रकरण में बतायी गयी विधि से धूप, दीप, नैवेद्य, आरार्तिक्य (समय हो तो मन्त्रपुष्पांजलि भी कर सकते हैं) आदि को करें अथवा निम्नप्रकार से सम्पादन करे।

11. धूपं–**कृष्णवाहमधि गुह्ययायिनं। भुजैश्चतुर्भिर्जगदादिकारणम्।।**
देवादिदेवं सकलारिसूदनं। चैतन्यरूपं प्रणमामि वायुं।।
श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दरीदेवताभ्यो धूपं समर्पयामि पूजयामि नमः।

12. दीपं– **उद्दीप्यस्व जातवेद चोपघ्नन्निर्ऋतिमनु।**
पशुंश्चमह्यमावह जीवनञ्च दिशो दश।।
श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दरीदेवताभ्यो दिव्यदीपं समर्पयामि पूजयामि नमः।

13. नैवेद्यं – पूर्वोक्त विधि से नैवेद्य को अर्पित करे।

14. ताम्बूलं - एलालवंगकर्पूरनागवल्लीदलैर्युतं। पूगभागैरतं देवि ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीचक्रत्रिपुरसुन्दरीदेवताभ्यो ताम्बूलं समर्पयामि पूजयामि नमः।

15. प्रदक्षिणा (नमस्कार) - यानि कानि च पापानि पूर्वजन्मकृतानि च। तत्सर्वञ्च क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।। श्रीचक्रत्रिपुर-सुन्दरीदेवताभ्यो प्रदक्षिणां समर्पयामि पूजयामि नमः।

16. नीराजनं - वैदिक / स्मार्त / पौराणिक अथवा लौकिक आरती कर अर्पण करे।

16क. मन्त्रपुष्पांजलिः- वैदिक / स्मार्त / पौराणिक अथवा लौकिक पुष्पांजलि अर्पण करे।

पुनः यथाशक्ति मूलमन्त्र को जप कर सहस्रनाम /त्रिशति/ अष्टोत्तरशतनाम द्वारा स्तुति करे। तत्पश्चात् पूजासमर्पण से पात्रोद्वासनपर्यन्त कर्म करे। ।।

।।इति संक्षिप्त विधिः।।

28. परिशिष्टप्रकरणम्

28.1 विस्तृतपूजाकर्तव्यदिनानि

जो इस विस्तृत पूजा को नित्य न कर सके वह कुछ विशेष पर्वों में अवश्य करे। जैसे कि श्रीविद्यारत्नाकर और तन्त्रराजतन्त्र (1. 91-95) में बताया है - अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति - तिथियों में तथा दोनों नवरात्र, धनतेरस आदि विशिष्ट त्यौहारों में करना चाहिये और अपनी कामना के अनुसार मुहूर्त देखकर करना चाहिये। तन्त्रराजतन्त्र आदि ग्रन्थों में गुरु, परमगुरु, परमेष्ठिगुरु के जन्म व समाधि के तथा स्वयं के जन्म की और श्रीविद्याप्राप्ति की तिथि, वार, नक्षत्र युक्त दिनों में सामर्थ्यानुसार यथाशक्ति करना चाहिये। जब आप विस्तृत पूजा को नित्य नहीं करते हैं तो इस नैमित्तिक विस्तृतपूजा को जिसे विशेषपूजा अथवा महापूजा कहा जाता है, जिसे रात्री में करना श्रेष्ठ माना गया है को करना चाहिए। जैसे कि कुलार्णव में कहा है -

नित्यार्चनं दिवा कुर्याद्रात्रौ नैमित्तिकार्चनम्।
उभयोः काम्यकर्माणि चेति शास्त्रस्य निर्णयः।।

28.2 पूजासिद्ध्यर्थं पालनीयनियमाः

गन्ना न खाये या न चूसे व न उसका रस पिये। पूजाद्रव्यों की निन्दा न करे। स्त्रियों से दुर्व्यवहार व उनकी उपेक्षा न करे। कुलभ्रष्ट पुरुष आदि (श्रेष्ठ विद्वान्, साधक अथवा ब्राह्मण आदि भी क्यों न हो। जैसे कि श्री जगद्गुरु आद्यशंकराचार्यजी ने कहा है – **असंप्रदायवित्सर्व शास्त्रज्ञोऽपि मूर्खवदुपेक्षणीयः** – गीताभाष्यं 13.2)के दर्शन, संलाप, संव्यवहार, उनसे द्रव्य ग्रहण, स्वाध्याय आदि न करे तथा रजस्वला स्त्री को देखना आदि किसी भी प्रकार का सम्बन्ध न करे व उसे प्रताडित न करे तथा उसके द्रव्य को ग्रहण न करे। स्वेच्छापूर्वक पंचमकार (मांस, मछली, मदिरा, मैथुन और मुद्रा) का सेवन न करे अपितु पंचगकार (गौ, गंगा, गायत्री, गुरु व गोविन्द) का यथाशक्ति सेवन करे। व्यवहार करने केलिये भी न्यूनतम बोले अर्थात् वाणी का संयम वर्ते। ये सब उपासक द्वारा अवश्य पालनीय है क्योंकि इनके विना की गयी पूजा व्यर्थ परिश्रम ही होगा, निरर्थक होगा। इन नियमों के अलावा दीक्षाक्रम में बताये गये व कौलशास्त्रों में वर्णित नियमों का यथाशक्ति पालन करें।

28.3 दीक्षा आदि विषयक विचारः

श्री शक्ति महिम्नः स्तोत्रम् के परिशिष्ट में तथा इस ग्रन्थ की भूमिका में दीक्षा विषयक विचार के सम्बन्ध में उपासना व साधना केलिये आवश्यक जानकारी दी गयी है, कृपया जिज्ञासु वहीं से ग्रहण करे।

28.4 सूतकादिकाले कर्तव्यविषयकविचारः

नारदपांचरात्र में कहा गया है कि आतुरस्थिति, सूतक, त्रास, दुर्बोध और भावनी – इन पांच अवस्थाओं में साधना अथवा उपासना करने की विधि में भेद है।

1. आतुर अवस्था में केवल मानस स्मरण पूर्वक मानस जप करने का विधान है।
2. यदि लंघन पर्यन्त रोग(त्रास जैसे कि बेचैनी आदि)और

3. सूतकादि की संभावना हो तो यानि दन्तशोधन, स्नानादि करना संभव न हो अथवा वर्जित हो तो प्रतिमा आदि में पूजा एवं स्थण्डिल आदि में होम करना आरम्भ ही न करे।

किन्तु सूर्यमण्डल में उपास्य की मूर्ति की कल्पना कर पूजा करे अथवा केवल मूलमन्त्र को एक बार उच्चारण करते हुये अक्षत और पुष्प को दूर से ही अर्पण करे यानि मूर्ति, यन्त्र आदि का स्पर्श न करे। रोगादि दोष व सूतकादि प्रतिबन्ध दूर होने पर उपवास पूर्वक प्रार्थना करे- **व्याध्यादिभिरुग्रैः क्लान्तैश्च यन्मयाऽकृतं न तन्मे दोषोऽस्तु।** फिर पूर्ववत् अपना पूजा पाठ आरम्भ करे।

4. दुर्बोध के कारण (मोहवशात् तिथ्यादि काल, दिशा, विधि विषयक भ्रम और वार्धक्य या बालकपन या स्त्री के अपने चंचलस्वभाव) अपनी उपासना में दोष होने का ज्ञान होने पर जप, होम व दान से दोष का परिहार कर लेना चाहिये।

5. पूर्वोक्त विस्तृत विधि अथवा दैनिक संक्षिप्त विधि से पूजन भावनी साधना के अन्तर्गत है जो स्वस्थ व सब प्रकार के प्रतिबन्ध रहित अवस्था में किया जाता है।

28.5 देशकालादिविशेषे मानसपूजाविधानम्

प्रवास और मार्ग में, पूजायोग्यस्थान प्राप्त न होने पर, जल से आप्लावित हो, कारागारादि में निबद्ध हो, शत्रु अथवा हिंसक पशुओं के कारण मन भय से व्याकुल हो, और किसी विषम परिस्थिति के कारण बाह्यपूजा न कर सके तो मानस पूजा अवश्य करनी चाहिये। दन्त धावन, स्नान आदि सकल कर्म भी मन से ही करके उपास्य की पूजा मन में योगपीठ की कल्पना करके उसके बीच में बाह्य पूजा के समान अन्तः पूजा भी समस्त अंगोपांग सहित करे। मानसपूजा में 64 उपचारों को क्रमपूर्वक करने में सहयोगी हैं ये श्लोक-

हृन्मध्यनिलये देवि ललिते परदेवते।
चतुष्षष्ट्युपचरांस्ते भक्त्या मातः समर्पये।।1।।

कामेशोत्संगनिलये पाद्यं गृह्णीष्व सादरम्।
भूषणानि समुत्तार्य गन्धतैलं च तेऽर्पये।।2।।

स्नानशालां प्रविश्याऽथ तत्रत्य मणिपीठके।
उपविश्य सुखेन त्वं देहोद्वर्तनमाचर।।3।।

उष्णोदकेन ललिते स्नापयाम्यथ भक्तितः।
अभिषिंचामि पश्चात्त्वां सौवर्णकलशोदकैः।।4।।

धौतवस्त्रप्रोंछनं च रक्तक्षौमाम्बरं तथा।
कुचोत्तरीयमरुणमर्पयामि महेश्वरि।।5।।

ततः प्रविश्यालेपमण्डपं श्रीमहेश्वरि।
उपविश्य च सौवर्णपीठे गन्धान्विलेपय।।6।।

कालागरुजधूपैश्च धूपये केशपाशकम्।
अर्पयामि च मल्ल्यादिसर्वर्तुकुसुमस्रजः।।7।।

भूषामण्डपमाविश्य स्थित्वा सौवर्णपीठके।
माणिक्यमुकुटं मूर्ध्नि दयया स्थापयाम्बिके।।8।।

शरत्पार्वणचन्द्रस्य शकलं तत्र शोभताम्।
सिन्दूरेण च सीमन्तमलंकुरु दयानिधे।।9।।

भाले च तिलकं न्यस्य नेत्रयोरञ्जनं शिवे।
वालीयुगलमप्यम्ब भक्त्या ते विनिवेदये।।10।।

मणिकुण्डलमप्यम्ब नासाभरणमेव च।
ताटंकयुगलं देवि यावकञ्चाधरेऽर्पये।।11।।

आद्यभूषणसौवर्णचिन्ताकपदकानि च।
महापदकमुक्तावल्येकावल्यादिभूषणम्।।12।।

छन्नवीरं गृहाणाम्ब केयूरयुगलन्तथा।
वलयावलिमंगुल्याभरणं ललिताम्बिके।।13।।

ओड्याणमथ कट्यन्ते कटिसूत्रञ्च सुन्दरि।
सौभाग्याभरणं पादकटकं नूपुरद्वयम्।।14।।

अर्पयामि जगन्मातः पादयोश्चांगुलीयकम्।
पाशं वामोर्ध्वहस्ते च दक्षहस्ते तथांकुशम्।।15।।

अन्यस्मिन्वामहस्ते च तथा पुण्ड्रेक्षुचापकम्।
पुष्पबाणांश्च दक्षाधः पाणौ धारय सुन्दरि।।16।।

अर्पयामि च माणिक्यपादुके पादयोः शिवे।
आरोहावृतिदेवीभिश्चक्रं परशिवे मुदा।।17।।

समानवेशभूषाभिः साकं त्रिपुरसुन्दरि।
तत्र कामेशवामांकपर्यकोपनिवेशिनम्।।18।।

अमृतासवपानेन मुदितां त्वां सदा भजे।
शुद्धेन गांगतोयेन पुनराचमनं कुरु।।19।।

कर्पूरवीटिकामास्ये ततोऽम्ब विनिवेशय।
आनन्दोल्लासहासेन विलसन्मुखपंकजम्।।20।।

भक्तिमत्कल्पलतिकां कृती स्यां त्वां स्मरन् सदा।
मंगलारार्तिक्यं छत्रं चामरं दर्पणं तथा।।21।।

तालवृन्तं गन्धपुष्पधूपदीपांश्च तेऽर्पये।
नमः परमकल्याणगुणसंचयमूर्तये ।।22।।

श्रीकामेश्वरि तप्तहाटककृतैः स्थालिसहस्रैर्भृतम्।
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितं चित्रान्नभेदैर्युतम्।।23।।

दुग्धान्नं मधुशर्करादधियुतं माणिक्यपात्रार्पितम्।
माषापूपकर्पूरिकादिसहितं नैवेद्यमम्बाऽपैहि।।24।।

त्रयोविंशतिपद्योक्तचतुष्षष्ठ्युपचारात् ।
हृन्मध्यनिलया माता ललिता परितुष्यतु।।25।।

28.6 देवताभेदात् होमे मन्त्रभेदः

1. परमेश्वरी–अग्नि = **इळामग्ने पुरुदंसं सनिंगोः शश्वत्तमं हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाऽग्ने साते सुमतिर्भूत्वस्मे।1।, अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।2।**
2. भगमालिनी–ब्रह्मा = **पुनर्मामैत्विन्द्रियं पुनस्तेजः द्रविणं पुनर्भगः। पुनरग्निर्धिष्ण्या यथा स्थानं कल्पयन्तामिहैव।1।, ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विशीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा।2।**
3. वश्यनित्यक्लिन्न–पार्वती=**आत्वाहार्षमन्तरभूर्धुवस्तिष्ठा विचाचलत्। विशस्त्वा सर्वा वांछन्तु मा त्वद् राष्ट्रमधिभ्रशत्।1।, गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पद्यष्टापदी नवपदी बभूवुषी। सहस्राक्षरा भुवनस्य पंक्तिस्तस्याः समुद्रा अधिविक्षरन्ति परमे व्योमन्।2।**
4. भेरुण्ड–गणेश = **लोकोऽअसि सुवर्गोऽअसि। अनन्तोऽअस्यपारोऽसि। अक्षितोऽअस्यक्षय्योऽअसि। तपसः प्रतिष्ठा।1।, गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियानान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम। आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।2।**
5. वह्निवासिनी–सर्प=अमृतसंजीवनी मन्त्रः– **अस्यामृतसंजीवनीमन्त्रस्य शुक्र ऋषिः, गायत्री छन्दः, अमृत्संजीविनीदेवी देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हंसः कीलकं, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोग। ("मूलेन च न्यासं कुर्यात्, त्रिचतुश्चैककं पुनः। षट्चतुर्द्विककेनैव षडंगानि समाचरेत्।।"** अर्थात् 1 ह्रीं हंसः, 2 संजीवनी, 3 जूं, 4 जीवं प्राणग्रन्थिं=हंसः कुरु कुरु, 5 कुरु सौः सौः, 6 स्वाहा।) अथ मन्त्रः – **" ॐ, ह्रीं हंसः, संजीविनी, जूं, हंसः कुरु कुरु, कुरु सौः सौः, स्वाहा।" ।1।, "ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।**

ॐ हौं जूं सः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् सः जूं हौं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वर्भुवर्भूः।2। नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।3।"

6. महाविद्येश्वरीषण्मुख = यद्यते च दभिशिलषः।1।, अस्कान्द्यौः पृथिवीम्। अस्कानृषभो युवा गाः। स्कन्नेमा विश्वा भुवना।2।

7. शिवदूती-रवि = मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिर्मा दुष्टुती वृषभ मा सहुती। उन्नो वीराँ३ अर्पय भेषजेभिर्भिषक्तमं त्वा भिषजां श्रृणोमि।1।, उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय।2।

8. त्वरिता-शिव = रुद्री नमकचमकयोः - वेदवेदाऽब्धिरामश्च रामरामद्विकैकैकम्। द्वौ द्वौ पृथग्भिर्मन्त्रैस्तु नमकाश्चमकाः स्मृता।। अर्थात्- चार, चार, चार, तीन, तीन, तीन, दो, एक, एक, दो, दो- इस प्रकार अलग-अलग मन्त्रों से नमक और चमक का क्रम विहित है।1।, नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।2।

9. कुलसुन्दरी-दुर्गा = जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिता-त्यग्निः।1।, दुर्गागायत्री कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमारी च धीमहि। तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात्।2।

10. नित्या-यम = आवातवाहि भेषजं विवातवाहि यद्रपः। त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे।1। यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्नि दूतोऽअरंकृतः।2।

11. नीलपताकिनी-विश्वेदेव = हस्ताभ्यां दश शाश्वताभ्यां जिह्व। वाचः पुरोगवी। अनामयित्नुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोपस्पृशामसि।1।, तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः।2।

12. विजया-विष्णु = जयसूक्त ॐ विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं भूरिधायसम्। विद्मो ष्वस्य मातरं पृथिवीं भूरिवर्पसम्।1। ज्याके

परिणो नमाश्मानं तन्वं कृधि। वीडुर्वरीयोरातिरप द्वेषांस्या कृधि ।2। वृक्षं यद्गावः परिषस्वजाना अनुस्फुरं शरमर्चन्त्यृभुम्। शरुमस्मद्यावय दिद्युमिन्द्र ।3। यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजनम्। एवा रोगं चास्रावं चान्तस्तिष्ठतु मुञ्ज इत् ।4।, विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि। योऽअस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ।1।

13. सर्वमंगला-कामदेव = पिशंगभृष्टिमं भृणं पिशाचिमिन्द्र संभ्रण। सर्वं रक्षो निवर्हय।1।, कामोऽकार्षीन्नमो नमः। कामोऽकार्षीत्कामः करोति नाहं करोमि।1। कामः कर्ता नाहं कर्ता कामः कारयिता नाहं कारयिता। एष ते काम कामाय स्वाहा।2।

14. ज्वालामालिनी- शिव = त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्य-स्त्वमश्मनस्परि। त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः।1।, त्वमग्ने रुद्रोऽअसुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि संगयस्त्वं पूषा विधातः पासि नुत्मना।2।

15. विचित्रा-चन्द्र = यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा। चतस्र ऊर्जं दुदुहे पयांसि क्वस्विदस्याः परमं जगाम।1।, श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो ददाति। श्रियं वसाना अमृतत्वमायन्भवन्ति सत्या समिता मितद्रौ।2।

16. महालक्ष्मी = श्रीसूक्तं।1।

17. त्रिशक्ति=अम्बितमे नन्दितमे देवितमे सरस्वति। अप्रशस्ता इव स्मसि। प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।1।

18. सर्वसाम्राज्या = किन्ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो नाशिरं दुहे न तपन्ति घर्मम्। आनो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन्रंधयानः।1।

19. परंज्योति = यश्छन्दसामृशभो विश्वरूपः छन्देभ्योध्यमृता-त्संबभूव। स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु। अमृतस्य देव धारणो भूयासम्। शरीरं मे विचर्षणम्। जिह्वा मे मधुमत्तमा। कर्णाभ्यां भूरिविश्रुवम्। ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः। श्रुतं मे गोपाय।1।

20. शाम्भवी = परिपूषा परस्तात् दक्षं दधातु दक्षिणाम्। पुनर्नो नष्टमाजतु।1।

21. अजपा = रात्रिसूक्तं- ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः। विश्वा अधि श्रियोऽधित।1। ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्वतः। ज्योतिषा बाधते तमः।2। निरुस्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती। अपेदुहासते तमः।3। सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यावन्नविक्ष्महि। वृक्षे न वसतिं वयः।4। नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः। निश्येनासश्चिदर्थिनः।5। यवया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये। अथा नः सुतरा भव।6। उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित। उष ऋणेव यातय।7। उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः। रात्रि स्तोमं न जिग्युषे।8।

22. मातृका=नमो ब्रह्मणे नमोऽअस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः। नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महते करोमि।।

23. त्वरिता = रुद्री नमकचमकयोः - वेदवेदाऽब्धिरामश्च रामरामद्विकैकैकम्। द्वौ द्वौ पृथग्भिर्मन्त्रैस्तु नमकाश्चमकाः स्मृता।। अर्थात्- चार, चार, चार, तीन, तीन, तीन, दो, एक, एक, दो, दो- इस प्रकार अलग-अलग मन्त्रों से नमक और चमक का क्रम विहित है।1।

24. पारिजातेश्वरी = संसमिध्युवसे वृषशन्नग्ने विश्वान्यर्य आ। इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर।1।, संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।2।, समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।3।, समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।4।

25. त्रिपुटा = इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे। पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।1।

26. पंचबाणेशी = **अक्षिभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि। यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते।1।**

27. अमृतपीठेश्वरी = **यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधि यो रुद्रो महर्षिः।1।**

28. सुधा = **या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।1।**

29. अमृतेश्वरी = **धन्वनागा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदौ जयेम। धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वनाः सर्वाः प्रदिशो जयेम।1।**

30. अन्नपूर्णा = **अहमस्मि प्रथमजा ऋताऽअस्य। पूर्वं देवेभ्यो अमृतश्च ना३ऽऽभायि।1।**

31. सिद्धलक्ष्मी = **नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्य सत्त्वानो हन्तेभ्योऽअकरन्नमः।1।**

32. राजमातंगी = **ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियन्तो व्यररमत्पाशं वरुणो मुमोचत्। अवो वन्वाना अदितेरुपस्थाध्रयं पातः स्वस्तिभिः सदा नः।1।**

33. भुवनेश्वरी = पवमानसूक्त – **ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै।1। अग्न आयूꣳषि पवस आसुवोर्जमिषंचन। आरे बाधस्वदुच्छुनाम्।2। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा।3। पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देवदीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतू३रनु।4। यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा।5। पवमानः सोऽअद्य नः। पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा।6। उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। माम्पुनीहि विश्वतः।7। वैश्वदेवी पुनती देव्यगाद्यस्या-मिमा बह्वयस्तन्वा वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधमादेषु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्।8।**

34. वाराही = भूसूक्त - ॐ भूर्मिभूम्ना द्यौर्वरिणाऽन्तरिक्षं महित्वा। उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायाद धे।1। आऽयं गौः पृश्निरक्रमीदसनन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।2। त्रिꣳशद्धाम विराजति वाक्पतं गाय शिश्रिये। प्रत्यस्य वह द्युभिः।3। अस्य प्राणादपानत्यन्तश्चरति रोचना। व्यख्यन्महिषः सुवः।4। यत्त्वा क्रुद्धः परोवप मन्युना यदवर्त्या। सुकल्पमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामसि।5। यत्ते मन्युपरोप्तस्य पृथिवीमनुदध्वसे। आदित्या विश्वे तद्देवा वसवश्च समाभरन्।6। मेदिनी देवी वसुन्धरा स्याद्वसुधा देवी वासवी। ब्रह्मवर्चसः पितृणाꣳश्रोत्रं चक्षुर्मनः।7। देवी हिरण्यगर्भिणी देवी प्रसूवरी। सदने सत्यायने सीद।8। समुद्रवती सावित्रीह नो देवी मह्यं गीः। मही धरणी महोव्यथिष्ठाः श्रृंगे श्रृंगे यज्ञे यज्ञे विभीषिणी। इन्द्रपत्नी व्यापिनी सुरसरिदिह।9। वायुमती जलशयनी श्रियं धाराजा सत्यन्धोपरि मेदिनी। श्वोपरिधत्तं परिगाय।10। विष्णुपत्नीं महीं देवीं माधवीं माधवप्रियाम्। लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्।11। ॐ धनुर्धरायै विद्महे सर्वसिद्ध्यै च धीमहि। तन्नो धरा प्रचोदयात्।12। महीं देवीं विष्णुपत्नीमजूर्याम्। प्रतीचीं मेनाꣳहविषा यजामः। त्रेधा विष्णुरुरुगायो विचक्रमे।13। महीं दिवं पृथिवीमन्तरिक्षं तच्छ्रोणैतिश्रव इच्छमाना। पुण्यꣳश्लोकं यजमानाय कृण्वती।14।, क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि। गामश्वं पोषयित्वा स नो मृळाती दृशे।1।, रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठमुपयामि शर्म। शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा सरिषः पातु नक्तम्।2।, विभूरसि प्रवाहणो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽअग्ने पिपृहि मा मा माहिꣳसीः।3।

35. शैवदर्शन = सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां। भवोद्भवाय नमः।1।

36. शाक्तदर्शन = जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निधहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।1।

37. वेदान्तदर्शन = **ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा।1।**

38. वैष्णवदर्शन = **तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।1।**

39. सारस्वतदर्शन = **उद्यन्नद्य मित्रमहः आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय।1।**

40. प्रथमावरणान्ते = **इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय त्वामवस्युराचके।1।, तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणे हवोध्युरुशं समान आयुः प्रमोषीः।2।, त्वं नो अग्ने स त्वं नो अग्ने शं नो भवन्तु वाजे वाजे।3।, अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।4।,** चान्द्रायणहोम मन्त्राश्च–चान्द्रायणहोमविधिः– पंचगव्य को पृ.सं. 75 में वर्णित विधि से तैयार कर उसमें भावना करे कि – "**वरुणो देवता मूत्रे गोमये हव्यवाहनः। सोमः क्षीरे दध्नि वायुः घृते रविरुदाहृतः। कुशोदकेषु गन्धर्वः क्रमेणैषां तु देवताः।।**" अर्थात् गोमूत्र में वरुण, गोबर में अग्नि, दूध में सोम, दही में वायु, घी में सूर्य और कुशोदक में गन्धर्व देवता का ध्यान/भावना करे। "**आपो हिष्ठेति चालोड्य मानस्तोकेऽभिमन्त्रयेत्। स्थापयित्वा दर्भेषु पालाशैः पात्रकैरथ।।**" अर्थात् आपो हिष्ठा – मन्त्र से मिलावे और मानस्तोके – मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पलाश के पत्तों से निर्मित पात्र में दर्भो पर स्थापित करे। '**ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः उषतीरिव मातरः।।**' मन्त्र से पंचगव्य को अच्छी तरह मिलावे और '**ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।**' मन्त्र से पंचगव्य को अभिमन्त्रित करे। तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों से पंचगव्य से हवन करे–

ॐ काराय स्वाहा।1। ॐ अग्नये स्वाहा।2। ॐ सोमाय स्वाहा।3। **ॐ इरावती धेनुमती हि भूतꣳसूयवसिनी मनवे दशस्या। यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा।4। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।5।** ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा।6। ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै स्वाहा।7। **ॐ अग्न आयूꣳषि पवस आसुवोर्जमिषंचन। आरे बाधस्वदुच्छुनाम् स्वाहा।8।** ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा स्वाहा।9। ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देवदीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूꣳरनु स्वाहा।10। ॐ यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा स्वाहा।11। ॐ पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः यः पोता स पुनातु मा स्वाहा।12। **ॐ उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। माम्पुनीहि विश्वतः स्वाहा।13। ॐ वैश्वदेवी पुनती देव्यगाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वा वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधमादेषु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा।14।** ॐ कारायस्वाहा।15। ॐ भूः स्वाहा।16। ॐ भुवः स्वाहा।17। ॐ स्वः स्वाहा।18। ॐ महः स्वाहा।19। ॐ जनः स्वाहा।20। ॐ तपः स्वाहा।21। ॐ सत्यं स्वाहा।22। **ॐ प्रजापतये स्वाहा।23। ॐ स्विष्टकृते स्वाहा।24।** हवन करने के बाद अवशिष्ट पंचगव्य को निम्न विधि से पीना है – **"नदीप्रस्रवणे तीरे रहस्ये देवमन्दिरे। शुचौ देशे पवित्रात्मा अहोरात्रोषितः पिबेत्।। ब्रह्महा परदारी च ये चान्येऽस्थिगता मलाः। ब्रह्मकूर्चो दहेदेतान् यथाग्निः तृणमेव तु।।"** अर्थात् बहती नदी के तट पर, एकान्तस्थान, देवमन्दिर अथवा किसी भी शुद्ध स्थान पर बैठ के दिनरात की तपस्या से व शुद्ध विचार से युक्त होकर पीना है। इस प्रकार चान्द्रायण विधि का

पालन पूर्वक हवन करने से ब्रह्महत्या दोष, परस्त्रीसमागम दोष आदि अन्य समस्त पाप रूपी मल जो हड्डियों में स्थित हैं वे सब अग्नि में घास के जलने के समान नष्ट हो जाते हैं।

41. द्वितीयावरणान्ते = **तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत्स मन्दी धावति।1। सिꣳहीरसि महिषीरस्युरु प्रथस्वोरु ते यज्ञपतिः प्रथतां ध्रुवाऽअसि देवेभ्यः शुन्धस्व देवेभ्यः शुम्भस्वेन्द्रघोष स्त्वा।2।**, फलीकरणहोममन्त्राश्च- **स्तुवानमग्न आ वह यातुधानं किमीदिदम्। त्वं हि देव वन्दितो हन्ता दस्योर्बभूविथ।1। आज्य परमेष्ठिन् जातवेदस्तनूवशिन्। अग्ने तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय।2। वि लपन्तु यातुधाना अत्त्रिणां ये किमीदिनः। अथेदमग्ने नो हविरिन्द्रश्च प्रति हर्यताम्।3। अग्निः पूर्व आरभ्यतां प्रेन्द्रो नुदतु बाहुमान्। ब्रवीतु सर्वो यातुमान् अयमस्मीत्येत्य।4। पश्याम ते वीर्यं जातवेदः प्र णो ब्रूहि यातुधानान् नृचक्षः। त्वया सर्वे परितप्ताः त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उपेदम्।5। आ रभस्व जातवेदोऽस्माकाऽअर्थाय जज्ञिषे। दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय।6। त्वमग्ने यातुधानान् उपबद्धाँ इहावह। अथैषामिन्द्रो वज्रेणापि शीर्षाणि वृश्चतु।7।**

42. तृतीयावराणान्ते = **अनुहवं परिहवं परिवादं परिक्षपम्। दुस्वप्नं दुरुदितं तद् द्विषद्भ्यो दिशाम्यहम्।1।**, **आरात्त्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्रायिधामभिः। दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठसऽआत्त्वेषं वर्तते तमः।2।** प्राजापत्य होम मन्त्राः - **ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयꣳसुधातु दक्षिणम्। अस्माद्दाता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत।।1।। मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निꣳस्वे योनावभारुषा। तो विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा वि मुंचतु।।2।। ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा।।3।। ब्रह्म क्षत्रं पवते तेजऽइन्द्रियꣳसुरया सोमः सुतऽआ-सुतो मदाय। शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि।।4।।**

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइष-व्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।5।। ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्र-समꣳसरः। इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते।।6।। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्।।7।। ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवीऽनेहसा। पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नोऽअघशꣳसऽईशत।।8।। ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीबमाक्रायायाऽअयोꣳकामाय पुँश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्।।9।। ब्रह्माणि मे मतयः शꣳसुतासः शुष्मऽइयर्ति प्रभृतो मेऽअद्रिः। आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नोऽअच्छ।।10।। ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य वोधि तनयं च जिन्व। विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः। यऽइमा विश्वा विश्वकर्मा यो नः पितान्नपतेऽअन्नस्य नो देहि।।11।।

43. चतुर्थावरणान्ते = अग्न्याधानहोमस्य प्रधानाहुतिमन्त्रः– **ममाग्ने वर्चो विहवे वस्तु वयन्त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम। मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चत-स्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम स्वाहा।1। भूर्भुवःस्वः स्वाहा।2।**

44. पंचमावरणान्ते = गणहोममन्त्राः– गणेशजी का ध्यानादि करके 11 आहुतियां दें – "**ॐ स्वहा 1, ॐ श्रीं स्वाहा 2, ॐ श्रीं ह्रीं स्वाहा 3, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा 4, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं स्वाहा 5, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं स्वाहा 6, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये स्वाहा 7, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद स्वाहा 8, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे स्वाहा 9, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा 10, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय**

स्वाहा ह्रीं श्रीं ॐ स्वाहा 11। अब इस मन्त्र से 108 आहुतियां दें - **"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ह्रीं श्रीं ॐ स्वाहा"।** तत्पश्चात् **"ॐ क्षं इं पं रें गं गणपतये स्वाहा"** इस मन्त्र से 108 आहुतियां दें। (समय व सामर्थ्य हो तो गणेशाथर्वशीर्ष अथवा गणेशस्तव से भी हवन करें।)

45. षष्ठावरणान्ते = गृहवास्तुहोममन्त्राः -(आज्याहुतिद्वयं दद्यात्) **ॐ इहरतिरिहरमध्वमिह धृतिरिहस्वधृतिः स्वाहा। इदमग्नये न मम।1। ॐ उपसृजंधरुणं मात्रे धरुणो मातरधयन्। रायस्पोषमस्मासु दीधरत्स्वाहा। इदमग्नये न मम।2।** (समित्तिलपायसाज्यैः 108 आहुतीः - 4 मन्त्र % 27 बार) **ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावे शोऽअनमीवोभवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।1। ॐ वास्तोष्पते प्रतरणोनऽएधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्द्रो। अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।2। ॐ वास्तोष्पते शग्मयासꣳसदा ते सक्षीम हितण्ययागा तु मत्या। पाहि क्षेमऽउत योगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।3। ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्याविशन्। सखा सुशेवऽएधि नः स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।4।**

46. सप्तमावरणान्ते = बौधायनोक्तापूर्वविधिशान्तिहोममन्त्राः- **ॐ शन्नऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्या। शमिन्द्रासोमासुविताय शंयोः शन्नऽइन्द्रापूषणावाजसातौ।1। शन्नो भगः शमुनः शंनोऽअस्तु शन्नः पुरंधिः शमुसन्तुरायः। शन्न सत्यस्य सुयमस्य शंसः शन्नोऽर्यमा पुरुजातोऽस्तु।2। शन्नो धाता शमु धर्ता नोऽस्तु शन्न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शन्नोऽद्रिः शन्नो देवानां सुहवानि सन्तु।3। शन्नोऽग्निर्ज्योतिरनीकोऽस्तु शन्नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शन्नः सुकृता सुकृतानि सन्तु शन्नऽइषिरोऽअभिवातु वातः।4। शन्नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ**

शमन्तरिक्षं दृशये नोऽअस्तु। शन्न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शन्नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।5। शन्न इन्द्रो वसुभिर्देवोऽस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शन्नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शन्नस्त्वष्टाग्नाभिरिह श्रुणोतु।6। शन्नः सोमो भवतु ब्रह्म शन्नः शन्नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शन्नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शन्नःप्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।7। शन्नः सूर्य उरु चक्षा उदेतु शन्नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शन्नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शन्नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।8। शन्नोऽदितिर्भवतु व्रतेभिश्शन्नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शन्नो विष्णुः शमु पूषा नोऽअस्तु शन्नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।9। शन्नो देवः सविता त्रायमाणः शन्नो भवन्तूशसो विभातीः। शन्नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शन्नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।10। शन्नो देवा विश्वेदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमुरातिषाचः शन्नो दिव्याः पार्थिवाः शन्नोऽअप्याः।11। शन्नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शन्नोऽअर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शन्न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शन्नो भवन्तु पितरो हवेशु।12। शन्नोऽअज एकपाद्देवोऽअस्तु शन्नोऽअहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शन्नोऽअपांन-पात्पेरुरस्तु शन्नः पृश्निर्भवतु देवगोपा।13। आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः। श्रृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः।14। ये देवानां यज्ञियायज्ञियानां मनोर्य-जत्राऽमृता ऋतज्ञाः। तेनोरासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।15।

47. अष्टमावरणान्ते = बौधायनोक्तदर्शपूर्णमासहोममन्त्राः - अग्निध्यानमन्त्र- **ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वतो3म्।।** आहुतिमन्त्र- **ये3 यजामहे अग्निं भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रानियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दधिशे स्वर्षा जिह्वामग्ने चकृशे हव्यवाहां3 वौ3षट् स्वाहा।। इदमग्नये न मम।1।** अग्नीषोमप्रथमध्यानमन्त्र- **ॐ अग्नीषोमाविमं सु मे श्रृणुतं वृषणा हवम्। प्रति सूक्तानि हर्यतं भवतं दाशुषे मयो3म्।** आहुतिमन्त्र- **ये3 यजामहे अग्नीषोमावाज्यस्य वीतां वौ3षट् स्वाहा।**

अग्नीषोमाभ्यामिदं न मम।2। अग्नीषोमद्वितीयध्यानमन्त्र- **ॐ अग्नीषोमा सवेदसा सहूती वनतं गिरः। सं देवत्रा बभूवथो3म्।।** आहुतिमन्त्र- **ये3 यजामहे अग्नीषोमौ युवमेतानि दिवि रोचनान्यग्निश्च सोम सक्रतू अधत्तम्। युवं सिन्धूँरभिशस्तेरवद्यादग्निषोमाममुंचतं गृभीतान् वौ3षट् स्वाहा।। अग्नीषोमाभ्यामिदं न मम।3।**

48. नवमावरणान्ते = चण्डीहोम को दुर्गासूक्त (तैत्तिरीय आरण्यक 4.10.2) और देवीसूक्त (ऋग्वेद संहिता 10.8.125) से करें। (दुर्गासूक्तं-) **ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः।1। तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवी॰शरणमहं प्रपद्ये। सुतरसि तरसे नमः।2। अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। पूश्च पृथिवी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः।3। विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुन्न नावा दुरिताऽतिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्।4। पृतना जित॰सहमानमुग्रमग्नि॰हुवेम परमासधस्तात्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अति दुरिताऽत्यग्निः।5। प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि। स्वाञ्चाऽग्ने तनुवं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभाग्यमायजस्व।6। गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णोरनु संचरेम। नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोको इह मादयन्ताम्।7।** (देवीसूक्तं-) **ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा।1। अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते।2। अहं राष्ट्रीं संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।3। मया सोऽअन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्। अमन्तवोमान्त उपक्षियन्ति श्रुधिश्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।4। अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः। यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।5। अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवेहन्त वा उ। अहं जनाय समदं**

कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आविवेश।6। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्व1न्तः समुद्रे। ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वो तामूं द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि।7। अहमेव वातऽइव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा। परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती महिना संबभूव।8। तथा आगम के अनुसार पौराणिक मन्त्रों यानि सप्तश्लोकी दुर्गा से भी हवन करें- ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।1। दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।।2।। सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।3।। शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।4।। सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।5।। रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।6।। सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।7।।

28.7 कामनाभेदात् होमे द्रव्यभेदः

(मूलमन्त्र का न्यूनतम 10,000 जप कर कामना के अनुसार नीचे विधान किये गये द्रव्य से दशांश हवन करें। कम से कम 48 दिन का एक अनुष्ठान करना चाहिये। जिस कामना में कम अथवा अधिक दिन करना होगा वह स्पष्ट कर दिया गया है।)

1. **लक्ष्मीप्राप्ति - बिल्वपत्र से हवन करें।**
2. **नौकरीप्राप्ति - मोगरा (मल्लिका) और सफेद सदाबहार के फूल से होम करे (7 शुक्रवार)।**
3. **शत्रुनाश - अडोल के फूलों से हवन करे (7 दिन)** अथवा **कुशाग्र से जल में हवन कर उस जल से शत्रु निवास की दिशा में तर्पण दे (11 दिन)।**

4. विद्यालाभ - दूर्वा से हवन करें (न्यूनतम 3 अनुष्ठान)।
5. सर्वसामान्यवशीकरण - सफेद सरसों से हवन करे अथवा सादा नमक, कालानमक, श्रोत्रांजन, शहद, घी और शक्कर मिलाकर अभिमन्त्रित करके हवन करे अथवा अडोल के फूलों से हवन करें।
6. मनोऽभीष्टकार्यसिद्धिः - कालातिल और घी से हवन करें।
7. अधिकारी व इष्टस्त्री वशीकरण - लालचन्दन व लाल कनेर के फूल से हवन करें।
8. देवता, भूत, प्राणी व ग्रह वशीकरण - सफेद अगरु और घी से हवन करें (108 दिन)।
9. रोगनाश, धनप्राप्ति व सौभाग्यवृद्धि - दही और घी ।
10. अपमृत्युनिवारण व आयुवृद्धि - दूध व घी से हवन करे।
11. कठिनरोगनाश व ऋणमुक्ति -शहद और घी (108 दिन)।
12. दरिद्रता व कष्ट निवारण - त्रिफला और त्रिकूटा।
13. पदप्राप्ति व उद्योग-लालकमल व कुंकुमयुक्त घी (108 दिन)।
14. ऐश्वर्यप्राप्ति - कुमुदिनी (सफेदकमल) से हवन करें।
15. वाक्सिद्धि - खाने का कपूर व घी से हवन करें।
16. बड़े लोगों का वशीकरण - केला और घी (81 दिन)।
17. सर्वदोषनिवारण - चावल, घी और नवग्रह की समिधाओं से हवन करें (21 दिन)।
18. दुःखनाश - गुग्गुल और घी से हवन करें (21 दिन)।
19. यशःप्राप्ति - खीर व घी से हवन करें।
20. विवाह - कपूर, कुंकुम, कस्तूरी व घी से हवन करें।
21. परस्परप्रीति - चमेली, पाटल, विश्वफूल व घी।
22. व्यापारवृद्धि - खील (लाजा) व घी से हवन करें।
23. भूतादिवश - करंजफल व घी से हवन करें।
24. नेत्र व शिरोरोग निवृत्ति - 11 पूर्णिमा भस्म से सहस्रनामार्चन करके लालकमल, चावल व घी से हवन करें।

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

28.8 श्रीयन्त्रलेखनप्रकार:

बिन्दुत्रिकोण वसुकोण दशारयुग्मम्,
मन्वस्रनागदल शोभित षोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयं च,
श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः।।

1. लाल बिन्दु, 2. अधोमुखत्रिकोण, 3. अष्टकोण, 4. अन्तर्दशार, 5. बहिर्दशार, 6. चतुर्दशकोण, 7. अष्टदलपद्म, 8. षोडशदलपद्म, 9. चतुष्कोण। इस श्रीचक्र को लिखने के अनेक प्रक्रिया है। किन्तु हम यहाँ त्रिपुरोपनिषद् भाष्य के अनुसार कौलमार्ग में श्रीयन्त्र को लिखने की प्रक्रिया को दर्शा रहे हैं – सर्व प्रथम 5 सेंमि. व्यासार्ध/त्रिज्या (रेडियस) का वृत्त बनाये। उसके केन्द्र बिन्दु से 1.5 सेंमि नीचे और 1.5 सेंमि ऊपर 9.5 सेंमि रेखा उत्तर से दक्षिण खींचे (चित्र सं. 28, पृ. सं. 351 में क्रमांक 3 व 7)। पुनः उन दोनों में से ऊपरवाली रेखा (7) के 1 सेंमि ऊपर और नीचेवाली रेखा (3) के 1 सेंमि नीचे 6.0 सेंमि रेखा उत्तर से दक्षिण खींचे (चित्र में क्रमांक 2 व 8)। उसी प्रकार पुनः उन दोनों में से ऊपरवाली रेखा (8) के 1 सेंमि ऊपर और नीचेवाली रेखा (2) के 1 सेंमि नीचे 4.0 सेंमि रेखा उत्तर से दक्षिण खींचे (चित्र में क्रमांक 1 व 9)। तत्पश्चात् एक छोटी रेखा वृत्त के केन्द्र बिन्दु से 0.5 सेंमि ऊपर 1.8 सेंमि रेखा उत्तर से दक्षिण खींचे (चित्र सं. 28 में क्रमांक 5)। फिर वृत्त के केन्द्र बिन्दु से 0.9 सेंमि ऊपर और नीचे 2.7 सेंमि चौड़े उत्तर से दक्षिण रेखा खींचे (चित्र में क्रमांक 4 व 6)। इस प्रकार कुल 9 रेखायें वृत्त के अन्दर बनायी गयी हैं। अब सर्वप्रथम अधोमुखी त्रिकोणों को बनाना है। रेखा सं 9 के किनारों से दो भुजा इस प्रकार खीचें की त्रिकोण की नोक रेखा सं 4 के बीच में हो। इसी प्रकार रेखा सं 8 के किनारों से रेखा सं 1 के बीच में, रेखा सं 7 के किनारों से वृत्त के मूल में, रेखा सं 6 के किनारों से रेखा सं 2 के बीच में और रेखा सं 5 के किनारों से रेखा सं 3 के बीच में भुजाओं को जोड़ें। अब ऊर्ध्वमुखी त्रिकोणों को बनाये। रेखा सं 1 के

किनारों से रेखा सं 7 के बीच में, रेखा सं 2 के किनारों से रेखा सं 9 के बीच में, रेखा सं 3 के किनारों से वृत्त के ऊपरी छोर में, रेखा सं 4 के किनारों से रेखा सं 8 के बीच में भुजाओं को जोड़ें। अब प्रथम वृत्त के बाहर 6.5 सेंमि. व्यासार्ध/त्रिज्या (रेडियस) का दूसरा वृत्त बनाये और दोनों वृत्तों के बीच में कमल की 8 पंखुड़ियों को चित्रित करे। पुनः दूसरे वृत्त के बाहर 7.5 सेंमि. व्यासार्ध/त्रिज्या (रेडियस) का तीसरा वृत्त बनाये और दोनों वृत्तों के बीच में कमल की 16 पंखुड़ियों को चित्रित करे। तत्पश्चात् उस तीसरे वृत्त के बाहर 7.7 सेंमि. व्यासार्ध/त्रिज्या (रेडियस) का चौथा वृत्त बनाये और पुनः उस चौथे वृत्त के बाहर 8.0 सेंमि. /व्यासार्ध/त्रिज्या (रेडियस) का पांचवां वृत्त बनाये। अब इस पांचवें वृत्त के बाहर तीन/ चतुष्कोणात्मक चौकोर परिधि 0.25 सेंमि दूरी रखते हुये बनाये। उन चौकोरों की चारों भुजाओं के बीच में चार द्वार न्यूनतम 2 सेंमि चौड़े बनाये। दक्षिणामूर्ति मत में द्वार बन्द होते हैं और अन्यों के मत में नहीं, जैसे कि चित्र संख्या 28, में दर्शाया गया है। वाममार्ग में श्रीयन्त्र लिखने की प्रक्रिया में अन्तर है। अपने श्रीगुरु से अन्तर को समझकर बनाये।

।।श्रीदेव्यर्पणमस्तु।।
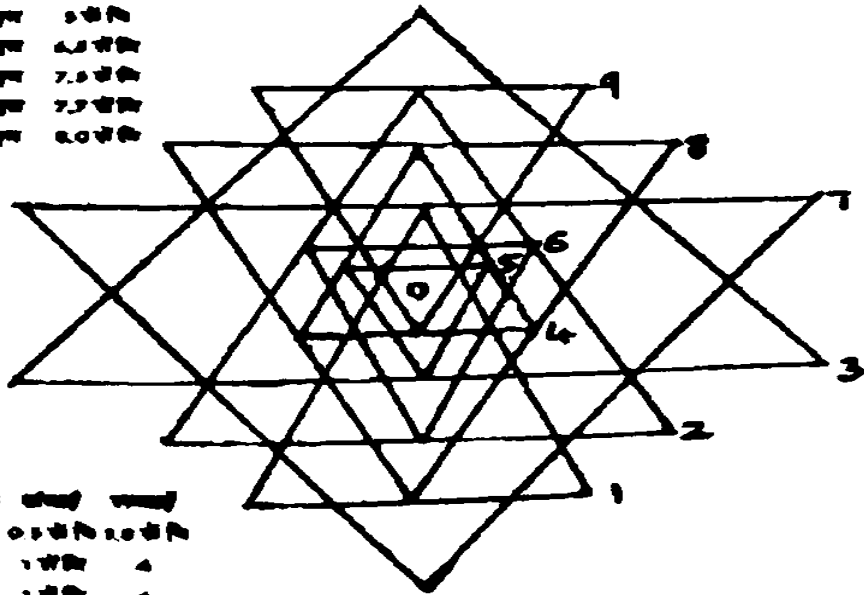
चित्र 28

29. श्री राजराजेश्वर्यष्टकं

शार्दूलविक्रीडित छन्द का लक्षण है - **'सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।'** अर्थात् मसजसतत गणों व अन्त में एक गुरुवर्ण से विरचित होता है। अतः 12, 7 अक्षरों का विभाग पूर्वक पाठ करना है। यह स्तोत्र इसी छन्द का प्रभेद में विरचित है, अन्तर इतना है कि मयजसततग गणों से बना है। दूसरे त्रिक में सगण के स्थान पर यगण है।

अम्बा शाम्भवी चन्द्रमौलिरबलाऽपर्णा ह्युमापार्वती,
काली हैमवती शिवा त्रिनयनी कात्यायनी भैरवी।
सावित्री नवयौवना शुभकरी साम्राज्यलक्ष्मीप्रदा,
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 1।।

अम्बा मोहिनी देवता त्रिभुवनी ह्यानन्दसंदायिनी,
वाणी पल्लवपाणी वेणुमुरलीगानप्रियालोलिनी।
कल्याणी ह्युडुराजबिम्बवदना धूम्राक्षसंहारिणी,
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 2।।

अम्बा नूपुररत्नकंकणधरी केयूरहारान्विता,
जाजीचंपकवैजयन्तिलहरी ग्रैवेयकै राजिता।
वीणावेणुनिनादमंडितकरा वीरासने संस्थिता,
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 3।।

अम्बा रौद्रिणी भद्रकाली बगला ज्वालामुखी वैष्णवी,
ब्रह्माणी त्रिपुरान्तकी सुरनुता देदीप्यमानोज्ज्वला।
चामुण्डाश्रितरक्षपोषजननी दाक्षायणी पल्लवी,
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 4।।

अम्बा शूलधनुःकुशांकुशधरी ह्यर्धेन्दुबिम्बाधरी,
वाराही मधुकैटभप्रशमनी वाणीरमासेविता।

मल्लाद्यासुरमूकदैत्यदमनी माहेश्वरी ह्यम्बिका,
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।5।।

अम्बा सृष्टिविनाशपालनकरी ह्यार्यादिसंसेविता,
गायत्री प्रणवाक्षरामृतरस - पूर्णानुसंधीकृता।
ॐ कारी विनतासुतार्चितपदा ह्युद्दण्डदैत्यापहा,
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।6।।

अम्बा शाश्वती चागमादिविनुता ह्याद्या महादेवता,
या ब्रह्मादिपिपीलिकान्तजननी या वै जगन्मोहिनी।
या पंचप्रणवादिरेफजननी या चित्कलामालिनी,
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।7।।

अम्बा पालितभक्तराजरचितं ह्यम्बाष्टकं यः पठेत्,
अम्बा लोककटाक्षवीक्षललिता चैश्वर्यमव्याहता।
अम्बा पावनमन्त्रराजपठनादन्ते च मोक्षप्रदा,
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।8।।

।। इति श्री राजराजेश्वर्यष्टकं संपूर्णम्।।

30. अथ (षोडशी)कल्याणी स्तोत्रम्

इस स्तोत्र के 1 से 15 तक के श्लोक **वसन्ततिलका** छन्द में है, जिसका लक्षण है - '**उक्ता वसन्ततिलका तमजाः जगौ गः।**' अर्थात् तमजज गणों व अन्त में दो गुरुवर्णों से विरचित होता है। अतः 8, 6 अक्षरों का विभाग पूर्वक पाठ करना है।

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि-
र्लक्ष्मी स्वयंवरमंगलदीपिकाभिः।
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले,
नाकारि किम्मनसि भक्तिमताञ्जनानाम्।।1।।

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते,
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थसरोजनेत्रे।
सान्निध्यमुद्यदरुणाम्बुजसोदरस्य,
त्वद्विग्रहस्य सुधया सपर्याप्लुतस्य।।2।।

ईषत्प्रभावकलुषाः कतिनाम सन्ति,
ब्रह्मादयः प्रतिदिनम्प्रलयाभिभूताः।
एकस्स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते,
यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिङ्करोति।।3।।

लब्ध्वासकृत्त्रिपुरसुन्दरि तावकीनम्-
कारुण्यकन्दलति कान्तिभरङ्कटाक्षम्।
कन्दर्पभाव सुभगास्त्वयि भक्तिभाजः,
सम्मोहयन्ति तरुणीम्भुवनत्रयेऽपि।।4।।

ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति ये वा,
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे।
त्वत्संस्मृतौ यमभटाभि भवं विहाय,
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः।।5।।

हन्तुः पुरामधिगलत्परिपूर्णमानः,
क्रूरः कथन्न भविता गरलस्य वेगः।
नाश्वासनाय यदि मातरिदन्तवार्द्धम्,
देहस्य शाश्वदमृताप्लुतशीतलस्य।।6।।

सर्वज्ञतां सदसि वा पटुताम्प्रसूते,
देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः।
किञ्च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रम्,
द्वे चामरे च महतीं वसुधां दधाति।।7।।

कल्पद्रुमैरभिमतः प्रतिपादितपादनेषु,
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं,
त्वय्यैव भक्तिभरितं त्वयि बद्धदृष्टिम्।।8।।

हन्तेतरेष्वपिनिधाय मनांसि चान्ये,
भक्तिं वहन्ति किल सापरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसाहमनुस्मरामि,
त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव।।9।।

लक्षेषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनाना-
मालोक्य त्रिपुरसुन्दरि च मां कथञ्चित्।
नूनं मया च सदृशं करुणैकपात्रं ,
जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा।।10।।

ह्रीं ह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां,
किन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुराभिधाने।
मालाकिरीटमदवारणमाननीयां-
स्तान्सेवते मधुमती स्वयमेव लक्ष्मीः।।11।।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि,
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरितोद्धरोद्यतानि,
मामेव मातरनिशङ्कलयन्तु नान्यम्।।12।।

कल्पोपसंहरणकल्पितताण्डवस्य,
देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य।
पाशांकुशैक्षवशरासनपुष्पबाणाः,
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरिका।।13।।

लग्नं सदा भवतु मातरिदन्त्वदीयम्,
तेजः परम्बहुलकुंकुमपंकशोणम्।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसम्,
रूपं त्रिकोणमुदितम्परमामृताक्तम्।।14।।

ह्रींकारमेव तव धाम तदेव रूपं,
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूलम्।
त्वत्तेजसा परिणतं वियदादिभूतं,
सौख्यं तनोति सरसीरुहसम्भरादेः।।15।।

यह अन्तिम श्लोक **शार्दूलविक्रीडित** छन्द में है, जिसका लक्षण है –

'सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।'

अर्थात् मसजसतत गणों व अन्त में एक गुरुवर्ण से विरचित होता है। अतः 12, 7 अक्षरों का विभाग पूर्वक पाठ करना है।

ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मन्त्रेण संदीपितं,
स्तोत्रं यः प्रतिवासरन्तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्।
तस्य क्षोणिभुजो भजन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी,
वाणी निर्मलसूक्तिभावभरिता जागर्ति दीर्घं यशः।।16।।

।। इति ब्रह्मविरचितं षोडशीकल्याणीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

31. अथ मन्त्रमातृकास्तोत्रम्

इस स्तोत्र के 1 से 16 तक के श्लोक **शार्दूलविक्रीडित** छन्द में है, जिसका लक्षण है –

'सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।'

अर्थात् मसजसतत गणों व अन्त में एक गुरुवर्ण से विरचित होता है। अतः 12, 7 अक्षरों का विभाग पूर्वक पाठ करना है।

कल्लोलोल्लसितामृताब्धिलहरिमध्ये विराजन्मणि
द्वीपे कल्पकवाटिकापरिवृते कादम्बवाट्युज्ज्वले।
रत्नस्तम्भसहस्रनिर्मितसभामध्ये विमानोत्तमे,
चिन्तारत्नविनिर्मितं जननि ते सिंहासनं भावये।।1।।

एणांकानलभानुमण्डललसच्छ्रीचक्रमध्ये स्थितां,
बालार्कद्युतिभासुरां करतलैः पाशांकुशौ बिभ्रतीम्।
चापं बाणमपि प्रसन्नवदनां कौसुम्भवस्त्रान्वितां,
तां त्वां चन्द्रकलावतंसमुकुटां चारुस्मितां भावये।।2।।

ईशानादिपदं शिवैकफलकं रत्नासनं ते शुभं,
पाद्यं कुंकुमचन्दनादिभरितैरर्घ्यं सरत्नाक्षतैः।
शुद्धैराचमनीयकं तव जलैर्भक्त्या मया कल्पितं,
कारुण्यामृतवारिधे तदखिलं सन्तुष्टये कल्पताम्।।3।।

लक्ष्ये योगिजनस्य रक्षितजगज्जाले विशालेक्षणे,
प्रालेयाम्बुपटीरकुंकुमलसत्कर्पूरमिश्रोदकैः।
गोक्षीरैरपि नारिकेलसलिलैः शुद्धोदकैर्मन्त्रितैः,
स्नानं देवि धिया मयैतदखिलं सन्तुष्टये कल्पताम्।।4।।

ह्रींकारांकितमन्त्रलक्षिततनो हेमाचलात्संचितैः,
रत्नैरुज्ज्वलमुत्तरीयसहितं कौसुम्भवर्णांशुकम्।
मुक्तासन्ततियज्ञसूत्रममलं सौवर्णतन्तूद्भवं,
दत्तं देवि धिया मयैतदखिलं सन्तुष्टये कल्पताम्।।5।।

हंसैरप्यतिलोभनीयगमने हारावलीमुज्ज्वलां ,
हिन्दोलद्युतिहीरपूरिततरे हेमांगदे कंगणे।
मंजीरौ मणिकुण्डले मुकुटमप्यर्धेन्दुचूडामणिं,
नासामौक्तिकमंगुलीयकटकौ कांचीमपि स्वीकुरु।।6।।

सर्वांगे घनसारकुंकुमघनः श्रीगन्धपंकांकितम्,
कस्तूरितिलकं च भालफलके गोरोचनापत्रकम्।
गण्डादर्शनमण्डले नयनयोर्दिव्यांजनं तेऽंचितम्,
कण्ठाब्जे मृगनाभिपंकममलं त्वत्प्रीतये कल्पताम्।।7।।

कल्हारोत्पलमल्लिकामरुवकैः सौवर्णपंकेरुहै-
र्जातीचम्पकमालतीबकुलकैर्मन्दारकुंदादिभिः।
केतक्या करवीरकैर्बहुविधैः क्लृप्ताः स्रजो मालिकाः,
संकल्पेन समर्पयामि वरदे सन्तुष्टये गृह्यताम्।।8।।

हन्तारं मदनस्य नन्दयसि यैरंगैरनंगज्वलै-
र्यैर्भृंगावलिनीलकुन्तलभरैर्बध्नासि तस्याशयम्।
तानीमानि तवाम्ब कोमलतराण्यामोदलीलागृहा-
ण्यामोदाय दशांगगुग्गुलघृतैर्धूपैरहं धूपये।।9।।

लक्ष्मीमुज्ज्वलयामि रत्ननिवहोद्भास्वत्तरे मन्दिरे,
मालारूपविलम्बितैर्मणिमयस्तम्भेषु संभावितैः।
चित्रैर्हाटकपुत्रिकाकरधृतैर्गव्यैर्घृतैर्वर्धितै-
र्दिव्यैर्दीपगणैर्धिया गिरिसुते सन्तुष्टये कल्पताम्।।10।।

ह्रींकारेश्वरि तप्तहाटककृतैः स्थालीसहस्रैर्भृतं,
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितं चित्रान्नभेदं तथा।
दुग्धान्नं मधुशर्करादधियुतं माणिक्यपात्रे स्थितं,
माषापूपसहस्रमम्ब सफलं नैवेद्यमावेदये।।11।।

सच्छायैर्वरकेतकीदलरुचा ताम्बूलवल्लीदलैः,
पूगैर्भूरिगुणैः सुगन्धिमधुरैः कर्पूरखण्डोज्ज्वलैः।
मुक्ताचूर्णविराजितैर्बहुविधैर्वक्त्राम्बुजामोदनैः,
पूर्णा रत्नकलाचिका तव मुदे न्यस्ता पुरस्तादुमे।।12।।

कन्याभिः कमनीयकान्तिभिरलंकारामलारार्तिका,
पात्रे मौक्तिकचित्रपंक्तिविलसत्कर्पूरदीपालिभिः।
तत्तत्तालमृदंगगीतसहितं नृत्यत्पदाम्भोरुहं,
मन्त्राराधनपूर्वकं सुविहितं नीराजनं गृह्यताम्।।13।।

लक्ष्मीमौक्तिकलक्षकल्पितसितच्छत्रं तु धत्ते रसा-
दिन्द्राणी च रतिश्च चामरवरे धत्ते स्वयं भारती।
वीणामेणविलोचनाः सुमनतां नृत्यन्ति तद्रागव-
द्भावैरांगिकसात्त्विकैः स्फुटरसं मातस्तदालोक्यताम्।।14।।

ह्रींकारत्रयसंपुटेन मनुनोपास्ये त्रयीमौलिभि-
र्वाक्यैर्लक्ष्यतनोस्तव स्तुतिविधौ को वा क्षमेताम्बिके।
संलापाः स्तुतयः प्रदक्षिणशतं संचार एवास्तु ते,
संवेशो नमसः सहस्रमखिलं त्वत्प्रीतये कल्पताम्।।15।।

श्रीमन्त्राक्षरमालया गिरिसुतां यः पूजयेच्चेतसा,
सन्ध्यासु प्रतिवासरं सुनियतस्तस्यामलं स्यान्मनः।
चित्ताम्भोरुहमण्डपे गिरिसुता नृत्तं विधत्ते रसा-
द्वाणीवक्त्रसरोरुहे जलधिजा गेहे जगन्मंगला।।16।।

यह अन्तिम श्लोक मालिनी छन्द में है, जिसका लक्षण है – '**ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।**' अर्थात् ननमयय गणों से विरचित होता है। अतः 8, 7 अक्षरों का विभाग पूर्वक पाठ करना है।

इति गिरिवरपुत्रीपादराजीवभूषा,
भुवनममलयन्ती सूक्तिसौरभ्यसारैः।
शिवपदमकरन्दस्यन्दिनीयं निबद्धा,
मदयतु कविभृंगान्मातृकापुष्पमाला।।17।।

।।इति श्रीमंत्रमातृकापुष्पमाला संपूर्णा।।

32. अथ श्रीमकरन्दस्तोत्रम्

इस स्तोत्र के 1 से 16 तक के श्लोक स्रग्धरा छन्द में है, जिसका लक्षण है- 'म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयं।' अर्थात् मरभनयय गणों से विरचित होता है। अत: 7, 7, 7 अक्षरों का विभाग पूर्वक पाठ करना है।

श्रींबीजे नादबिन्दुद्वितये शशिकलाकाररूपे स्वरूपे,
मातर्मे देहि बुद्धिं जहि जहि जड़तां पाहि मां दीनदीनम्।
अज्ञानध्वान्तनाशक्षमरुचिरुचिरप्रोल्लसत्पादपद्मे,
ब्रह्मेशाद्यैः सुरेन्द्रैः सुरगणविनतैः संस्तुतां त्वां नमामि।।1।।

लज्जाबीजस्वरूपे त्रिजगति वरदे व्रीडया या स्थितेयं,
तां नित्यां शम्भुशक्तिं त्रिभुवनजननीं पालयन्तीं जगच्च।
संसारे तान्निदानं सकलगुणमयीं सच्चिदानन्दरूपां,
तेजोरूपां प्रदीप्तां त्रिभुवनतिमिराज्ञानहन्त्रीं नमामि।।2।।

क्लींबीजे कामकूटे धृतकुसुमधनुर्बाणपाशांकुशां तां,
वन्दे भास्वत्सरोजोदरनिभवपुषं मोहयन्तीं त्रिलोकीम्।
कांचीमंजीरहारांगदमुकुटलसत्स्वर्णमाणिक्यरत्नै,
राजन्तीमिन्दुवक्त्रां स्तनभरनमितां क्षीणमध्यां त्रिनेत्राम्।।3।।

ऐं वाणी बीजरूपां त्रिभुवनजड़ताध्वान्तविध्वंसिनीं त्वां,
शब्दब्रह्मस्वरूपा श्रुतिभिरनुपदं गीयमाना त्वमेव।
मातर्मे देहि बुद्धिं मम सदसि परद्वन्द्वसंक्षोभकर्त्रीं,
ऐन्द्रीं वाचस्पतेरप्यतिविविधपदां त्वत्पदाम्भोजमीडे।।4।।

सौः कार्यजाते घटपटप्रभृताविष्टहेतौ सहाया,
केचिन्मायासह त्वं प्रकृतिपरिणतौ मूलभूता त्वमेव।
केचिद्बाह्यप्रपंचे मणिरिव हि मणौ हेतुभूता त्वविद्या,
विद्या विश्रान्तियुग्मक्षय इति जगतां मेनिरे शुद्धभावाः।।5।।

मातस्ते नमस्ते श्रुतिमथितगुरुस्त्र्यक्षरे ब्रह्मरूपे,
मिथ्याज्ञानान्धकारे पतितमनुदिनैः पाहि मामक्षहीनम्।
कामक्रोधप्रलोभप्रमदगदचयैः शत्रुभिः पीड्यमानं,
पत्नीपुत्रादिभृत्यैर्नतविविधजनैः श्रृंखलाभिर्निबद्धम्।।6।।

ह्रींकारे ह्रींस्वरूपे मम दह दुरितं व्याधिदारिद्र्यबीजं,
मातस्त्वत्पादपद्मद्वितयपरिसरे प्रार्थये भक्तिमेकाम्।
त्वं वाणी त्वञ्च लक्ष्मीस्त्वमसि गिरिसुता ब्रह्मविष्णुस्त्रिनेत्र,
श्रीरूपं नित्यसख्यं कृतमिह जननि त्वत्कटाक्षैकवृन्दैः।।7।।

श्रींकारे श्रीस्वरूपे वितर मयि धनं धान्यहस्त्यश्वयुक्तं,
स्वीयं माणिक्यरत्नाद्यभिलषितयुतं त्वत्पदार्चासु योग्यम्।
विद्यां त्वं देहि मोक्षं मयि भव दहनैर्देवि दन्दह्यमाने,
योगेन्द्रैः सेव्यमाना हतकलुषचयैर्मोक्षमन्वेषयद्भिः।।8।।

कामो योनिश्चतुर्थः स्मरविबुधपतिभौवनेशीं च बीजं,
तावद्वर्णावली त्वं नतजनवरदे त्वत्पदे भक्तिमीहे।
त्वत्पादाभोजयुग्मं हृदयसरसिजे संनिधायैकचित्ता,
ध्यात्वा तत्कर्मबन्धाददतिविमलधियो मुक्तवन्तो मुनीन्द्राः।।9।।

ब्रह्मेन्दुः कामदेवो वियदमरगुरुभौवनेशीं च बीजं,
तावद्वर्णस्वरूपैर्घटिततनुलतां त्वां प्रपन्नोऽस्मि मातः।
विष्णुब्रह्मेशमूर्ध्नि स्थितमुकुटमणि प्रोल्लसत्पादपद्मं,
योगीन्द्रध्येयपादांकुरनखरशशिद्योतविद्योतितां त्वाम्।।10।।

इन्दुः कामः सुरेशो वियदनललसद्वामनेत्रार्धचन्द्रै-
र्युक्तं यद्बीजमेतत्तदपि तव वपुः सच्चिदानन्दरूपम्।
बाला त्वं भैरवी त्वं त्रिभुवनजननि तारणी नीलवाणी,
त्वं गौरी त्वं च काली सकलमनुमयी त्वं महामोक्षदात्री।।11।।

सौःकारे बीजराजे त्रिभुवनजननी शक्तिराद्या त्वमेव,
त्वद्युक्तः शंभुरेष प्रभवति चलितुं त्वां विना जाड्यवान्सः।

ब्रह्मा विष्णुः कपर्दी तव जननि कृपालेशमात्राच्छरीरं,
गृह्णन्तः सृष्टिरक्षाप्रलयमविरतं चक्रिरे त्वद्वयस्याः।।12।।

ऐं बीजं वाग्भवाख्यं त्वमिह हि जड़ताध्वान्तचण्डप्रकाशा,
मातः कारुण्यधारामृतविगलितशापं पशुं नाथहीनम्
मोह्यन्ते मोहितास्ते तव जननि महामायया बद्धचित्ताः,
कारुण्यं प्रार्थयन्ते तव पदयुगले ज्ञानवन्तो मुनीन्द्राः।।13।।

क्लींकारो बीजराजस्तव जननि मनुश्रेष्ठमध्यप्रवेशात्,
साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपी मदनतनुलता ब्रह्मणो मोदकर्त्री।
सुज्ञाने स्मेरवक्त्राम्बुजकुहरलसत्सृष्टपीयूषधारा,
वेदाश्चत्वार एते तुहिनगिरिसुते प्राप्तमीनेन्द्ररूपे।।14।।

ह्रींकारोंकाररूपा त्वमिह शशिमुखी ह्रींस्वरूपा त्वमेव,
त्वं क्षान्तिस्त्वं च कान्तिर्हरिहरकमलोद्भूतरूपा त्वमेव।
त्वं सिद्धिस्त्वं च ऋद्धिर्मदनरिपुमनस्त्वं च संमोहयन्ती,
विद्या त्वं मुक्तिहेतुर्भवजलधिजनुर्दुःखहन्त्री त्वमेका।।15।।

श्रीं बीजं श्रीस्वरूपे मधुरिपुमनसो ज्येष्ठमध्यासिता त्वं,
मातस्त्वद्दृष्टिलेशादमरपतिरसौ प्राप्तवान्बुद्धिमेनाम्।
इत्येवं षोडशार्णः जपति मनुवरं स्वर्गमोक्षैकहेतुं,
सिद्धीरष्टौ लभन्ते य इदमनुदिनं श्रेष्ठमेतद्भजन्ते।।16।।

यह अन्तिम श्लोक **अनुष्टुप् छन्द** में है, जिसका लक्षण है – '**श्लोके षष्ठं गुरुं ज्ञेयं सर्वत्र लघुपंचमम्। द्विचतुःपादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः**' अर्थात् प्रथमपाद और तृतीयपाद 'रर' गणों व अन्त में एक गुरु और एक लघु वर्ण से तथा दितीयपाद और चतुर्थपाद 'जस' गणों व अन्त में एक लघु और एक गुरु वर्ण से विरचित होता है।

पूजयित्वा विधानेन महात्रिपुरसुन्दरीम्।
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु देवीसायुज्यमाप्नुयात्।।17।।

।।इति शिवोक्तं मकरन्दस्तोत्रं संपूर्णम्।।

33. अथ श्रीत्रैलोक्यमोहनकवचम्

अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहनकवचस्य सदाशिव ऋषिः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, विराट् छन्दः, ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम्, चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये पाठे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः –

अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहनकवचस्य सदाशिवर्षये नमः	– शिरसि,
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवताभ्यो नमः	– हृदये,
विराट्छन्दसे नमः	– मुखे,
ऐं बीजाय नमः	– गुह्ये,
क्लीं शक्तये नमः	– पादयोः,
सौः कीलकाय नमः	– नाभौ,
चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये पाठे विनियोगाय नमः	– सर्वांगे।

मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ अंगन्यासः
ऐं नमः	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
क्लीं नमः	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
सौः नमः	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**
ऐं नमः	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुम्**
क्लीं नमः	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
सौः नमः	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**	**अस्त्राय फट्**

भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः

इस स्तोत्र के 1 से 56 तक के श्लोक **अनुष्टुप्** छन्द में है, जिसका लक्षण है– **'श्लोके षष्ठं गुरुं ज्ञेयं सर्वत्र लघुपंचमम्। द्विचतुःपादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः'** अर्थात् प्रथमपाद और तृतीयपाद 'रर' गणों व अन्त में एक गुरु और एक लघु वर्ण से तथा द्वितीयपाद और चतुर्थपाद 'जस' गणों व अन्त में एक लघु और एक गुरु वर्ण से विरचित होता है। लेकिन कुछ श्लोक अनुष्टुप् छन्द के ही प्रभेदों से विरचित हैं, जिन्हें पाठक/उपासक स्वयं अन्तर समझ कर पाठ करें।

श्रीदेव्युवाच

श्रीमन्त्रत्रिपुरसुन्दर्या या या विद्या सुदुर्लभाः।
कृपया कथिताः सर्वाः श्रुताश्चाधिगता मया।।1।।

प्राणनाथाधुना ब्रूहि कवचं मन्त्रविग्रहम्।
त्रैलोक्यमोहनं चेति नामतः कथितं पुरा।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि सर्वार्थकवचं स्फुटम्।।2।।

ईश्वर उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुन्दरि प्राणवल्लभे।
त्रैलोक्यमोहनं नाम सर्वविद्यौघविग्रहम्।।3।।

यद्धृत्वा दानवान्विष्णुर्निर्जघान मुहुर्मुहुः।
सृष्टिं वितनुते ब्रह्मा यद्धृत्वा पठनाद्यतः।।4।।

संहर्ता हि यतो देवि देवेशो वासवो यतः।
धनाधिपः कुबेरोऽपि यतः सर्वे दिगीश्वराः।।5।।

न देयं यदशिष्येभ्यो देयं शिष्येभ्य एव च।
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा मृत्युमवाप्नुयात्।।6।।

श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्याः कवचस्य ऋषिः शिवः।
छन्दो विराट् देवता च श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी।।7।।

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
शिरो मे वाग्भवं पातु कएईलह्रीं रूपकम्।।8।।

हसकहलह्रीं पातु ललाटं मे कामेश्वरी।
सकलह्रीं दृशौ पातु मम कामेश्वरी सदा।।9।।

ऐंह्रींश्रींक्लींसौःऐंक्लींसौः सौःक्लींऐंसौःक्लींश्रींह्रींऐं।
वागादिषोडशी पातु स्तनौ मे सुन्दरी परा।।10।।

कएश्रींहसकलह्रीं क्लींहसकहलह्रीं सौः।
सकलह्रीं नखवर्णा पार्श्वौ पात्वपराजिता।।11।।

ह्लींह्सौंस्हौंह्लींस्हौंह्सौंक्लीं हसकहलह्लींह्लींह्लींसौः।
हहसकहलह्लींक्लींह्सौंस्हौंह्लींह्लींस्हौंह्सौंह्लीं मे।।12।।

मे सुन्दरीयं समाख्याता महापुरुषपूजिता।
महागुह्यस्वरूपा च केवलानन्दचिन्मयी।।13।।

एकत्रिंशत्वर्णरूपा कटिदेशं सदाऽवतु।
हसकलह्लीं मे पृष्ठं कूटं वाग्भवसंज्ञकम्।।14।।

हसकहलह्लीं कुक्षि कामकूटं सदाऽवतु।
वक्षस्थलं शक्तिकूटं सकलह्लीं च मेऽवतु।।15।।

लोपामुद्रा पंचदशी मध्यदेशं सदाऽवतु।
कहएईलह्लीं नाभिं हकएईलह्लीं कटिम्।।16।।

कहएईलह्लीं हकएईलह्लीं सकएई -
लह्लीं मे मानवी विद्या सर्वतः परिरक्षतु।।17।।

सक्थिनी मे सदा पातु सकएईलह्लीं सदा।
सहकएईलह्लीं मे ऊरुयुग्मं सदाऽवतु।18।।

सहकहएईलह्लीं गुह्यं पातु सदा मम।
हसकएईलह्लीं तु जानुनी पातु मे सदा।19।।

सहएईलह्लीं सहकहएईह्लीं हसक -
एईह्लीं मम जलजे भये सर्वतः रक्षतु।।20।।

हसकएईलह्लीं मे गुल्फयुग्मं सदाऽवतु।
हसकहएईलह्लीं पादौ पातु सदा मम।।21।।

हसकएईलह्लीं हसकहएईलह्लीं स -
हकएईलह्लीं सदा कुबेरेण प्रपूजिता।।22।।

कएईलह्लीं प्राच्यां मां त्रिपुरा परिरक्षतु।
हसकहलह्लीं पातु वह्निकोणे निरन्तरम्।।
सहसकलह्लीं याम्यां पातु मां सर्वसिद्धिदा।23।।

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सहसकल
ह्रीं विद्यागस्त्यसेव्या च चक्रस्था मां सदाऽवतु।।24।।

सएईलह्रीं च नित्यं नैर्ऋत्यां मां सदाऽवतु।
सहकहलह्रीं पातु प्रतीच्यां मे द्वितीयकम्।।
सकलह्रीं सदा पातु वायव्ये परिरक्षतु।25।।

सएईलह्रीं सहकहलह्रीं सकलह्रीं तु।।
नन्द्याराधितविद्येयं सर्वांगं मे सदाऽवतु।।26।।

हसकलह्रीं वायव्ये सहकलह्रीं उत्तरे।
सकहलह्रीं ईशान्ये सुन्दरी पातु मां सदा।।27।।

हसकलह्रीं सहकलह्रीं सकहलह्रीं मां।
ऊर्ध्वं रक्षतु मे नित्यं सूर्यपूज्या महोदया।।28।।

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं मे।
सर्वांगं वै शक्रपूज्या सततं परिरक्षतु।।29।।

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं च।
ब्रह्माणी मां सदा पायाच्छ्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी।।30।।

हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं च।
हसकलहसकहलसकलह्रीं शांकरी।।
चतुष्कूटा महाविद्या पाताले मां सदाऽवतु।।31।।

हसकलह्रीं आधारं हसकहलह्रीं लिंगे।
सकलह्रीं पातु नाभिं सहकलह्रीं हृदये।।32।।

सहकहलह्रीं कण्ठं सहसकलह्रीं नाभ्यां।
हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं स -
हकलह्रीं सहकहलह्रीं सहसकलह्रीं।
मनोभवा सदा पातु रससंख्या महाप्रभा।।33।।

षट्कूटा वैष्णवी बिद्या पातु मां सुन्दरीपरा।
कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं च।
दुर्वाससा प्रपूज्या मां दिक्षु विद्या सदाऽवतु।।34।।

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ।
क्रोधेन पूजिता देवी विदिक्षु परिक्षतु।।35।।

हसकलह्रीं हसकलहलह्रीं सकलह्रीं।
महाज्ञानमयी विद्या षोडशी मां सदाऽवतु।।36।।

श्रींह्रींक्लींऐंसौ:ह्रींश्रींऐंक्लींसौ:सौ:ऐंक्लींह्रींश्रीं च।
सर्वांगे मे सदा पातु बीजरूपा च षोडशी।।37।।

मतान्तरे (मतान्तर में 36 से 41 तक के श्लोक अधिक हैं)

श्रींह्रींक्लींऐंसौः ओंह्रींश्रींकएईलह्रींहसक –
हलह्रींसकलह्रींसकलह्रींसौ:ऐंक्लींह्रींश्रीं।
सर्वांगं मे सदा पातु पूर्णरूपा तु षोडशी।।38।।

ओंक्लींह्रींश्रींऐंक्लींसौ:कएईलह्रींहसक –
हलह्रींसकलह्रींस्त्रीं ऐंक्रोंईंहुं महादेवी।।39।।

श्रीमहाषोडशी पूर्णा प्रथिता भुवनत्रये।
ज्ञानेन मृत्युशमनी शिरस्था सर्वतोऽवतु।।40।।

श्रीमहाषोडशी पूर्णा महादेवेन पूजिता।
यस्य विज्ञानमात्रेण मृत्योर्मृत्युर्भवेत्स्वयम्।।41।।

ऐंकएईलह्रीं क्लींहसकहलह्रीं सौः सक।
लह्रीं सोऽहं हौं हंसः ह्रीं सकलह्रींसौः हसक।
हलह्रींक्लीं कएईलह्रींऐं ब्रह्मस्वरूपिणी।42।।

अष्टादशाक्षरीविद्या परमानन्दचिद्घना।
नेत्रवेदात्मकैर्वर्णयुता (42) मां सर्वतोऽवतु।।43।।

इति ते कथितं देवि ब्रह्मविद्याकलेवरम्।
त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम्।।44।।

सप्तकोटिमहाविद्या तन्त्रेषु कथिताः प्रिये।
तासां सारात्सारतरा याश्च विद्याः सुगोपिताः।।45।।

बहुनात्र किमुक्तेन श्रीमहाणांडशीपरा।
प्रकाशिता मया देवि यां प्रयच्छमि पुनः पुनः।।46।।

महाविद्यामयं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम्।
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत्पुरश्चर्यां समाचरेत्।।47।।

अष्टोत्तरशतं जप्त्वा दशांशं हवनादिकम्।
ततः सुसिद्धकवचं पुण्यात्मा मदनोपमः।।48।।

मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्चर्यां विना ततः।
वक्त्रे तस्य वसेद्वाणी कमला निश्चला गृहे।।49।।

पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत्।
दशवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात्।।50।।

आत्मनं तन्मयं कृत्वा यः पठेत्कवचं परम्।
यं यं पश्यति वै शीघ्रं तस्य दासो भवेद्ध्रुवम्।।51।।

विलिख्य भूर्जे घुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि।
कण्ठे यदि वा बाहौ स कुर्याद्दासवज्जगत्।।52।।

त्रिलोकीं क्षोभयत्येव त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि महास्त्रादीनि पार्वति।।53।।

माल्यानि कुसुमानीव सुखदानि भवन्ति हि।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेत्सुन्दरीं पराम्।।54।।

नवलक्षं प्रजप्त्वापि तस्य विद्या न सिद्ध्यति।
स शस्त्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।।55।।

इदमेवं परं यस्माद् भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पठनीयं मुमुक्षुभिः।।56।।

यह अन्तिम श्लोक **वसन्ततिलका** छन्द के ही प्रभेद में है, जिसका लक्षण है – '**उक्ता वसन्ततिलका तमजाः जगौ गः।**' अर्थात् तमजज गणों व अन्त में दो गुरुवर्णो से विरचित होता है। अतः 8, 7

अक्षरों का विभाग पूर्वक पाठ करना है। फर्क इतना है कि द्वितीय त्रिक रगण है, मगण नहीं।

भूवेश्मगत्रिवृत्तषोडशनागशक्र -
दिग्युग्मवस्वनलकोणगबिन्दुमध्ये।
सिंहासनोपरिगतारकपीठमध्ये,
प्रोत्फुल्लपद्मनिलयां त्रिपुरां भजेऽहं।।57।।

।। इति रुद्रयामले गौरीश्वरसंवादे श्रीराजराजेश्वरी
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यास्त्रैलोक्यमोहनाख्यकवचं संपूर्णम्।।

34. चित्रों का नाम व पृष्ठ संख्या

।। पूर्णमस्तु ।।

।। देव्यर्पणमस्तु ।।

गौरीतिलकमण्डलम् = एकलिंगतोभद्रम्
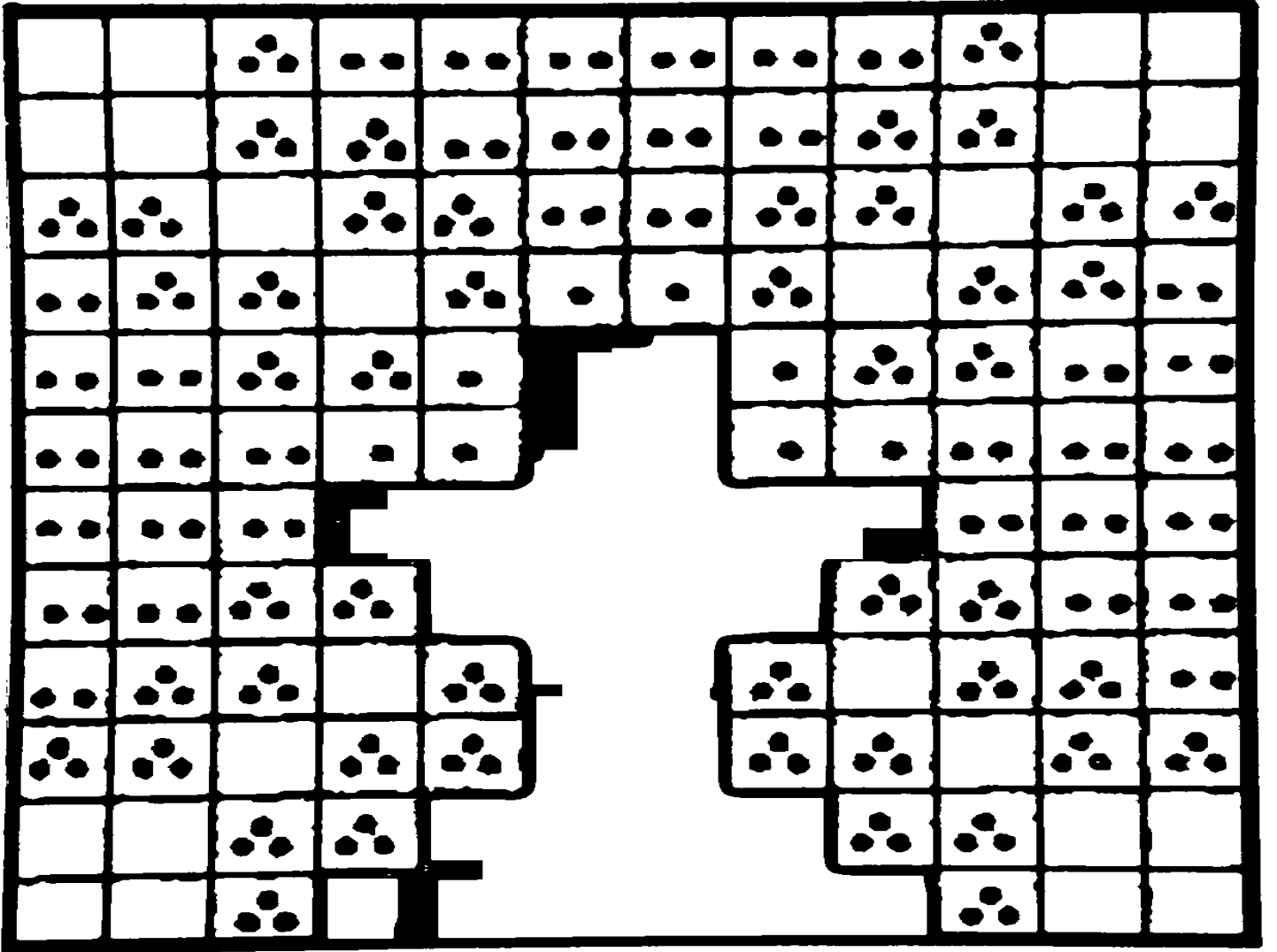
• - 8 पीला, •• – 36 लाल, ∴ – 48 नीला।

गौरीतिलकमण्डलम् = एकलिंगतोभद्रम्
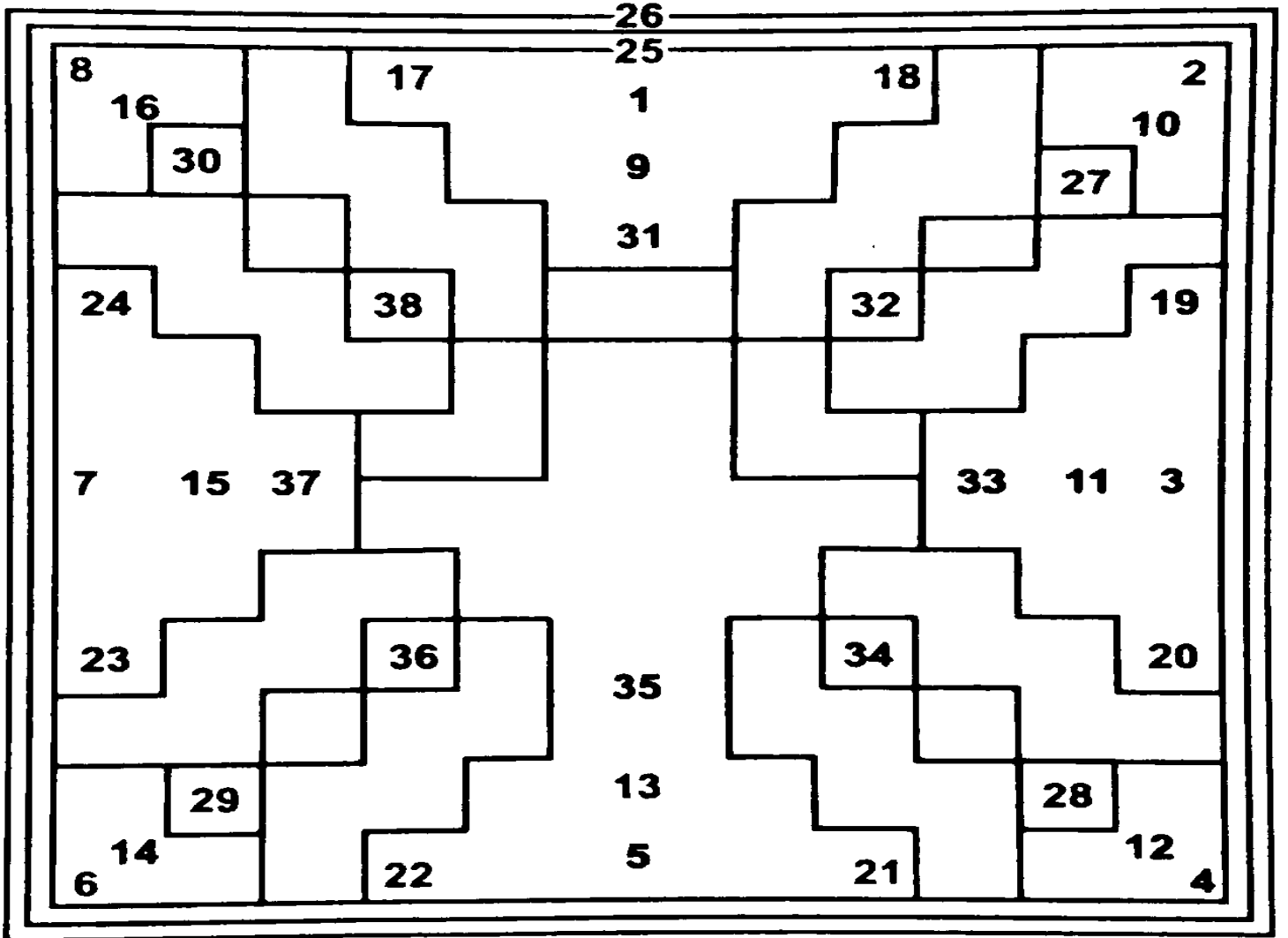
चित्र संख्या (5.1)
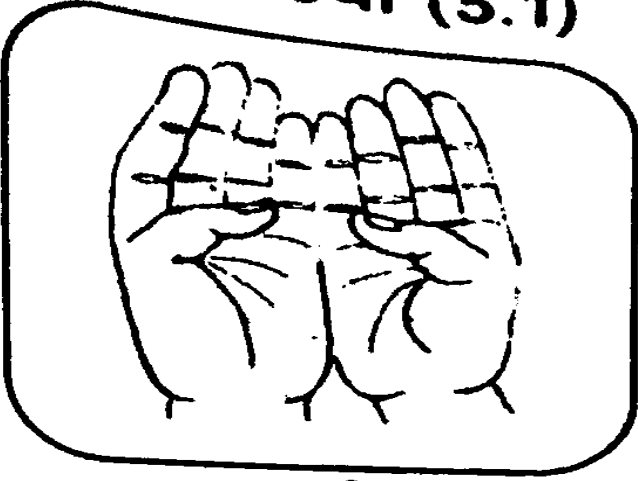
आवाहनी मुद्रा

चित्र संख्या (5.2)
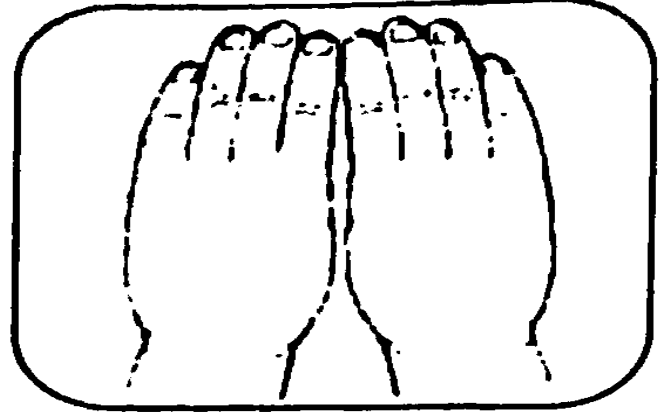
स्थापनी मुद्रा

चित्र संख्या (5.3)
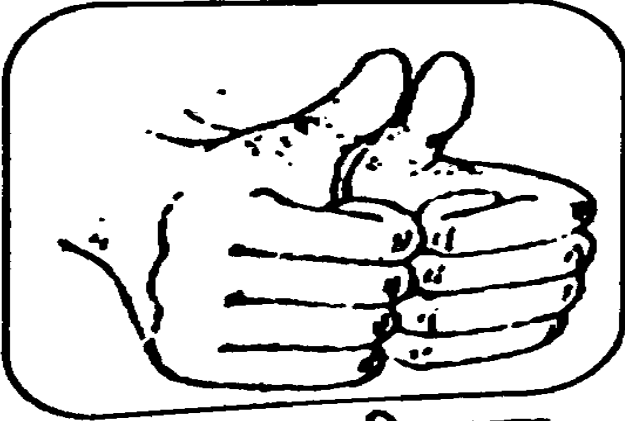
सन्निधापनी मुद्रा

चित्र संख्या (5.4)
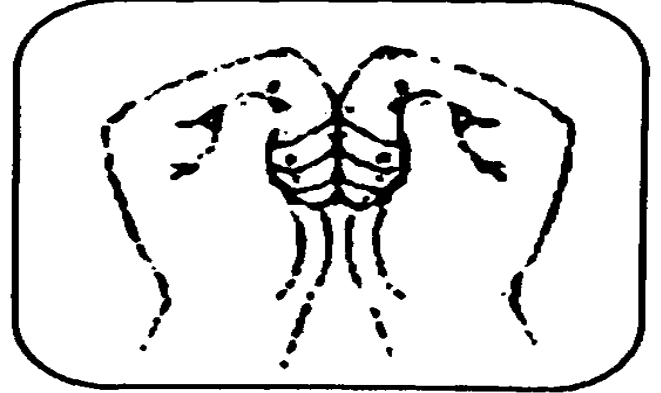
सन्निरोधिनी मुद्रा

चित्र संख्या (5.5)
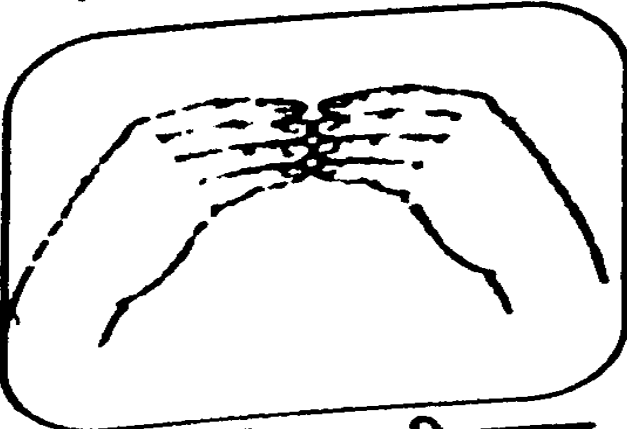
सम्मुखीकरणी मुद्रा

चित्र संख्या (5.6)
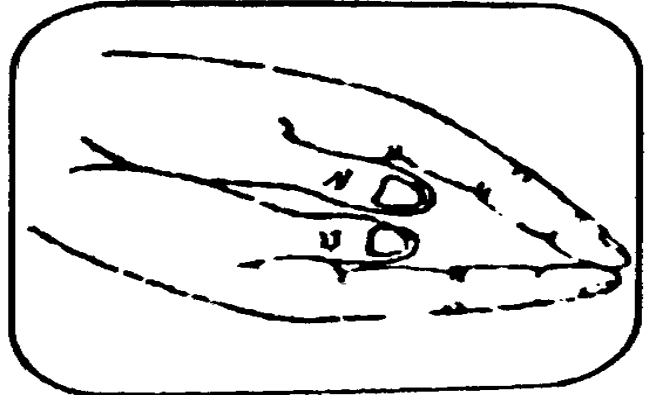
अवगुण्ठनी मुद्रा

चित्र संख्या (5.7)
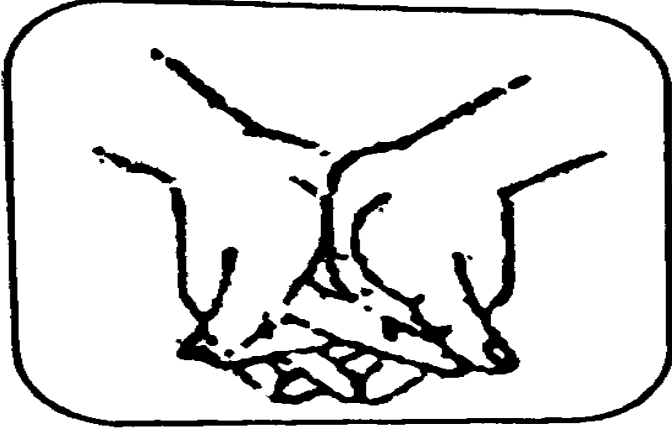
धेनु मुद्रा

चित्र संख्या (5.12)
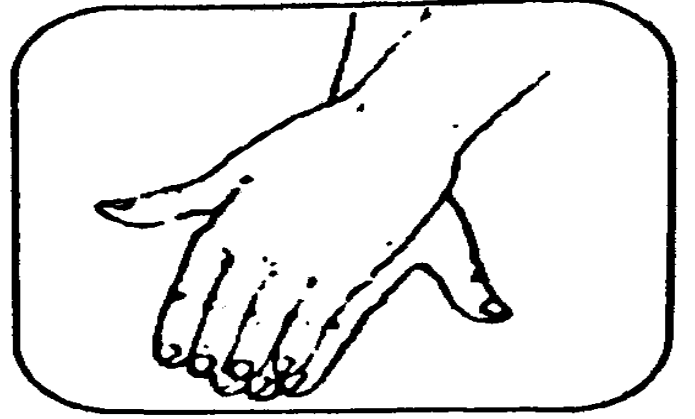
मत्स्य मुद्रा

चित्र संख्या (5.14)

योनि मुद्रा

चित्र संख्या (5.15)
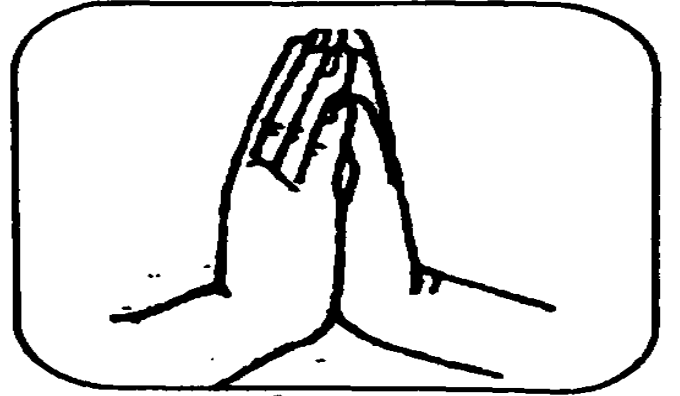
प्रार्थना मुद्रा

चित्र संख्या (5.17)
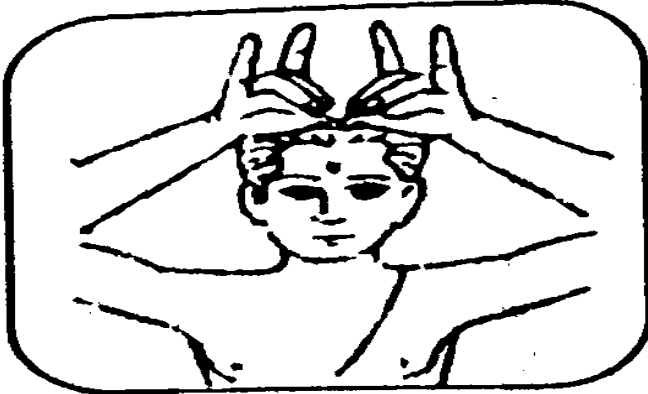
मृगी मुद्रा

चित्र संख्या (5.18)
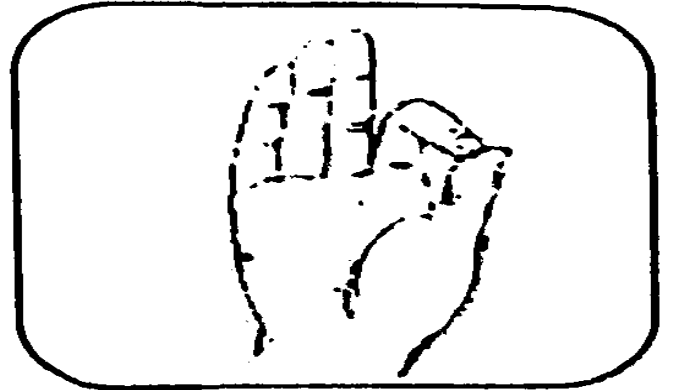
ज्ञान मुद्रा

चित्र संख्या (5.20)
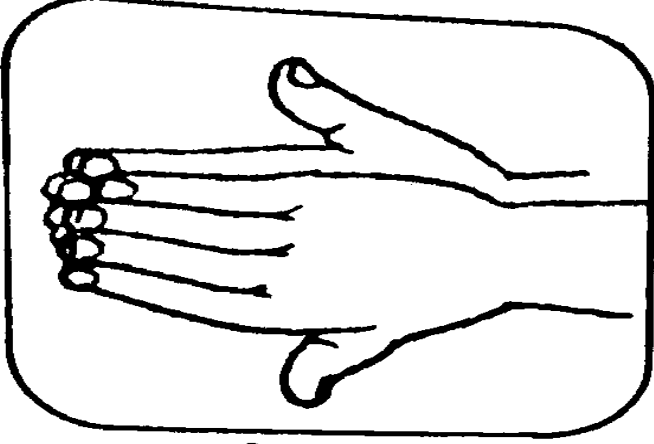
स्वरोदय मुद्रा

चित्र संख्या (5.21)
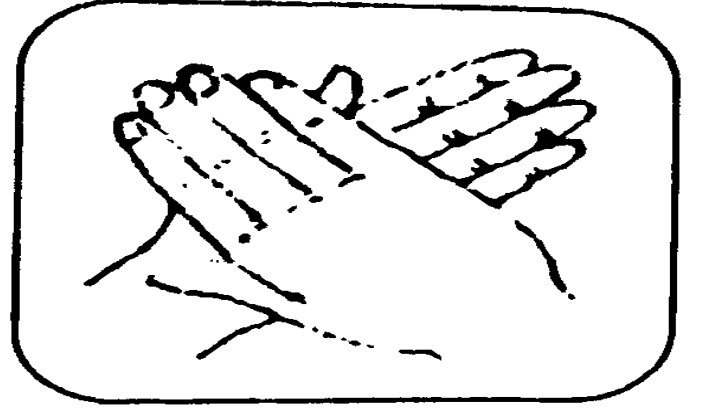
चतुरस्र मुद्रा

चित्र संख्या (5.22)
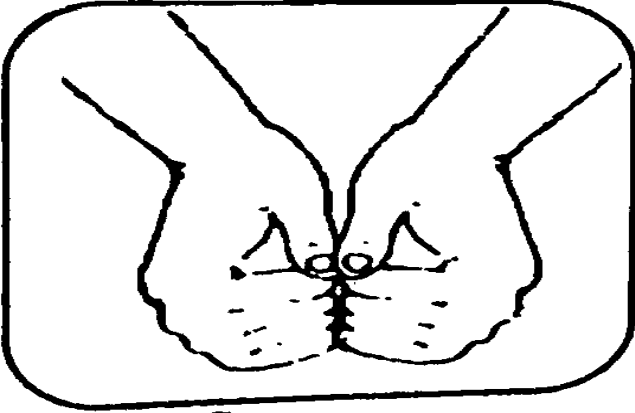
मुष्टिक मुद्रा

चित्र संख्या (5.23)
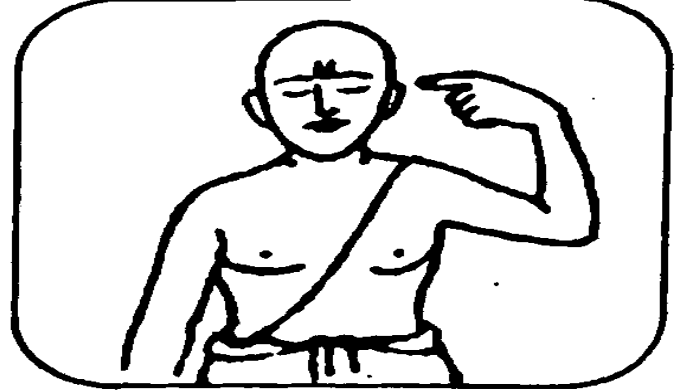
सौभाग्यदण्डिनी मुद्रा

चित्र संख्या (5.24)
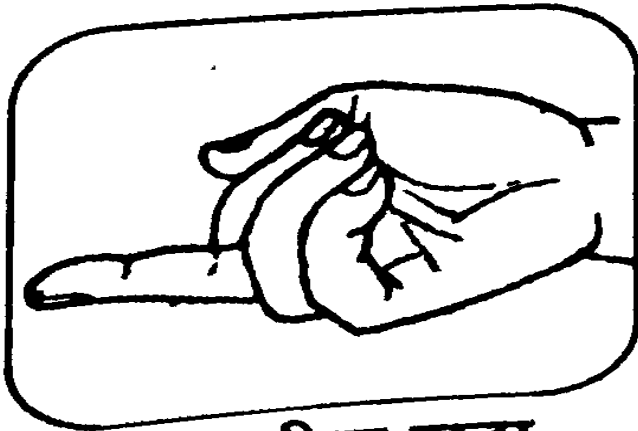
ऋजुग्रीवा मुद्रा

चित्र संख्या (5.25)
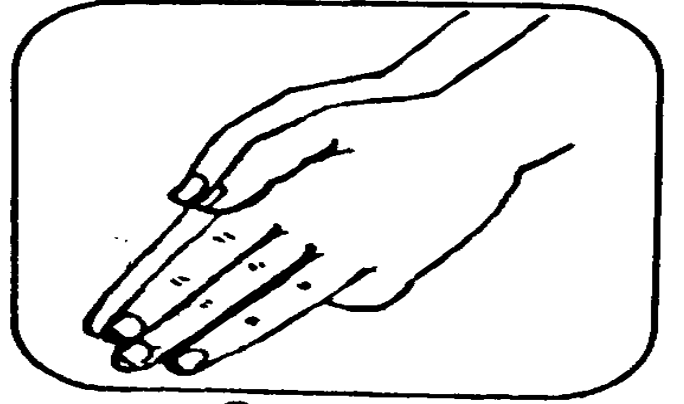
गालिनी मुद्रा

चित्र संख्या (5.26)
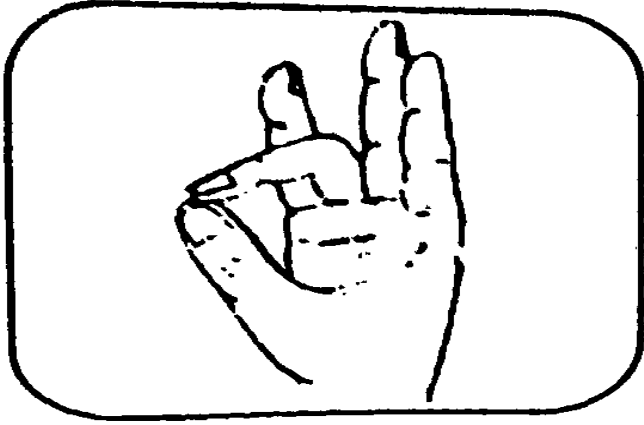
तत्त्व मुद्रा

चित्र संख्या (5.27–1)
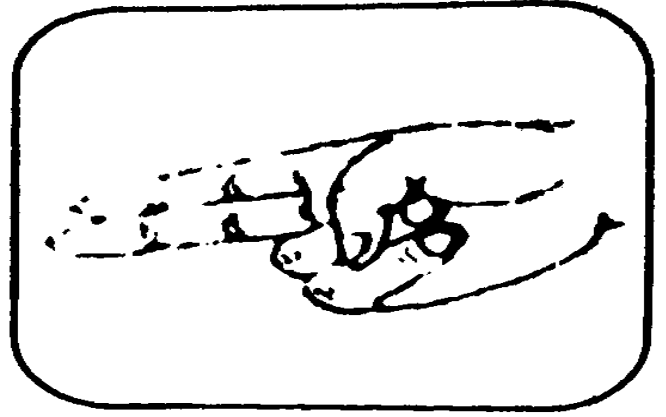
प्राण मुद्रा

चित्र संख्या (5.27–2)
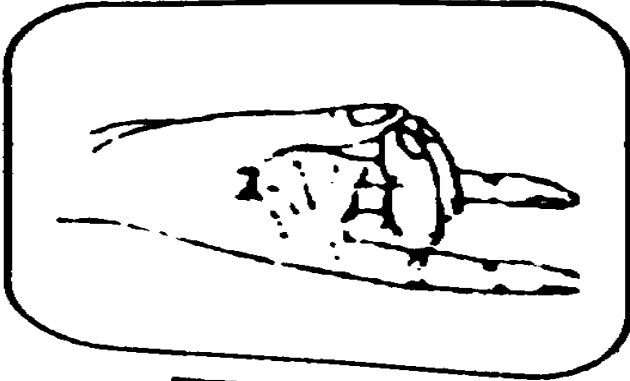
व्यान मुद्रा
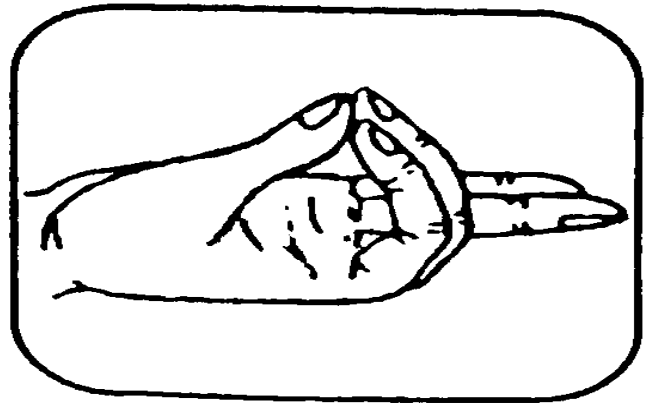
चित्र संख्या (5.27–3)

अपान मुद्रा

चित्र संख्या (5.27–4)
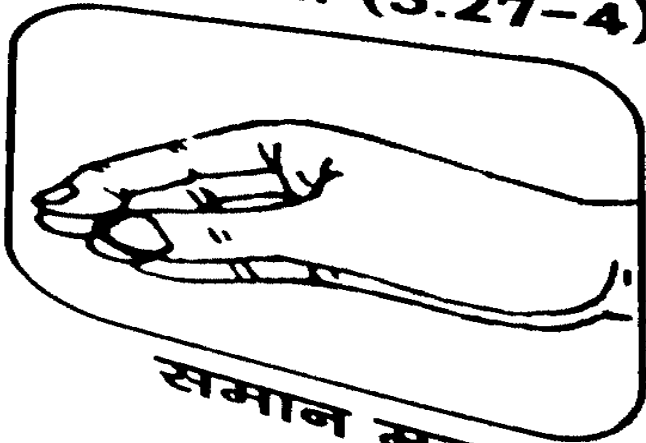
समान मुद्रा

चित्र संख्या (5.27–5)
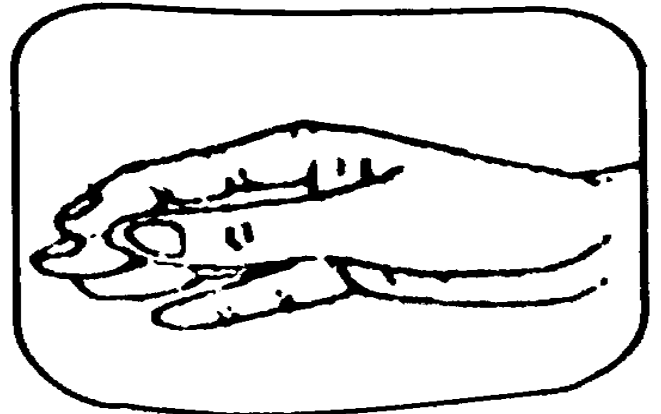
उदान मुद्रा

चित्र संख्या (5.27-6)
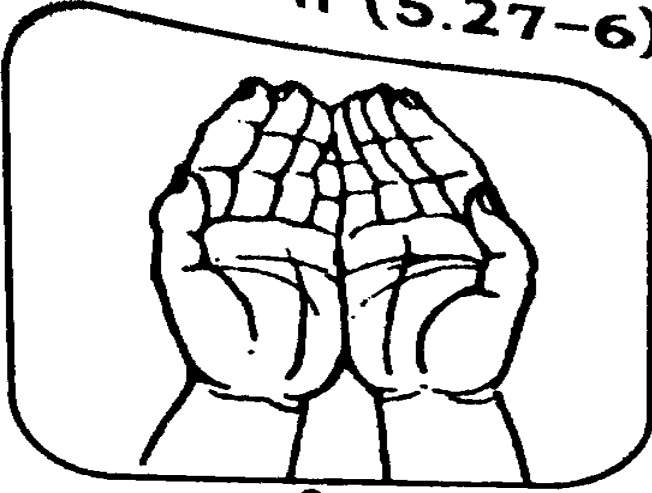
ब्रह्मार्पण मुद्रा

चित्र संख्या (5.27-7)
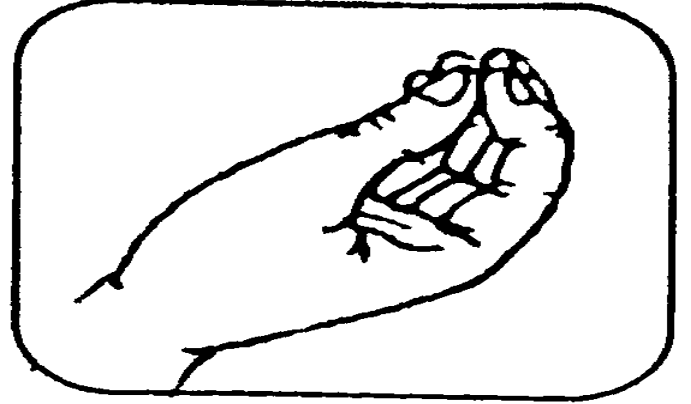
ग्रास मुद्रा
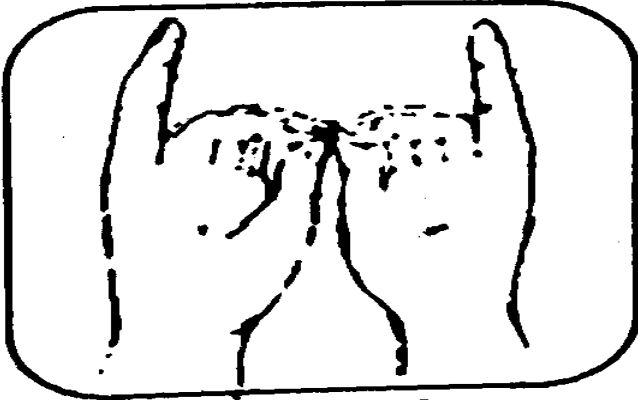
चित्र संख्या (5.28-1)

सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा

चित्र संख्या (5.28-2)
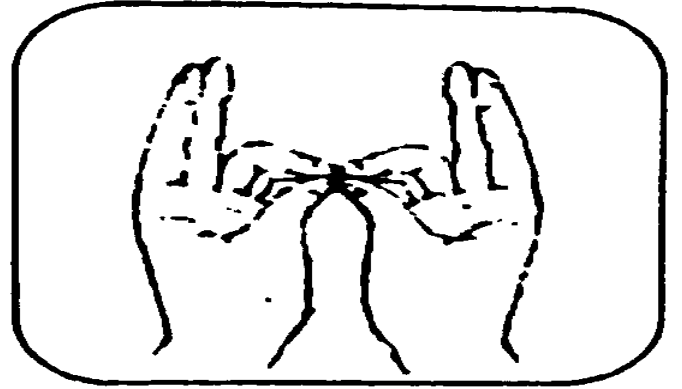
सर्वविद्राविणी मुद्रा

चित्र संख्या (5.28-3)
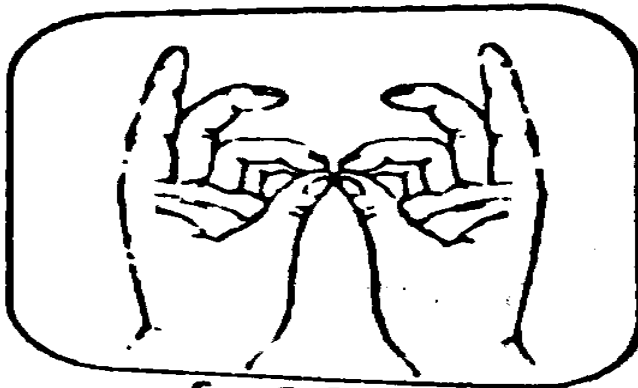
सर्वाकर्षिणी मुद्रा

चित्र संख्या (5.28-4)

सर्ववश्यंकरी मुद्रा

चित्र संख्या (5.28-5)
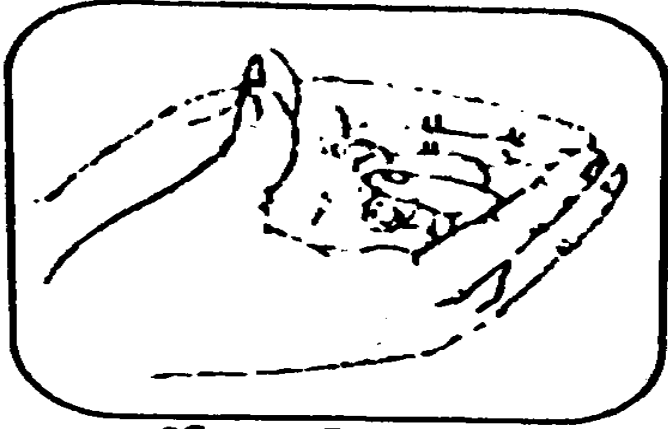
सर्वोन्मादिनी मुद्रा

चित्र संख्या (5.28-6)
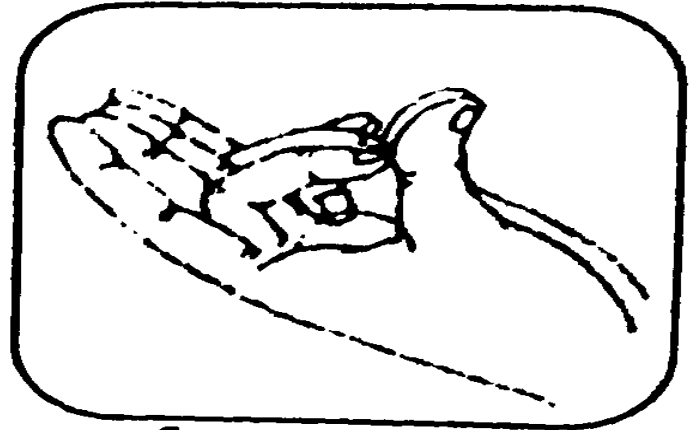
सर्वमहांकुशा मुद्रा

चित्र संख्या (5.28-7)
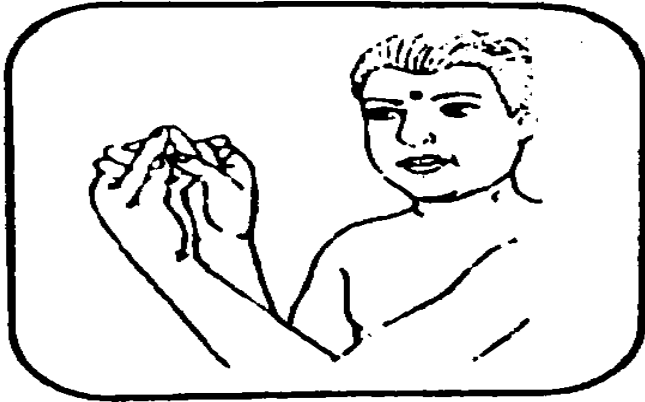
सर्वखेचरी मुद्रा
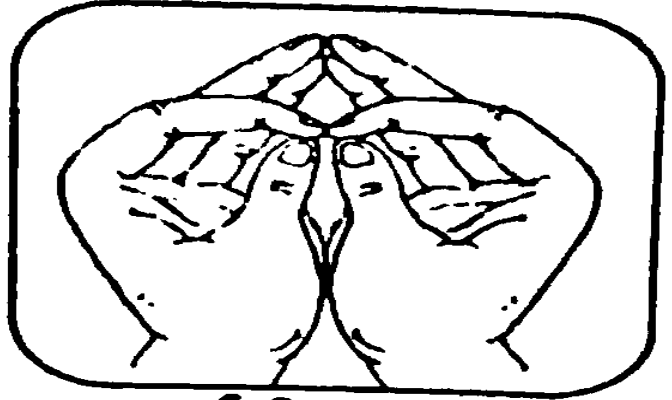
चित्र संख्या (5.28-8)

सर्वबीज मुद्रा

चित्र संख्या (5.28-10)
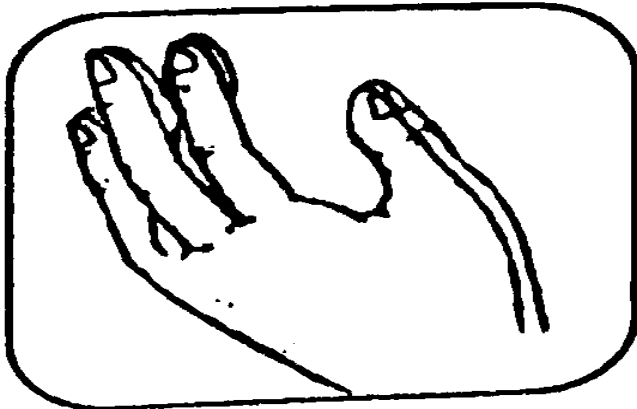
त्रिखण्डा मुद्रा
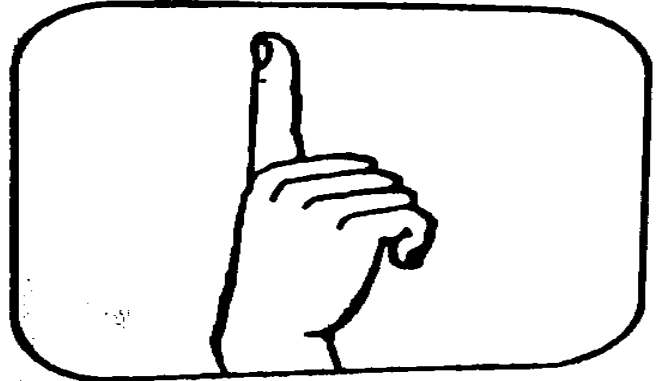
चित्र संख्या (5.31)

बाण मुद्रा

(चित्र संख्या 27)
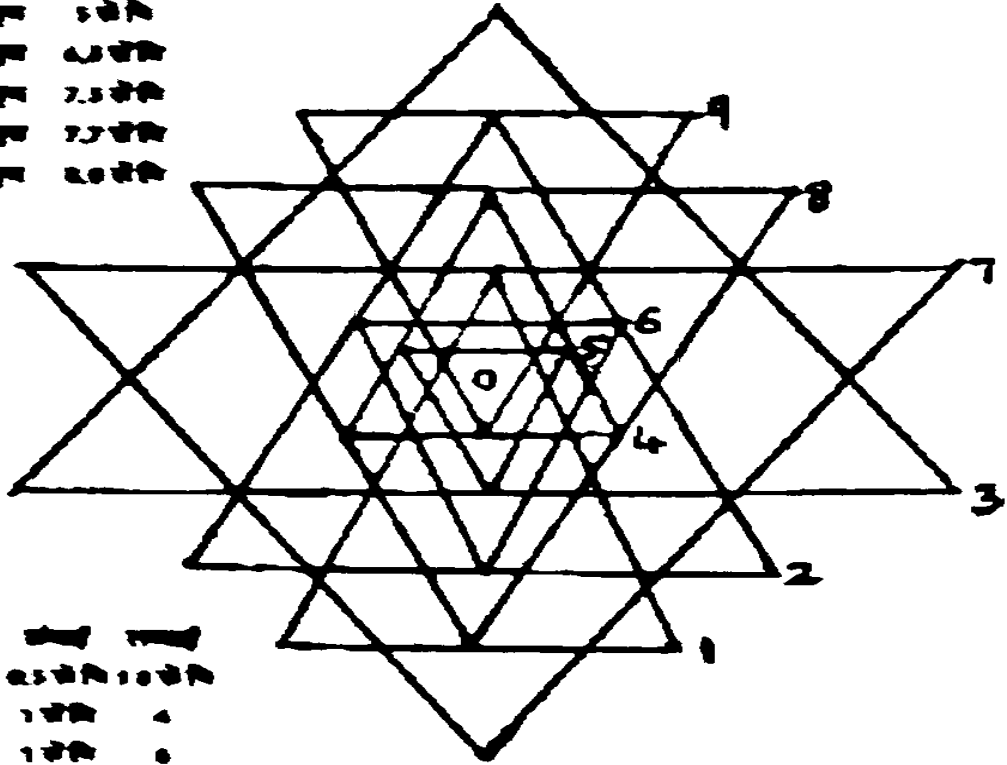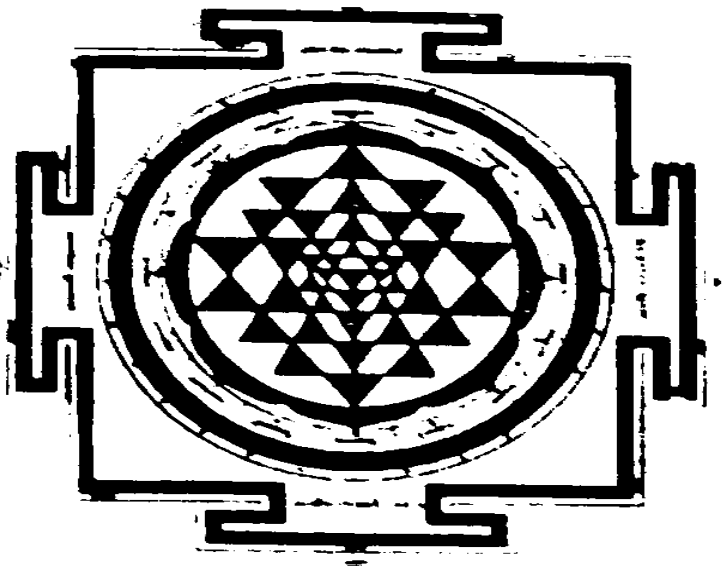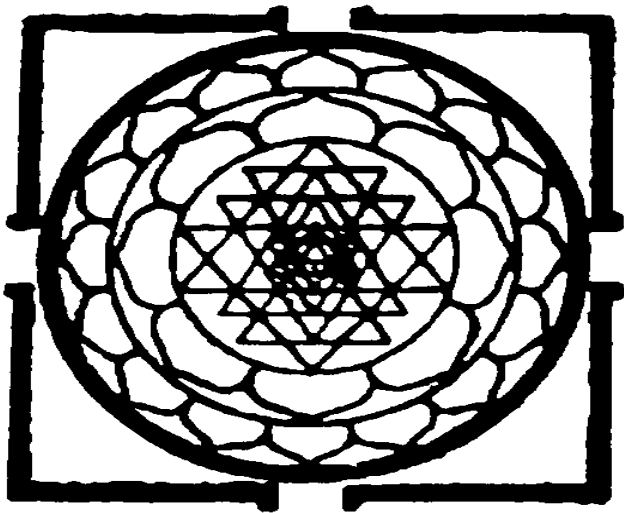
दशमहाविद्याप्राकट्यं
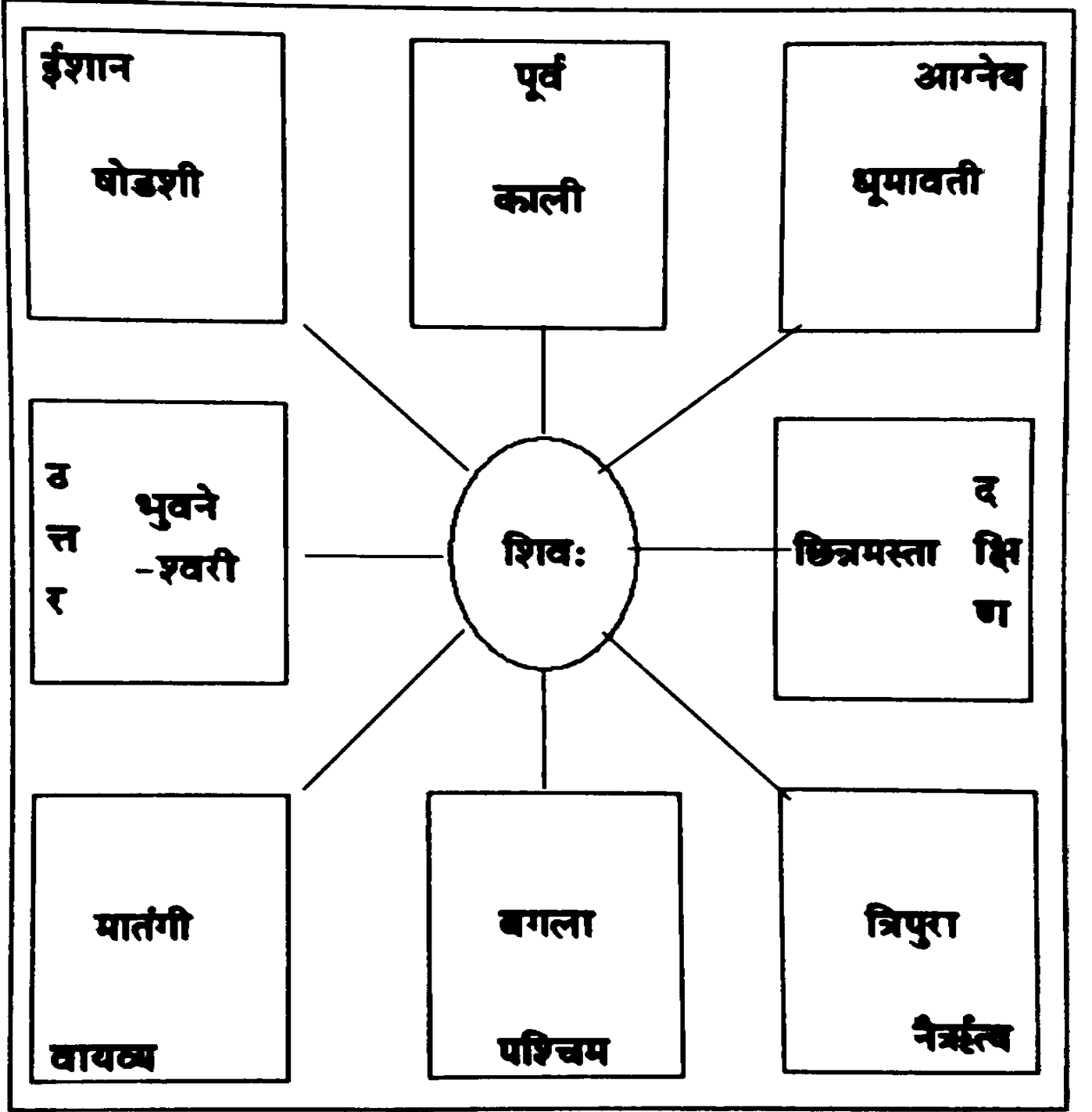
ऊर्ध्वे - तारा, अध: - भैरवी।

पूर्णिका

(श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः)
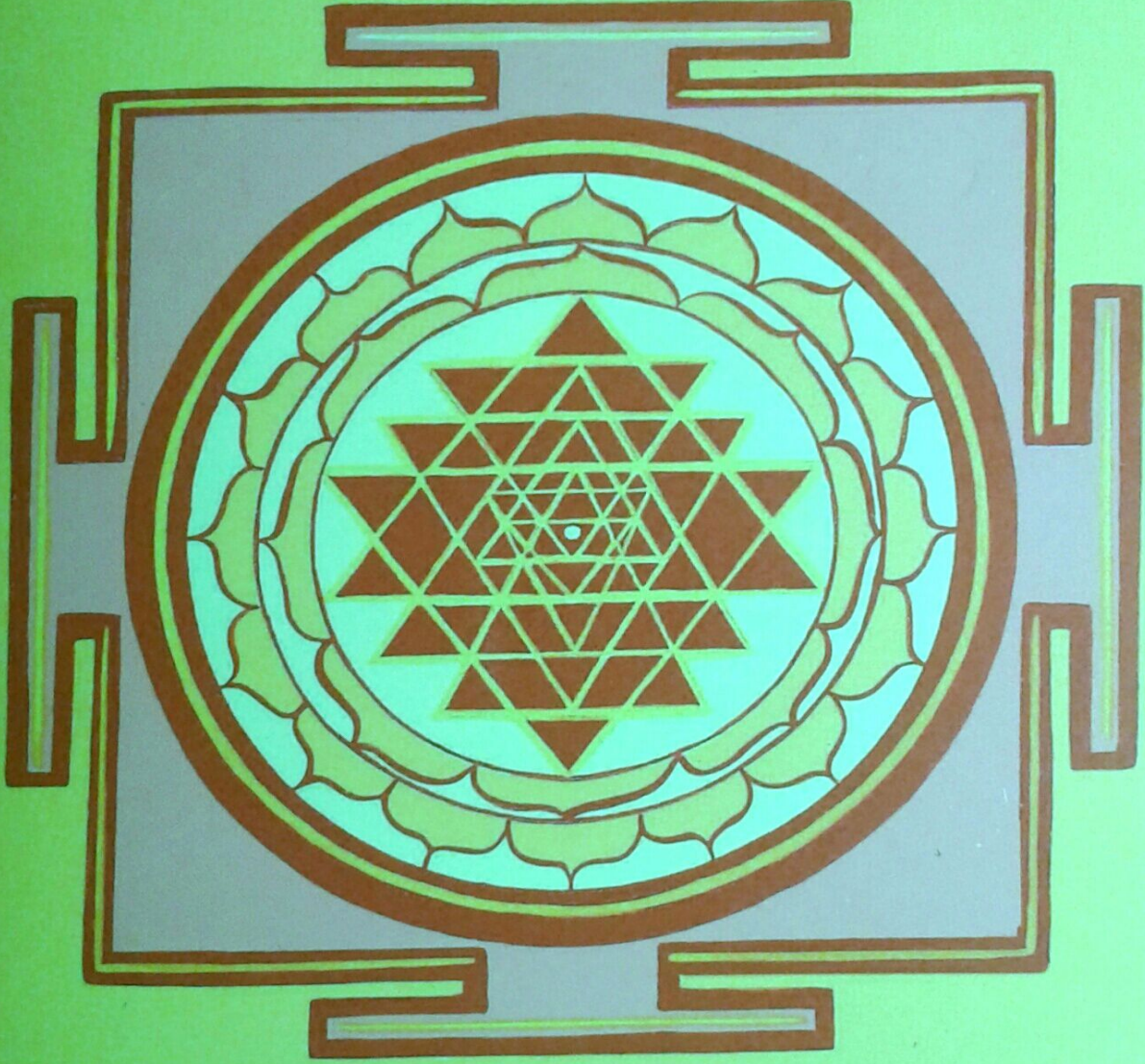
संकलनकर्ता

श्री स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

श्री स्वामी रामानन्द सरस्वती जी

।।ॐ श्री ॐ।।

पूर्णिका

(श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः)

संकलनकर्ता

श्री स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर

181, ग्रामः गौहरी माफी,

पोः रायवाला, ऋषिकेश.

ईपत्र–swsdsr@gmail.com

web: www.satyamsadhana.org

ग्रन्थनामः-**पूर्णिका (श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः)**

प्रकाशक :- **श्री सत्यं साधना कुटीर समिति**, ऋषीकेश.

प्रथम संस्करण : मंगलवार, 14 जून2016,
गंगा दशहरा, ज्येष्ठ शुक्ल दशमी संवत् 2073.
प्रतियां : ८00 (आठ सौ)
प्रधान सम्पादक : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती
सम्पादक मण्डल: स्वामी सर्वेशानन्द सरस्वती,
पं. ज्योतिप्रसाद उनियाल, और
चौ. विजयपाल सिंहजी.
अक्षर संयोजन : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती.

पुस्तक प्राप्ति स्थान-
श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,
ग्राम-गौहरी माफी, पो. रायवाला, ऋषीकेश
जिला- देहरादून 249205 (उत्तराखण्ड)
दूरभाष संख्या:- 91-9557130251,
ईपत्र-swsdsr@gmail.com
web: www.satyamsadhana.org

सहयोग राशि : 50/- (पचास रुपये)

मुद्रक : सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश

प्रस्तावना

इस छोटी सी पुस्तिका का नाम '**पूर्णिका**' इसलिये रखा गया है कि यह '**श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः**' नाम से पूर्व में प्रकाशित पुस्तक का पूरक अंक है। कैसे ? जिन साधक, उपासक, जिज्ञासु, मुमुक्षु व सामान्य पाठकों ने '**श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः**' को पढ़ा उन्होंने अपने अमूल्य सुझावों के साथ निम्न निवेदन प्रस्तुत किये हैं। **1.** संकेत मात्र किये गये कई विषयों पर स्पष्टीकरण। **2.** जिन चतुर्थ्यन्त मन्त्र तथा अन्य भी कुछ मन्त्रों का संकेत मात्र किया गया है। उन्हें पूरा दें ताकि जो व्याकरण नही पढ़े हैं उन्हें कठिनाई न हो। **3.** बाणादि मुद्रा, सुमुखादि मुद्रा जो कही गयी हैं उनमें आदि शब्द से कौन-कौन सी मुद्रा ग्रहण करनी है और उनके लक्षण व चित्र भी दें। 4. मूल ग्रन्थ में कुछ मुद्राओं का लक्षण है किन्तु चित्र नहीं और ज्वालिनी आदि कुछ मुद्राओं का उल्लेख है किन्तु उनके लक्षण व चित्र नहीं, अतः उन्हें प्रकाशित करें। 5. त्रैलोक्यमोहनकवच के अन्तिम श्लोक के छन्द और अर्थ को प्रकाशित करने हेतु निवेदन किया है।

इस प्रकार के और भी अनेक प्रश्नों व संशयों को पाठकों ने जो पूछा है उन सबका समाधान प्रकाशित करने का प्रयास इस '**पूर्णिका**' में किया गया है। श्रीविद्या की परम्परा में कुछ विषयों को गुप्त रखने के कारण आज कल के उपासकों, साधकों और पाठकों में उन विषयों की जिज्ञासा उत्पन्न होना उचित ही है। अतः इस '**पूर्णिका**' के द्वारा सबके प्रश्नों व संशयों के समाधान के साथ समस्त निवेदनों को पूरा करने का प्रयास किया गया है।

सभी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि भविष्य में भी यदि किसी प्रकार की न्यूनता, अस्पष्टता व संशय आदि दिखाई दे तो अवश्य ही विना संकोच किये हमें बताने का कष्ट करें ताकि द्वितीय संस्करण में पूर्णिका सहित आप लोगों के समस्त सुझावों व जिज्ञासाओं का समाधान मूल ग्रन्थ में ही समाविष्ट व समायोजित किया जा सके।

मैं अपने प्रिय समस्त जागरूक साधकों, उपासकों, जिज्ञासुओं, मुमुक्षुओं व सामान्य पाठकों की भूरि भूरि प्रशंसा करता हूं कि उन्होंने अपने अमूल्य सुझाव व जिज्ञासा अभिव्यक्त कर मूल ग्रन्थ में वर्णित साधना/पूजा पद्धति का पूर्ण लाभ स्वयं उठाकर जनसामान्य तक पहुंचाने के मेरे उद्देश्य को पूरा होने में सहयोग किया है, इसके लिये मैं उन सभी को सहृदय व सप्रेम धन्यवाद देता हूं और भूरिशः उनका आभार अभिव्यक्त करता हूं। आपसे यह भी अपेक्षा करता हूँ कि भविष्य में भी आप सब इसी प्रकार सहयोग करते हुये जनकल्याण के पुण्य कर्मो में सहभागी होंगे। आप सभी को पुनः पुनः भूरिशः धन्यवाद।

पूर्णिका

1. भूमिका पृष्ठ संख्या. X, पंक्ति संख्या 11 में जोड़कर पढ़ें –

यह केवल पुराणों का ही सार नहीं बल्कि समस्त वेदों और स्मृतियों का भी सार है। वे **18 पुराणादि** निम्न प्रकार से हैं। देवीभागवत (3.1.2) में इस प्रकार संग्रह किया गया है –

'मद्वयं भद्वयं चैव बत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक्पृथक्।।'

अर्थात् मत्स्य, मार्कण्डेय–मद्वय; भविष्य, भागवत–भद्वय; ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त–बत्रय; वराह, वायु, विष्णु, वामन–वचतुष्टय; अग्नि–अ, नारद–ना, पद्म–प, लिंग –लिं, गरुड़ –ग, कूर्म –कू और स्कन्द –स्क। किन्तु वाचस्पत्यम् में वायुपुराण के स्थान में शिव पुराण को लिया है। *(शक्तिमहिम्नःस्तोत्र पृष्ठ संख्या 20 में इस श्लोक को उद्धृत किया है किन्तु अर्थ करने में गलती हुई है, पाठक वर्तमान इस ठीक व्याख्या के अनुसार ग्रहण करे।)* वाचस्पत्यम् में 18 पुराण :–

'ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा।
तथाऽन्यन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्।।
आग्नेयमष्टमं प्रोक्तं भविष्यं नवमं तथा।
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लिंङ्गमेकादशं तथा।।
वाराहं द्वादशं प्रोक्तं स्कान्दं चात्र त्रयोदशम्।
चतुर्दशं वामनं च कौर्मं पंचदशं तथा।।
मात्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्माण्डमष्टादशं तथा।।'

अर्थात् 1. ब्रह्म, 2. पद्म, 3. विष्णु, 4. शिव, 5. श्रीमद्भागवत, 6. नारद, 7. मार्कण्डेय, 8. अग्नि, 9. भविष्य, 10. ब्रह्मवैवर्त, 11. लिंग, 12. वराह, 13. स्कन्द, 14. वामन, 15. कूर्म, 16. मत्स्य, 17. गरुड और 18. ब्रह्माण्ड। कूर्मपुराण में 18 उपपुराणों का वर्णन इस प्रकार है :–

'आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतः परम्।
तृतीयं नारदप्रोक्तं कुमारेण तु भाषितम्।।
चतुर्थं शिवधर्माख्यं साक्षान्नन्दीशभाषितम्।
दुर्वाससोक्तमाश्चर्यं नारदोक्तमतः परम्।।
कापिलं मानवं चैव तथैवोशनसेरितम्।
ब्रह्माण्डं वारुणं चाथ कालिकाह्वयमेव च।।
माहेश्वरं तथा साम्बं सौरं सर्वार्थसंचयम्।
पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवतद्वयम्।।
इदमष्टादशं प्रोक्तं पुराणं कौर्मसंज्ञितम्।।'

अर्थात् 1. सनत्कुमार, 2. नरसिंह, 3. स्कन्द, 4. शिवधर्म, 5. आश्चर्य, 6. नारद, 7. कपिल, 8. मानव, 9. औशनस, 10. ब्रह्माण्ड, 11. वरुण, 12. कालिका, 13. माहेश्वर, 14. साम्ब, 15. सौर, 16. पराशर, 17. देवीभागवत और 18. महाभागवत। 18 स्मृति :-

'मनुर्बृहस्पतिर्दक्षो गौतमोऽथ यमोऽङ्गिराः।
योगीश्वरः प्रचेताश्च शातातपपराशरौ।।
संवर्तोशनसौ शंखलिखितावत्रिरेव च।
विष्ण्वापस्तम्बहारिता धर्मशास्त्रप्रवर्तकाः।।'

अर्थात् 1. मनु, 2. बृहस्पति, 3. दक्ष, 4. गौतम, 5. यम, 6. आंगिरस, 7. योगीश्वर, 8. प्राचेतस, 9. शातातप, 10. पराशर, 11. संवर्त, 12. औशनस, 13. शंख, 14. लिखित, 15. अत्रि, 16. विष्णु, 17. आपस्तम्ब और 18. हारित। बृहन्मनु के अनुसार भी 18 हैं किन्तु **थोड़ा फर्क** है -

'विष्णुः पराशरो दक्षः संवर्तव्यासहारितः।
शातातपो वसिष्ठश्च यमापस्तम्बगौतमाः।।
देवलः शंखलिखितौ भारद्वाजोशनोऽत्रयः।
शौनको याज्ञवल्क्यश्च दशाष्टौ स्मृतिकारिणः।।'

अर्थात् 1. विष्णु, 2. पराशर, 3. दक्ष, 4. संवर्त, 5. व्यास, 6. हारित, 7. शातातप, 8. वसिष्ठ, 9. यम, 10. आपस्तम्ब, 11. गौतम, 12. देवल, 13. शंख व लिखित, 14. भारद्वाज, 15. औशनस, 16. अत्रि,

17. शौनक और 18. याज्ञवल्क्य। किन्तु याज्ञवल्क्य के अनुसार **20 स्मृतियां हैं** :-

'मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनरोऽङ्गिराः।
यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती।।
पराशरो व्यासशंखौ लिखितो दक्षगौतमौ।
शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः।।'

पूर्वोक्त 18 के अलावा ये दो और है – 19. याज्ञवल्क्य और 20. कात्यायन। ग्रन्थान्तर में **21 स्मृति** :-

'वसिष्ठो नारदश्चैव सुमन्तुश्च पितामहः।
वसुः कृष्णाजिनिः सत्यव्रतो गार्ग्यश्च देवलः।।
जमदग्निर्भरद्वाजः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः।
आत्रेयश्छागलेयश्च मरीचिर्वत्स एव च।।
पारस्कर ऋष्यशृङ्गो बैजवापस्तथैव च।
इत्येते स्मृतिकर्तार एकविंशतिरीरिताः।।'

अर्थात् 1. वसिष्ठ, 2. नारद, 3. सुमन्तु, 4. यम, 5. वसु, 6. कृष्णाजिनि, 7. सत्यव्रत, 8. गार्ग्य, 9. देवल, 10. जमदग्नि, 11. भारद्वाज, 12. पुलस्त्य 13. पुलह, 14. क्रतु, 15. आत्रेय, 16. छागलेय, 17. मरीचि, 18. वत्स, 19. पारस्कर, 20. ऋष्यशृंग और 21. बैजवाप। ग्रन्थान्तर में **18 उपस्मृतियों** का भी वर्णन है :-

'जाबालिर्नाचिकेतश्च स्कन्दो लौगाक्षिकाश्यपौ।
व्यासः सनत्कुमारश्च सुमन्तुश्च पितामहः।।
व्याघ्रः कार्ष्णाजिनिश्चैव जातूकर्ण्यः कपिंजलः।
बौधायनश्च काणादो विश्वामित्रस्तथैव च।।
पैठानसिर्गोभिलश्च उपस्मृतिविधायकाः।।'

अर्थात् 1. जाबालि, 2. नाचिकेत, 3. स्कन्द, 4. लौगाक्षि, 5. कश्यप, 6. व्यास, 7. सनत्कुमार, 8. सुमन्तु, 9. भीष्म, 10. व्याघ्र, 11. कार्ष्णाजिनि, 12. जातूकर्ण्य, 13. कपिंजल, 14. बौधायन, 15. कणाद, 16. विश्वामित्र, 17. पैठानसि और 18. गोभिल।

2. पृष्ठ संख्या 05, पंक्ति संख्या 07 में 'पहाड़ की तलहटी' के बाद यह जोड़ लें -

...... मन्दिर, समुद्र का तट और अपना घर ......।

3. पृष्ठ संख्या 05, पंक्ति संख्या 20 में जोड़ें -

आसन पर विचार: -

आसन के गुणों के बारे में कहा गया है -

'कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि।
वंशासने व्याधिनाशः कम्बले दुःखमोचनम्।।'

अर्थात् कृष्णमृग के चर्म के आसन से ज्ञानसिद्धि, बाघ के चर्म के आसन से मोक्ष व ऐश्वर्य, बांस के आसन से व्याधि नाश और कम्बल के आसन से दु:ख का नाश होता है।

'अभिचारे नीलवर्णं रक्तं वश्यादिकर्मणि।
शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बलम्।।'

अर्थात् अभिचार कर्म में काले रंग का आसन, वश्य आदि कर्म में लाल रंग और शान्तिक कर्म में कम्बल का आसन प्रयोग करने को कहा गया है। लेकिन पूर्वोक्त असम्भव हो तो सकल कर्मो में आसन केलिये चित्रकम्बल (रंगबिरंगे कम्बल) का प्रयोग करें।

'वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः।
धरण्यां दुःखसम्भूतिर्दौर्भाग्यं छिद्रिदारुजे।।
तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः।
आयसं वर्जयित्वा तु कांस्यसीसकमेव च।।'

अर्थात् बांस के आसन से (व्याधि नाश होने पर भी) दारिद्र्य, पत्थर के आसन से व्याधि उत्पत्ति, जमीन को ही आसन के रूप में प्रयोग करने से दु:ख उत्पत्ति, छेद युक्त छाल (सच्छिद्र वल्कल) के आसन से दौर्भाग्य, घास के आसन से धन और यश की हानि और पत्तों के आसन से चित्त अशान्त होगा। अत: इन आसनों का तथा लोहा, कांस्य व सीसा से बने हुये आसन का प्रयोग न करें। आचारमयूख में कहा है -

'दानमाचमनं होमं भोजनं देवतार्चनम्।
प्रौढ़पादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्।।'

अर्थात् प्रौढ़पाद आसन में बैठकर आचमन, दान, होम, भोजन, देव पूजा, पितृ तर्पण और स्वाध्याय न करें।
(प्रौढ़पाद आसन का लक्षण आह्निककारिका में कहा है -

'आसनारूढपादस्तु जानुनोर्वाथ जङ्घयोः।
कृतावसक्थिको यश्च प्रौढ़पादः स उच्यते।।'

अर्थात् दाहिने अथवा बायें पैर को घुटने अथवा जंघा पर एक दूसरे पर लाद कर बैठने को प्रौढ़पाद आसन कहा गया है।) फिर किन आसनों में बैठना श्रेष्ठ है, इस विषय में देवीभागवत में कहा है -

'पद्मासनं स्वस्तिकं च भद्रं वज्रासनं तथा।
वीरासनमिति प्रोक्तं क्रमादासनपंचकम्।।'

अर्थात् सकल कर्म केलिये पद्मासन, स्वस्तिकासन, भद्रासन, वज्रासन और वीरासन क्रमशः उत्तरोत्तर श्रेष्ठ पांच आसन हैं।

4. पृष्ठ संख्या 12, पंक्ति संख्या 08 में जोड़ें -
भोजनादि में ग्रास का परिमाण व दिशा का विधान -
विश्वामित्रकल्प के अनुसार -

'कुक्कुटाण्डप्रमाणं तु ग्रासमानं विधीयते।।'

अर्थात् मुर्गी के अण्डे के बराबर नाप के परिमाण को ग्रास का परिमाण विधान किया गया है। मनुस्मृति में भोजन ग्रहण (पाने/खाने) करने की दिशा के बारे में कहा है -

'आयुष्यं प्राङ्मुखो भुङ्क्ते यशस्वी दक्षिणाभिमुखः।
श्रियं प्रत्यङ्मुखो भुङ्क्ते ऋणं भुङ्क्ते उदङ्मुखः।।
पुत्रवांस्तु गृहे नित्यं नाश्नीयादुत्तरामुखः।।'

अर्थात् पूर्वाभिमुख होकर भोजन करने से आयु की वृद्धि होगी, दक्षिणाभिमुख हो तो यशस्वी होगा, पश्चिमाभिमुख हो तो ऐश्वर्य प्राप्ति होगी किन्तु उत्तराभिमुख हो तो वह ऋणी रहेगा। पुत्रवान् व्यक्ति को

अपने घर में कभी भी उत्तराभिमुख होकर भोजन नहीं करना चाहिये। प्रयोगपारिजात में भी कहा है –

'पितरौ जीवमानौ चेन्नाश्नीयाद्दक्षिणामुखः।
तयोस्तु जीवतोरेकस्तथैव नियमः स्मृतः।।
अनिशं मातृहीनानां यशस्यं दक्षिणामुखम्।।'

अर्थात् माता पिता दोनों जीवित हों अथवा दोनों में से एक भी जीवित हों तो दक्षिणाभिमुख होकर भोजन न करें। किन्तु माता से हीन यानि जिसकी माता स्वर्गवासी हो गई हो तो वह दक्षिणाभिमुख हो कर भोजन करें तो वह यशस्वी होगा।

5. पृष्ठ संख्या 15, पंक्ति संख्या 16 में जोड़ें –

'तर्पण और तर्पण के बराबर' के स्थान में ऐसा पाठ करें –

तर्पण और तर्पण का दशांश मार्जन यानि अभिषेक।

6. पृष्ठ संख्या 18, पंक्ति संख्या 01 में जोड़ें–

पूजोपचार पर विचार –

पंचोपचार (5):– जाबालि के अनुसार –

'ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम्।
नीराजनं प्रणामश्च पंच पूजोपचारकाः।।'

अर्थात् ध्यान, आवाहन, प्रार्थना, आरती और नमस्कार। अथवा ज्ञानमाला के अनुसार – ' **गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात्।।'**

अर्थात् गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

दशोपचारा (10):– ज्ञानमाला के अनुसार –

'अर्घ्यं पाद्यं चाचमनं स्नानं वस्त्रनिवेदनम्।
गन्धादया नैवेद्यान्ता उपचारा दश क्रमात्।।'

अर्थात् अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

षोडशोपचारा (16):– मूलग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 17 में देखें।

चतुष्षट्युपचारा (64):- मूलग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 204 में देखें।

7. पृष्ठ संख्या 31, पंक्ति संख्या 04 में जोड़ें -

प्रातःकाले दर्शनीयादर्शनीयपदार्थाः - आचारप्रदीपे -

'श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितं तथा।
प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स प्रमुच्यते।।'

अर्थात् प्रातः जगने के बाद श्रोत्रिय ब्राह्मण, सौभाग्यवती स्त्री, वैदिक अग्नि और आहिताग्नि त्रैवर्णिक का दर्शन करें उससे वह सकल आपदाओं से मुक्त होता है। अन्यग्रन्थ में भी कहा है -

'भारद्वाजमयूराणां चाषस्य नकुलस्य च।
प्रभाते दर्शनं श्रेष्ठं वामपृष्ठे विशेषतः।।'

अर्थात् प्रातःकाल अपने बायीं ओर से निकलता हुआ चक्रवाक (चातक) पक्षी, मयूर, नीलकण्ठ पक्षी और नेवला को देखें तो वह अत्यन्त शुभ है। इनके विपरीत नागदेव ने कहा है -

'पापिष्ठं दुर्भगं चान्धं नग्नमुत्कृत्तनासिकम्।
प्रातरुत्थाय यः पश्येत्तत्कलेरुपलक्षणम्।।
भल्लातकं कर्षफलं काकमार्जारमूषकम्।
क्लीबं च गर्दभं चैव न पश्येत्प्रातरेव हि।।'

अर्थात् प्रातः उठकर जो व्यक्ति पापी, दुर्भग, अन्धा, नग्न अथवा कोढी को देखें तो समझें की वह दर्शन लड़ाई का सूचक है। प्रातः उठकर भिलावे का पौधा, खाई में उत्पन्न जंगली कड़वा (जहरीला) फल, कौवा, बिल्ली, चूहा, नपुंसक और गदहा को नहीं देखना चाहिये। (**भल्लाटकं** भी पाठभेद है जिसका अर्थ है गंजा)।

8. पृष्ठ संख्या 31, पंक्ति संख्या 16 में जोड़ें -

ब्रह्ममुहूर्त का निर्णय - मनुस्मृति में कहा है कि -

'ब्राह्मे मुहूर्ते बुद्ध्येत धर्मार्थावनुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्त्वार्थमेव च।।'

अर्थात् ब्रह्म मुहूर्त में उठकर ईश्वर, धर्म, अर्थ और शरीर के क्लेशों व उनके मूल कारणों का चिन्तन करें (वेदतत्त्वार्थ = ईश्वर)। ब्रह्ममुहूर्त का निर्णय विष्णुपुराण में दिया है -

'रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः।
स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने।।
पंचपंच उषः कालः सप्तपंचारुणोदयः।
अष्टपंच भवेत्प्रातस्ततः सूर्योदयः स्मृतः।।'

अर्थात् रात्री के अन्तिम याम (अन्तिम 3 घण्टा) के तीसरे मुहूर्त को ब्रह्म मुहूर्त समझें, वह समय उठने केलिये विहित है। यानि 6 बजे को सूर्यास्त माने तो 6 से 9 प्रथम याम, 9 से 12 द्वितीय याम, 12 से 3 तृतीय याम और 3 से 6 अन्तिम याम माना जायेगा, उसमें 45 मिनट का मुहूर्त मानकर तीसरा मुहूर्त होगा 4.30 से 5.15 बजे का समय - यही ब्रह्म मुहूर्त है। उसके बाद के 25 कला यानि 10 मिनट (5.16 - 5.25) उषाकाल है, तदनन्तर 35 कला यानि 14 मिनट (5.26 - 5.39)अरुणोदय काल है, उसके बाद का 40 कला यानि 16 मिनट (5.40 - 5.55) प्रातः काल है, तत्पश्चात्काल को सूर्योदय काल कहा गया है।

रत्नावली में ब्रह्ममुहूर्त में न उठने के दोष के बारे में कहा है -

'ब्राह्मे मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी।
तां करोति द्विजो मोहात्पादकृच्छ्रेण शुध्यति।।'

अर्थात् ब्रह्म मुहूर्त में जो निद्रा है वह पुण्य को क्षय करनेवाली है, लेकिन मोहवशात् जो द्विज उस (ब्रह्म मुहूर्त) में सोता है वह पादकृच्छ्व्रत (1 पाद यानि 1 पाव, अर्थात् सूर्यास्त तक 1 पाव जल पीकर ही रहना है) से ही शुद्ध होता है।

9. पृष्ठ संख्या 31, पंक्ति संख्या 26 में जोडें -

शौचकरणे दिशानिर्णयः - यमस्मृति में कहा है कि -

'प्रत्यङ्मुखस्तु पूर्वाह्णेऽपराह्णे प्राङ्मुखस्तथा।
उदङ्मुखस्तु मध्याह्ने निशायां दक्षिणामुखः।।'

अर्थात् पूर्वाह्न में यानि सूर्योदय से 10 बजे तक पश्चिमाभिमुख, मध्याह्न में यानि 10 बजे से 2 बजे तक उत्तराभिमुख, अपराह्न में यानि 2 बजे से सूर्यास्त तक पूर्वाभिमुख और रात्रि में दक्षिणाभिमुख बैठकर शौच कर्म करें। मनुस्मृति में कहा है –

'छायायामन्धकारे च रात्रावहनि वा द्विजः।
यथासुखं मुखं कुर्यात्प्राणबाधाभयेषु च।।'

अर्थात् छाया, अन्धकार, रात्रि अथवा दिन तथा प्राणबाधा, रोगबाधा एवं भय काल में द्विज को चाहिये कि वह अपनी अनुकूलता के अनुसार मुख कर बैठके शौच कर्म करें।

शौचकाले यज्ञोपवीत धारणनिर्णयः – आह्निककारिका में –

'मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पुरीषे वामकर्णके।
उपवीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतिवत्।।'

अर्थात् मूत्रविसर्जन काल में दाहिने कान पर, मलत्याग काल में बायें कान पर यज्ञोपवीत को धारण करे और मैथुन काल में उपवीति ही रहे।

सायणीय में कहा है –

'मलमूत्रं त्यजेद्विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक्।
उपवीतं तदुत्सृज्य धार्यमन्यन्नवं तदा।।'

अर्थात् जो द्विज यदि कान पर डालना भूलकर मल मूत्र को त्यागता है तो वह उसी समय उस धारित यज्ञोपवीत को विधिवत् उत्सर्जन कर नया यज्ञोपवीत धारण करे।

10. पृष्ठ संख्या 32, पंक्ति संख्या 11 में जोड़ें –

कुल्ला (गण्डूष) कर शुद्ध होना –आश्वलायन में –

'मूत्रे(4) पुरीषे(12) भुक्त्यन्ते(16) रेतःप्रस्रवणे(8) तथा।
चतुरष्ट द्विषट् द्व्यष्ट गण्डूषैः शुद्धिमाप्नुयात्।।'

अर्थात् मूत्र त्यागने पर 4 बार, मल त्याग करने पर 12 बार, भोजन के बाद 16 बार और स्वप्न दोष होने पर 8 बार कुल्ला करने से ही द्विज शुद्ध होता है।

11. पृष्ठ संख्या 32, पंक्ति संख्या 13 में जोड़ें –
मौनपूर्वक करने योग्य कर्म – हारीतस्मृतिः –

'उच्चारे मैथुने चैव प्रस्रावे दन्तधावने।
श्राद्धे भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत्।।'

अर्थात् मल–मूत्र त्याग, मैथुन, स्वप्नदोष, दन्तधावन, श्राद्ध और भोजन काल इन छः कर्म करते वक्त मौन आचरण करें। आङ्गिरसस्मृतिः –

'सन्ध्ययोरुभयोर्जाप्ये भोजने दन्तधावने।
पितृकार्ये च दैवे च तथा मूत्रपुरीषयोः।।
गुरूणां सन्निधौ दाने योगे चैव विशेषतः।
एतेषु मौनमातिष्ठन्स्वर्गं प्राप्नोति मानवः।।'

अर्थात् जो मनुष्य दोनों सन्ध्यावन्दन काल में तथा जप, भोजन, दन्तधावन, श्राद्ध, देवपूजन, मल–मूत्र त्याग, दान और योगसाधना काल में एवं गुरु के सान्निध्य में मौन रहता है वह निश्चित ही स्वर्ग को प्राप्त करेगा।

12. पृष्ठ संख्या 32, पंक्ति संख्या 13 में जोड़ें – **दन्तधावन विधिः** –
विश्वामित्रकल्प में दातून प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार दिया है –

'आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशून्वसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते।।'

अर्थात् हे वनस्पते! तुम मुझे आयु, बल, यश, वर्चस्व, सन्तान, पशु, धन, प्रज्ञा, मेधा और वेद को दो। चकार अनुक्त सकल शुभ के समुच्चय केलिये है। दन्तघावन में दिशाज्ञान –

'प्राङ्मुखस्य धृतिः सौख्यं शरीरारोग्यमेव च।
दक्षिणेन तथा कष्टं पश्चिमेन पराजयः।।
उत्तरेण गवां नाशः स्त्रीणां परिजनस्य च।
पूर्वोत्तरे तु दिग्भागे सर्वान्कामानवाप्नुयात्।।'

अर्थात् दन्त शोधन करते समय पूर्वाभिमुख हो तो उसे धृति, सुख और शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है तथा ईशानकोणाभिमुख हो तो समस्त कामनायें पूरी होंगी। यदि दक्षिणाभिमुख हो तो कष्ट, पश्चिमाभिमुख हो

तो पराजय, उत्तराभिमुख हो तो गौ आदि धन सहित स्त्री और परिजनों का नाश प्राप्त होता है।

पारस्करगृह्यसूत्र (2.6.17) में दन्तधावन मन्त्र इस प्रकार दिया है –

'अन्नाद्याय व्यूहध्वꣳसोमो राजाऽयमागमत्।
स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च।।'

इति मन्त्रेणौदुम्बरेण दन्तान्धावेत्। मुखप्रक्षालन करके गणेश, गौ, सूर्य, तुलसी, नारायण (विष्णु), देवी, शिव, राम, नवग्रह, इत्यादि का स्तुति द्वारा स्मरण करें।

13. पृष्ठ संख्या 32, पंक्ति संख्या 26 में जोड़ें –

उष्णोदकस्नानविधिः – यमस्मृति में कहा है –

'आप एव सदा पूतास्तासां वह्निर्विशोधकः।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु उष्णाम्भः पावनं स्मृतम्।।'

यद्यपि जल अपने आप में पवित्र है फिर भी अग्नि उसका शोधक है। इसलिये सभी काल में गरम जल ही पवित्रकारक है, अतः सालभर गरम जल से ही नहाना चाहिये। मारीचकल्प में कहा है –

'भूमिष्ठमुद्धृतं वापि शीतमुष्णमथापि वा।
गांगं पयः पुनात्येव पापमामरणात्कृतम्।।'

अर्थात् भूमि (कुंआ) में स्थित अथवा रेहट (पम्प आदि) से उद्धृत जल ठण्डा हो अथवा गरम हो आमरण पर्यन्त सेवन करने (स्नानादि में प्रयोग करने) से वह गंगा जल के समान पापों का नाश कर देता है। अन्यत्र भी कहा है –

'सरित्सु देवखातेषु तीर्थेषु नदीषु च।
क्रियास्नानं समुद्दिष्टं स्नानं तत्रामलाः क्रियाः।।'

अर्थात् झरने, मन्दिर का कुंआ, तीर्थ और नदी में ही क्रिया (कर्म) और स्नान करने का विधान है। उनमें व उनसे कृत कर्म व स्नान अत्यन्त पवित्र कारक होता है। तथा

'वाप्यां कूपे तडागे वा नद्यां वा चोष्णवारिणा।
प्रातःस्नानं सदा कुर्यादुष्णेनैव सदातुरः।।'

अर्थात् बावड़ी, कुंआ, नदी, तालाब अथवा गरम जल से ही प्रातः स्नान करना चाहिये। आतुर यानि रोगी हो तो सदा गरम जल से ही स्नान करें।

14. पृष्ठ संख्या 35, पंक्ति संख्या 21 में जोड़ें -

दीपदिशा विचारः - मारीचकल्प में कहा है कि -

'आयुर्दः प्राङ्मुखो दीपो धनदः स्यादुदङ्मुखः।
प्रत्यङ्मुखो दुःखदोऽसौ हानिदो दक्षिणामुखः।।'

पूर्वाभिमुख दीप आयु प्रदायक और उत्तराभिमुख धन दायक होता है। किन्तु पश्चिमाभिमुख दीप दुःखदायक और दक्षिणाभिमुख दीप हानि कारक होता है। यह विधि नित्यदीप के विषय में है, अतः कार्तवीर्यादि के लिये प्रयुक्त विशेष दीप को पश्चिमाभिमुख रखा जाता है और शनि, यमराज आदि केलिये दक्षिणाभिमुख रखा जाता है।

15. पृष्ठ संख्या 41, पंक्ति संख्या 13 में इस पंक्ति को जोड़ कर पढ़ें -

इस प्रकार आवाहन करने के बाद प्रतिष्ठा, शेष उपचार पूर्वक पूजन कर मण्डल पर कलश स्थापना करे।

16. पृष्ठ संख्या 53, पंक्ति संख्या 14 में जोड़ें -

5.1-1 आवाहनी मुद्रा - मूलग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 41 में देखें। (मूलग्रन्थ के पृष्ठसंख्या 344 चित्रसंख्या 5.1 को देखें।) उसके बाद इन्हें जोड़ें।

5.1-2 गन्धार्पण मुद्रा -

'मध्यमानामिकांगुष्ठांगुल्यग्रेण पार्वति।
दद्याच्च विमलं गन्धम्मूलमंत्रेण साधकः।।'

अर्थात् हे पार्वति! मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुये साधक अपने दाहिने हाथ के अंगूठे, मध्यमा और अनामिका अंगुलियों के अग्रभाग से शुद्ध गन्ध को अर्पित करें। (पृष्ठ संख्या 54 में चित्र संख्या 5.1-2 को देखें)

5.1-3 पुष्पार्पण मुद्रा -

'अंगुष्ठतर्जनीभ्यां च पुष्पं चक्रे निवेदयेत्।'

अर्थात् अंगूठा और तर्जनी अंगुलि (शेष अंगुलियां बाहर की ओर सीधे रखें) से पुष्प को श्रीचक्र/देवता पर अर्पण करें। (पृष्ठ संख्या 54 में चित्र संख्या 5.1-3 को देखें।)

5.1-4 धूपार्पण मुद्रा -

'मध्यमानामिकाभ्यान्तु मध्यपर्वणि देशिकः।
अंगुष्ठाग्रेण देवेशि धृत्वा धूपं निवेदयेत्।।
उत्तोलनं त्रिधा कृत्वा गायत्र्या मूलयोगतः।'

अर्थात् हे देवेशि! साधक अपने दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलि के मध्य पर्व पर अंगूठे से धूप को धारणकर गायत्री मन्त्र और मूल मन्त्र से तीन बार श्रीचक्र/देवता के सामने आरती के समान अंगुलि घुमाते हुये समर्पित करें। (पृष्ठ संख्या 54 में चित्र संख्या 5.1-4 को देखें।)

5.1-5 दीपार्पण मुद्रा -

'दीपं समर्पयेद्देवीम्मुद्रया ज्ञानसंज्ञया।
अंगुष्ठतर्जनीयोगात् ज्ञानमुद्रा प्रकीर्तिता।।'

अर्थात् देवी के समक्ष ज्ञान मुद्रा से दीप को समर्पित करें। अंगुष्ठ और तर्जनी के योग से ज्ञान मुद्रा होती है। (इसी पूर्णिका के पृष्ठ संख्या 54 चित्र संख्या 5.1-5 को देखें।) ग्रन्थान्तर में उक्त ज्ञानमुद्रा के लक्षण व अर्थ को मूलग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 46 में देखें तथा इसके चित्र को मूलग्रन्थ के ही पृष्ठसंख्या 345 चित्रसंख्या 5.18 को देखें।

5.1-6 नैवेद्यार्पण मुद्रा -

'तत्त्वाख्यमुद्रया देवीं नैवेद्यं निवेदयेत्।'

अर्थात् तत्त्वमुद्रा से देवी को नैवेद्य अर्पण करें। तत्त्वमुद्रा के लक्षण व अर्थ को मूलग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 48 में देखें। (पृष्ठ संख्या 54 चित्रसंख्या 5.1-6 को देखें)।

5.7b धेनु मुद्रा - ग्रन्थान्तर में इस प्रकार है -

'दक्षानामसमायुक्ता वामहस्तकनिष्ठिका।
वामानामसमायुक्ता दक्षपाणिकनिष्ठिका।।
दक्षस्य मध्यमाक्रान्ता दक्षहस्तस्य तर्जनी।
सम्युक्तौ कारयेद्विद्वानंगुष्ठावुभयोरपि।
धेनमुद्रा निगदिता गोपिता साधकोत्तमैः।'

अर्थात् विद्वान् साधक बायें हाथ की कनिष्ठिका को दाहिने हाथ की अंगुलियों से स्पर्श न करते हुये तथा दाहिने हाथ की कनिष्ठिका को बायें हाथ की अंगुलियों से स्पर्श न करते हुये दाहिने हाथ की मध्यमा से दाहिने हाथ की तर्जनी को दबाकर दोनों अंगूठों को संयुक्त करें, साधकोत्तमों के द्वारा रक्षित इस मुद्रा को धेनु मुद्रा कहा गया है। (पृष्ठ संख्या 54 चित्र संख्या 5.7b को देखें।)

5.8 महामुद्रा – इसका लक्षण मूलग्रन्थ के पृष्ठसंख्या 43 में है। (इसके चित्र के लिये इस पूर्णिका के पृष्ठ संख्या 55 में चित्र संख्या 5.8 को देखें।)

5.9, 5.10a, 5.10b, 5.11a, 5.11b, 5.13–

मूलग्रन्थ के पृष्ठसंख्या 43, 44 और 45 में क्रम से कुम्भ मुद्रा (कलश मुद्रा), कूर्म मुद्रा, अस्त्रमुद्रा और शंख मुद्रा के लक्षण दिये गये हैं। (उनके चित्रों को इस पूर्णिका के पृष्ठ संख्या 55 एवं 56 में चित्र संख्या उक्त क्रम संख्या के अनुसार देखें।)

5.16, 5.19, 5.28–9, 5.29, 5.30a, 5.30b –

मूल ग्रन्थ के पृष्ठसंख्या 45 व 46 में क्रमशः पंकज मुद्रा और चिन्मुद्रा के लक्षण दिये गये हैं। (उनके चित्रों को इस पूर्णिका के पृष्ठ संख्या 56 में देखें।) तथा मूलग्रन्थ के पृष्ठसंख्या 52 और 53 में महोयोनि मुद्रा, गुरुड़ मुद्रा, हंसी मुद्रा और सूकरी मुद्रा के लक्षण उल्लिखित हैं। (इनके चित्रों को इस पूर्णिका के पृष्ठ संख्या 56 व 57 में देखें।)

5.31–1 बाण मुद्रा –

'यथाहस्तगता बाणस्तथा हस्तं कुरु प्रिये।
बाणमुद्रेयमाख्याता रिपुवर्गनिकृन्तनी।।'

अथवा वामकेश्वरतन्त्र में –

'दक्षमुष्टिस्तु तर्जन्या दीर्घया बाणमुद्रिका।'

अर्थात् हे प्रिये! हाथ में बाण को पकड़े हुये जैसे, अपने हाथ को धारित करें, इसे शत्रुओं को नाश करने वाली बाण मुद्रा कहा गया है। अथवा दाहिने हाथ की तर्जनी को बाहर की ओर सीधे रख कर शेष अंगुलियों से

मुट्ठि बांधे, इसे बाण मुद्रा कहते हैं। (मूलग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 349 में चित्र संख्या 5.31 को देखें)।

5.31-2 अंकुश/महांकुशामुद्रा का लक्षण दक्षिणामूर्ति संहिता (57-60-63) में इस प्रकार बताया गया है -

'सम्मुखौ तु करौ योज्यै मध्यमागर्भगेऽनुजे।
तर्जनीभ्यां बहिर्युक्ते अनामे सरले कुरु।।
मध्यमानखदेशे तु ततोऽगुष्ठौ तु दण्डवत्।
उन्मनी नाम मुद्रा तु पंचमी परिकीर्तिता।
एतस्या एव मुद्रायास्तर्जन्यौ मध्यमानुजे।।
कुर्यान्महांकुशाकारौ मुद्रेयं तु महांकुशा।'

अर्थात् दोनों हाथों को आमने सामने जोड़कर मध्यमा को गर्भ में रखें। दोनों तर्जनी बाहर की ओर कर अनामिका को सीधी रखें। किन्तु मध्यमा के नख देश में अंगूठे को दण्डवत् रखें। यह उन्मनी मुद्रा है। इसी मुद्रा की दोनों तर्जनियों को मध्यमा के साथ रखें तो वह महांकुशा मुद्रा होती है। (पृष्ठ संख्या 57 में चित्र संख्या 5.31-2a और b को देखें।

5.31-3 गदा मुद्रा -

'वाममुष्ट्यन्तरेऽगुष्ठे दक्षिणे सरलांगुलीः।
वामांगुष्ठः स्पृशेदग्रे योजितः सरलोदरः।।
अन्योन्याभिमुखौ हस्तौ कृत्वा तु ग्रथितांगुलीः।
अंगुल्यौ मध्यमे भूयः सुलग्ने सुप्रसारिते।।
गदामुद्रेयमुदिता देव्याः सन्तोषवर्धिनी।
प्रकीर्तिता सदा सैषा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।।'

अर्थात् दोनों हाथों को आमने-सामने रखते हुये बायीं मुट्ठि में दाहिने अंगूठे को बन्द करके दाहिने हाथ की तर्जनी और अनामिका अंगुलियों से बायें हाथे के अंगूठे के अग्र भाग को स्पर्श करें। दोनों मध्यमा अंगुलियों के एक दूसरे के अग्रभाग को स्पर्श करते हुये ऊपर की ओर रखें। इस प्रकार ग्रथित अंगुलियों को गदा मुद्रा कहा गया है जो देवी के सन्तोष को

बढ़ानेवाली है और साधक को भोग व मोक्ष देनेवाली है। (पृष्ठ संख्या 57 में चित्र संख्या 5.31-3 को देखें)।

5.31-4 पाशिनी/पाश मुद्रा-

'सर्वांगुलयः सरला कृत्वा करयोश्च कर्णौ।
व्यत्ययेन पिधानं च कुर्यात्सा पाशिनी मता।।'

अर्थात् सभी अंगुलियों को सीधे रखते हुये व्यत्यय से यानि दाहिने हाथ से बायें कान और बायें हाथ से दाहिने कान को ढ़कें, यह पाशिनी मुद्रा है। अथवा-

'वाममुष्टिस्थतर्जन्या दक्षमुष्टिस्थतर्जनीम्।
संयोज्यांगुष्ठकाग्राभ्यां तर्जन्यग्रस्वके क्षिपेत्।।
एषा वा पाश मुद्रेति विद्वद्भिः परिकीर्तिता।।'

अर्थात् बायीं मुट्ठी में स्थित तर्जनी से दाहिनी मुट्ठी में स्थित तर्जनी को मिलावें और दोनों अंगूठों के अग्रभाग से तर्जनियों के अग्र भाग को स्पर्श करें। इसे विद्वान लोग पाश मुद्रा कहते हैं। (पृष्ठ संख्या 57 में चित्रसंख्या 5.31-4a व b को तथा पृष्ठ संख्या 58 में 5.31-4c को देखें।)

5.31-5 अक्षमाला मुद्रा -

'अंगुष्ठं तर्जन्यग्रेषु ग्रथयित्वांगुलित्रयम्।
प्रसारयेदक्षमाला मुद्रेयं परिकीर्तिता।।'

अर्थात् अंगूठे को तर्जनी के अग्रभाग में ग्रथन कर शेष अंगुलियों को फैलाने को अक्षमाला मुद्रा कहा गया है। (पृष्ठ संख्या 58 में चित्रसंख्या 5.31-5 को देखें।)

5.31-6 परशु मुद्रा -

'करे करं तु करयोस्तिर्यक्संयोज्यांगुलीः।
संहताः प्रसृताः कुर्यान्मुद्रेयं परशोर्मता।।'

अर्थात् हाथ पर हाथ रखकर दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर टेढ़ा मिलाकर फैलाने पर परशु मुद्रा मानी गयी है। (पृष्ठ संख्या 58 में चित्र संख्या 5.31-6 को देखें)।

5.31-7 वज्र/कुलिश मुद्रा -

'दक्षिणहस्तं च मुष्टिं बद्ध्वा च क्षेपणाकारं।
कुर्यान्मुद्रा सा कुलिशसंज्ञिका भयकारिणी।।'

अर्थात् दाहिने हाथ की मुट्ठि बांधकर फेंकने जैसे धारण करें, उसे सबको भय देने वाली कुलिश/वज्र मुद्रा कहते हैं। (पृष्ठ संख्या 58 में चित्रसंख्या 5.31-7 को देखें)।

5.31-8 धनुर्मुद्रा -

'वामस्य मध्यमाग्रन्तु तर्जन्यग्रेण योजयेत्।
अनामिकां कनिष्ठिकां च तस्यांगुष्ठेन पीडयेत्।।
दर्शयेद्वामके स्कन्धे धनुर्मुद्रेयमीरिता।।

' अथवा

'बाहुमूलं स्पृशेत्तेन बाह्वग्रेणैव साधकः।
धनुर्मुद्रा यशःकीर्तिबलवीर्यविवर्धिनी।।'

अर्थात् बायें हाथ की मध्यमा के अग्र भाग को तर्जनी के अग्र भाग से मिलाये और अनामिका व कनिष्ठिका को अंगूठे से दबाते हुये बायें कन्धे की ओर दर्शाये, यह धनुर्मुद्रा है। अथवा बायें हाथ के अग्र भाग से बायीं बाहु का स्पर्श करें, यह धनुर्मुद्रा है जो यश, कीर्ति, बल और वीर्य (सामर्थ्य) को बढ़ाती है। (पृष्ठ संख्या 58 में चित्र संख्या 5.31-8 को देखें)

5.31-9 कुण्डिका मुद्रा -

'करद्वयं यदा सुभ्रु कुण्डाकारं भवेत्तदा।
कुण्डिकेति महामुद्रा कथिता पूर्वसूरिभिः।।'

अर्थात् हे सुभ्रु! पूर्व आचार्यो ने दोनों हाथों को कुण्डाकार में धारण करने को कुण्डिका मुद्रा नामक एक महान् मुद्रा कहा है। (पृष्ठ संख्या 58 में चित्र संख्या 5.31-9 को देखें)।

5.31-10 दण्ड मुद्रा -

'मुष्टिं कुर्याद्दक्षहस्तस्य दर्शयेद्दण्डमुद्रिका।।'

अर्थात् दाहिने हाथ की मुट्ठि बांधकर दण्ड देने जैसे दर्शाये, यह दण्ड मुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 59 में चित्र संख्या 5.31-10 को देखें)।

5.31-11 खड्ग (असि) मुद्रा -

'कनिष्ठिकानामिके बद्ध्वा स्वांगुष्ठेनैव दक्षतः।
शिलष्टांगुली तु प्रसृत्य सन्दृष्टे खड्गमुद्रिका।।'

अर्थात् दाहिने हाथ की कनिष्ठिका और अनामिका को अंगूठे से बांधकर शेष अंगुलियों को फैलाकर दर्शाने को खड्ग मुद्रा कहते हैं। (पृष्ठ संख्या 59 में चित्र संख्या 5.31-11 को देखें)।

5.31-12 चर्म (ढाल) मुद्रा -

'वामहस्तं यदा तिर्यक्कृत्वा चैव प्रसार्य च।
आकुंचितांगुलीः कुर्याच्चर्ममुद्रेयमीरिता।।'

अर्थात् बायें हाथ को थोड़ा टेढ़ा करके फैलायी हुयी अंगुलियों को थोड़ा संकुचित करें, इसे चर्म/ढ़ाल मुद्रा कहा गया है। (पृष्ठ संख्या 59 में चित्र संख्या 5.31-12 को देखें)।

5.31-13 घण्टा मुद्रा -

'वाममुष्टिभ्रामणं च घण्टामुद्रेति कीर्तिता।'

अर्थात् बायीं मुट्ठि को घुमाने को घण्टा मुद्रा कहा गया है। (पृष्ठ संख्या 59 में चित्र संख्या 5.31-13 को देखें)।

5.31-14 सुराभाजन मुद्रा -

'मुष्ट्योरूर्ध्वौ कृतांगुष्ठे तर्जन्यग्रेषु विन्यसेत्।
सर्वरक्षाकरी ह्येषा कथिता सुरभाजना।।'

अर्थात् मुट्ठियों के बाहर स्थित अंगूठे को तर्जनी के अग्र भाग में रख कर ऊपर धारण करे यह सब प्रकार से रक्षा करनेवाली सुराभाजन मुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 59 में चित्र संख्या 5.31-14 को देखें)।

5.31-15 त्रिशूल मुद्रा -

'अंगुष्ठेन कनिष्ठान्तु बद्ध्वा श्लिष्टांगुलित्रयम्।
प्रसारयेत्त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता।।'

अर्थात् अंगूठे से कनिष्ठिका को बांध कर शेष तीन अंगुलियों को फैलाये इसे त्रिशूल मुद्रा नाम से कहा गया है। (पृष्ठ संख्या 59 में चित्र संख्या 5.31-15 को देखें।)

5.31-16 सुदर्शनचक्र (चक्र) मुद्रा -

'हस्तौ तु संमुखौ कृत्वा सुलग्नौ सुप्रसारितौ।
कनिष्ठांगुष्ठकौ नग्नौ मुद्रैषा चक्रसंज्ञिता।।'

अर्थात् दोनों हाथों को आमने सामने जोड़े हुये तर्जनी, मध्यमा और अनामिका अंगुलियों को फैला कर कनिष्ठिका और अंगूठे का परस्पर स्पर्श न करे यह चक्र / सुदर्शनचक्र नाम की मुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 60 में चित्र संख्या 5.31-16 को देखें)।

5.31-17 हल मुद्रा -

'अधोमुखा वाममुष्ठिकशा वै दक्षिणे करे।
हलमुद्रेति विख्याता कामदा सर्वकर्मसु।।'

अर्थात् बायीं मुट्ठि से पकड़े हुये दाहिने हाथ को नीचे की ओर दिखाने पर हल मुद्रा होती है जो सभी कर्मों में अभीष्ट फल देनेवाली होती है। (पृष्ठ संख्या 60 में चित्र संख्या 5.31-17 को देखें।

5.31-18 मुसल मुद्रा -

'मुष्टिं कृत्वा तु हस्ताभ्यां वामस्योपरि दक्षिणम्।
कुर्यान्मुसलमुद्रेयं सर्वविघ्नविनाशिनी।।'

अर्थात् दोनों हाथों की मुट्ठि बांधकर बायीं मुट्ठि पर दाहिनी मुट्ठि रखें यह समस्त विघ्नों की नाशक मुसल मुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 60 चित्र संख्या 5.31-18 को देखें।

5.31-19 वरद मुद्रा -

'संश्लिष्टा सर्वांगुलयः सरला चोर्ध्वधारिता।
वरदमुद्रा चैवेयं सर्वसौभाग्यदायिनी।।'

अर्थात् अंगुलियों को परस्पर संबद्ध रखते हुये ऊपर की ओर सीधा रखें (आशीर्वाद देने के समान छाती के बराबर ऊंचाई तक उठायें) यह समस्त सौभाग्य देनेवाली वरद मुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 60 चित्र संख्या 5.31-19 को देखें)।

5.31-20 कृपा मुद्रा -

'सैवाधोधारिता चैव कृपामुद्रेति गीयते।
सर्वलक्ष्मीप्रदायिका सर्वाबाधाप्रभंजिका।।'

अर्थात् पूर्वोक्त मुद्रा को नीचे की ओर (जांघ के पास) धारण करें यह समस्त बाधाओं को नाश कर समस्त प्रकार की लक्ष्मी को देनेवाली कृपा मुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 60 चित्र संख्या 5.31-20 को देखें)।

इनके साथ शंखमुद्रा 5.13 (मूलग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 45 को देखें), पंकज(पद्म)मुद्रा 5.16 (मूलग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 45 को देखें), शक्तिमुद्रा 5.33 (इसी पूर्णिका में देखें) और मुद्‌गर मुद्रा 5.34 इसी पूर्णिका में देखें) को मिलाकर बाणादि मुद्रा कुल 24 होती हैं।

5.32 शिरो/मुण्ड मुद्रा-

'अंगुष्ठतर्जनीमध्यमानां कुर्याच्चाग्रं स्पृष्ट्‌वा।
अनामिकां तेषामन्तः सरलां च कनिष्ठिकां।।'

अर्थात् अंगूठा, तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों के अग्रभाग को स्पर्शकर अनामिका को मोड़के अंगूठे की जड़ में रखें तथा कनिष्ठिका को बाहर की ओर सीधे रखें, यह शिरो मुद्रा है। अथवा-

'अन्तरांगुष्ठमुष्टिन्तु कृत्वा वामकरस्य च।
मध्यमाग्रे दक्षिणस्य तथालम्ब्य प्रयत्नतः।।
मध्यमेनाथ तर्जन्यामंगुष्ठाग्रेण योजयेत्।
दक्षिणं योजयेत्पाणिं वाममुष्टौ तु साधकः।।
दर्शयेद्दक्षिणे भागे मुण्डमुद्रेयमुच्यते।'

अर्थात् बायें हाथ के अंगूठे को मुट्ठि के अन्दर बन्द करके प्रयत्न पूर्वक उसे दाहिने हाथ की मध्यमा के अग्र भाग पर अवलम्बित कर मध्यमा और अंगूठे को तर्जनी सें जोड़ें, इस प्रकार धारित दाहिने हाथ को बायीं मुट्ठि पर स्थापित करके साधक दाहिने भाग में दर्शाये इसे शिर/मुण्ड मुद्रा नाम से कहा गया है। (पृष्ठ संख्या 60 व 61 में 5.32a, b, व c को देखें)।

5.33 शक्ति मुद्रा-

कनिष्ठिकानामिकयोः स्पृष्ट्वांगुष्ठं च न्यक्कुर्यात्।
तदुपरि शेषं धृत्वा शक्ति मुद्रा च सा स्मृता।।

अर्थात् कनिष्ठिका और अनामिका अंगुलियों को परस्पर छूवें तथा अंगूठे को अन्दर की ओर मोड़कर उस पर शेष अंगुलियों यानि तर्जनी और मध्यमा को रखें, यह शक्ति मुद्रा है। अथवा-

'मुष्टिं कृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरि दक्षिणम्।
कृत्वा शिरसि संयोज्या शक्तिमुद्रेयमीरिता।।'

अर्थात् बायीं मुट्ठि पर दाहिनीं मुट्ठि को रख कर सिर पर स्थापित करें, इसे शक्ति मुद्रा कहा गया है। (पृष्ठ संख्या 61 में चित्र संख्या 5.33a व b को देखें।)

5.34 मुद्गर मुद्रा -

'दक्षमुष्टिं बद्ध्वा न्यसेत्कूर्परमपरांजलौ।
मुद्गरमुद्रेयं प्रोक्ता रिपुवर्गविध्वंसिनी।।'

अर्थात् दाहिनी मुट्ठि बांधे हुये दाहिनी कुहनी को बायीं हथेली पर सीधा रखें इसे शत्रु समूह का नाशक मुद्गर मुद्रा कहा गया है। (पृष्ठ संख्या 61 में चित्र संख्या 5.34 a व b को देखें।

5.35 शत्रुजिह्वाग्र मुद्रा-

दक्षिणामूर्ति संहिता (57.33) में इस प्रकार बतायी गयी है -

'तर्जनीं बहिः सरलां।
अंगुष्ठं मुष्टिगं कुर्याद्रिपुजिह्वग्रहा भवेत्।।

अर्थात् तर्जनी को बाहर की ओर सीधा रखकर अंगूठे को मुट्ठी में बन्द रखें, यह रिपुजिह्वाग्र/शत्रुजिह्वाग्र मुद्रा होती है। (पृष्ठ संख्या 62 में चित्र संख्या 5.35 को देखें।)

5.36 षडंगमुद्रा/न्यासमुद्रा -

'हृन्नेत्रं त्रिभिराख्यातं द्वाभ्यामस्त्रशिरो मतम्।
अंगुष्ठेन शिखा ज्ञेया दिग्भिः कवचमीरितम्।।'

अर्थात् हृदय, सिर, शिखा (केवल अंगूठे से), बाहुद्वय, त्रिनेत्र और शरीर के चारों तरफ मृगीमुद्रा को दर्शाकर चुटकी बजाने का नाम षडंगमुद्रा अथवा न्यासमुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 62 व 63 में चित्र संख्या 5.36-1, 2 3, 4, 5 व 6 को देखें)।

5.37 विसर्जन मुद्रा -

'स्वस्तिकाकारहस्ताभ्यां स्पृष्ट्वा कर्णौ तथैव च।
उन्मुक्तहस्तमूर्ध्वं कुर्यात् मुद्रा सा च विसर्जनी।'

अर्थात् हाथों को स्वस्तिक आकार में दोनों कानों के पास लेजाकर उनका स्पर्श करने के बाद पांचों अंगुलियों को फैलाये हुये अपने सिर के बराबर उठाकर रखने को विसर्जनी मुद्रा कहते हैं। (पृष्ठ संख्या 63 में चित्र संख्या 5.37 को देखें)।

5.38 सुमुखादि मुद्रा -

'सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
मुकुली च सुमुखाद्याः पंचमुद्राः प्रदर्शयेत्।'

अर्थात् सुमुख, सम्पुट, वितत, विस्तृत और मुकुली नामक सुमुखादि पांच मुद्राओं के समूह को दर्शाना चाहिये। प्रत्येक के लक्षण इस प्रकार है -

5.38-1 सुमुख -

'संकुचितांगुलयश्च संश्लिष्टा करयोर्द्वयोः।'

अर्थात् दोनों हाथों की परस्पर मिली हुयी अंगुलियों को मोड़कर अग्र भागों को स्पर्श करते हुये अपने सामने धारण करें यह सुमुख मुद्रा है।

(पृष्ठ संख्या 63 में चित्रसंख्या 5.38-1 a व b को देखें।)

5.38-2 सम्पुटम् -

'तादृक्स्थितौ संयोजयेत् मणिबन्धयोश्च द्वयोः।'

अर्थात् अंगुलियों को उसी स्थिति में रखते हुये दोनों हाथों के मणिबन्धों को मिलावे यह सम्पुट मुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 63 में चित्र संख्या 5.38-2 को देखें)।

5.38-3 विततम् -

'कृत्वाऽंगुलयश्च सर्वाः सरला अन्तरा करौ।'

अर्थात् अंगुलियों को सीधा करके दोनों हाथों की हथेलियों को परस्पर सामने थोड़ी दूर रखें यह वितत मुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 63 में चित्र संख्या 5.38-3 को देखें)।

5.38-4 विस्तृतम् -

'अन्तरा यदा चाधिका विस्तृतं च तदोच्यते।'

अर्थात् दोनों हाथों की अंगुलियों को खोलकर दोनों को कुछ अधिक दूर यानि थोड़ा ज्यादा फैलाये, यह विस्तृत मुद्रा है। (पृष्ठ संख्या 64 में चित्र संख्या 5.38-4 को देखें)।

5.38-5 मुकुली मुद्रा -

'सम्मुखीकृत्य हस्तौ द्वौ किंचित्संकुचितांगुलीः।
मुकुली तु समाख्याता पंकजा प्रसृतैव सा।।
पूर्वोक्ता मुकुली या च प्रादेशी निःसृतांगुलीः।
व्याकोशमुद्रा मुकुला पंचमुद्राः प्रदर्शयेत्।।'

अर्थात् दोनों हाथों को सम्मुख कर अंगुलियों को थोड़ा संकुचित करें, इसे मुकुली मुद्रा कहते हैं। अंगुलियों को थोड़ा फैलाये रखने पर इसे पंकज मुद्रा कहा जाता है। जब अंगुलियों को एक प्रादेशमात्र यानि लगभग 7 से 9 इन्च फैलायें तो इसे व्याकोशा/मुकुला मुद्रा कहा जाता है। यह तीनों वैकल्पिक हैं। अतः पूर्वोक्त 4 के साथ इन तीन में से किसी एक के

सहित सुमुखादि पांच मुद्रा नाम से दर्शाने की विधि है। (पृष्ठ संख्या 64 में चित्र संख्या 5.33-5 a व b को देखें)।

5.39 योग मुद्रा -

'तर्जन्यौ कुंचिते कृत्वा तथैव च कनीयसी।
अधोमुखी दृष्टनखा स्थिता मध्ये करस्य तु।।
चतस्रश्चोत्थिताः पृष्ठे अंगुष्ठावेकतः कुरु।
नालम्ब्यावस्थितौ द्वौ तु योगमुद्रा प्रकीर्तिता।।'

अर्थात् दोनों हाथों की हथेलियों के मध्य में दोनों तर्जनियों को इस प्रकार थोड़ा संकुचित करें कि वे नीचे की ओर हों और उनके नाखून दिखाई दे। शेष चारों अंगुलियों को उनके ऊपर सीधे रखते हुये दोनों अंगूठों के अग्र भाग को स्पर्श करें। दोनों हाथ एक दूसरे पर अवलम्बित न हो, इसे योग मुद्रा कहते हैं। (पृष्ठ संख्या 64 में चित्रसंख्या 5.39 को देखें)।

5.40 ज्वालिनी मुद्रा -

'दक्षिणांगुष्ठं च मुष्टौ कृत्वा कनिष्ठिकां बहिः।
सर्वकर्मसु प्रशस्ता ख्याता मुद्रेति ज्वालिनी।।

अथवा

'उभयोर्हस्तयोः स्पृष्ट्वा चांगुष्ठकनिष्ठिकयोः।
शेषाश्च प्रसरेद्बहिः संश्लिष्टौ च करावुभौ।।
सर्वकर्मसु प्रशस्ता ख्याता मुद्रेति ज्वालिनी।।'

अर्थात् दाहिने हाथ के अंगूठे को मुट्ठि में बन्द कर कनिष्ठिका को बाहर सीधे फैलाये, इसे सकल कर्मो में अग्नि प्रज्वलन में प्रयुक्त ज्वालिनी मुद्रा कहते हैं। अथवा दोनों हाथों के अंगूठे और कनिष्ठिका के अग्रभागों को स्पर्श करके शेष अंगुलियों को बाहर की ओर थोड़ा फैलाये हुये दोनों हाथों को मणिबन्ध से जोड़ें रखें इसे सकल कर्मो में अग्नि प्रज्वलन में प्रयुक्त ज्वालिनी मुद्रा कहते हैं। (पृष्ठ संख्या 64 में चित्र संख्या 5.40 a व b को देखें)।

17. पृष्ठ संख्या 64, पंक्ति सं 08 के अन्त में इस पंक्ति को जोड़ें –
पात्रासादन करें। तत्र क्रमः –

'पवित्रछेदनार्थं त्रयो दर्भाः, साग्रे अनन्तगर्भे प्रवित्रे द्वे प्रोक्षणी पात्रे, आज्यं, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, त्रिप्रक्षालिता तण्डुला, सम्मार्जनकुशाः पंच, उपयमनकुशाः सप्त, समिधस्तिस्रः, स्रुवः, स्रुक्, पूर्णपात्रं, अन्यान्युपकल्पनीयानि अर्कादिसमित्तिलादि हवनीय द्रव्याणि निधाय पवित्रे कुर्यात्। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय उपरि प्रादेश मात्रं अवशेषयित्वा दक्षिणकरेण द्वयोः पवित्रयोः मूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षणीकृत्य वामकरेण सर्वाणि पवित्राणि युगपद्धृत्वा दक्षिणकरांगुष्ठांगुलि पर्वाभ्यां उपरि प्रादेशमात्रं छित्त्वा त्रीण्युत्तरतः क्षिपेत्, द्वे ग्राह्ये।'

अर्थात् पवित्र छेदन केलिये 3 दर्भ, साग्र अनन्तगर्भ पवित्र, दो प्रोक्षणीपात्र, घी, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, तीन बार प्रक्षालित चावल, 5 सम्मार्जनकुशा, 7 उपयमनकुशा, 3 समिधा, स्रुवा, स्रुक्, पूर्णपात्र, अन्य उपकल्पित अर्कादि समिधा सहित तिल आदि हवनीय द्रव्य को रखकर पवित्र निर्माण करें। 2 के उपर 3 को रखकर उपरी प्रादेशमात्र को शेष करके दाहिने हाथ से 2 पवित्रों के मूल से 2 कुशाओं की प्रदक्षिणा लगाकर बायें हाथ से सभी को एक साथ धारणकर दाहिने हाथ के अंगुष्ठ व अंगुलि से उपर के प्रादेशमात्र का छेदनकर 3 को उत्तर दिशा में फेंके और 2 को ग्रहण करें। तत्पश्चात् प्रणीता आदि पात्रों को इस मन्त्र से ढ़के –

'ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरूशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।'

18. पृष्ठ संख्या 91, पंक्ति संख्या 25 के बाद जोड़ें –

<u>**विशेष ज्ञातव्य**</u>– वैदिक पद्धति के अनुसार किसी भी कर्म को आरम्भ करने का क्रम यह हैः–

1. सर्वप्रथम कर्मस्थान की **दिशा** व कर्मानुसार किस **दिशा** की ओर मुख करके बैठना है यह तय कर लें। इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 19 को पढें।

2. कर्म के अनुसार कौन सा **आसन** प्रयोग करना है व किस **आसन** में बैठना है यह तय कर लें। मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 5 में 3.6 शीर्षक पढ़ें व इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 3 को जोड़कर पढ़ें। ।
3. कर्म के अनुसार **पत्नी को दाहिने या बायें** में बैठाना है यह तय करें। इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 20 को पढ़ें।
4. तत्पश्चात् **आचमन** करना है। इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 29 को पढ़ें।
5. तदनन्तर **प्राणायाम** करें। इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 31 को पढ़ें।
6. पुनः पूर्ववत् **आचमन** करें।
7. **पवित्र धारण** करें। मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 64, पंक्ति संख्या 09 तथा इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 21 को पढ़ें।
8. **शरीर शुद्धि** करें। इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 22 को पढ़ें।
9. **दिग्रक्षण**। मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 116 को देखें।
10. **पृथ्वी** (भूमि) **पूजन**। मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 115 को देखें।
11. **दीपकपूजन**। मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 122 को देखें।
12. **शंखपूजन**। मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 122 को देखें।
13. **घण्टीपूजन**। मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 122 को देखें।
14. **यजमान तिलक**। इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 23 को पढ़ें।
15. **शान्तिपाठ**। मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 92 को देखें।
16. **कर्मपात्र पूजन**। इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 24 को पढ़ें।
17. **सूर्यार्घ्यः**। इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 25 को पढ़ें।
18. **सूर्यनमस्कारः**। इसी 'पूर्णिका' के क्रमांक 26 को पढ़ें।
19. **प्रधान संकल्पः**–मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 123 को देखें।

(विशेष सूचना :- यद्यपि श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाश में इस वैदिक क्रम का अनुसरण नहीं किया गया है किन्तु आगमिक परम्परा का

अनुसरण किया गया है तथापि साधक जिस गुरु परम्परा में दीक्षित है वह उसी के अनुसार पूजा क्रम को समझकर अनुष्ठान करे।)

19. पृष्ठ संख्या 91, पंक्ति संख्या 25 के बाद पूर्वोक्त विशेष ज्ञातव्य (18/1) के अनन्तर जोड़ें – **कर्म में दिशा पर विचार** – कर्म करने के स्थान के बारे में मूल ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 4, 3.4 शीर्षक को देखें। उस स्थान में पूर्व, उत्तर अथवा ईशान दिशा में कर्म के योग्य स्थान का चयन करें। गोबर आदि से लीप कर पवित्र कर लें। यजमान का मुख किस ओर हो इस विषय में कर्मप्रदीप में निर्णय दिया गया है कि –

'यत्र दिङ्नियमो न स्याज्जपहोमादिकर्मसु।
तिस्रस्तत्र दिशः प्रोक्ता ऐन्द्री सौम्याऽपराजिता।।'

अर्थात् जिस जप, होम आदि कर्म में दिशा विशेष का नियम विधान नहीं किया गया है उस कर्म को करने केलिये तीन दिशाओं को श्रेष्ठ बताया है – पूर्व, उत्तर और ईशान।

20. पृष्ठ संख्या 91 में ही पूर्वोक्त विशेष ज्ञातव्य के क्रमांक 18/3 में बताये क्रम से जोड़कर पढें – **पत्नी को दाहिनी/बायीं ओर बैठाने पर विचार** – धर्मप्रवृत्ति नामक ग्रन्थ में कहा है –

'व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थीसहभोजने।
व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे।।
सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।
अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः।।'

अर्थात् व्रतबन्ध, विवाह, चतुर्थी संस्कार, सह भोजन, व्रत, दान, याग व हवन और श्राद्ध – इन कर्मो में पत्नी दाहिनी तरफ बैठेगी। सामान्यतः सभी धर्म कार्यो में पत्नी का दाहिने बैठना ही शुभ है किन्तु अभिषेक कर्म और ब्राह्मण आदि श्रेष्ठ व ज्येष्ठ के पाद प्रक्षालन कर्म में बाये बैठना चाहिये। कात्यायन 4.7.19 में कहते हैं –

'जातके नामके चैव ह्यन्नप्राशनकर्मणि।
तथा निष्क्रमणे चैव पत्नी पुत्रश्च दक्षिणे।।

गर्भाधाने पुंसवने सीमन्तोन्नयने तथा।
वधूप्रवेशने चैव पुनः सन्धान एव च।।
प्रदाने मधुपर्कस्य कन्यादाने तथैव च।
कर्मस्वेतेषु भार्या वै दक्षिणे तूपवेशयेत्।।'

अर्थात् जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन और निष्क्रमण कर्म में पत्नी एवं पुत्र दाहिनी तरफ बैठें। गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, वधूप्रवेश, द्विरागमन, मधुपर्क दान और कन्या दान इन कर्मो में पत्नी दाहिनी तरफ बैठें। किन्तु संस्कारगणपति में कहा गया है -

'वामे सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमे।
वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी।।
वामे पत्नी त्रिषु स्थाने पितृणां पादशौचने।
रथारोहणकाले च ऋतुकाले सदा भवेत्।।
विप्रक्षत्रियविट्छूद्रैः स्त्रीरहितैः क्रमाद्भार्या।
कुशहेमरौप्यरचिता ताम्रा च धर्माय धार्या ।।'

अर्थात् सिन्दूर दान, द्विरागमन, भोजन, एक शय्या पर शयन, पितरों के पाद प्रक्षालन, रथारोहण और ऋतुकाल में प्रियार्थी पत्नी पति के बाये भाग में होनी चाहिये। जिसके पत्नी नहीं है (अर्थात् मृत, त्यक्त, रजस्वला, रुग्ण और अन्य किसी कारण से कर्म करने में असमर्थ हो तो) ब्राह्मण हो तो कुशा की, क्षत्रिय हो तो सोने की, वैश्य हो तो चांदी की और शूद्र हो तो तांबे की अपनी पत्नी के सदृश मूर्ति बनवाकर धार्मिक कर्म केलिये प्रयोग कर सकते हैं।

21. पृष्ठ संख्या 91 में ही पूर्वोक्त विशेष ज्ञातव्य के क्रमांक 18/7 में बताये अनुसार पृष्ठ संख्या 64, पंक्ति संख्या 15 से जोड़कर पढ़ें -

पवित्रधारण विधिः-

'ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव।
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।1।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।2।।

22. पृष्ठ संख्या 91 में ही पूर्वोक्त विशेष ज्ञातव्य के क्रमांक 18/8 में बताये क्रम से जोड़कर पढें – **शरीरशुद्धिः –**

'अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

23. पृष्ठ संख्या 91 में ही पूर्वोक्त विशेष ज्ञातव्य के क्रमांक 18/14 में बताये क्रम से जोड़कर पढें – **यजमानतिलकविधिः –**

'ॐ न तद्रक्षाᳬसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजᳬह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणᳬ हिरण्यᳬ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।1।।
ॐ यदा बध्नं दाक्षायणा हिरण्यᳬ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मञ्जरदष्टिर्यथासम्।।2।।
येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल।।3।।'

24. पृष्ठ संख्या 91 में ही पूर्वोक्त विशेष ज्ञातव्य के क्रमांक 18/16 में बताये क्रम से जोड़कर पढें – **कर्मपात्रपूजनं** – कर्मपात्र की आधारभूत भूमि पर षट्कोण बनाकर स्पर्श करते हुये इस मन्त्र का पाठ करें–

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधा या विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिᳬसीः।।'

अगले मन्त्र का पाठ करते हुये थोड़े धान्य को उस पर ड़ालें–

'ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान् देवो वः सविता हिरण्यपाणिः। प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनाम्पयोसि।।'

उस पर कर्मपात्र को स्थापित करें–

'ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विद वः पुनरूर्ज्जानि वर्तस्वसानः। सहस्रं धुक्ष्वोरु धारापयस्वतीः पुनर्मा विशताद्रयिः।।'

अब कर्मपात्र को जल से भरें-

'ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋत सदनमासीद ।'.

तत्पश्चात् उसमें गन्ध को समर्पित करें-

'ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।'

उसमें अक्षत डालें -

'अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषतस्व भानवो विप्रानविष्ठयामती यो जान्विन्द्र ते हरी।।

उसमें पुष्प को डालें-

'ॐ याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।
मनैनुवभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।'

तदनन्तर दूर्वा डालें-

'ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।'

कर्मपात्र के अन्दर डाली गयी सामग्री को पुष्प से अच्छी तरह से घुमायें और कर्मपात्र के गले में मौली को बांधें -

'ॐ सुजातो ज्येतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो।।'

पुष्पाक्षतों से तीर्थो का आवाहन करें -

'काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधोपुरी।
शालिग्राम सगोकर्ण नर्मदा च सरस्वती।।
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।
ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करे स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन देवेश तीर्थं देहि दिवाकर।।
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।
नन्दिनी नलिनी सीता मालती च महापगा।
विष्णुपादाब्जसम्भूता गंगा त्रिपथगामिनी।।
ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।'

इस प्रकार तीर्थो का आवाहन करके पवित्री से जल का आलोडन करें –

'ॐ यद्देवा देव हेडनं देवा सश्च कृमावयम्।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि च कृमावयम्।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।
यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि च कृमावयम्।
सूर्योमा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।'

हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

'नमामि गंगे तव पादपंकजं सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम्।।
अहिरिपुपतिकान्ता तातसंबद्धकान्ता,
हरतनयनिहन्ता प्राणदाता ध्वजस्य।
सखिसुतसुतकान्ता तातसंपूज्यकान्ता,
पितुः शिरसि वहन्ती जाह्नवी नः पुनातु।।'

तत्पश्चात् कर्मपात्रस्थ पुष्प से सभी पर और समस्त सामग्री पर प्रोक्षण करें – **'अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।**
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।'

25. पृष्ठ संख्या 91 में ही पूर्वोक्त विशेष सूचना के क्रमांक 18/17 में बताये क्रम से जोड़कर पढें – **सूर्यार्घ्यः** – जलाक्षतरक्तचन्दनरक्तपुष्प को अर्घ्यपात्र में रखकर सूर्य को अर्घ्य दें–

'एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशेः जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।'

26. पृष्ठ संख्या 91 में ही पूर्वोक्त विशेष ज्ञातव्य के क्रमांक 18/18 में बताये गये क्रम से जोडकर पढें – **सूर्यनमस्कारः** –

'ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ति,
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी,
हारी हिरण्मयवपुः धृतशंखचक्रः।।
नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने।।
आदित्याय नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने।
जन्मान्तरसहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते।।'

27. पृष्ठ संख्या 95, पंक्ति संख्या 09 से पृष्ठ संख्या 96, पंक्ति संख्या 20 तक संकेतित किये गये अंश को पूरा करके इस प्रकार पढ़ें–

ॐ मोदाय नमः, **मोदमावाहयामि।**
ॐ प्रमोदाय नमः, **प्रमोदमावाहयामि।**
ॐ सुमुखाय नमः, **सुमुखमावाहयामि।**
ॐ दुर्मुखाय नमः, **दुर्मुखमावाहयामि।**
ॐ अविघ्नाय नमः, **अविघ्नमावाहयामि।**
ॐ विघ्नकर्त्रे नमः, **विघ्नकर्तारमावाहयामि।** इत्यावाह्य – **'मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु।। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों३प्रतिष्ठ।।'** इति प्रतिष्ठाप्य **'ॐ मोदादिषड् विनायकेभ्यो नमः'** इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः संपूजयेत्। **'अनया पूजया मोदादिषड्विनायकाः प्रीयन्ताम्, न मम।'**

ततो **गौर्यादि षोडश मातृका पूजनम्** अक्षतपुंजेषु पूगीफलेषु वा निवेश्याः। तत्रायं क्रमः–

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।1।।

हृष्टि: पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मन: कुलदेवता:।।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।।2।।

ॐ गणेशाय नम:। गणेशमावाहयामि।।1।।
ॐ गौर्यै नम:। गौरीमावाहयामि।।2।।
ॐ पद्मायै नम:। पद्मामावाहयामि।।3।।
ॐ शच्यै नम:। शचीमावाहयामि।।4।।
ॐ मेधायै नम:। मेधामावाहयामि। 5।।
ॐ सावित्र्यै नम:। सावित्रीमावाहयामि।।6।।
ॐ विजयायै नम:। विजयामावाहयामि ।। 7।।
ॐ जयायै नम:। जयामावाहयामि।।8।।
ॐ देवसेनायै नम:। देवसेनामावाहयामि।।9।।
ॐ स्वधायै नम:। स्वधामावाहयामि।।10।।
ॐ स्वाहायै नम:। स्वाहामावाहयामि ।।11।।
ॐ मातृभ्यो नम:। मातृरावाहयामि।। 12।।
ॐ लोकमातृभ्यो नम:। लोकमातृरावाहयामि।। 13।।
ॐ हृष्ट्यै नम:। हृष्टिमावाहयामि।। 14।।
ॐ पुष्ट्यै नम:। पुष्टिमावाहयामि।। 15।।
ॐ तुष्ट्यै नम: । तुष्टिमावाहयामि।।16।।
ॐ आत्मन: कुलदेवतायै नम:। कुलदेवतामावाहयामि।। 16।।

इत्यावाह्य 'ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु।। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों३प्रतिष्ठ।।' इति प्रतिष्ठाप्य 'ॐ गौर्य्यादिषोडशमातृकाभ्यो नम:' नाममन्त्रेण षोडशोपचारै: संपूजयेत्। तत: कुड्ये पीठे वा आवाहित घृतमातृणामुपरि घृतेन कुंकमाक्तेन दक्षिणोत्तरा: सप्त धारा दद्यात्।

'ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्य त्वा सविता पुनातु।। वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वाकामधुक्ष: ।।1।।'

अथ सप्तघृतमातृका पूजनम्-

ॐ श्रीश्चलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।1।।

ॐ श्रियै नमः। श्रियमावाहयामि।।1।।
ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीमावाहयामि।। 2।।
ॐ धृत्यै नमः। धृतिमावाहयामि।।3।।
ॐ मेधायै नमः। मेधामावाहयामि।। 4।।
ॐ पुष्ट्यै नमः। पुष्टिमावाहयामि ।। 5।।
ॐ श्रद्धायै नमः। श्रद्धामावाहयामि।। 6।।
ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीमावाहयामि।।7।।

इत्यावाह्य '**ॐ घृतमातृकाभ्यो नमः**' इति षोडशोपचारैः पूजयेत्।

अथ सप्त स्थलमातरः- तण्डुलपुंजेषु-

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः।।

ॐ ब्राह्मयै नमः। ब्राह्मीमावाहयामि।1।
ॐ माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीमावाहयामि।।2।
ॐ कौमार्यै नमः। कौमारीमावाहयामि। 3।
ॐ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीमावाहयामि । 4।
ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीमावाहयामि ।5।
ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणीमावाहयामि । 6।।

इत्यावाह्य 'ॐ स्थलमातृकाभ्यो नमः' इति षोड़शोपचारै पूजयेत्।

28. पृष्ठ संख्या 104, पंक्ति संख्या 13 में जोड़ें -

ॐ के उच्चारण पर विचार -

ॐ के उच्चारण के विषय में छन्दोगपरिशिष्ट में कहा गया है - 'ॐकारपूर्व हि योगोपासनं यानि नित्यानि पुण्यतमानि कर्माणि दानयज्ञतपःस्वाध्यायजपध्यानसन्ध्योपासनप्राणायामहोमदैव

पैत्र्यमन्त्रोच्चारब्रह्मारम्भदीनि यच्चान्यत्किंचिच्छ्रेयस्तत्सर्वं प्रणव मुच्चार्य प्रवर्तयेत्समापयेच्च। स्वरितोदात्त एकाक्षर ॐकारो ऋग्वेदे। सर्वोदात्त एकाक्षर ॐकारो यजुर्वेदे। दीर्घोदात्त एकाक्षर ॐकारः साम्नि। संक्षिप्तोदात्त एकाक्षर ॐकारोऽथर्वणवेदे।।'
अर्थात् जिसलिये ॐकार पूर्वक योगसाधना, समस्त नित्य पुण्यकर्म, दान, यज्ञ, तप, स्वाध्याय, जप, ध्यान, सन्ध्योपासना, प्राणायाम, होम, देवता पूजन, पितृकर्म, किसी भी मन्त्र का उच्चारण, वेदपाठ का आरम्भ आदि शुभ कर्मो को तथा अन्य जो कुछ भी कल्याणकारी कर्म किये जाने पर शुभ हो जाते हैं, इसलिये उन सब को ॐ के उच्चारण से आरम्भ कर ॐ के उच्चारण से ही समाप्त करें। किन्तु स्वर का ध्यान रखना है क्योंकि ऋग्वेदीय ॐ स्वरितोदात्त है, यजुर्वेदीय ॐ सर्वोदात्त है, सामवेदीय ॐ दीर्घोदात्त और अथर्ववेदीय ॐ ह्रस्वोदात्त है। बौधायन ने कहा है – **'अपि वा प्रणवमेव त्रिरन्तर्जले पठन्सर्वपापात्प्रमुच्यते सर्वपापात्पूतो भवति।'**
अर्थात् स्नानार्थ जल में डुबकी लगाये हुये तीन बार ॐ का उच्चारण करे तो वह सब पापों से मुक्त होकर अत्यन्त पवित्र हो जाता है। तथा योगीयाज्ञवल्क्य ने कहा है –

'माङ्गल्यं पावनं धर्म्यं सर्वकामप्रसाधनम्।
ॐकारं परमं ब्रह्म सर्वमन्त्रेषु नायकम्।।
आद्यं मन्त्राक्षरं ब्रह्म त्रयी यस्मिन् प्रतिष्ठिता।
सर्वमन्त्रप्रयोगेषु ओमित्यादौ प्रयुज्यते।।
तेन संपरिपूर्णानि यथोक्तानि भवन्ति हि।
सर्वमन्त्राधियज्ञेन ॐकारेण न संशयः।।'

अर्थात् ॐकार मंगलमय, पावन, धर्मस्वरूप, सर्वकाम प्रदायक, परम ब्रह्म, सभी मन्त्रों का नायक और आद्य मन्त्राक्षर है जिसमें तीनों वेद प्रतिष्ठित हैं , इसलिये सभी मन्त्रों के प्रयोग के शुरु में ॐका प्रयोग होता है। उन सभी मन्त्रों के अधियज्ञरूप ॐकार से ही यथोक्त सभी मन्त्र पूर्णता को प्राप्त होते हैं।

29. पृष्ठ संख्या 104, पंक्ति संख्या 13 में जोड़ें –

आचमन पर विचार –विश्वामित्रकल्प में कहा गया है –

'शुद्धं स्मार्तं तथा चैव पौराणं वैदिकं तथा।
तान्त्रिकं श्रौतस्मार्तं च षड्विधं श्रुतिनोदितम्।।'

अर्थात् श्रुति यानि वेदों में कहे गये आचमन छः प्रकार के हैं – शुद्ध, स्मार्त, पौराणिक, वैदिक, तान्त्रिक और श्रौतस्मार्त।

'विण्मूत्रादिकशौचेषु शुद्धं च परिकीर्तितम्।
स्मार्तं पौराणिकं कर्मण्याचमेद्विधिपूर्वकम्।।
वैदिकं श्रौतस्मार्तं च ब्रह्मयज्ञादिपूर्वकम्।
अस्त्रविद्यादिकार्याणां तान्त्रिको विधिरुच्यते।।'

अर्थात् मल–मूत्र त्याग आदि कर्म में शुद्ध आचमन, सामान्य पुण्य कर्म में स्मार्त व पौराणिक आचमन, स्वाध्याय आदि वैदिक कर्म में वैदिक व श्रौतस्मार्त आचमन और अस्त्रविद्या आदि कर्म में तान्त्रिक आचमन का प्रयोग करें, ।

1. श्रौत (वैदिक) आचमन क्या है, आह्निककारिका में कहा है –

'प्रणवं पूर्वमुच्चार्य सावित्रीं तदनन्तरम्।
तथैव व्याहृतीस्तिस्रः श्रौताचमनमुच्यते।।'

अर्थात् पहले ॐ का उच्चारण करके व्याहृतियों को व्यस्त व समस्त रूप से क्रमशः उच्चारण कर गायत्री मन्त्र का उच्चारण करना श्रौत आचमन है। जैसे कि –

'ॐ भूः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा, ॐ भुवः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा, ॐ स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा, (हस्तप्रक्षालन करें –) **ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा।**

2. स्मार्त आचमन क्या है, भरद्वाजस्मृति में कहा है –

'केशवाद्यैस्त्रिभिः पीत्वा द्वाभ्यां प्रक्षालयेत्करौ।

द्वाभ्यामोष्ठौ तु संमृज्य द्वाभ्यामुन्मार्जनं तथा।।
एकेन हस्तौ प्रक्षाल्य पादावपि तथैव च।
सम्प्रोक्ष्यैकेन मूर्धानं ततः संकर्षणादिभिः।।
आस्यनासाक्षिकर्णौ च नाभ्युरस्कं भुजौ क्रमात्।
एवमाचमनं कृत्वा साक्षान्नारायणो भवेत्।।'

अर्थात् **ॐ केशवाय नमः स्वाहा, ॐ नारायणाय नमः स्वाहा, ॐ माधवाय नमः स्वाहा** – तीन बार पीयें, **ॐ गोविन्दाय नमः** – दाहिना हाथ धोवें, **ॐ विष्णवे नमः** – बायां हाथ धोवें, **ॐ मधुसूदनाय नमः** – ऊपर के ओंठ पर प्रोक्षण करें, **ॐ त्रिविक्रमाय नमः** – निचले ओंठ पर प्रोक्षण करें, **ॐ वामनाय नमः** और **ॐ श्रीधराय नमः** – उन्मार्जन करें, **ॐ हृषीकेशाय नमः** – दोनों हाथ धोवें, **ॐ पद्मनाभाय नमः** – दोनों पैर धोवें, **ॐ दामोदराय नमः** – सिर पर प्रोक्षण करें, **ॐ संकर्षणाय नमः** – मुख प्रक्षालन करें, **ॐ वासुदेवाय नमः** – दक्षिण नासा पुट का स्पर्श करें, **ॐ प्रद्युम्नाय नमः** – बायें नासापुट का स्पर्श करें, **ॐ अनिरुद्धाय नमः** – दाहिनी आंख का स्पर्श करें, **ॐ पुरुषोत्तमाय नमः** – बायीं आंख का स्पर्श करें, **ॐ अधोक्षजाय नमः** – दाहिने कान का स्पर्श करें, **ॐ नारसिंहाय नमः** – बायें कान का स्पर्श करें, **ॐ अच्युताय नमः** – नाभि का स्पर्श करें, **ॐ जनार्दनाय नमः** – हृदय का स्पर्श करें, **ॐ उपेन्द्राय नमः** – मस्तक का स्पर्श करें, **ॐ हरये नमः** – दाहिनी बाहु का स्पर्श करें, **ॐ श्री कृष्णाय नमः** – बायीं बाहु का स्पर्श करें, **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** – शरीर के चारों तरफ प्रदक्षिणा के क्रम से जल छिड़कें।

3. तान्त्रिक (आगमिक) आचमन क्या है, देवीरहस्य में कहा है –
'ॐ आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। (तीन बार पीयें) (हस्तप्रक्षालन करें) **ॐ सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।'**

4. पौराणिक आचमन –

'केशवादिभिः नामभिः कुर्यादाचमनं चैव।

तच्च पौराणिकं स्मृतं।

अर्थात् **ॐ केशवाय नमः स्वाहा, ॐ नारायणाय नमः स्वाहा, ॐ माधवाय नमः स्वाहा** – तीन बार पीयें, **ॐ ऋषीकेशाय नमः** – हस्तप्रक्षालन करें।

5. शुद्ध आचमन – **ॐ ऋग्वेदाय नमः स्वाहा, ॐ यजुर्वेदाय नमः स्वाहा, ॐ सामवेदाय नमः स्वाहा** – तीन बार पीयें, **ॐ अथर्ववेदाय नमः** – हस्तप्रक्षालन करें। (इसका प्रमाण हमें प्राप्त नहीं हुआ है, किन्तु अत्यन्त प्रचलित है, अतः हमने इसका संकलन यहां किया है)।

किन्तु वृद्धपाराशर में 3 प्रकार का ही आचमन कहा गया है –

'त्रिधा आचमनं प्रोक्तं श्रौतस्मार्तपुराणतः।'

अर्थात् तीन प्रकार का आचमन कहा गया है – श्रौत, स्मार्त और पौराणिक।

आचमन कब – कब करें :– वृद्धपाराशर में कहा है –

'ब्रह्मयज्ञादिके कुर्याच्छ्रुतेराचमनं द्विजः।।
सन्ध्यायां कर्मकाले च स्मृतेराचमनं स्मृतम्।
शौचाचारे चान्यं याने स्पृष्टास्पृष्टे च चर्वणे।।'

अर्थात् वेदों के अध्ययन आदि श्रौत शुभकर्म में श्रौत आचमन, सन्ध्यावन्दन आदि स्मार्त शुभकर्म में स्मार्त आचमन और शौच आचरण, छूवाछूत, यात्रा, भोजन आदि व्यावहारिक कर्म में पौराणिक आचमन करना चाहिये। देवलस्मृति में कहा है –

'रेतोमूत्रशकृन्मोक्षे भोजने च परिक्षये।
उच्छिष्टं मानवं स्पृष्ट्वा भोज्यं चापि तथाविधम्।।'

अर्थात् स्वप्नदोष होने पर तथा मल व मूत्र त्याग करने पर, भोजन की समाप्ति होने पर, अछूत मनुष्य व झूठे अन्नादि का स्पर्श करने पर आचमन करना चाहिये। बार्हस्पतस्मृति में कहा है –

'अधोवायुसमुत्सर्गे आक्रन्दे क्रोधसम्भवे।
मार्जारमूशकस्पर्शे प्रहासेऽनृतभाषणे।।

निमित्तेष्वेषु धर्मार्थं कर्मकुर्वन्नुपस्पृशेत्।'

अर्थात् धार्मिक कर्म करते वक्त इन निमित्तों की उपस्थिति में यानि अपान वायु का त्याग करने पर, रोने पर, क्रोध करने पर, बिल्ली व चूहे को स्पर्श करने पर, फालतु हँसने और झूठ बोलने पर आचमन अवश्य करना चाहिये अपनी शुद्धि केलिये। आपस्तम्ब ने कहा है – **'मूत्रपुरीशान्न लेपान्नशेषलेपा रेतसश्च यो लेपस्तान्प्रक्षाल्य पादौ चाचम्य प्रयतो भवेत्।।'** अर्थात् मूत्र, मल, अन्न, अन्नशेष, वीर्यादि के शरीर पर लगने से उसे धोकर तथा पैर को धोके आचमन करने से ही व्यक्ति शुद्ध होता है।

आचमन कैसे करें –

आचमन दो प्रकार से करने की प्रामाणिक परम्परा है।

1. **'दक्षिणेनोदकं पेयं दक्षं वामेन संस्पृशेत्।**
   तावन्न शुद्ध्यते वारि यावद्वामो न युज्यते।।
   गोकर्णाकृतिहस्तेन माषमात्रं जलं पिबेत्।
   आचमनं च तत्प्रोक्तं सर्वकर्मसु पावनम्।।'

अर्थात् बायें हाथ से दाहिने हाथ (हाथ की कोहनी, करपृष्ठ, आदि किसी भी शुद्ध भाग) का स्पर्श किये हुये ही जल ग्रहण करें, क्योंकि तब तक जल शुद्ध नहीं होता जब तक बायें हाथ से दाहिने हाथ का स्पर्श नहीं होता। एक माष (यानि उड़द के एक दाने) के वजन बराबर वजन जल को गौ के कान के आकार में धारित अंजलि में डालकर कायतीर्थ से मन्त्र पूर्वक ही आचमन करना चाहिये। अथवा

2. **'संहतांगुलिना तोयं गृहीत्वा पाणिना द्विजः।**
   मुक्तांगुष्ठकनिष्ठेन शेषेणाचमनं चरेत्।।'

अर्थात् अंगूठा और कनिष्ठिका को सीधे रखते हुये शेष अंगुलियों को थोड़ा अन्दर की ओर मोड़ कर उसमें जल को ग्रहण कर आचमन करें। स्त्रियां आचमन कैसे करें –

'आचमनस्थाने उदकेन नेत्रस्पर्शमाचरेत्।'

अर्थात् स्त्रियों को यदि आचमन करने का प्रसंग आये तो वे जल न पियें किन्तु जल से नेत्रों का स्पर्श मात्र करें।

30. पृष्ठ संख्या 109, पंक्ति संख्या 02 में जोड़ें -

ऋषिछन्दादि पर विचार :- व्यासस्मृति में कहा है -

'अविदित्वा ऋषिं छन्दो दैवतं योगमेव च।
योऽध्यापयेद्याजयेद्वा पापीयान् जायते तु सः।।'

अर्थात् ऋषि, छन्द, देवता और विनियोग न जानते हुये जो पढ़ता व पढ़ाता, याग करता व कराता है वह अत्यन्त पापी अवश्य हो जायेगा। योगीयाज्ञवल्क्य ने मन्त्र के ऋषि के निर्णय के बारे में कहा है -

'येन यो ऋषिणा दृष्टो मन्त्रः सिद्धिश्च तेन वै।
मन्त्रेण तस्य स प्रोक्त ऋषिभावस्तदात्मकः।।'

अर्थात् जो मन्त्र जिस ऋषि के द्वारा देखा गया यानि ध्यान काल में भगवत्कृपा से हृदय में अनुभव किया गया व उस मन्त्र का प्रयोग कर सिद्ध कर लिया गया हो उस ऋषि को ही उस मन्त्र के ऋषि के रूप में भावना करनी चाहिये। तथा अन्य ग्रन्थ में मन्त्र के छन्द के बारे में कहा है -

'छादनाच्छन्द उद्दिष्टं वाससी वाऽथवा कृते।
आत्मा तु छादितो देवि मृत्योर्भीतैस्तु वै पुरा।।
आदित्यैर्वसुभी रुद्रैस्तेन छन्द इति स्मृतम्।।'

अर्थात् कपड़े से ढकने पर अथवा आच्छादन करने से छन्द कहा गया है। अथवा मृत्यु के भय से आदित्य, वसु और रुद्र आदि देवताओं के द्वारा जिसके शरण होने पर आत्मा ढ़का गया यानि उस मन्त्र के स्वरूप की रक्षा हुयी उसे छन्द कहते हैं। तथा मन्त्र के देवता के बारे में कहा गया है-

'यस्य यस्य च मन्त्रस्य प्रोद्दिष्टा या च देवता।
तदाकारं भवेत्तस्य दैवतं देवतोच्यते।।'

अर्थात् जिस जिस मन्त्र का उद्देश्य यानि लक्ष्य जो देवता है उस उस मन्त्र को उस देवता के रूप से भावना करना ही उस मन्त्र का देवता कहा गया है। तथा मन्त्र के विनियोग के बारे में कहा गया है -

'पुरा कल्पे समुत्पन्ना मन्त्राः कर्मार्थमेव च।
अनेनेदं तु कर्तव्यं विनियोगः स उच्यते।।
निरुक्तं तु यस्य मन्त्रस्य समुत्पत्तिः प्रयोजनम्।

प्रतिष्ठानं स्तुतिश्चैव ब्राह्मणं चाभिधीयते।।
एवं पंचविधं योगं जपकाले त्वनुस्मरेत्।
होमे वान्तर्जले योगे स्वाध्याये याजने तथा।।'

अर्थात् 'इस मन्त्र से यह कर्म करें' – इस प्रकार प्राचीन काल में कल्प सूत्रकारों ने अध्ययन द्वारा प्राप्त मन्त्रों का जिस कर्म में प्रयोग करना निश्चय किया है उसे विनियोग कहते हैं। वह पांच प्रकार का है – समुत्पत्ति, प्रयोजन, प्रतिष्ठान, स्तुति और ब्राह्मण यानि व्याख्यान। इनको जानकर जप, होम, यजन–याजन, स्वाध्याय, योगसाधना और स्नानार्थ जल में डुबकी लगाते वक्त स्मरण करना चाहिये।

31. पृष्ठ संख्या 109, पंक्ति संख्या 08 में जोड़ें –

प्राणायाम पर विचार – देवीभागवत में कहा है –

'इडयाकर्षयेद्वायुं बाह्यं षोडशमात्रया।
धारयेत्पूरितं योगी चतुःषष्ट्या तु मात्रया।।
सुषुम्नामध्यगं सम्यग्द्वात्रिंशन्मात्रया शनैः।
नाड्या पिंगलया चैव रेचयेद्योगवित्तमः।।

अर्थात् दाहिनी नासिका बन्द कर बायीं नासिका से पूरक (16 मात्रा) – '**ॐ भूः ॐ भुवः** इत्यादि 7 व्याहृति युक्त गायत्री **ॐ विष्णवे नमः**', दोनों नासिका बन्द कर कुम्भक (64 मात्रा) – '**ॐ भूः ॐ भुवः** इत्यादि 7 व्याहृति युक्त गायत्री **ॐ ब्रह्मणे नमः**', बायीं नासिका बन्दकर दाहिनी नासिका से रेचक (32 मात्रा) – '**ॐ भूः ॐ भुवः** 'इत्यादि 7 व्याहृति युक्त गायत्री **ॐ महेश्वराय नमः**', पुनः दोनों नासिका बन्दकर कुम्भक (16 मात्रा) – '**ॐ भूः ॐ भुवः** इत्यादि 7 व्याहृति युक्त गायत्री **ॐ हिरण्यगर्भाय नमः**'। अन्यत्र भी कहा है –

'दक्षेन रेचयेद्वायुं वामेनापूरितोदरम्।
कुम्भकेन जपं कुर्यात्प्राणायामो भवेदिति।।'

अर्थात् दाहिनी नासिका से श्वास छोड़कर (रेचक) बायीं नासिका से श्वास लें (पूरक – पेट भरना) और श्वास को अन्दर रोके (कुम्भक) हुये जप करें यही प्राणायाम है।

32. पृष्ठ संख्या 109, पंक्ति संख्या 08 में जोड़ें –

गायत्रीमन्त्र के वर्णों के देवता – योगीयाज्ञवल्क्य ने बताया है कि –

'अक्षराणां तु दैवत्यं सम्प्रवक्ष्याम्यतः परम्।
आग्नेयं (तत्) प्रथमं ज्ञेयं वायव्यं च (स) द्वितीयकम्।।
तृतीयं (वि) सूर्यदैवत्यं चतुर्थं (तुर्) वैद्युतं तथा।
पंचमं (व) यमदैवत्यं वारुणं (रे) षष्ठमुच्यते।।
बार्हस्पत्यं सप्तमं तु (णि) पार्जन्यमष्टमं (यम्) विदुः।
ऐन्द्रं तु नवमं (भर्) ज्ञेयं गान्धर्वं दशमं (गो) तथा।।
पौष्णमेकादशं (दे) प्रोक्तं मैत्रावरुणं द्वादशम् (व)।
त्वाष्ट्रं त्रयोदशं (स्य) ज्ञेयं वासवं तु चतुर्दशम् (धी)।।
मारुतं पंचदशकं (म) सौम्यं षोडशकं (हि) स्मृतम्।
सप्तदशं (धि) त्वांगिरसं वैश्वदेवमतः परम् (यो)।।
आश्विनं चैकोनविंशं (यो) प्राजापत्यं तु विंशकम् (नः)।
सर्वदेवमयं प्रोक्तमेकविंशमतः परम् (प्र)।।
रौद्रं द्वाविंशकं (चो) प्रोक्तं त्रयोविंशं (द) तु ब्राह्मकम्।
वैष्णवं तु चतुर्विंश (यात्) मेता ह्यक्षरदेवताः।।'

अर्थात् गायत्री मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के देवता बताऊँगा – 1. तत् – अग्नि, 2. स – वायु, 3. वि – सूर्य, 4. तुर् – विद्युत, 5. व – यम, 6. र – वरुण, 7. णि – बृहस्पति 8. यम् – पर्जन्य, 9. भर् – इन्द्र, 10. गो – गन्धर्व, 11. दे – पूषा, 12. व– मैत्रावरुण, 13. स्य – त्वष्टा, 14. धी – वसु, 15. म – मरुत 16. हि – सोम, 17. धि – आंगिरस, 18. यो – विश्वदेव, 19 यो – अश्विन, 20. नः – प्रजापति, 21. प्र – सर्व देवमय, 22. चो – रुद्र, 23. द – ब्रह्मा, 24. यात् – विष्णु।

'जपकाले तु संस्मृत्य तासां सायुज्यतां व्रजेत्।
गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम्।
हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे।।
तस्मात्तामभ्यसेन्नित्यं ब्राह्मणोऽनुदये शुचिः।
तस्मिन्न लिप्यते पापमब्बिन्दुरिव पुष्करे।।'

अर्थात् जप काल में इन देवताओं का स्मरण करें तो जापक इन देवताओं का साथी हो जायेगा। क्योंकि गायत्री वेदजननी है और पापनाशिनी है। इस लोक और पर लोक में गायत्री से बढ़कर कोई पवित्रकारक मन्त्र नहीं है। नरक में गिरते हुये की अपने हाथ से रक्षा करनेवाली देवी है गायत्री। इसलिये नित्य ही सूर्योदय से पूर्व शुद्ध होकर सभी को (विशेषत: ब्राह्मण को) गायत्री मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिये। उससे दिनभर जाने-अनजाने में होने वाले पापों का स्पर्श भी नहीं होता उसी प्रकार जिस प्रकार तालाब में कमल से जल की बूंद का स्पर्श नहीं होता।

33. पृष्ठ संख्या 126-186 में मुद्रित न्यास प्रकरण में प्रयुक्त कुछ चक्रों के स्थान तथा अंग आदि वाचक जिन संस्कृतशब्दों के हिन्दी में अर्थ कुछ पाठकों द्वारा पूछे गये है, वे इस प्रकार हैं -

चक्र:- (कुछ ज्ञातव्य: - मनुष्य के इस शरीर में 11 चक्र और सिर के ऊपर 9 चक्र माने गये हैं। वे क्रमश: इस प्रकार हैं - अध:सहस्रार, अध:सहस्रारोपरि विषु, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा, लम्बिकाग्र, बिन्दु और सहस्रार तथा अर्द्धचन्द्र/अर्द्धेन्दु, रोधिनी, नाद, नादान्त, शक्ति, व्यापिका, समाना/समन स्थान, उन्मना/उन्मनी और ध्रुवमण्डल।) शरीर के भीतर - **1.** अध:सहस्रार = पैर के तलुवे में, **2** अध:सहस्रारोपरि विषु = घुटनों में, **3-8** मूलाधार से आज्ञा तक के चक्र प्रसिद्ध हैं, **9.** लम्बिकाग्र = छोटी तालू के अग्रभाग में, **10.** बिन्दु = ललाट भाग में स्थित बिन्दुविसर्ग चक्र में, **11.** सहस्रार। तथा सिर के ऊपर - **1.** अर्द्धचन्द्र/अर्द्धेन्दु = सिर के ऊपर परिकल्पित कर्णिकाचक्र में , **2.** रोधिन्यां = उसके ऊपर परिकल्पित अतुलचक्र में, **3.** नादे = उसके ऊपर परिकल्पित अनाख्यचक्र में, **4.** नादान्ते = उसके ऊपर परिकल्पित सोऽहंचक्र में, **5.** शक्तौ = उसके ऊपर परिकल्पित पंचसिंहासनचक्र में, **6.** व्यापिकायां = उसके ऊपर परिकल्पित लालिमा युक्त प्रकाशात्मक चक्र, **7.** समानायां/समन स्थाने = उसके ऊपर परिकल्पित नीलिमा युक्त प्रकाशात्मक चक्र, **8.** उन्मनायां/ उन्मन्यां =

उसके ऊपर परिकल्पित विशुद्ध प्रकाशात्मक चक्र, **9. ध्रुवमण्डले** = पूर्वोक्त सभी का अधिष्ठान रूपी विशुद्ध चैतन्यात्मक चक्र।

कुछ अंग :- ब्रह्मरन्ध्रे महाबिन्दौ = चोटी के ऊपर तीनों कपाल भागों के मिलन स्थान में, कर्णयुगसन्निधौ = आंख से कान की ओर व कान के पास स्थित हड्डी पर, कर्णवेष्टनयोः = कान की ढ़कनी पर, फाले = सीमांत भाग (स्त्रियों के मांग) में, द्वादशान्ते = छाती की अन्तिम पसली के निचले भाग में, स्फिचि = नितम्ब पर, प्रपदे = पैर की अंगुलियों के अग्रभाग में, सृक्किणी =मुंह के किनारे के भाग में, दक्ष/वाम मुष्के = अण्डकोष के दाहिने व बाये अण्डों पर, दक्ष/वाम कूर्परे = दाहिनी व बायी कुहनी, दक्ष/वाम दोर्मूले = दार्यी व बार्यी कांख पर, दक्ष/वाम शिरोभागे = दायें व बायें कपाल पर, ककुदि = कण्ठ के बीच में ऊपर उठी हुयी हड्डी पर, गलपृष्ठे = गर्दन पर।

34. पृष्ठ संख्या 190, पंक्ति संख्या 10 में मुद्रित 'मूलमन्त्र' के दक्षिणामूर्ति मत के अनुसार दो अर्थ है। पहला अर्थ है – 'ऐं क्लीं सौः' जो एकाक्षरी से पंचदशी पर्यन्त मन्त्र के उपासकों के लिये है और दूसरा है – 'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः' जो षोडशी से पूर्णाभिषेक पर्यन्त के उपासकों के लिये है।

35. पृष्ठ संख्या 199, पंक्ति संख्या 14 से आरब्ध श्लोक पृथ्वीछन्द में है जिसे 8 व 9 अक्षरों के विभाग पूर्वक पाठ किया जाता है।

36. पृष्ठ संख्या 208, पंक्ति संख्या 13–14 में मुद्रित 'आंख बन्द कर' के पश्चात् जोड़ लें – **अथवा मन्दिर न हो तो अपने सामने स्थित आवाहित देवता के सामने अपने चेहरे को वस्त्र से ढ़ककर बैठें।**

37. पृष्ठ संख्या 209, पंक्ति संख्या 11 के अन्त में जोड़ लें –
तर्पण के मन्त्र निम्न प्रकार से हैं।

1. गणपति तर्पण मन्त्र :–

ॐ एक दन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। श्रीमहागणपतिं तर्पयामि नमस्करोमि।।

2. सूर्य तर्पण मन्त्र –

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। श्रीसूर्यं तर्पयामि नमस्करोमि।।

3. विष्णु तर्पण मन्त्र –

ॐ अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः।।1।। इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पांसुरे स्वाहा।।2।। श्रीविष्णुं तर्पयामि नमस्करोमि।।

4. शिव तर्पण मन्त्र –

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढ्लुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे।।1।।
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।2।।
श्रीशिवं तर्पयामि नमस्करोमि।।

5. देवी (शक्ति) तर्पण मन्त्र –

ॐ गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषि सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।।
श्रीशक्तिं तर्पयामि नमस्करोमि।।

38. पृष्ठ संख्या 214 में मुद्रित चित्रों के क्रमांक नहीं छपे हैं, जो कि निम्न हैं – चित्र संख्या 11 और चित्र संख्या 12।

39. पृष्ठ संख्या 220, पंक्ति संख्या 11 में मुद्रित है –
'**सर्वविपत्प्रमोगचं**' जब कि सही यह है – '**सर्वविपत्प्रमोचनं**'।

40. पृष्ठ संख्या 258, पंक्ति संख्या 10 व 21 में मुद्रित कोष्टकों के अन्तर्गत दर्शित मन्त्र समूह केवल षोड़शी उपासकों केलिये विशेष है। अन्यों केलिये नहीं।

41. पृष्ठ संख्या 266 की पंक्ति संख्या 27 व पृष्ठ संख्या 267 की पंक्ति संख्या 01 में मुद्रित 3 ऋषि और 3 छन्द का तात्पर्य है कि जो उपासक दक्षिणामूर्ति संप्रदाय में पंचदशी मन्त्र से दीक्षित है वह पाठ

करें – **दक्षिणामूर्ति ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः**; और जो उपासक हयग्रीव संप्रदाय में पंचदशी मन्त्र से दीक्षित है वह पाठ करें – **हयग्रीव ऋषिः, गायत्रीछन्दः**; तथा जो उपासक भैरव संप्रदाय में पंचदशी मन्त्र से दीक्षित है वह पाठ करें – **आनन्दभैरव ऋषिः, पंक्तिछन्दः**।

42. पृष्ठ संख्या 273, पंक्ति संख्या 09 में जोड़ें –

कर्मों में अग्नि के नामविशेष पर विचारः –

प्रत्येक कर्म में प्रयुक्त अग्नि के अलग–अलग नाम होते हैं। समस्त कर्मों को 27 प्रमुख भागों में विभक्त कर 27 अग्नि मानी गयी हैं। उनके नाम वाचस्पत्यं के अनुसार इस प्रकार है –

'लौकिको पावको (1) ह्यग्निः प्रथमः परिकीर्तितः।
अग्निस्तु मारुतो (2) नाम गर्भाधाने प्रकीर्तितः।।
पुंसवे चमसो (3) नाम शोभनः (4) शुभकर्मसु।
सीमन्ते ह्यनलो (5) नाम प्रगल्भो (6) जातकर्मणि।।
पार्थिवो (7) नामकरणे प्राशनेऽन्नस्य वै शुचिः (8)।
सभ्य (9) नामा तु चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः (10)।।
गोदाने सूर्य (11) नामा स्यात्केशान्ते योजकः (12) स्मृतः।
वैश्वानरो (13) विसर्गे स्याद्विवाहे बलदः (14) स्मृतः।।
चतुर्थीकर्मणि शिखी (15) धृतिरग्निस्तथापरे।
आवसथ्य (16) स्तथाधाने वैश्वदेवे तु पावकः (17)।।
ब्रह्माग्नि (16) गार्हपत्ये स्याद्दक्षिणाग्निरथेश्वरः (16)।
विष्णु (16) राहवनीये स्यादग्निहोत्रे त्रयो मताः।।
लक्षहोमेऽभीष्टदः (17) स्यात्कोटिहोमे महाशनः (17)।
एके घृतार्चिषं (17)प्राहुरग्निध्यानपरायणाः।।
रुद्रादौ तु मृडो (18) नाम शान्तिके शुभकृत् (19)तथा।
पौष्टिके वरद (20) श्चैव क्रोधाग्नि (21) श्चाभिचारके।

वश्यार्थे वश्यकृत् (22) प्रोक्तो वरदाहे तु पोषकः (23)।
उदरे जठरो (24) नाम क्रव्यादः (25) शवभक्षणे।।
समुद्रे वाडवो (26) ह्यग्निर्लये संवर्तक (27) स्तथा।
सप्तविंशतिसंख्याता (27) अग्नयः कर्मसु स्मृताः।।'

अर्थात् 1. लौकिककर्म – पावक, 2. गर्भाधान – मारुत, 3. पुंसवन – चमस, 4. शुभस्मार्तकर्म – शोभन, 5. सीमन्त – अनल, 6. जातकर्म – प्रगल्भ, 7. नामकरण – पार्थिव, 8. अन्नप्राशन – शुचि, 9. चूडा – सभ्य, 10. उपनयन – समुद्भव, 11. गोदान – सूर्य, 12. केशान्त – योजक, 13. विसर्ग – वैश्वानर, 14. विवाह – बलद, 15. चतुर्थीकर्म – शिखी/धृति, 16. श्रौतकर्म अग्निहोत्र आदि में :– आधानकर्म – आवसथ्य, वैश्वदेवकर्म – पावक, गार्हपत्य में – ब्रह्माग्नि, दक्षिणाग्नि में ईश्वर, आहवनीय में – विष्णु; 17. लक्षाहुति होम – अभीष्टद, कोटि आहुति होम – महाशन, एक हजार आहुति होम – घृतार्चिष; 18. शतरुद्र आदि – मृड, 19. शान्तिक कर्म – शुभकृत्, 20. पौष्टिक कर्म – वरद, 21. अभिचार – क्रोधाग्नि, 22. वश्यकर्म – वश्यकृत्, 23. वरदाह – पोषक, 24. उदर – जठर, 25. शवदाह – क्रव्याद, 26. समुद्र – वाडव, 27. लये – संवर्तक।

अग्नि की सप्तजिह्वाओं का नाम –

सप्तजिह्वा के वैदिक नाम मुण्डकोपनिषद् के अनुसार इस प्रकार हैं –

'काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा।
स्फुलिंगिनी विश्वरुचि च देवी लेलायमाना इति सप्तजिह्वा।'

सप्तजिह्वा के स्मार्त नाम वाचस्पत्यम् के अनुसार –

'कराली धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता।
सुवर्णा पद्मरागा च सप्तजिह्वा विभावसोः।।'

वाचस्पत्यम् में ही अग्नि की नौ (9) शक्तियों के नाम इस प्रकार बताये हैं –

'पीता श्वेताऽरुणा कृष्णा धूम्रा तीक्ष्णा स्फुलिंगिनी।
ज्वलिनी ज्वालिनी चेति कृशानोर्नव शक्तयः।।'

43. पृष्ठ संख्या 275, पंक्ति संख्या 9–10 में संकेतित 'कृष्ण पक्ष में इसके विपरीत क्रम से हवन करना है।' वह विपरीत क्रम इस प्रकार है – '4 अः 15 अः ललितामहानित्यायै नमः स्वाहा, 4 अं चकौं अं चित्रानित्यायै नमः स्वाहा, 4 औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं रं रं रं रं रं रं रं हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 ओं स्वौं ओं सर्वमंगलानित्यायै नमः स्वाहा, 4 ऐं भमरयूं ऐं विजयानित्यायै नमः स्वाहा, 4 एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्यायै नमः स्वाहा, 4 लं हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः लं नित्यानित्यायै नमः स्वाहा, 4 लृं ऐं क्लीं सौः लृं कुलसुन्दरीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 ॠं ॐ ह्रीं हुं खे चे छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्यायै नमः स्वाहा, 4 ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै नमः स्वाहा, 4 इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्यायै नमः स्वाहा, 4 आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगवशंकरि ऐं ब्लूं जे ब्लूं भं ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै नमः स्वाहा, 4 अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै नमः स्वाहा।'

44. पृष्ठ संख्या 341 में, श्लोक संख्या 57 है –

भूवेश्मत्रिवृत्तषोडशनागशक्र –
दिग्युग्मवस्वनलकोणगबिन्दुमध्ये।

सिंहासनोपरिगतारकपीठमध्ये,

प्रोत्फुल्लपद्मनिलयां त्रिपुरां भजेऽहं।।57।।

इसका शब्दार्थ इस प्रकार है – '**भूवेश्म** = 4 प्रवेश द्वार युक्त 3 परिधि यानि त्रैलोक्यमोहनचक्र, **त्रिवृत्त** = 3 गोलयुक्तचक्र यानि त्रिवर्गसाधक चक्र, **षोडश** = 16 पंखुड़ीवाला कमल यानि सर्वाशापरिपूरकचक्र, **नाग** = 8 पंखुड़ीवाला कमल यानि सर्वसंक्षोभिणीचक्र, **शक्र** = 14 त्रिकोणवाला चक्र यानि सर्वसौभाग्यचक्र, **दिग्युग्म** = 10 त्रिकोणवाले दो चक्र यानि सर्वार्थसाधकचक्र और सर्वरक्षाकरचक्र, **वसु** = 8 त्रिकोणवाला चक्र यानि सर्वरोगहरचक्र, **अनलकोणग** = सर्वोपरि त्रिकोण यानि सर्वसिद्धिप्रदचक्र और **बिन्दुमध्ये** = बिन्दु रूपी चक्र यानि सर्वकामप्रदचक्र के मध्य में, **सिंहासनोपरिगतारकपीठमध्ये** = ऐसी श्रीचक्र रूपी सिंहासन के ऊपर स्थित व तारकपीठ (ह्रीं) के बीच में विराजमान, **प्रोत्फुल्लपद्मनिलयां** = पूर्णरूप से खिला हुआ कमलपुष्प है निलय (आसन) जिसका ऐसी, **त्रिपुरां** = मां भगवती त्रिपुरा को, **भजेऽहं** = मैं भजता हूँ।

श्रीयंत्रम्
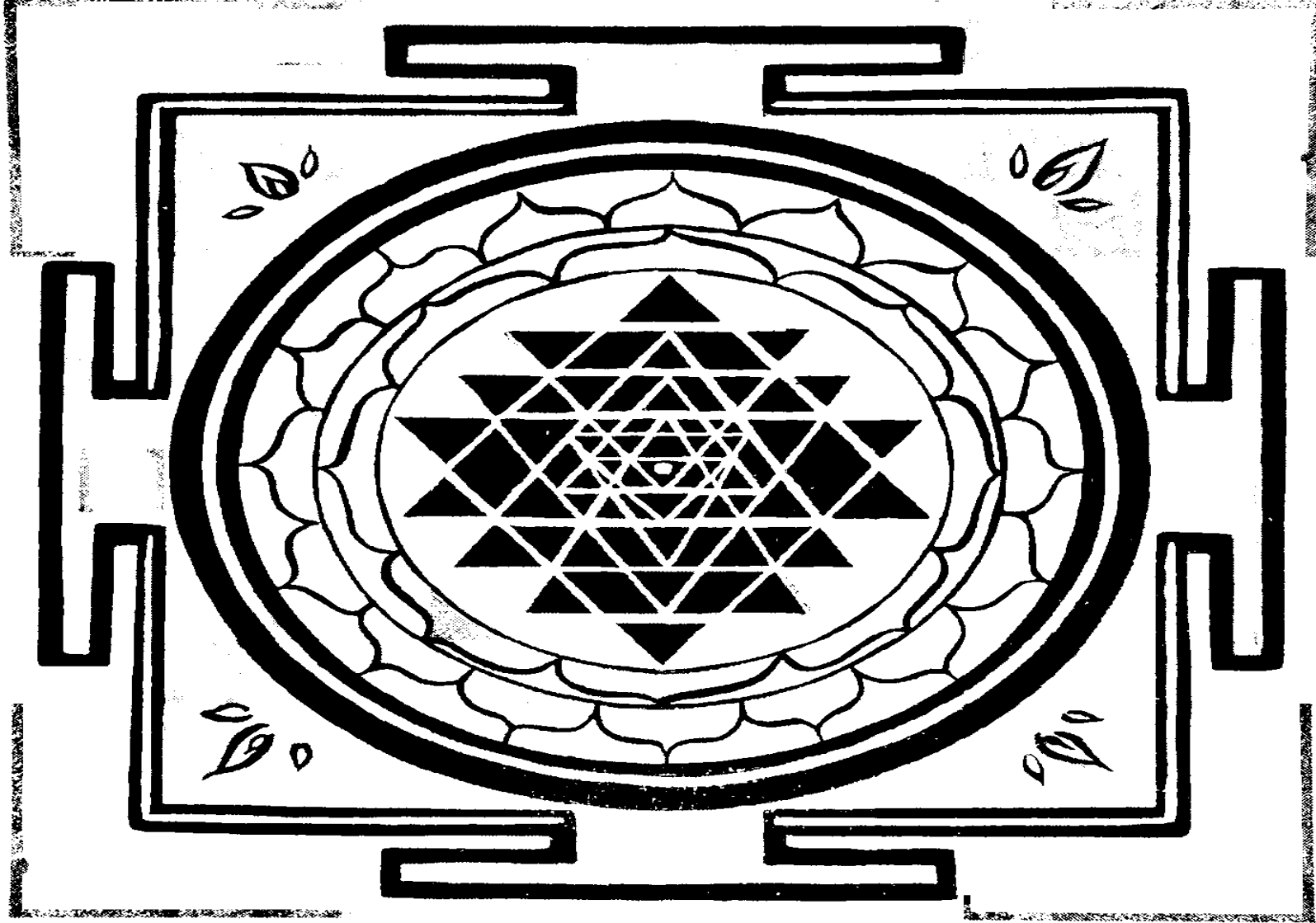
बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मम्,
मन्वस्त्रनागदलशोभितषोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणी सदनत्रयं च,
श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः।।

चित्र संख्या (5.1-2)
गन्धार्पण मुद्रा

चित्र संख्या (5.1-3)
पुष्पार्पण मुद्रा
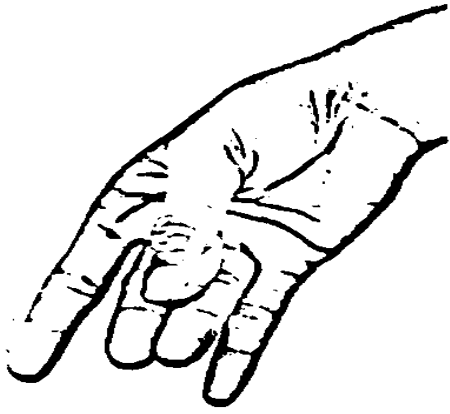
चित्र संख्या (5.1-4)
धूपार्पण मुद्रा
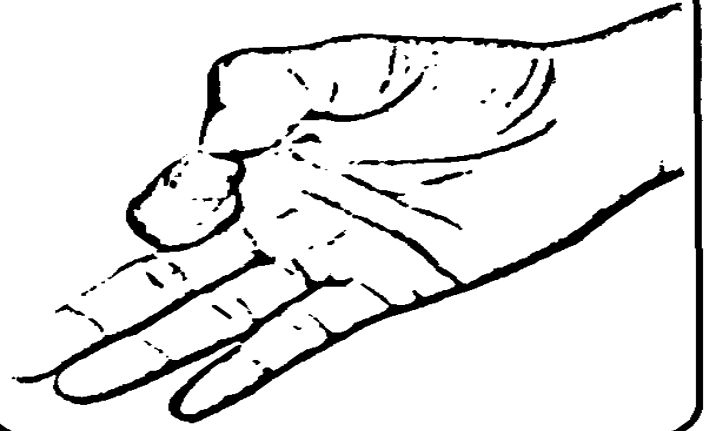
चित्र संख्या (5.1-5)
दीपार्पण मुद्रा
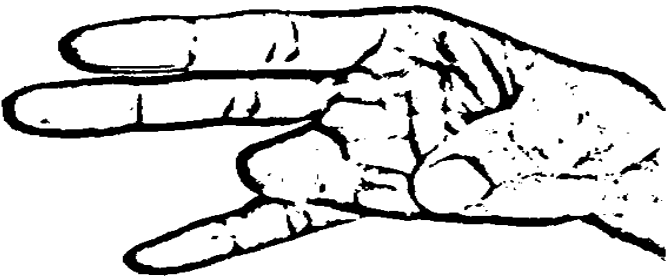
चित्र संख्या (5.1-6)
नैवेद्यार्पण मुद्रा

चित्र संख्या (5.7b)
धेनु मुद्रा
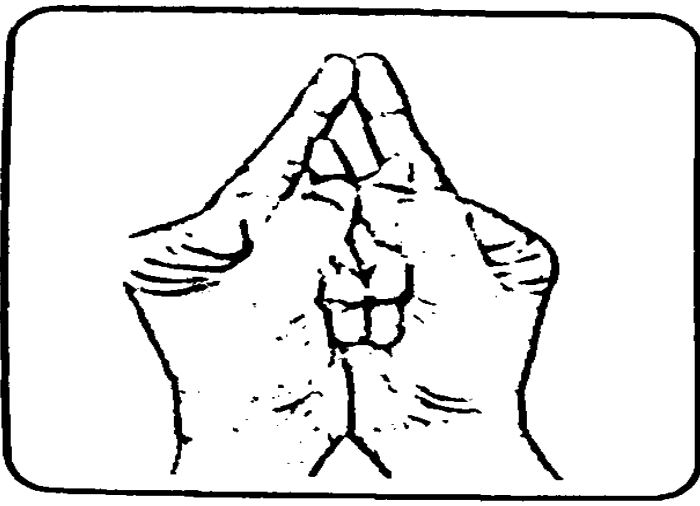
चित्र संख्या (5.8)
महा मुद्रा
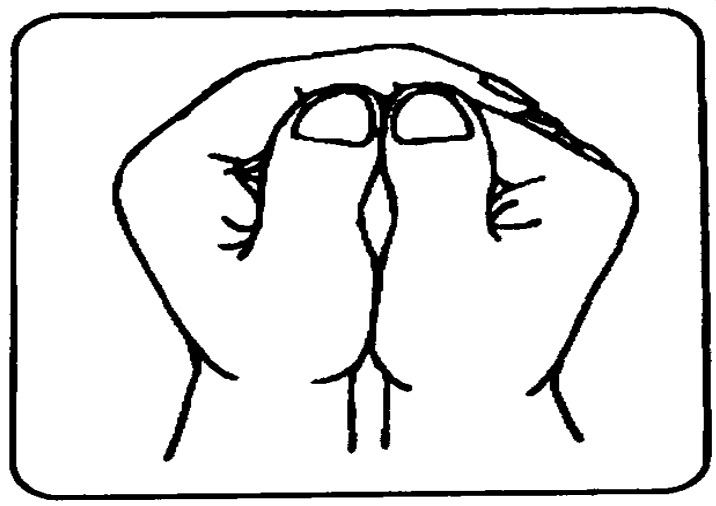
चित्र संख्या (5.9)
कुम्भ मुद्रा
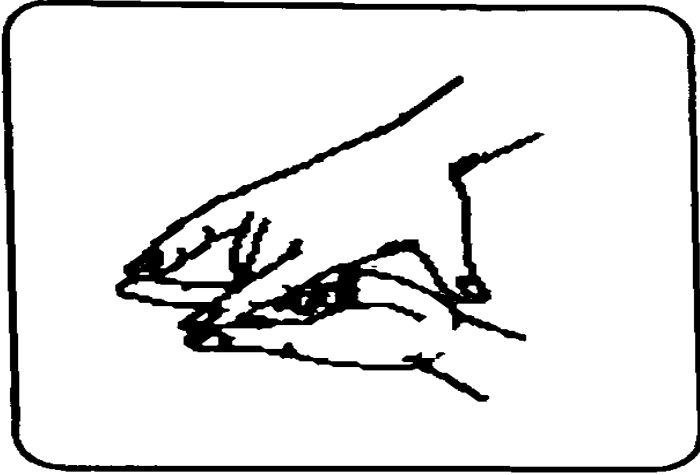
चित्र संख्या (5.10a)
कूर्म मुद्रा
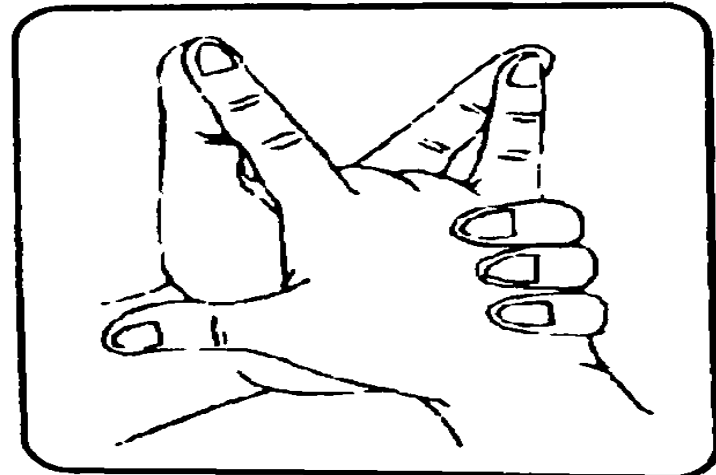
चित्र संख्या (5.10b)
कूर्म मुद्रा
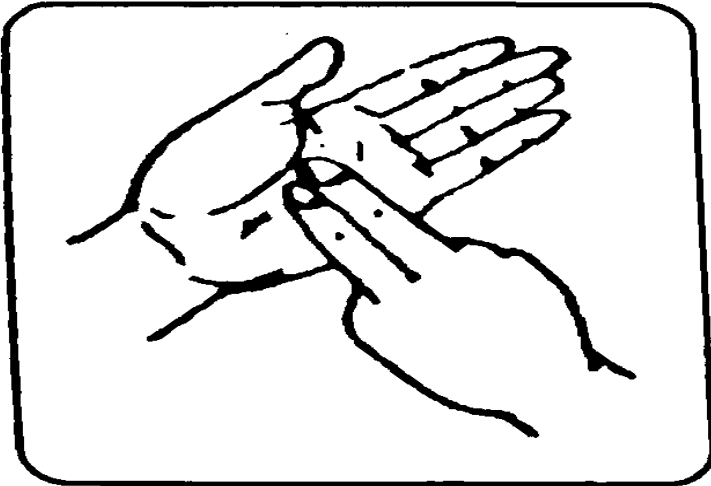
चित्र संख्या (5.11a)
अस्त्र मुद्रा
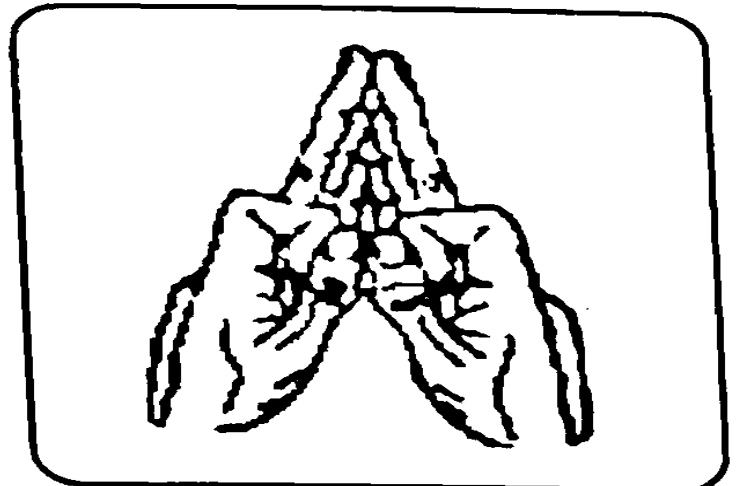
चित्र संख्या (5.11b)
अस्त्र मुद्रा
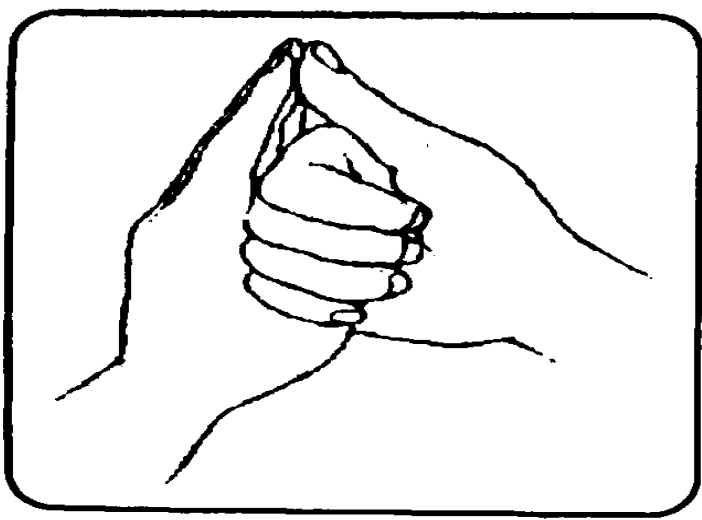
चित्र संख्या (5.13)
शंख मुद्रा
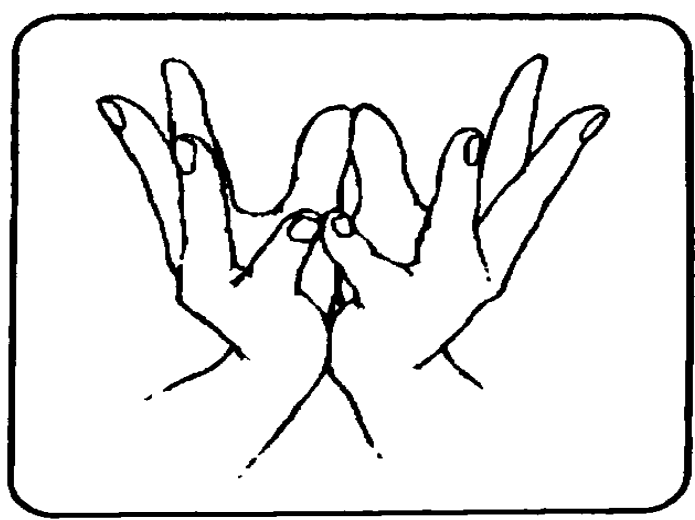
चित्र संख्या (5.16)
पंकज मुद्रा
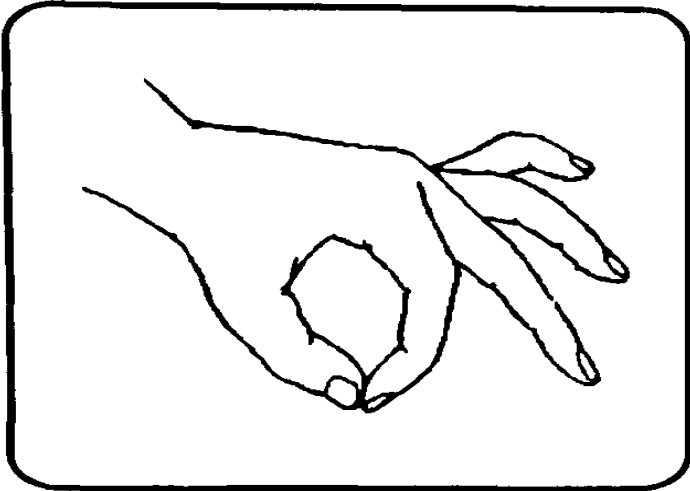
चित्र संख्या (5.19)
चिन्मुद्रा
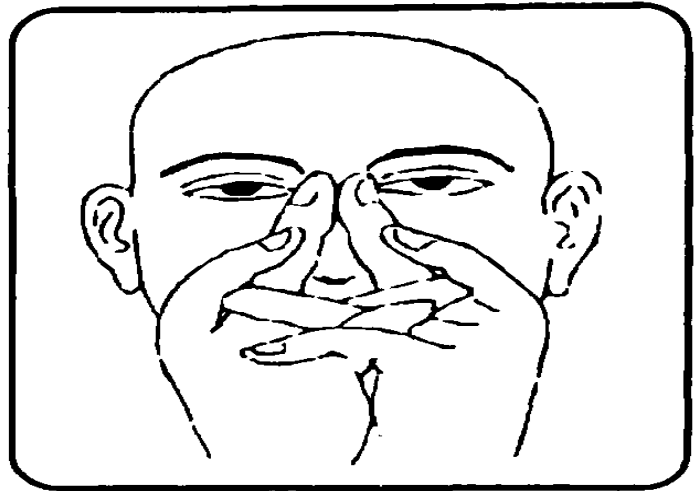
चित्र संख्या (5.28–9)
महायोनि मुद्रा
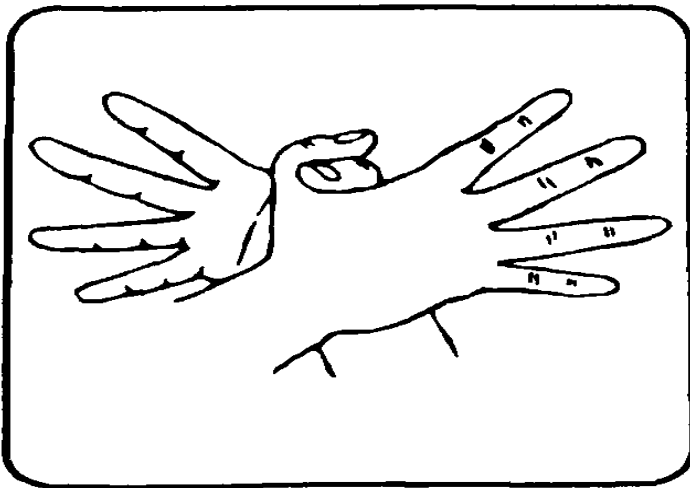
चित्र संख्या (5.29)
गुरुड़ मुद्रा
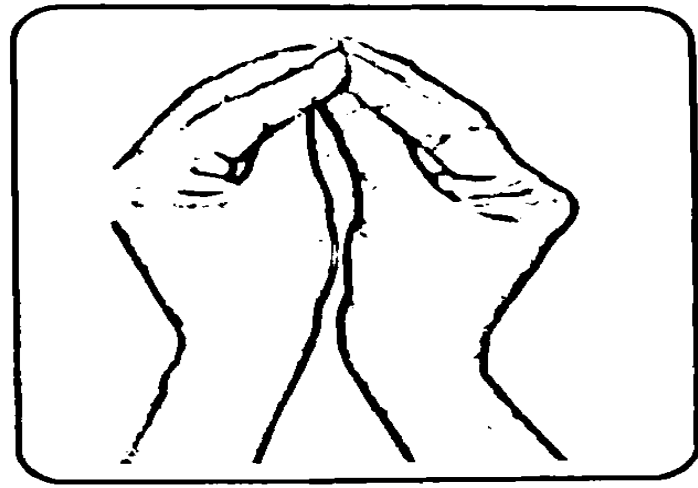
चित्र संख्या (5.30 a)
सूकरी मुद्रा
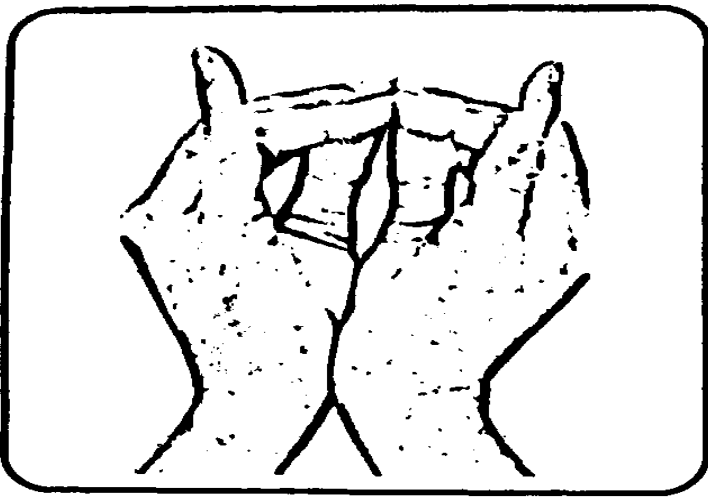
चित्र संख्या (5.30b)
हंसी मुद्रा
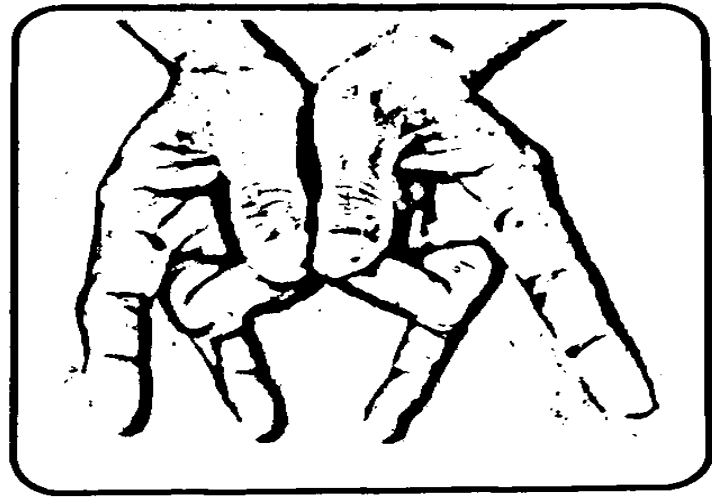
चित्र संख्या (5.31–2a)
अंकुश मुद्रा
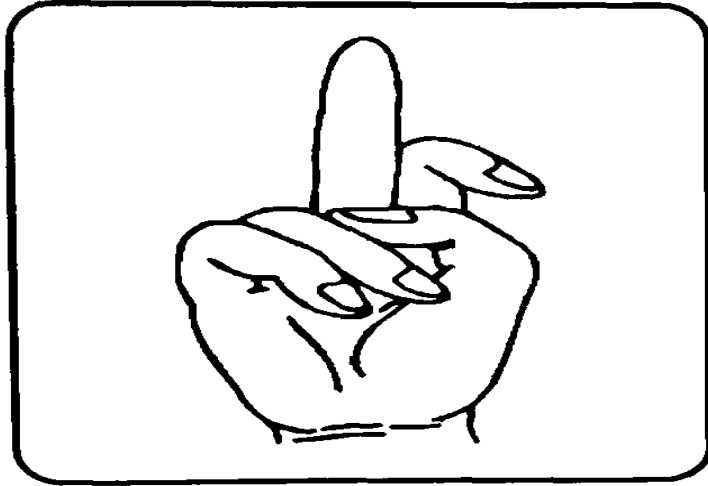
चित्र संख्या (5.31–2b)
अंकुश मुद्रा
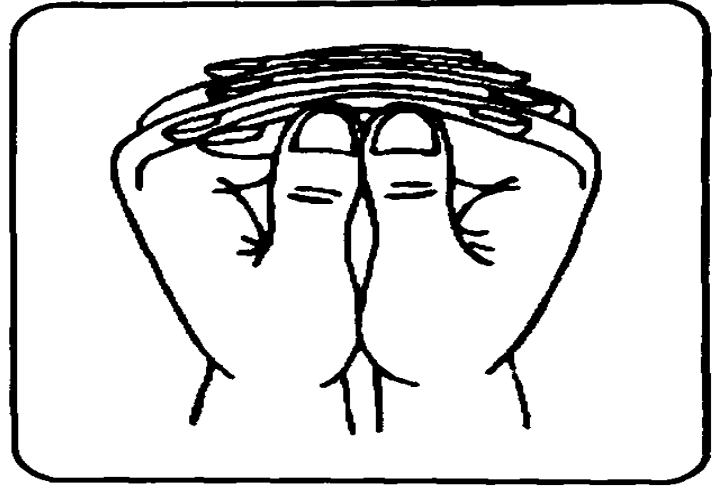
चित्र संख्या (5.31–3)
गदा मुद्रा

चित्र संख्या (5.31–4a)
पाश मुद्रा
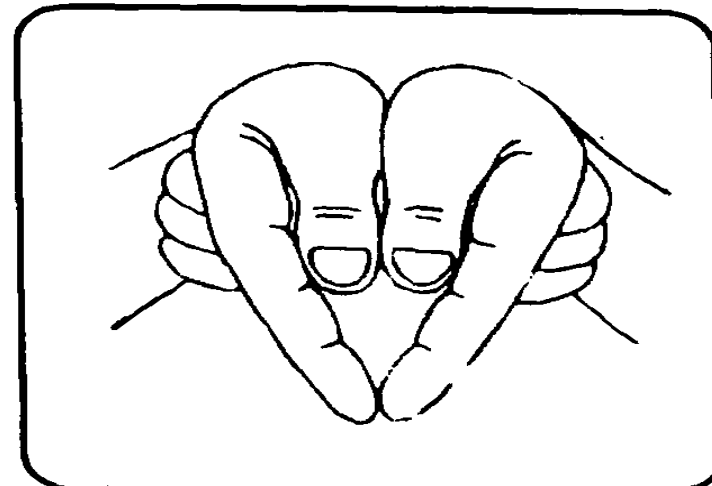
चित्र संख्या (5.31–4b)
पाश मुद्रा
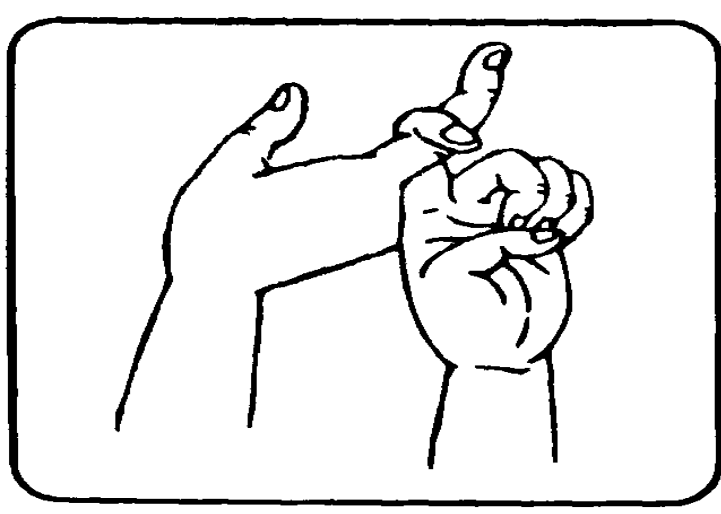
चित्र संख्या (5.31-4c)
पाश मुद्रा
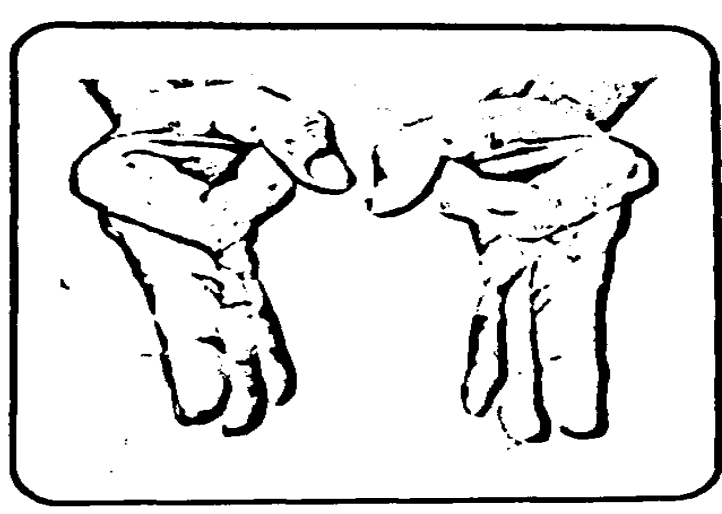
चित्र संख्या (5.31-5)
अक्षमाला मुद्रा
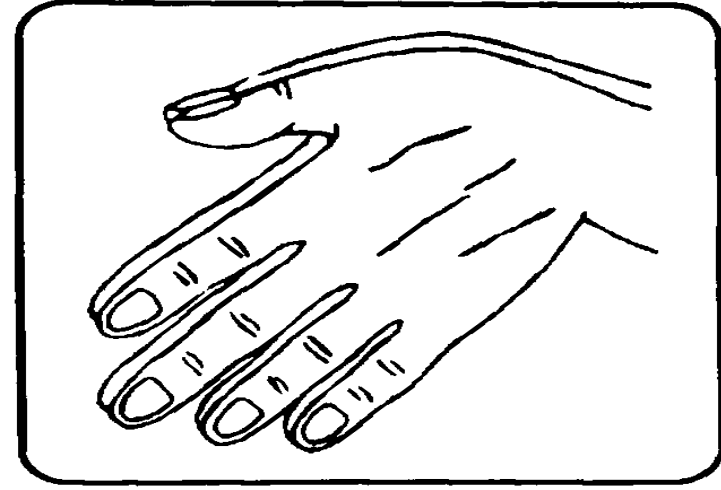
चित्र संख्या (5.31-6)
परशु मुद्रा
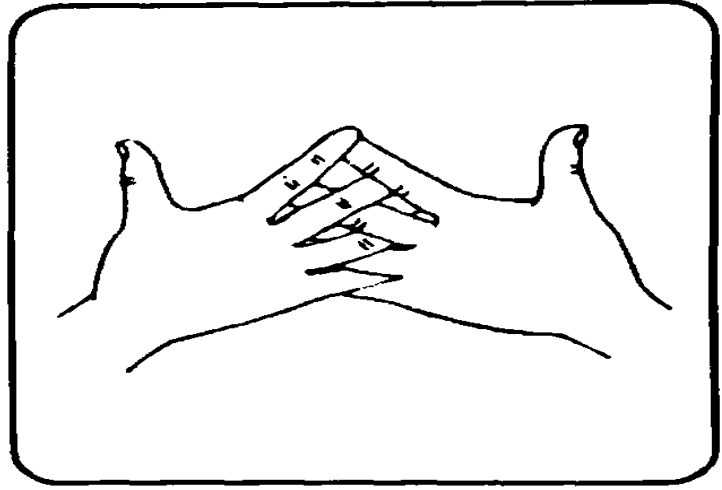
चित्र संख्या (5.31-7)
वज्र (कुलिश) मुद्रा
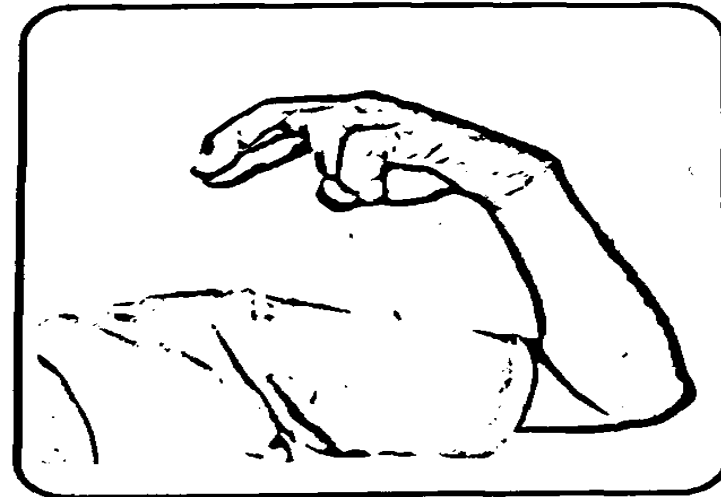
चित्र संख्या (5.31- 8)
धनुर्मुद्रा
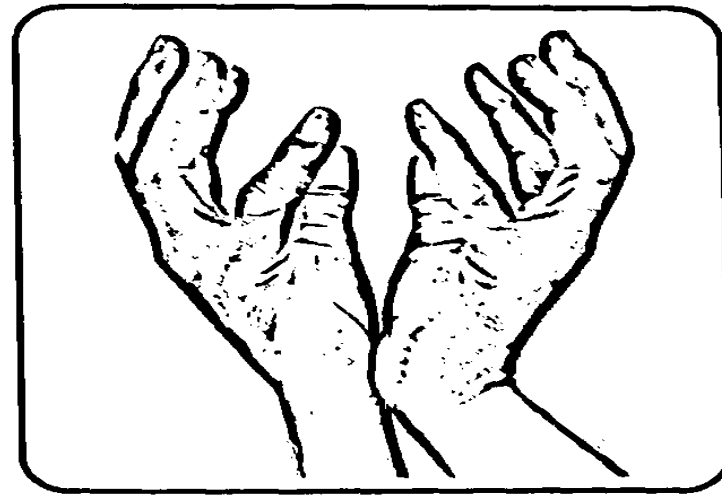
चित्र संख्या (5.31-9)
कुण्डिका मुद्रा

चित्र संख्या (5.31–10)
दण्ड मुद्रा
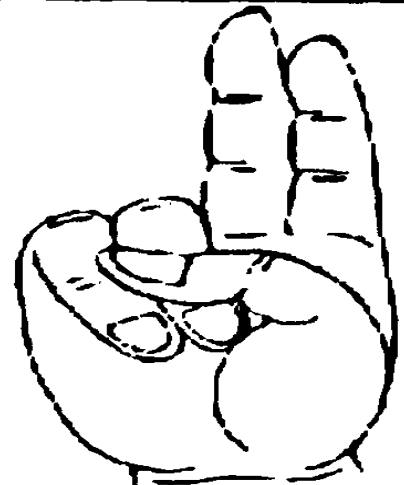
चित्र संख्या (5.31–11)
खड्ग मुद्रा
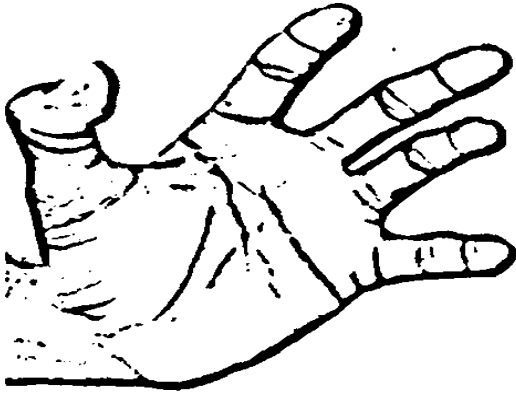
चित्र संख्या (5.31–12)
चर्म (ढाल) मुद्रा
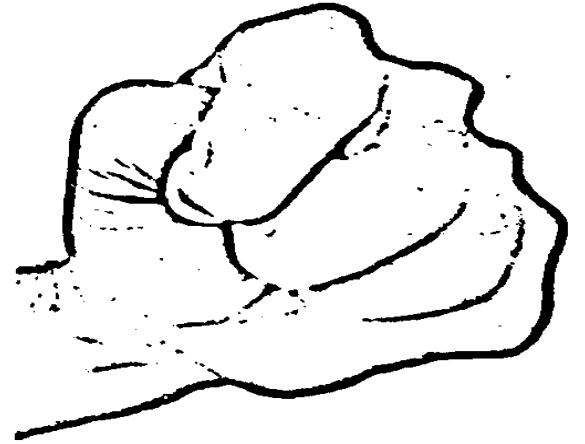
चित्र संख्या (5.31–13)
घण्टा मुद्रा

चित्र संख्या (5.31–14)
सुरभाजन मुद्रा

चित्र संख्या (5.31–15)
त्रिशूल मुद्रा
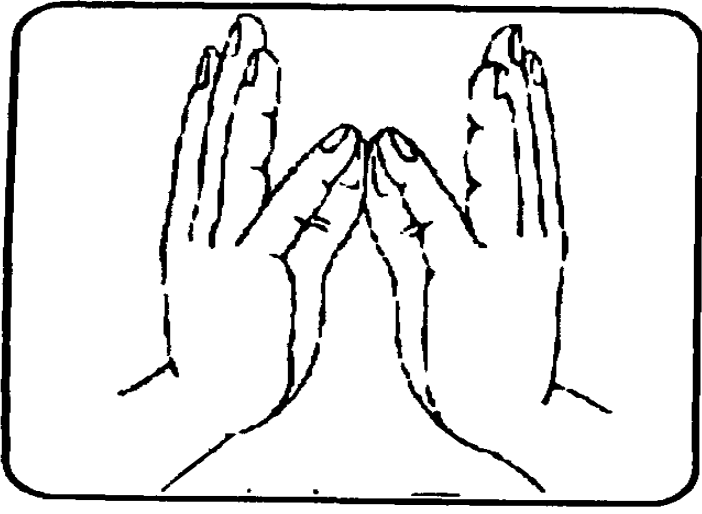
चित्र संख्या (5.31–16)
सुदर्शन (चक्र) मुद्रा
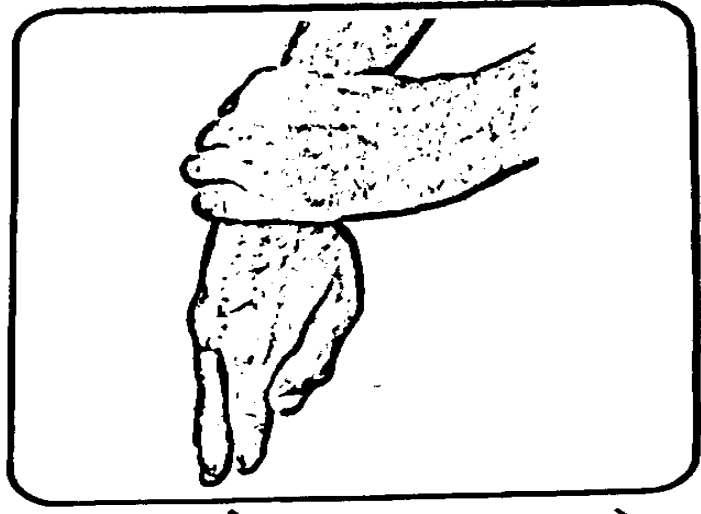
चित्र संख्या (5.31–17)
हल मुद्रा
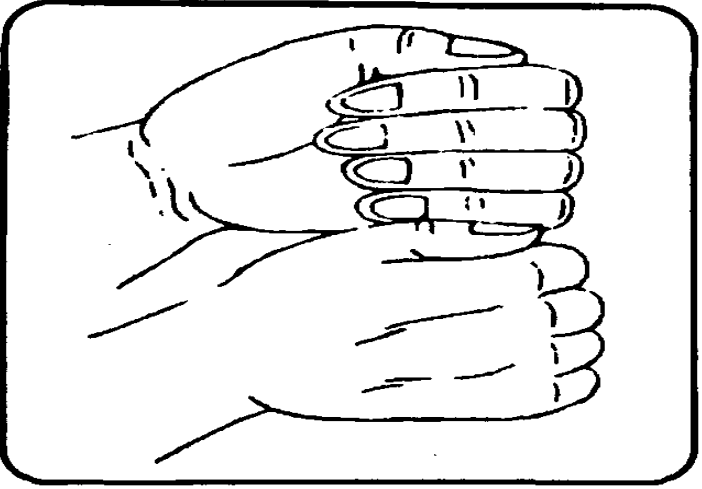
चित्र संख्या (5.31–18)
मुसल मुद्रा
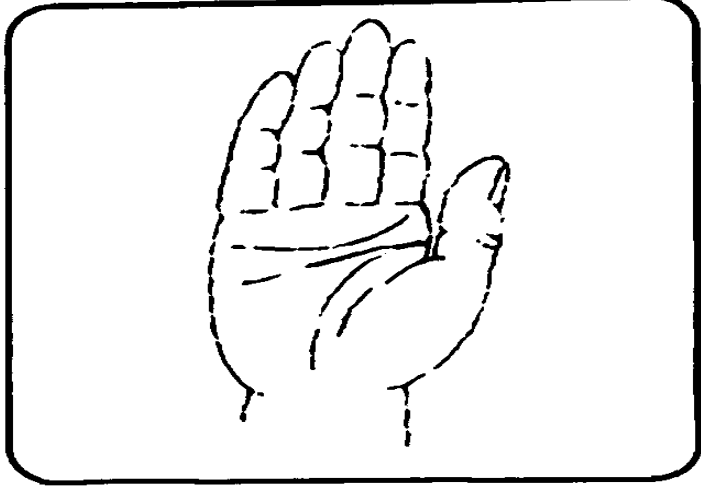
चित्र संख्या (5.31–19)
अभय/वरद मुद्रा
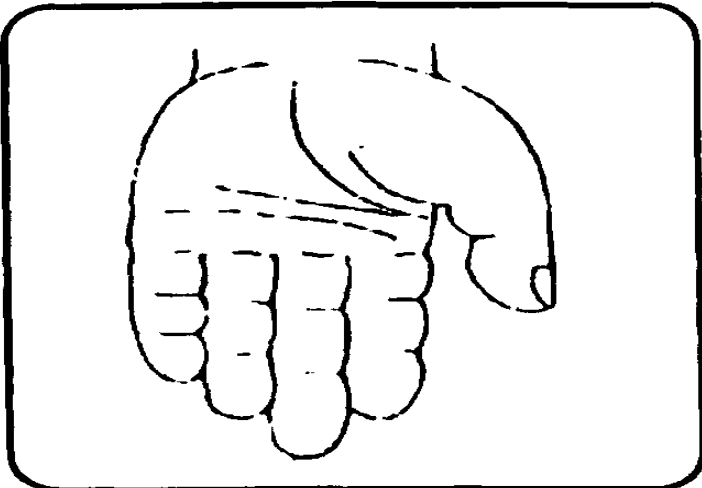
चित्र संख्या (5.31–20)
कृपा/वर मुद्रा
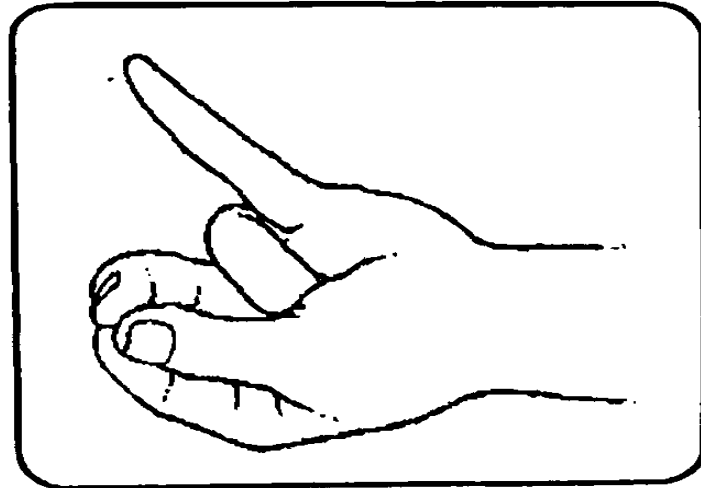
चित्र संख्या (5.32a)
शिरो (मुण्ड) मुद्रा
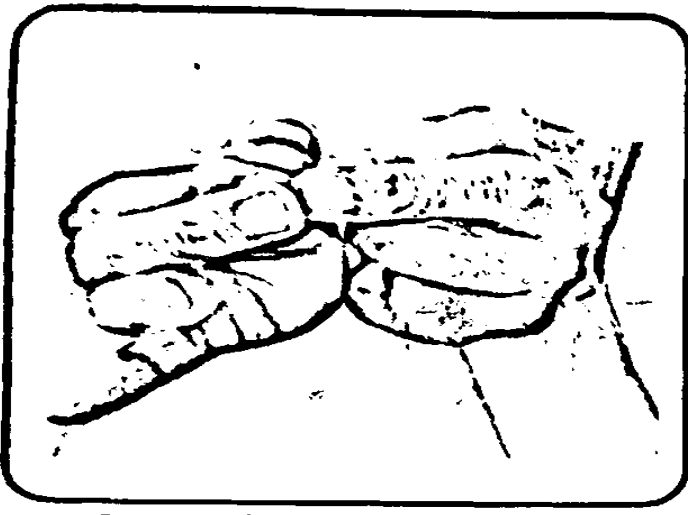
चित्र संख्या (5.32b)
शिरो मुद्रा
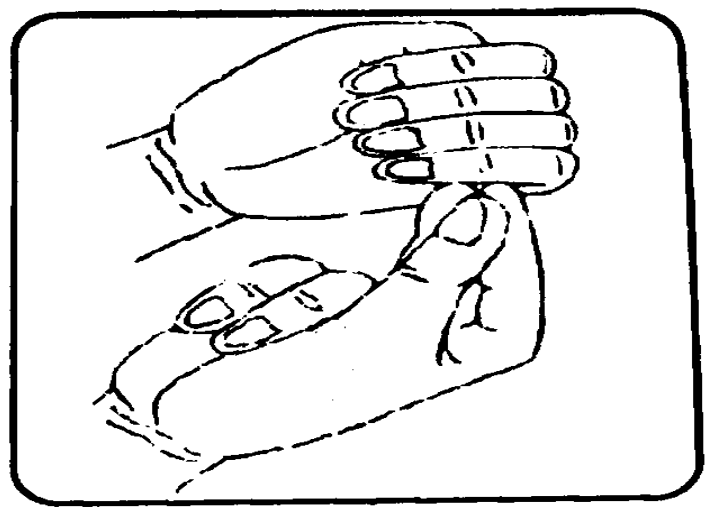
चित्र संख्या (5.32c)
शिरो (मुण्ड) मुद्रा
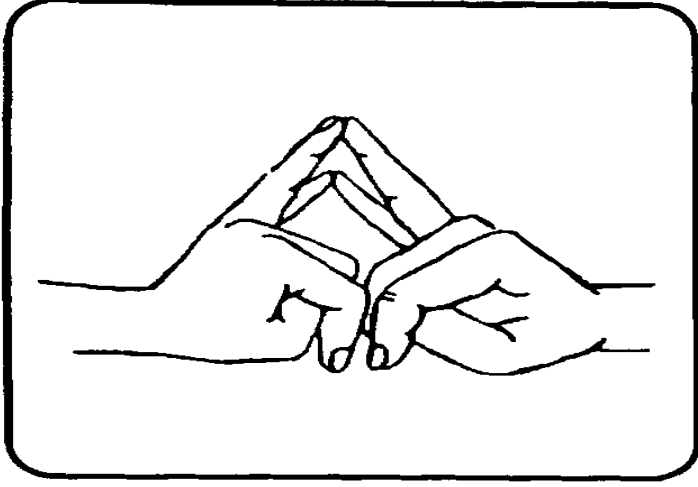
चित्र संख्या (5.33a)
शक्ति मुद्रा
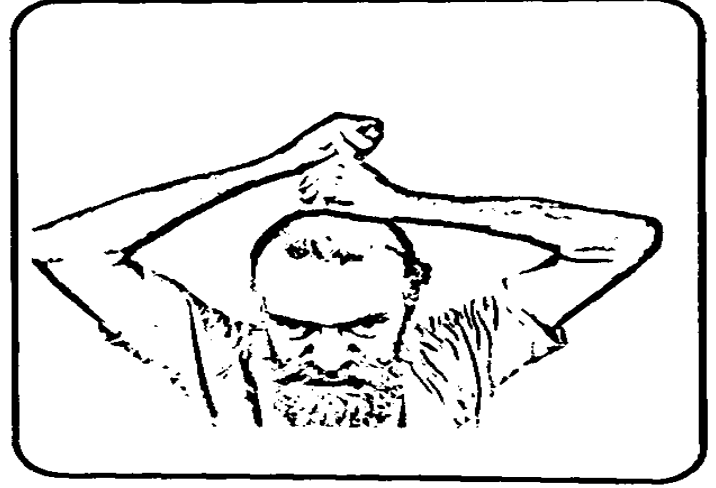
चित्र संख्या (5.33b)
शक्ति मुद्रा
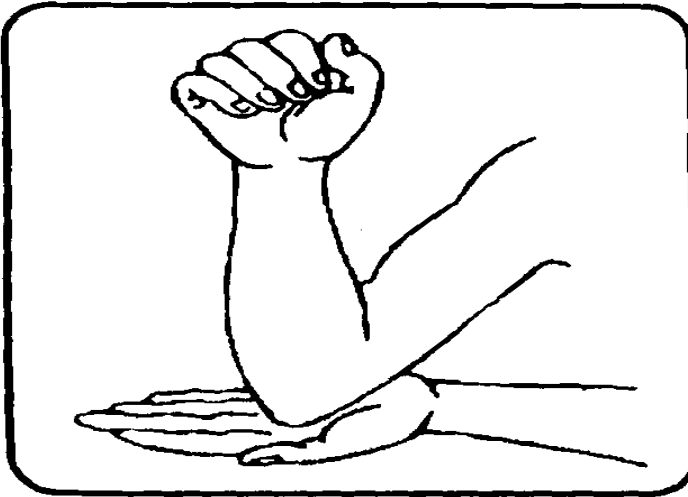
चित्र संख्या (5.34a)
मुद्‌गर मुद्रा
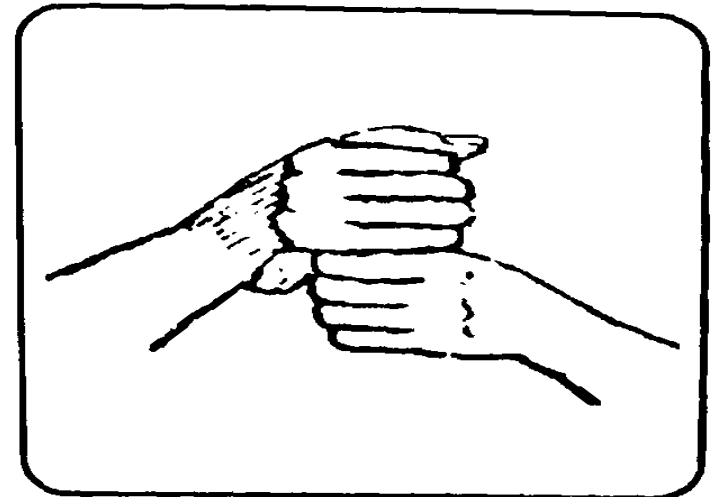
चित्र संख्या (5.34b)
मुद्‌गर मुद्रा
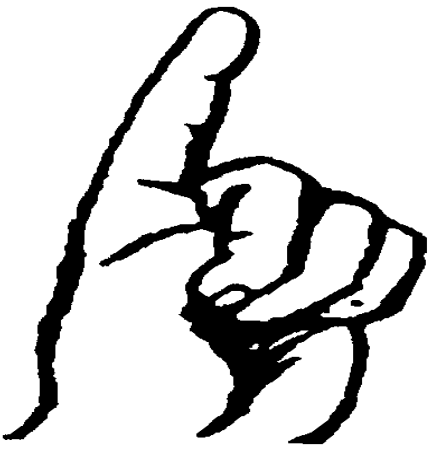
चित्र संख्या (5.35)
शत्रुजिह्वाग्र मुद्रा

चित्र संख्या (5.36-1)
न्यास-हृदय मुद्रा

चित्र संख्या (5.36-2)
न्यास-शिरो मुद्रा

चित्र संख्या (5.36-3)
न्यास-शिरो मुद्रा

चित्र संख्या (5.36-4)
न्यास-कवच मुद्रा

चित्र संख्या (5.36-5)
न्यास-नेत्रत्रय मुद्रा
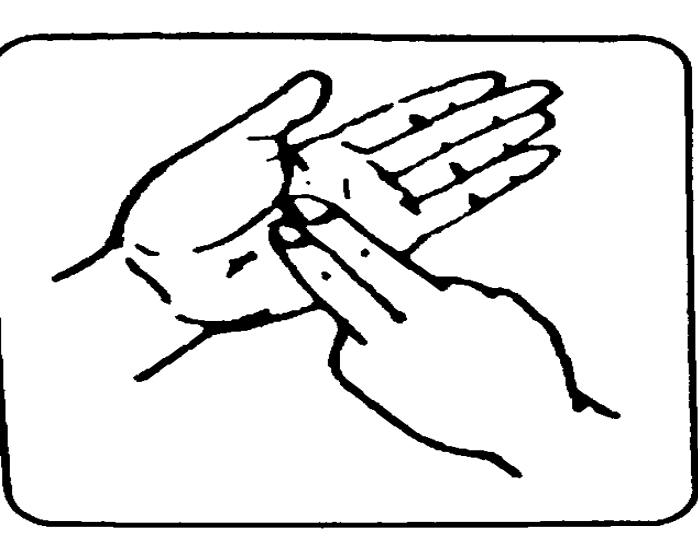
चित्र संख्या (5.36–6)
न्यास-करतल मुद्रा
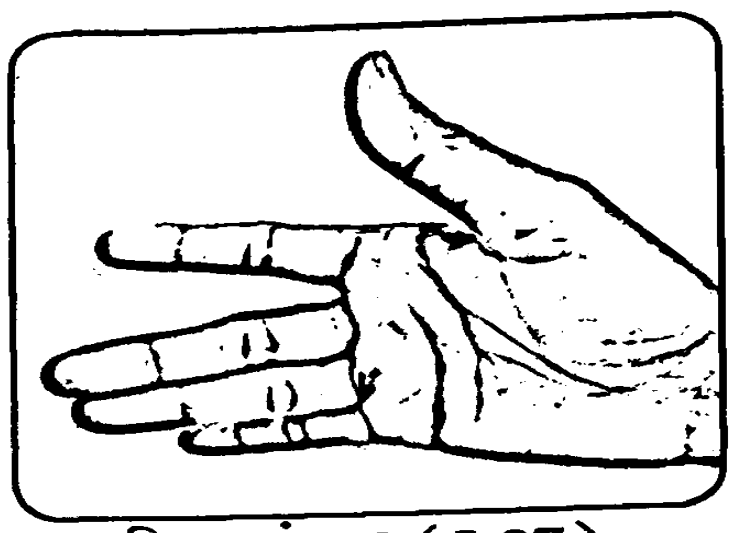
चित्र संख्या (5.37)
विसर्जन मुद्रा
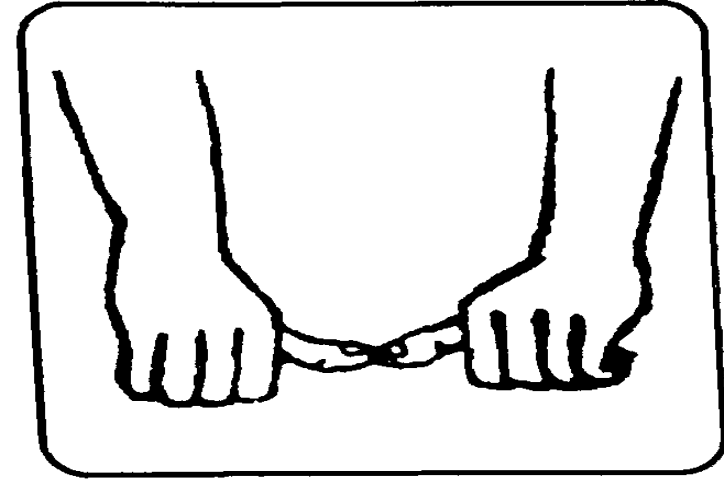
चित्र संख्या (5.38–1a)
सुमुखी मुद्रा
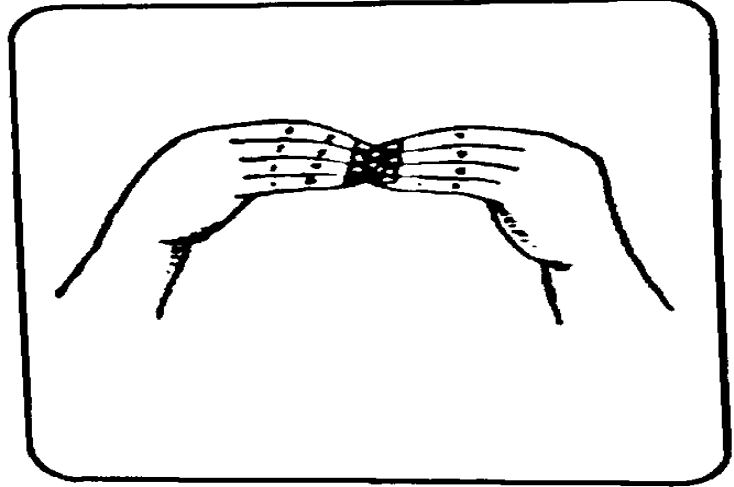
चित्र संख्या (5.38–1b)
सुमुखी मुद्रा
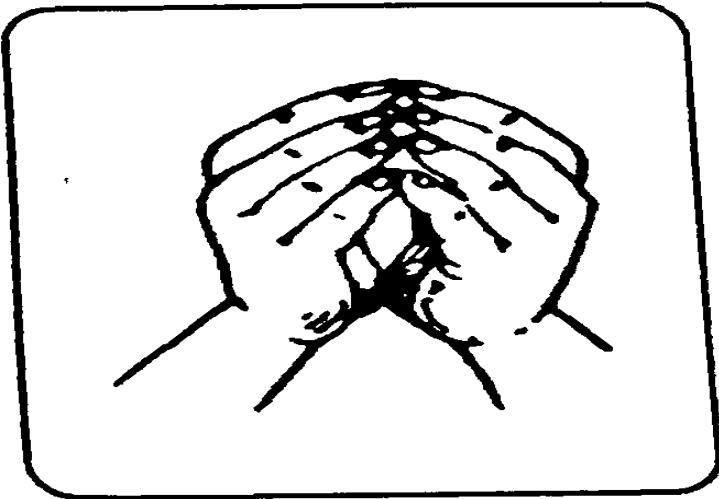
चित्र संख्या (5.38–2)
सम्पुट मुद्रा
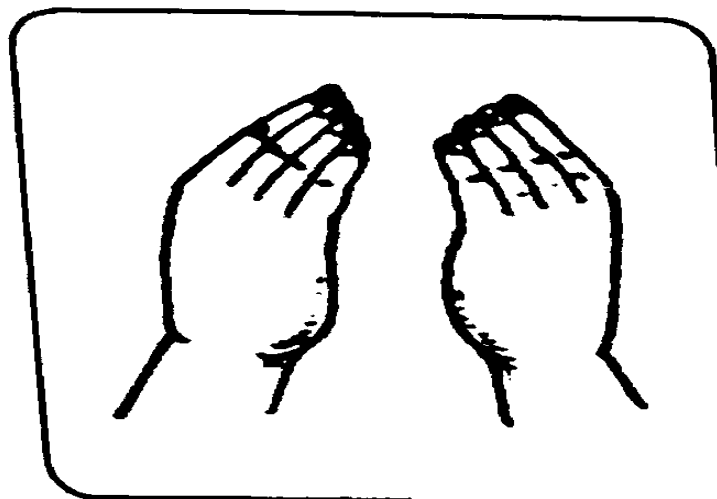
चित्र संख्या (5.38–3)
वितत मुद्रा
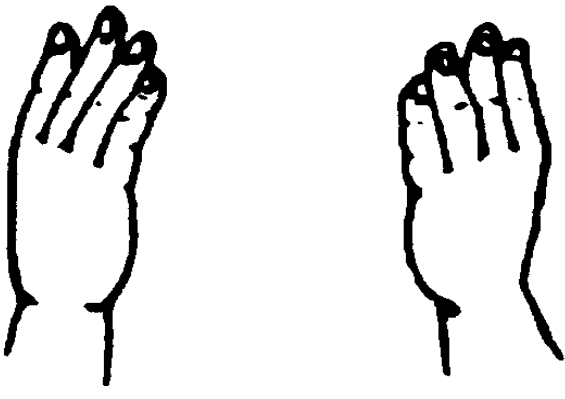
चित्र संख्या (5.38-4)

विस्तृत मुद्रा

चित्र संख्या (5.38-5a)

मुकुली मुद्रा
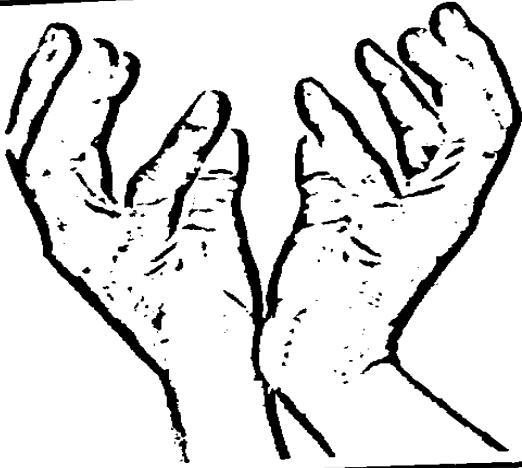
चित्र संख्या (5.38-5b)

मुकुला मुद्रा

चित्र संख्या (5.39)

योग मुद्रा
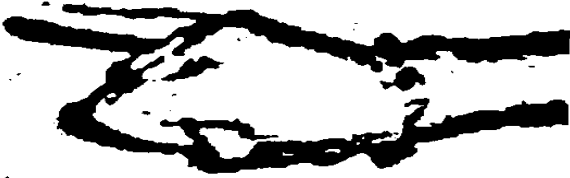
चित्र संख्या (5.40a)

ज्वालिनी मुद्रा
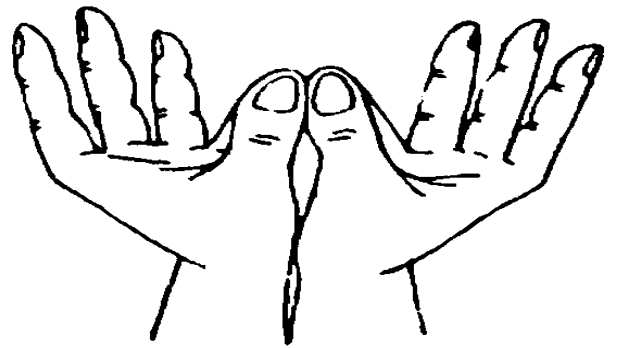
चित्र संख्या (5.40b)

ज्वालिनी मुद्रा

गौरीतिलकमण्डलम् = एकलिंगतोभद्रम्
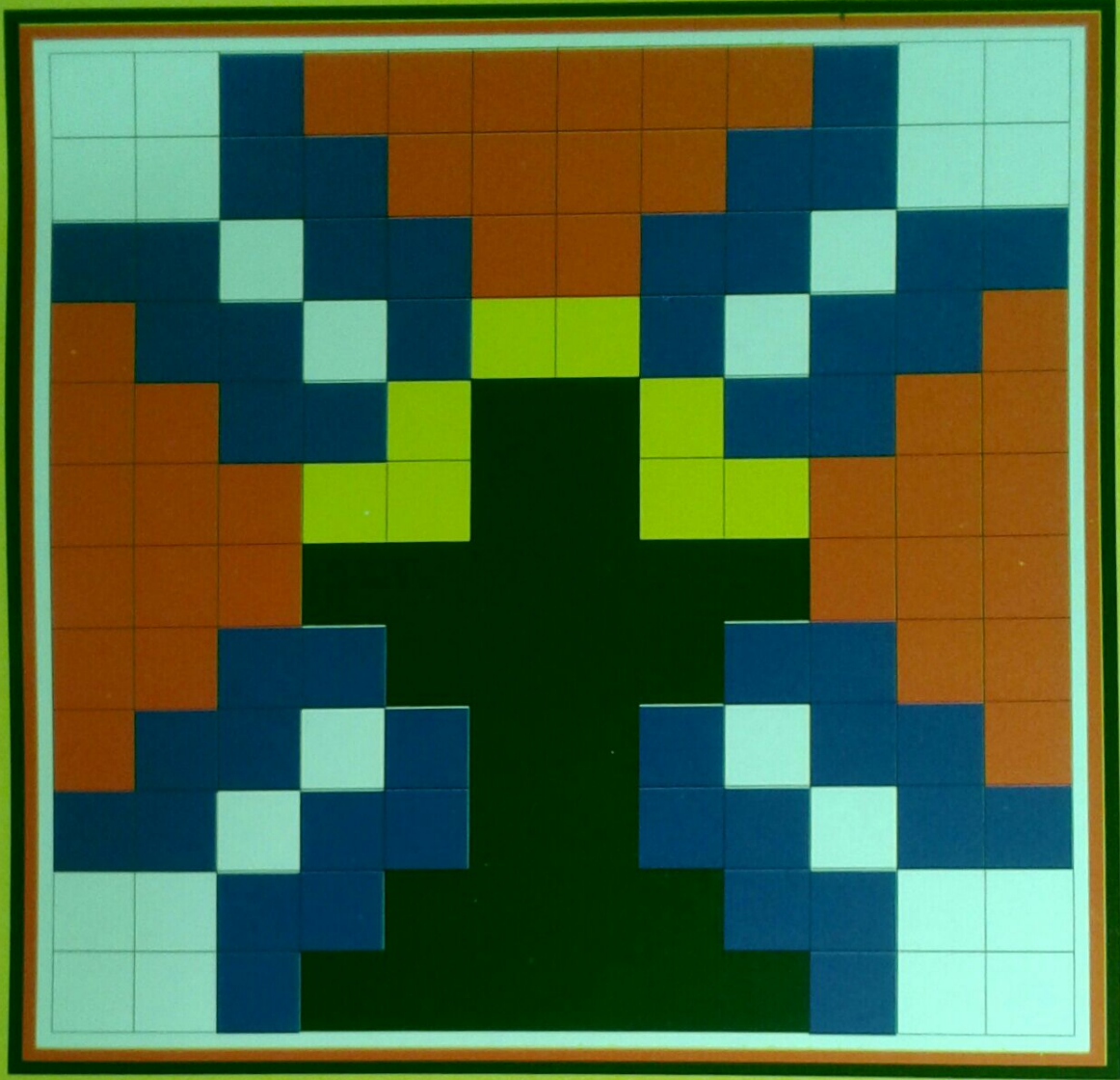
तिर्यगूर्ध्वगता रेखाः कार्याः स्निग्धास्त्रयोदश।
कोणेन्दुस्त्रिपदः कार्यः शृंखलास्त्रिपदाः स्मृताः।।
वल्ली तु त्रिपदा नीला भद्रं रक्तं प्रकल्पयेत्।
पदैर्द्वादशभिः स्पष्टमुत्तरे पूर्वदक्षिणे।।
पश्चिमायां महारुद्रमष्टाविंशतिकोष्ठकैः।
लिंगपार्श्वे तथा मूर्ध्नि अष्टौ कोष्ठाः सुपीतकाः।।
लिंगमेकं तथा गौर्यास्तिस्रः स्युरत्र मण्डले।
पूजयेन्मण्डलं चैतत्तस्य गौरी प्रसीदति।।

हिन्दी व्याख्या के व्याख्याता

श्री स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यम् साधना कुटीर

181, ग्राम : गौहरी माफी, पो: रायवाला,

ऋषिकेश (उत्तराखण्ड) 249205

मो. नं. : 91-9557130251

ई-पत्र : swsdsr@ gmail.com

वेबसाईट : www.satyamsadhana.org